



## प्रस्तावना

प्रथम यह पुस्तक ठप कर प्रसिद्ध करनेका हेतु कहे हैं, की सकलगुणगरिष्ठ, विद्वज्ज्ञानवरिष्ठ, चारित्र्य पात्र चूकामणि, पदकाय रक्षक इत्यादि अनेक सद्गुणो करके विराजमान न्यायाज्ञोनिधि श्री श्री श्री श्री १००० महामुनिश्री 'शिवजी रामजी' महाराज, आ मानुग्राम विहार करते करते, जव्यजीवोंको प्रतिबोध देते देते 'सवाइ जयपुर'में पधारे, तब समस्त श्रीसंघ मिलके बड़े महोत्सवसें सब जिनचैत्योंका दर्शन कराये पीठे श्रीगुरुजी महाराज धर्मशास्त्रामें आ कर विराजमान हुआ, तब श्रीगुरुजी महाराजने सब श्री संघको धर्मोपदेश देना सरु कीया, जिसमें ज्ञानका साहात्म्य वर्णन करते करते गुरुजीने ऐसा कहा कि इस कालमें ज्ञानाभ्यास करनेवालोंकी संख्या बहोत करके स्वल्प हो गई है, जिसें जगें जगें बड़े बड़े सहैरोमें पाठशाखा बन जावे, तो क्रमसें पढनेवाले भी बहोत होजावे, क्योंकि कारणसें कार्य होता है ऐसा श्रीगुरु महाराजका उपदेश श्रवण करके



अब ये ठपी हूइ पुस्तककी प्रथमावृत्तिकी नकल सब खप जानेसें फिर इनकी द्वितीयावृत्तिकी नकल ( १००० ) दो हजार, हालमें यथामति संशोधन करके मेनें श्रावक जीमसिहमाणककी मारफत उपवाई हे ये पुस्तककी दो हजार नकलमेंसें ( १५०० ) पनरेसें नकलका खर्च मेहेता माणेकच द मिलापचदने दिया हे तथा ( ५०० ) पांचसें नकलका खर्च नवानगरवाले लोढा जालमचदने दीया हे उर ये पुस्तककी द्वितीयावृत्तिमें प्रथमावृत्तिसें अधिक एक सूतकविचार, दूसरो असद्याइविचार, और तीसरो साधु, श्रावककों कोनसी वस्तु कितने प्रहर तथा दिन पीठे खाने लायक न रहे ? ये सब दाखल किये हे

### विज्ञप्ति

वर्तमान समयमें श्रीजिनधर्मके केइ तरेकी पुस्तकों ठपी है, परतु तिनमें श्रावककों अवश्य करणे योग्य जो सामायिकसें से कर पचप्रतिक्रमण अरु पौपधा दिक क्रिया है तिसको जहां जैसा सूत्रपाठ चहिये वैसाही सूत्रपाठ लिखके अरु जिस जगे जो जो वि

सब श्रावकों आपसमें विचार करके उसी वखत श्री गुरु महाराजजीकों कहने लगे कि महाज ! आपकी आज्ञासे 'सवाइ जयपुरमें' जैनपाठशाखा स्थापन करनेका हमने निश्चय करा पीठें विक्रमार्क संवत् १९४५ के आषाढ शुक्ल पुजके दिन पाठशाखा स्थापन करके तिसमें विद्यान्यासीयोंको विद्यान्यासार्थ संस्कृत ज्ञाया जाननेवाला दो पन्तियोंको वर्षासन देके रखे

पीठें विद्यान्यासी जनोंको जैनमार्गमें सामायिक कविक पद आवश्यक अवश्य कर्तव्य है, सो पहिं खेही पढना चाहिये, इस वास्ते तिस ग्रथको उपवा नेका श्रीसंघने मुकरर कीया तिसमें एक हजार पुस्तकका खरच तो शेर माणकचदजी मिलापचदजी मेहे ताने दीया, और जास्ती पुस्तक उपानेका खरच पचाती तरफसे दीया जायगा एसा निश्चय करके सब पचातियों मिलके श्रीमुवद्में ( मेरे पर ) शेर ठगन छालजी मगन छालजीके पुत्र जूरामद्व वेराठीके पर उक्त पुस्तकको मुवद्में उपानेका हुकुम लिखा तो तिस मुजय मेने गोपालचदजी यतिके पास यथा योग्य सशोधन करायके श्रावक जीमसिंह माणककी मारफत उपवाया

## ॥ अस्य ग्रन्थस्यानुक्रमणिका प्रारंभ ॥

ग्रथां० ग्रन्थोके नाम पृष्ठां	ग्रथां० ग्रन्थोके नाम पृष्ठां
१ नवकार मन्त्र १	१२ वेसणो सदस्साज ए
२ स्थापनाचार्यजीकी तेरह पढिलेहणा २	१३ राश्रप्रतिक्रमण० ११
३ खमासमण ३	१४ सकलतीर्थन० ११
४ सुगुरुने शाता— सुख पृष्ठा २	१५ ज किंचि १२
५ मुहपत्ती पढिलेहणा के पच्चीश घोस ३	१६ नमुष्ण १२
६ श्रगकी पच्चीश पढिलेहणा ४	१७ जावंति चेइआइ १३
७ सामाधिकका पञ्चस्काण ६	१८ जावंतकेषि साहु १३
८ इरियावहिय ७	१९ परमेष्ठिनम० १४
९ तस्स उत्तरी ७	२० उपसर्गहरस्त० १४
१० अन्नहूससिपण ८	२१ जयवीयराय १५
११ सोगस्स ८	२२ पढिक्कमण गाय वेका अयसर १६
	२३ सबस्सवि १६
	२४ इडामि ठामि १७
	२५ वदणवत्तियाप १८
	२६ पुस्करवरदी १९

धि लिखना चाहियें, उहा उही विधि लिखकें वराधर  
क्रमपूर्वक ठपी होवे, एसी कोइ पुस्तक नहीं है

इस वास्ते मेंने यह पुस्तक ठपानेके प्रारभसें उक्त  
विचार पूर्वक सामायिकसें ले कर पौषधादि क्रियापर्यं  
त सर्व सूत्रोंको विधि संयुक्त विस्तार, प्रयास पूर्व  
क अनुक्रमसें ठपकें पीठें सब श्रावक जाइयोंको निर  
तर पठन पाठन करने योग्य ऐसे बहुत स्तवन, स  
जाय, स्तुतियो, चैत्यवंदनो, राग रागणीमें गानेकें  
प्रजातिपद तथा दादाजीके स्तवन बगैरे ठपे हे

यह पुस्तककों मेरी मति अनुसार शोधन करने  
में दृष्टि दोषसें, अरु स्थूलबुद्धिके होनेसें जो कुछ  
मेरी तरफसें ह्रस्व, दीर्घ, काना मात्रादिकका फर  
क रहा गया होवे, और कोइ अक्षर अधिक न्यून  
हुवा होवे, आगे पीठें हूवा होवे, सो सब पढने प  
ढानेवाले सुहृजनोंने मुजकों धासककी माफक  
अथ शोधनेका अज्यासी जान कर मेरे पर बच्चेकी  
माफक प्रेम दर्शाय कर शोधकें धांचनां मेरी तरफ  
सें जो चूख रही होवे तिसका मिष्ठामि डुक्कड सर्व  
श्रीसध समद देता हु      छा० सुरामह्व बेराठी  
यह पुस्तक सवाइ जयपुर जैन पाठशालामें मिलेगी

## ॥ अस्य ग्रंथस्यानुक्रमणिका प्रारंभ ॥



प्रथा० ग्रंथोके नाम पृष्ठां	प्रथां० ग्रंथोके नाम पृष्ठा
१ नवकार मंत्र १	१२ वेसणो संदिस्ताउ ए
२ स्थापनाचार्यजीकी तेरह् पडिखेहणा २	१३ राइप्रतिक्रमण० ११
३ खमासमण २	१४ सकलतीर्थन० ११
४ सुगुरुने शाता- सुख पृष्ठा २	१५ ज किंचि १२
५ मुहपत्ती पडिखेहण के पञ्चीश घोख ३	१६ नमुह्युणं १२
६ अगकी पञ्चीश पडिखेहण ४	१७ जावंति चेइआइ १३
७ सामायिकका पञ्चस्काण ६	१८ जावंत केवि साहु १३
८ इरियावहिय ७	१९ परमेष्ठिनम० १४
९ तस्त उत्तरी ७	२० उपसर्गहरस्त० १४
१० अन्नहूससिपण ८	२१ जयधीयराय १५
११ लोगस्त ८	२२ पडिक्कमण ठाय वेका अरवसर १६
	२३ सखस्सवि १६
	२४ इछामि ठामि १७
	२५ वंदणवत्तियाए १८
	२६ पुस्करवरदी १९



ग्रथा० ग्रथोके नाम पृष्ठा	ग्रथां० ग्रथोके नाम पृष्ठां
१७ सिद्धाण बुद्धाणं १०	४२ काजस्सग्गमं स्तु
१८ वेयावच्चगराण ११	तिका पृथक्पाठ ४०
१९ संकासाप्रमा० ११	४३ अट्टाइल्लोसु ४२
२० सुगुरुवांदणां १२	४४ जय जय त्रिजुव
२१ देवसिय आलोउ १३	न० चैत्यवदन ४३
३२ रात्रि संबधिअति	४५ श्रीसीमंधरस्तवन ४४
चार आलोयण १३	४६ महीमरुणपुष्प
३३ अठारे पापस्थान १४	सोवणदेह ४५
३४ आवकवदितासूत्र १६	४७ सिद्धाचलजीका
३५ वदिता सूत्र—	चैत्यवदन ४५
पीठेंका विधि ३३	४८ सिद्धाचलस्तवन ४६
३६ अपुच्छिं ३३	४९ सिद्धाचल स्तुति ४७
३७ आयरियउवज्जाए ३४	५० पडिलेहण ४७
३८ आवश्यककी मु० ३५	५१ सामायिक पारणे
३९ सकलतीर्थनम० ३५	का विधि ४९
४० परसमयतिमिर	५२ जयवदसणजहो ४९
तरणिंका पाठ ३८	५३ संध्याकाल सा
४१ ससारदावास्तुति ३९	मायिक विधि ५१

ग्रथां० ग्रथोके नाम पृष्ठा	ग्रथां० ग्रथोके नाम पृष्ठा
५४ देवसिपडिक	६६ अज्ञणयष्टिय पास
मण विधि ५४	सामिणो ७४
५५ जय तिहुअण ५४	६७ दादाजी श्रीजिनदत्त
५६ जय महायस ६१	सूरिजी आराधन ७५
५७ महावीरस्तुति- विधि सहित ६२	६८ दादाजी श्रीजिनकु शल सूरिजीआराधन ७५
५८ स्तुति कक्षा पीठें का विधि ६४	६९ चणकसाय ७६
५९ श्रुतदेवताकी स्तु० ६७	७० छत्रुशांतिस्तव ७७
६० क्षेत्रदेवताकी स्तु० ६८	७१ कमलवलस्तुति ८०
६१ वरकनक ६८	७२ पार्श्वजिनस्तुति ८१
६२ नमोऽस्तुवर्द्धमा० ६९	७३ जिनस्तुति ८१
६३ चिंतामणिपार्श्व जिन स्तवन ७१	७४ आदिजिनस्तुति ८१
६४ तीस पीठें काठवस्त ग करवेका विधि ७३	७५ शांतिजिनस्तुति ८१
६५ अज्ञणापार्श्वना थका चैत्यवदन ७४	७६ नेमनाथस्तुति ८२
	७७ पार्श्वनाथस्तुति ८२
	७८ महावीरस्तुति ८३
	७९ पादिकादि पडि कमणका विधि ८३
	८० बृहद्वतिचार ८५

अथा० अथोके नाम पृष्ठा	अथा० अथोके नाम पृष्ठा
७१ अतिचारके पी	७१ उवसग्गहर नामक
ठेंका विधि १०६	सप्तम स्मरणम् १४४
७२ भुवनदेवतास्तु० ११०	७२ अक्षयामरस्तोत्र १४५
७३ दस पञ्चस्काण	७३ वृद्धशांतिस्तव १५३
विचार १११	७४ श्रीजिनपजर १६१
७४ पञ्चस्काणके आ	७५ श्रीश्रावक कर
गारोकी संख्या ११९	णीकी सहाय १६४
७५ बृहदजितशांति	७६ अष्टपुहरी पो
प्रथमस्मरणम् ११९	सह विधि १६७
७६ अष्ट अजितशांतिस्तव	७७ पोसहका पञ्च० १६९
द्वितीय स्मरणम् १२७	७८ चोवीस थमिसां
७७ नमिजण नामक	पडिलेहणका पाठ १७३
तृतीय स्मरणम्, १३२	७९ थमिसा कहां
७८ गणधरदेव स्तुति	कहां करणां ? १७४
चतुर्थ स्मरणम् १३५	१०० पांच शक्रस्तर्वे
७९ गुरुपारतत्र्यनामक	देववंदन विधि १७६
पंचम स्मरणम् १३९	१०१ पञ्चस्काण पार
८० सिग्धमवहरउविग्ध	णेंका विधि १७७
नामक षष्ठस्मरणम् १४२	१०२ राहसंधाराविधि १७४

ग्रथां० ग्रथोके नाम पृष्ठा	ग्रथां० ग्रथोके नाम पृष्ठां
१०३ पोसह पारणे का विधि १०६	११७ श्रीसीमधरजीनु वीजु स्तवन. १०७
१०४ दिन जग्या पीठें पोसहसेनेकाविधि १०७	११८ पचमीका वृद्ध स्तवन १११
१०५ रात्रि चठपुहरि पोसहका विधि १०९	११९ छद्युपचमीस्त० ११५
१०६ ठाणेकमणेच० १०४	१२० पार्श्वजिनस्त० ११६
१०७ वीजकी स्तुति १०५	१२१ विमलजिनस्त० ११८
१०८ पचमीकीस्तुति १०६	१२२ एकादशीवृद्ध० ११८
१०९ अष्टमीस्तुति १०७	१२३ तु मेरे मनमें तु मेरेदिलमें स्तवन १२०
११० मौनैकादशी १०८	१२४ मार्गदेशक मो कनो निर्वाणस्तव १२१
१११ पार्श्वजिनस्तु० १०९	१२५ तीर्थमाळास्त० १२२
११२ आंबिलकी स्तु० ११०	१२६ आज आपें चा० १२४
११३ पजोसणस्तुति १०१	१२७ उपदेशमाळा पो सहसहाय १२५
११४ नेमनाथस्तुति १०२	१२८ राइसंधारा पो सहसहाय १२०
११५ दीपमाळास्तु० १०३	१२९ निदावारकस० १२३
११६ सुगुण सनेही साज न सीमधर० स्तुति १०४	

ग्रथां० ग्रथोके नाम पृष्ठा	ग्रथां० ग्रथोके नाम पृष्ठा
१३० सीतासतीस० १३४	सातपद नाटक
१३१ अनाथीनीस० १३६	ना रागमा १४ए
१३२ प्रतिक्रमणस० १३७	१४७सुमतिजिनस्त० १५४
१३३ मांगलिक सर० १३८	१४ए वीरजिनस्त० १५४
१३४ पार्श्वजिनस्त० १४०	१५० श्रीदादाजीस्त० १५५
१३५ पार्श्वजिनस्त० १४१	१५१ दादाजी गुरुदेव
१३६ नेमजिनपद १४१	जीका स्तवन पां
१३७ नेमजिन पद १४२	च, तथा काव्य, स
१३८ ज्ञेरवी रागपद १४२	वश्या ठप्पा १५८
१३९ ज्ञेरवीराग पद १४३	१५२ श्रीगौतमस्वामी
१४० ज्ञेरवीराग पद १४३	का षढा रास १६३
१४१ सिद्धाचक्षस्त० १४३	१५३ स्वकुलप्रकाशक
१४२ सीमधरस्तवन १४४	गुर्वावली १७३
१४३ अष्टापदस्तव० १४५	१५४ सूतकविचार, अथ
१४४ पार्श्वजिनस्त० १४६	घाडविचार, तथा साधु
१४५ शंखेश्वरस्त० १४७	श्रावकके कोनसी वस्तु
१४६ पार्श्वजिनस्त० १४८	कितना बखत पीठें न
१४७ गोपालचदजी कृत	खानी? इनकाविचार १७७

॥ ॐ परमेष्ठिने नम ॥

॥ अथ ॥

॥ श्रीश्रावकस्य विधिसंयुक्त देवसिराइ ॥

॥ प्रतिक्रमणादि सूत्रम् ॥

॥ तत्र प्रथम ॥

॥ प्राजातिक सामायिक विधिप्रारभ ॥

॥ अथ नवकारमंत्र ॥

॥ एमो अरिहंताणं ॥ १ ॥ एमो सिद्धाणं  
॥ २ ॥ एमो आयरियाण ॥ ३ ॥ एमो उववा  
याणं ॥ ४ ॥ एमो लोए सबसाहूणं ॥ ५ ॥ ए  
सो पंच एमुकारो ॥ ६ ॥ सबपावप्पणासणो ॥  
॥ ७ ॥ मंगलाणं च सबेसिं ॥ ८ ॥ पढम ह्वइ  
मगल ॥ ए ॥ इति ॥ १ ॥ यह नवकार तीन  
बेर गुण कें थापनाजीकी थापना करे, तत्र  
तेरे बोल बितवे, सो कहते है ॥

ग्रथा० ग्रथोके नाम पृष्ठां	ग्रथां० ग्रथोके नाम पृष्ठां
१३० सीतासतीस० १३४	सातपद नाटक
१३१ अनाथीनीस० १३६	ना रागमा १४ए
१३२ प्रतिक्रमणस० १३७	१४७सुमतिजिनस्त० १५४
१३३ मागखिक सर० १३८	१४ए वीरजिनस्त० १५४
१३४ पार्श्वजिनस्त० १४०	१५० श्रीदादाजीस्त० १५५
१३५ पार्श्वजिनस्त० १४१	१५१ दादाजी गुरुदेव
१३६ नेमजिनपद १४१	जीका स्तवन पां
१३७ नेमजिन पद १४२	च, तथा काव्य, स
१३८ जेरवी रागपद १४२	वश्या ठप्पा १५८
१३९ जेरवीराग पद १४३	१५२ श्रीगौतमस्वामी
१४० जेरवीराग पद १४३	का षडा रास १६३
१४१ सिद्धाचलस्त० १४३	१५३ स्वकुलप्रकाशक
१४२ सीमभरस्तवन १४४	गुर्वावक्षी १७३
१४३ अष्टापदस्तव० १४५	१५४ सूतकविचार, अस
१४४ पार्श्वजिनस्त० १४६	द्याइविचार, तथा साधु
१४५ शंखेश्वरस्त० १४७	श्रावकके कोनसी वस्तु
१४६ पार्श्वजिनस्त० १४८	कितना वखत पीठे न
१४७ गोपालचदजी कृत	खानी? इनकाविचार १७७

॥ ॐ परमेष्ठिने नम ॥

॥ अथ ॥

॥ श्रीश्रावकस्य विधिसंयुक्त देवसिराइ ॥

॥ प्रतिक्रमणादि सूत्रम् ॥

॥ तत्र प्रथम ॥

॥ प्राजातिक सामायिक विधिप्रारम्भ ॥

॥ अथ नवकारमंत्र ॥

॥ एमो अरिहंताणं ॥ १ ॥ एमो सिद्धाणं  
॥ २ ॥ एमो आयरियाणं ॥ ३ ॥ एमो उवधा  
याणं ॥ ४ ॥ एमो लोए सवसाहूणं ॥ ५ ॥ ए  
सो पंच एमुक्कारो ॥ ६ ॥ सवपावप्पणासणो ॥  
॥ ७ ॥ मगलाणं च सवेसिं ॥ ८ ॥ पढमं ह्वइ  
मगल ॥ ए ॥ इति ॥ १ ॥ यह नवकार तीन  
बेर गुण के ध्यापनाजीकी ध्यापना करे, तब  
तेरे बोल चिंतवे, सो कहते है ॥



॥ अथ थापनाचार्यजीकी तेरे पढिलेहणा ॥

॥ शुद्ध स्वरूप धारुं ॥१॥ ज्ञान ॥ १ ॥ दर्शन ॥ २ ॥ चारित्र ॥ ३ ॥ सहित सद्वहणा शुद्धि ॥ १ ॥ प्ररूपणा शुद्धि ॥ २ ॥ दर्शन शुद्धि ॥ ३ ॥ सहित पाच आचार पालु ॥१॥ पलावुं ॥ २ ॥ अनुमोड ॥ ३ ॥ मनोगुप्ति ॥ १ ॥ वचन गुप्ति ॥२॥ कायगुप्ति ॥ आदरुं ॥३॥ एव तेरे बोल श्रीधर्मरत्नप्रकरणसूत्रवृत्तिमें कहे है ॥इति॥१॥

॥ पीठें गुरुजीके सामने अथवा थापनाचार्यजीके सामने खडा हो के तीन खमासमण देवे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ खमासमण ॥

॥ इत्थामि खमासमणो वदिठ जावणिक्काए निसीहिआए मठएण वंदामि ॥ इति ॥ ३ ॥

॥ अथ सुगुरुने शाता सुखपट्टा ॥

॥ इत्थकारजगवन् सुहराइ, सुहदेवसी, सुख तप ठारीर निराबाध सुखसंयम यात्रा निर्वहो

गोजी ? स्वामी शाता ठेजी ? इति ॥ ४ ॥ ए  
म गुरुने कही नमस्कार करे, तेवारे गुरु कहे  
देवगुरु प्रसाद ॥

॥ पीठिं नचि वैठ के जिमणा हाथ नीचा कर  
के अष्टुठिउमि कहे पीठिं खमासमण दे के इच्छा  
कारेण संदिस्सह नगवन् सामायिक लेवा मु  
हपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे, पडिलेह पीठिं इच्छं  
कही दूजी खमासमण देई मुहपत्ती पडिलेहे ॥

॥ अथ मुहपत्ती पडिलेहणके पच्चीश बोल  
लिखते हे ॥

॥ सूत्र, अर्थ साचो सर्वहुं ॥ १ ॥ सम्यक्त्व  
मोहनी ॥ २ ॥ मिथ्यात्व मोहनी ॥ ३ ॥ मिश्र  
मोहनी ॥ ४ ॥ परिहरुं यह चार बोल मुहपत्ती  
खोलती विरीया कहणा ॥

॥ कामराग ॥ १ ॥ स्नेहराग ॥ २ ॥ दृष्टिराग  
॥ ३ ॥ परिहरु ॥ यह सात बोल प्रथम कहीजे ॥  
॥ सुगुरु ॥ १ ॥ सुदेव ॥ २ ॥ सुधर्म ॥ ३ ॥

आदरु ॥ कुगुरु ॥१॥ कुदेव ॥१॥ कुधर्म ॥ ३ ॥  
 परिहरु ॥ ज्ञान ॥१॥ दर्शन ॥१॥ चारित्र ॥३॥  
 आदरु ॥ यह नव पडिलेहण मावे हाथे करिणि ॥

॥ ज्ञानविराधना ॥१॥ दर्शनविराधना ॥१॥  
 चारित्रविराधना ॥३॥ परिहरु ॥ मनोगुप्ति ॥  
 ॥ १ ॥ वचनगुप्ति ॥ १ ॥ कायगुप्ति ॥ ३ ॥ आ  
 दरु ॥ मनोदंरु ॥ १ ॥ वचनदंरु ॥ १ ॥ कायदं  
 रु ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ यह नव पडिलेहण जिम  
 णे हाथसें करणी ॥ यह पच्चीश बोल मुह  
 पत्तीके जानने ॥

अव अगकी पच्चीश पडिलेहण लिखते हे ॥

॥ कृष्णलेश्या ॥१॥ नीललेश्या ॥१॥ कापो  
 तलेश्या ॥३॥ ए तीनु निजाडे मस्तके परिहरुं ॥

॥ कृद्दिगारव ॥१॥ रसगारव ॥१॥ शाता  
 गारव ॥ ३ ॥ ए तीनुं मुखे परिहरु ॥

॥ मायाशल्य ॥१॥ नियाणाशल्य ॥१॥ मि  
 त्तदंसणशल्य ॥३॥ ए तीन दीये परिहरु ॥

॥ क्रोध ॥ २ ॥ मान ॥ १ ॥ ए दोय जिमणे  
खन्ने परिहरुं ॥

॥ माया ॥ २ ॥ लोभ ॥ १ ॥ ए दोय नावे  
खन्ने परिहरुं ॥

॥ हास्य ॥ २ ॥ रति ॥ १ ॥ अरति ॥ ३ ॥  
ए तीन नावे हाथे परिहरुं ॥

॥ जय ॥ २ ॥ शोक ॥ १ ॥ उगंडा ॥ ३ ॥  
ए तीन जिमणे हाथे परिहरुं ॥

॥ पृथ्वीकाय ॥ २ ॥ अण्णकाय ॥ १ ॥ तेऊका  
य ॥ ३ ॥ ए तीन नावे पगे परिहरुं ॥

॥ वाडकाय ॥ २ ॥ वनस्पतिकाय ॥ १ ॥ त्रस  
काय ॥ ३ ॥ ए तीन जिमणे पगे परिहरु ॥ इति  
मुहपति पडिलेहणा सपूर्णा ॥ ५ ॥

॥ पीठे खडा दोय केँ इच्छामि खमासमणका  
पाठ कहे केँ इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् ॥  
सामायिक सदिससावु ? गुरु कहे सदिससावेह  
॥ पीठे इत्तं कहे के फेर खमासमण दे केँ इच्छा ॥

॥ न० ॥ सामायिक ठाउ ? गुरु कहे ठाएह ॥

॥ पीठि इठं कही खमासमण देइ थोडो जुकी  
तीन नवकार गणी इठाकारेण सदिस्सह जग  
वन् पसाउ करी सामायिक दम्क उच्चरावोजी ॥  
गुरु कहे उच्चरावेमो ॥ पीठि करेमि जते सामाइ  
य इत्यादि सामायिक सूत्र तीन वार उच्चरे ॥

॥ अथ सामायिकनु पञ्चखाण ॥

॥ करेमि जंते सामाइय, सावळं जोगं पञ्च  
खामि ॥ जावनियम पङ्कुवासामि ॥ इविहं ति  
विदेण मणेण वायाएकाएण, न करेमि, न कार  
वेमि, तस्स जंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहा  
मि अप्पाण वोसिरामि ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ पीठिं खमासमण दे केँ इठाकारेण सदिस्सह  
जगवन् इरियावहिय पडिक्कमामि ॥ गुरु कहे  
पडिक्कमह पीठि इठं कही ॥ इठामि पडिक्कमिजं  
इरियावहियाए इत्यादि पाठ कहे, मो खिरते ॥

॥ अथ इरियावद्वियं ॥

॥ इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् ॥ इरियाव  
द्वियं पडिक्कमामि ॥ इत्थं इच्छामि पडिक्कमिजं ॥  
॥ १ ॥ इरियावद्वियाए विराहणाए ॥ २ ॥ गम  
णागमणे ॥ ३ ॥ पाणक्कमणे वीयक्कमणे हरियक्क  
मणे ॥ उसा उत्तिग पणग दग मट्टी मक्कड सं  
ताणा संकमणे ॥ ४ ॥ जे मे जीवा विराहिया  
॥ ५ ॥ एग्गिंदिया वेइदिया तेइदिया चउरिंदिया  
पचिंदिया ॥ ६ ॥ अज्जिहया वत्तिया लेसिया  
संघाइया सघट्टिया परियाविया ॥ किलामिया  
उद्विया ठाणाउ ठाणं संकामिया जीवियाउ वव  
रोविया ॥ तस्स मिच्छामि उक्कड ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ तस्स उत्तरी ॥

॥ तस्स उत्तरीकरणेणं ॥ पायत्ति करणेण ॥  
विसोदीकरणेणं ॥ विसल्लीकरणेणं ॥ पावाणं क  
म्माण ॥ णिग्घायणाए ॥ ठामि काउस्सग्गं ॥ ७ ॥

॥ न० ॥ सामायिक ठाउ ? गुरु कहे ठाएह ॥

॥ पीठि इठं कही खमासमण देइ थोडो जुकी  
तीन नवकार गणी इठाकारेण सदिससह जग  
वन् पसाउ करी सामायिक दमक उच्चरावोजी ॥  
गुरु कहे उच्चरावेमो ॥ पीठिं करेमि जते सामाइ  
य इत्यादि सामायिक सूत्र तीन वार उच्चरे ॥

॥ अथ सामायिकनु पञ्चस्काण ॥

॥ करेमि जते सामाइय, सावळु जोगं पञ्च  
स्कामि ॥ जावनियम पङ्गुवासामि ॥ उविह ति  
विहेण मणेण वायाए काएण, न करेमि, न कार  
वेमि, तस्स जते पडिक्कमामि निंदामि गरिहा  
मि अण्णाण वोसिरामि ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ पीठि खमासमण दे के इठाकारेण सदिससह  
जगवन् इरियावहिय पडिक्कमामि ॥ गुरु कहे  
पडिक्कमह पीठि इठ कही ॥ इठामि पडिक्कमिउं  
इरियावदियाए इत्यादि पाठ कहे, मो लिखने ॥

॥ १ ॥ उसन्न मजिअ च वदे ॥ संजव मज्जिणं  
 दणं च सुमइ च ॥ पउमप्पहं सुपासं ॥ जिणं च  
 चंदप्पहं वदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदतं ॥ सी  
 अल सिङ्गस वासुपुङ्गं च ॥ विमल मणंत च  
 जिण ॥ धम्मं संतिं च वदामि ॥ ३ ॥ कुयुं अ  
 रं च मच्चि ॥ वंदे सुणिसुवयं नमि जिण च ॥ वं  
 दामि रिठ्ठनेमिं ॥ पासं तद्द वद्धमाण च ॥ ४ ॥  
 एव मए अनियुआ ॥ विदुय रय मला पहीण  
 जरमरणा ॥ चउवीसपि जिणवरा ॥ तिठ्ठयरा  
 मे पसीयतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया ॥ जे  
 ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ॥ आरुग्ग वोहिला  
 न ॥ समाहिवर सुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चदेसु नि  
 म्मलयरा ॥ आइच्चेस अहिय पयासयरा ॥  
 ॥ अथ तस्स उत्तरी-

॥ तस्स उत्तरीकरणेण ॥ पायचित्त करणेण ॥  
 वि-  
 दीकरणेणं ॥ विसद्धीकरणेणं ॥ पावाण क  
 ग्गघायणघाए मि काउस्सग्ग ॥ ७ ॥



॥ अथ अन्नञ्ज उतसिएण ॥

॥ अन्नञ्ज उतसिएण नीससिएण खासिए  
ण वीएण जनाइएण उहुएण वायनिसग्गेण न  
मलिए पित्तमुत्ताएण ॥ १ ॥ सुद्धमेहिं अगसचा  
लेहि ॥ सुद्धमेहिं खेलसचालेहिं ॥ सुद्धमेहिं दि  
छिमचालेहि ॥२॥ एवमाइएहिं आगारेहिं ॥  
अन्नग्गो अविराहित ॥ दुक्क मे काउस्सग्गो  
॥ ३ ॥ जाव अरिहताण नगवताणं नमुक्कारेणं  
न पारेमि ॥ ४ ॥ तावकाय ठाणेणं मोणेणं जां  
णेण अप्पाण वोसिरामि ॥५॥ इति ॥ ६ ॥ इहां  
चार नवकार अथवा एक लोगस्सको काउस्स  
ग्ग करे पीठे एमो अरिहंताण कहे के काउस्स  
ग्ग पारकें मुखसें प्रगट्ठ लोगस्स कहे, सो  
नगवने डौरथा

॥ अथ लोगस्स ॥

॥ लोगस्स उक्कोअगरे ॥ धम्म तिठयरे जि  
णे ॥ अरिहते कित्तइस्स ॥ ७ ॥

केवाली

॥ अथ राई प्रतिक्रमणविधि प्रारंभ ॥

॥ प्रथम एक खमासमणदे के इच्छा ॥ न ॥  
 त्यवदन करुं ? गुरु कहे करेह ॥ पवि इच्छ क  
 जयज सामि जयज सामि इत्यादि कहे, सोही  
 नखते हैं ॥

॥ अथ सकलतीर्थंकरनमस्कारो लिख्यते ॥  
 । जयज सामिय जयज सामिय, रिसह सेतुंजि  
 उज्जति ॥ पहु नेमिजिण, जयज वीर सच्चजरिमं  
 ऋण ॥ १ ॥ नरुअच्छेह मुणिसुवय, महुरिपास  
 छह छरिय खंण ॥ अवरविदेहिज तिब्बर, चि  
 हुंदिसि विदिसि ज केवि ॥ तीआणागय सपयं,  
 वंडु जिण सवेवि ॥ २ ॥

॥ कम्मजूमिहिं कम्मजूमिहिं पढम सघयणि  
 ॥ उक्कोसज सत्तरिसज, जिणवराण विहरत ल  
 प्रई ॥ नवकोडीहिं केवल्लिण, कोडि सहस्स न  
 व साहु संपइ ॥ संपइ जिणवर वीस मुणि, विहु  
 कोडीहिं वरणाण ॥ समणह कोडी सहस्स छई,

च कहे के वली खमासमण दे कर ॥ इत्ता० ॥  
 जगवनू बेसणो ठाजं ? गुरु कहे ठाएह ॥ फेर इ  
 च कहे के खमासमण दे कर इत्ता० ॥ ज० ॥ सि  
 ज्ञाय सदिससावु ? गुरु कहे संदिससावेह ॥ पीठिं  
 इत्तं कहे के वली खमासमण दे कर इत्ता० ॥ ज  
 ग० ॥ सिधाय करुं ? गुरु कहे करेह ॥ फेर खमा  
 समण दे के खडे हो कर ध्याठ नवकार कह क  
 र सधाय करे तथा जो शीतकाळादि होवेतो  
 खमासमण दे के इत्ता० ॥ ज० ॥ पागरणो सं  
 दिससावु ? गुरु कहे संदिससावेह ॥ पीठिं इत्तं  
 कह कर खमासमण दे कर इत्ता० ॥ ज० ॥ पां  
 गरणो पडिग्घाजं ? गुरु कहे पडिग्घाएह ॥ पीठिं  
 इत्तं कही वस्त्र ग्रहण करे तथा सामायिकवंत  
 अथवा पोसासहित श्रावक वाटे तो "वटामो"  
 ऐमो कहे छोर जो कोई दूसरो वाटे तो, सिधा  
 य करेह एमे कहे ॥ इति प्राजातिकमामायिक ॥

। ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसियाणं ॥ धम्मना  
 पगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाजरतचक्कव  
 ड्डीणं ॥ ६ ॥ अण्णडिहय वरणाण दंसण धराणं,  
 विअट्ट वणमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जावयाणं, ति  
 न्नाणं तारयाणं, बुद्धाण बोद्धयाणं, मुत्ताणं मो  
 अगाण ॥ ८ ॥ सबन्नूणं सबदरिसिण, सिव म  
 यल मरुअ मणंत मरुकय मवावाद् मपुणरावि  
 ति ॥ सिद्धि गइ नामधेयं ॥ ठाण संपत्ताणं, न  
 मो जिणाणं, जिअ नयाणं ॥ ९ ॥ जेअ अई  
 आ सिद्धा ॥ जेअ नविस्संति णागए काले ॥  
 संपइअ वट्टमाणा ॥ सबे तिविहेण वंदामि ॥ १३ ॥

॥ अथ जावंति चेइआइं ॥

॥ जावंति चेइआइं ॥ उट्टेअ अहेअ तिरि  
 अ लोएअ ॥ सवाइं ताइं वंदे ॥ इहसंतो तव  
 सताइ ॥ १ ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ अथ जावत केवि सादू ॥

॥ जगवन् जावंत केवि सादू ॥ नरहेरवय म

थुणिङ्गनिच्च विहाण ॥ २ ॥ सत्ताणवइ सहस्सा,  
 लखा षण्ण अठ कोडीत्त ॥ चउसय गयासी  
 या, तिब्बुक्के चेइए वदे ॥ १ ॥ वंदे नव कोडि स  
 य, पणवीसं कोडि लख तेवन्ना ॥ अठ्ठावीस  
 सहस्सा, चउसय अठ्ठासिया पडिमा ॥ ३ ॥ ११ ॥

॥ अथ जंकिंचि ॥

॥ ज किंचि नाम तिब्ब ॥ सग्गे पायाले मा  
 णुमे लोए ॥ जाइं जिणबिंबाइं ॥ ताइं सवाइ  
 वदामि ॥ २ ॥ इति ॥ ११ ॥

॥ अथ नमुत्तुण वा शक्रस्तव ॥

॥ नमुत्तुणं अरिहताणं, जगवताणं ॥ १ ॥  
 आइगराण, तिब्बगराण, सय सबुद्धाण ॥ १ ॥  
 पुरिसुत्तमाण, पुरिससीहाण, पुरिसवरपुम्परी  
 आण, पुरिसवरगधद्वीण ॥ ३ ॥ लोचुत्तमाण,  
 लोगनाहाणं, लोगदिआण, लोगपर्इवाण, लो  
 गपक्कोअगराण ॥ ४ ॥ अजयटयाणं, चस्कुद  
 याण ॥ मग्गटयाण, सरणटयाण, वोद्विदयाण

॥ अथ जयवीअराय ॥

॥ जय वीअराय जगगुरु ॥ होउ मम तुह  
 ज्ञावउ जयव ॥ जवनिवेउ मग्गा, एुसारि  
 आ इठ फलसिंधी ॥ १ ॥ लोगविरुद्धवाउ ॥  
 गुरुजणपूआ परउकरण च ॥ सुहगुरुजोगोत  
 वय, ए सेवणा आनव मखंमा ॥ २ ॥ १७ ॥

॥ इत्यादि जयवीअराय पर्यंत चैत्यवंदन करे ॥  
 पीठि खमासमण दे के इठा० ॥ न० ॥ कुसुमिण  
 कुसुमिण राई पायचित्त विसोदणं काउस्सग्ग  
 करु ? गुरु कहे करेइ पीठिं इठं कइ करकुसुमि  
 ण कुसुमिण राई पायचित्त विसोदणं करेमि  
 काउस्सग्गं ॥ अन्नं उससिएणं ॥ इत्यादि पाठ क  
 हे के सोले नवकार अथवा चार लोगस्सका  
 चदेसु निम्मलयरा पर्यंत चिंतन कर के काउ  
 स्सग्ग करे ॥ पीठिं एमो अरिद्धताण कइ कर का  
 उस्सग्ग पारकि मुखसें एक लोगस्सका पाठ प्र  
 गट कहे जो रात्रिमे गुण सबधि मोटको दूषण

द्वाविदेहे अ ॥ सवेसि तेसि पणउ ॥ तिविहेण  
तिदरु विरयाण ॥ २ ॥ इति ॥ २५ ॥

॥ अथ परमेष्ठिनमस्कार ॥

॥ नमोऽर्हत्सिःशाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्य ॥

॥ अथ उपसर्गहरस्तवन ॥

॥ उवसग्गहर पास ॥ पासं वंदामि कम्म  
घणमुक्क ॥ विसहरविसनिन्नास ॥ मगलकङ्खा  
णआवास ॥ २ ॥ विसहरफुल्लिगमंतं ॥ कंठे  
धारेइ जो सया मणुउ ॥ तस्स गहरोगमारी ॥  
इठ जरा जंति उवसाम ॥ १ ॥ चिठउ दूरे मं  
तो ॥ तुव पणामो वि बहुफलो होइ ॥ नरतिरि  
एसुवि जीवा ॥ पावंति न इस्क दोहग्ग ॥ ३ ॥  
तुह सम्मत्ते लद्धे ॥ चिंतामणि कप्पपायवप्रहि  
ए ॥ पावति अविग्घेणं ॥ जीवा अयरामर ठा  
ण ॥ ४ ॥ इअ सथुउ महायस ॥ नत्तिप्ररनि  
प्ररेण हिअएण ॥ ता देव दिक्क बोहिं ॥ नवे  
नवे पासजिणचट ॥ ५ ॥ इति ॥ २६ ॥

॥ अथ जयवीच्यराय ॥

॥ जय वीच्यराय जगगुरु ॥ होउ ममं तुह  
 ज्ञावउं जयवं ॥ जवनिवेउं मग्गा, एुसारि  
 आ इठ फलसिन्धी ॥ १ ॥ लोगविरुद्धवाउं ॥  
 गुरुजणपूआ परब्रकरण च ॥ सुदगुरुजोगोत  
 वय, ए सेवणा आनव भखंभा ॥ २ ॥ १७ ॥

॥ इत्यादि जयवीच्यराय पर्यंत चैत्यवंदन करे ॥  
 पीठि खमासमण दे के इच्छा ॥ न ॥ कुसुमिण  
 कुसुमिण राई पायबित्त विसोदण्ठं काउस्सग्ग  
 करु १ गुरु कहे करेह. पीठिं इच्छं कहे करकुसुमि  
 ण कुसुमिण राई पायबित्त विसोदण्ठं करेमि  
 काउस्सग्गं ॥ अन्नं उससिएणं ॥ इत्यादि पाठ क  
 हे के सोले नवकार अथवा चार लोगस्सका  
 चदेसु निम्मलघरा पर्यंत चिंतन कर के काउ  
 स्सग्ग करो ॥ पीठि एमो अरिहताण कहे कर का  
 उस्सग्ग पारकि मुखसें एक लोगस्सका पाठ प्र  
 गट कहे जो रात्रिमें गुण संबंधि मोटको दूषण



लागो होवे तो काजस्सग्गमांहे ॥ सागरवरगं  
नीरा ॥ पर्यंत चिंतवे ॥ इति संप्रदाय ॥

॥ अथ पडिक्कमणां ठायवेका अवसर हुवा ॥  
जब खमासमण देइ श्रीआचार्यजी मिश्र क  
हि के वादीयें ॥ १ ॥ खमासमण देई श्रीजपाध्या  
यजी मिश्र कहि कें वादीयें ॥ २ ॥ खमासमण  
देइ जंगम युगप्रधान वर्तमान नटारक श्रीपू  
ज्यजीका नाम ले कें वादीये ॥ ३ ॥ खमासमण  
देई कें सर्व साधुजीकु वादीयें ॥ ४ ॥ इस तरे  
चार खमासमणसें पडिक्कमणा ठावी गोमालीयें  
बैठ के मस्तक नमाय कर दोनु हाथे मुहपत्ती मु  
हडे दे कर ॥ सबस्सविराइय ॥ इत्यादि पाठ कहे  
परतु इच्छाकारेणसदिस्सह इत्वं इस माफकन कहे  
॥ अथ सबस्सवि ॥

॥ सबस्सवि देवसिअ इत्थिअ इप्रासिय इ  
चिठिअ इच्छाकारेण

स्स मिढा मि ड्कडं ॥ इति ॥ १७ ॥ सवेरका  
वसिके ठिकाने राइयं ऐसा पाठ कहे ॥

॥ पठि नमुहुण कद् के खडा दोय के ॥ करेमि  
नंते सामाइयं सावधं जोगं पच्चस्कामि ॥ इत्या  
दिक पाठ कहे ॥ पठि इढामि ठामि काउस्सग्गं  
जो मे राइउण ॥ यह पाठ कहे, सो लिखते है ॥

॥ अथ इढामि ठामि ॥

॥ इढामि ठामि काउस्सग्गं ॥ जोमे देवसिउ  
अइआरो कउ ॥ काइउ वाइउ माणसिउ ॥ उ  
स्सुत्तो उम्मग्गो अकण्णो ॥ अकरणिज्जो ॥ इधा  
उ ॥ इविचिंतिउ अणायारो ॥ अणिड्धिअवो ॥ अ  
सावगपाउग्गो ॥ नाणे तह दंसणे चरित्ताचरित्ते  
॥ सुए सामाइए ॥ तिन्हं गुत्तीणं ॥ चउन्हं कसा  
याण ॥ पंचन्हमणुवयाणं ॥ तिन्हं गुणवयाणं ॥  
चउन्हं सिस्कावयाणं ॥ वारसवियस्स सावगध  
म्मस्स ॥ ज खमिअं जं विराड्धिअं ॥ तस्स मि

जागो होवे तो काजस्सग्गमांहे ॥ सागरवरगं  
नीरा ॥ पर्यंत चिंतवे ॥ इति संप्रदाय ॥

॥ अब पडिक्कमणां ठायवेका अबसर हुवा ॥  
जब खमासमण देइ श्रीआचार्यजी मिश्र क  
हि के वादीये ॥ १ ॥ खमासमण देई श्रीजपाध्या  
यजी मिश्र कहि के वादीये ॥ २ ॥ खमासमण  
देइ जंगम युगप्रधान वर्तमान नटारक श्रीपू  
ज्यजीका नाम ले के वादीये ॥ ३ ॥ खमासमण  
देई के सर्व साधुजीकुं वादीये ॥ ४ ॥ इस तरे  
चार खमासमणसें पडिक्कमणा ठावी गोमालीये  
बैठ के मस्तक नमाय कर दोनु हाथे मुहपत्ती मु  
हडे दे करा ॥ सबस्सविराइय ॥ इत्यादि पाठ कहे  
परंतु इठाकारेणसदिस्सह इवं इस माफकन कहे  
॥ अथ सबस्सवि ॥

॥ सबस्सवि देवसिअ इच्छिंतिअ इप्रासिय इ  
धिच्छिअ इठाकारेण संदिस्सह जगवन इच्छं ०

स्स मिठामि डक्कडं ॥ इति ॥ १७ ॥ सवेरका  
वसिके ठिकाने राइयं ऐसा पाठ कहे ॥

॥ पंठिं नमुहुण कहे के खडा होय के ॥ करेमि  
नंते सामाइयं सावधं जोगं पच्चस्कामि ॥ इत्या  
दिक पाठ कहे ॥ पंठिं इठामि ठामि काउस्सग्गं  
जो मे राइउं ॥ यह पाठ कहे, सो लिखते है ॥

॥ अथ इठामि ठामि ॥

॥ इठामि ठामि काउस्सग्गं ॥ जोमे देवसिउ  
अइआरो कउ ॥ काइउ वाइउ माणसिउ ॥ उ  
स्सुत्तोउम्मग्गो अकण्णो ॥ अकरणिज्जो ॥ उधा  
उ ॥ उविचिंतिउअणायारो ॥ अणिठिअवो ॥ अ  
सावगपाउग्गो ॥ नाणे तह दंसणे चरित्ताचरित्ते  
॥ सुए सामाइए ॥ तिन्हं गुत्तीणं ॥ चउन्हं कसा  
याणं ॥ पंचन्हमणुवयाणं ॥ तिन्हं गुणवयाणं ॥  
चउन्हं सिस्कावयाणं ॥ वारसवियस्स सावगध  
म्मस्स ॥ जं खमिअं जं विराहिअं ॥ तस्स मि

लागो होवे तो काजस्सग्गमाहे ॥ सागरवरगं  
नीरा ॥ पर्यंत चिंतवे ॥ इति संप्रदाय ॥

॥ अत्र पडिक्कमणां ठायवेका अवसर दुवा ॥  
जब खमासमण देइ श्रीआचार्यजी मिश्र क  
हि कें वादीये ॥ १ ॥ खमासमण देई श्रीजपाध्या  
यजी मिश्र कहि कें वादीये ॥ २ ॥ खमासमण  
देइ जगम युगप्रधान वर्तमान जट्टारक श्रीपू  
ज्यजीका नाम ले कें वादीये ॥ ३ ॥ खमासमण  
देई कें सर्व साधुजीकु वादीये ॥ ४ ॥ इस तरे  
चार खमासमणसें पडिक्कमणा ठावी गोमालीये  
वैठ के मस्तक नमाय कर दोनु हाथे मुहपत्ती मु  
हडे दे कर ॥ सबस्सविराइय ॥ इत्यादि पाठ कहे.  
परतु इठाकारेणसदिस्सह इठं इस माफकन कहे  
॥ अथ सबस्सवि ॥

॥ सबस्सवि देवसिअ इत्थिअ इप्रासिय इ  
च्चिअ इठाकारेण सट्ठिम्मठ जगवन् इठं ॥

शुद्धि निमित्त पुस्करवरदी॥ सुयस्स जगवत्तक  
रेमिकात्तस्सग्गं॥ इत्यादि पाठ कहे, सो लिखते हैं

॥ अथ पुस्करवरदी ॥

॥ पुस्करवरदीवद्धे, धायइसंमे अ जबुदीवि  
अ ॥ नरहे रवय विदेहे, धम्माइगरे नमंसा  
मि ॥ १ ॥ तमतिमिरपरुलविद्ध, सणस्स सु  
रणनरिंदमहिअस्स ॥ सीमाधरस्स वंदे, प  
प्फोद्धिअ मोद्धजात्तस्स ॥ २ ॥ जाई जरामरण  
सोगपणासणस्स, कक्खाण पुस्कलविसात्तसुहा  
वद्धस्स ॥ को देवदाणव नरिंदगणच्चिअस्स, ध  
म्मस्स सार सुवल्लपू करे पमाथ ॥ ३ ॥ सिद्धे  
जो पयत्त एमो जिणमए, नदी सया सजमे ॥  
देव नाग सुवन्न किन्नर गण, स्सपूअ जावच्चि  
ए ॥ लोगो जत्त पइठित्त जगमिण, तेलुक्कमच्चा  
सुरं ॥ धम्मो वद्धत्त सात्तत्त विजयत्त, धम्मत्तरं  
वद्धत्त ॥ ४ ॥ इति ॥ १ ॥ सुअस्स जगवत्त करेमि  
कात्तस्सग्गं वंदणवत्तिआएण ॥ एपाठ पूर्ण कह

ज्ञा मि डकड ॥ इति ॥ इहां देवसियके ठिकाने  
राइयं कहेनां ॥ इति ॥ २ए ॥

॥ पठि तस्सुत्तरीण ॥ अन्नत्त उससिएण कइ व  
र चारित्रशुद्धि निमित्त चार नवकार अथवा ए  
क लोगस्सका काउस्सग्ग करी पारि के दर्शन  
शुद्धि निमित्तें प्रगट लोगस्स कही सबलोप  
अरिहंत चेइआए ॥ करेमि काउस्सग्ग वंदण  
त्तिआए ॥ इत्यादि कहनां, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ वदणवत्तिआए ॥

॥ वंदणवत्तिआए, पूअण वत्तिआए ॥ सका  
र वत्तिआए, सम्माण वत्तिआए ॥ बोहिलान  
वत्तिआए ॥ निरुवसग्ग वत्तिआए ॥ २ ॥ स  
आए मेहाए धीईए ॥ धारणाए अपुपेहाए ॥  
वद्धमाणीए ठामि काउस्सग्ग ॥ २ ॥ इति ॥ २० ॥

॥ पठि अन्नत्त ॥ कही चार नवकार अथवा एक  
लोगस्सका काउस्सग्ग करके पार के ज्ञानाचार

॥ अथ वेयावच्चगराण ॥

॥ वेयावच्चगराणं संतिगराणं ॥ सम्मदिष्टि  
समादिगराणं ॥ इति ॥ करेमि काउस्सग्ग ॥  
अन्नञ्ज ॥ इति ॥ १३ ॥

॥ पीठे संभासा प्रमार्जन पूर्वक बैठ के तीसरे  
आवस्सग सूत्र वादणा निमित्ते मुहपत्ती पडिले  
हु ? गुरु कहे पडिलेएह ॥ मुहपत्ती पडिलेहे.  
पीठे वादणा दे. तिनका विधि कहते है ॥

॥ अवग्रहके बाहिर उचा दूआ आधा नीचा  
नम कर इच्छामि खमासमणो वंदितं जावणिञ्जा  
ए निसीदिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं. इत  
ना पाठकह कर जूमि प्रमार्जन करता दूआ नि  
सीदि कह के कबुक अवग्रहमें प्रवेश कर के सं  
भासा प्रमार्जन कर के उक्कडबैठ के नावे हाथमें  
मुहपत्ति ले के नावे कानसें ले के जिमणा कान  
पर्यंत निह्लाड पूजा, मुहपत्ती आगे रख के ति  
सके मध्य जागमे गुरुचरणकी कल्पना क



कर अन्नचूससिएणं कद् केँ आठ नवकार अ  
 थवा दो लोगस्सका काजस्सग्ग करे. काजस्स  
 ग्गके माहे आञ्जुणा चार प्रहर चितवे सो आगें  
 लिखेंगे पीठे सिद्धानं बुद्धानंका पाठ कहे, सो  
 लिखते हैं ॥

॥ अथ सिद्धानं बुद्धानं ॥

॥ सिद्धानं बुद्धानं, पारगयाणं परंपरगयाणं  
 ॥ लोअग्ग सुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धानं  
 ॥ २ ॥ जो देवाणवि देवो, जं देवा पंजली नर्म  
 संति ॥ त देव देव महिअं, सिरसा वंदे महावी  
 रं ॥ १ ॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स  
 वध्माणस्स ॥ संसारसागरानं, तारेइ नरं व ना  
 र्णि वा ॥ ३ ॥ उक्कित्ते सेल सिद्धरे, दिस्सा नाणं  
 निसीद्धिआ जस्स ॥ तं धम्मचक्कवट्ठि, अरिह  
 नेमिं नमसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अठ दस वे, य  
 वदिया जिणवरा चउवीस ॥ परमठ निठिअठा,  
 सिद्धानं सिद्धिं मम हिमंतु ॥ ५ ॥ इति ॥ २७ ॥

॥ अथ वेयावच्चगराण ॥

॥ वेयावच्चगराणं संतिगराणं ॥ सम्मद्विधि  
समाह्विगराणं ॥ इति ॥ करेमि काजस्सग्ग ॥  
अन्नत्त ॥ इति ॥ १३ ॥

॥ पीठिं संभासा प्रमार्ज्जन पूर्वक बैठ के तीसरे  
आवस्सग सूत्र वादणा निमित्तें मुहपत्ती पडिले  
हुं ? गुरु कहे पडिलेएह ॥ मुहपत्ती पडिलेहे.  
पीठि वादणां दे तिनका विधि कहते है ॥

॥ अवग्रहके बाहिर उजा दूआ आधा नीचा  
नम कर इत्थामि खमासमणो वदिउ जावणिल्ला  
ए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं इत  
ना पाठ कह कर नूमि प्रमार्जन करता दूआ नि  
सीहि कह के कबुक अवग्रहमें प्रवेश कर के सं  
भासा प्रमार्जन कर के उक्कडबेठ के भावे हाथमें  
मुहपत्ति ले के भावे कानसें ले के जिमणा कान  
पर्यंत निह्वाड पूंजी, मुहपत्ती आगे रख के ति  
सके मध्य जागमे गुरुचरणकी कल्पना क

कर अन्नचूससिएण कद् केँ थाठ नवकार अ  
 थवा दो लौगस्सका काजस्सग्ग करे काजस्स  
 ग्गके माढे आजुणा चार प्रहर चिंतवे सो आगेँ  
 लिखेंगे पीठे सिधाण बुधाणंका पाठ कहे, सो  
 लिखते हैं ॥

॥ अथ सिधाण बुधाणं ॥

॥ सिधाण बुधाणं, पारगयाण परंपरगयाण

॥ लोअग्ग सुवगयाण, नमो सया सबसिधाणं

॥ १ ॥ जो देवाणवि देवो, ज देवा पंजली नमं

संति ॥ त देव देव महिअं, सिरसा वंदे महावी

रं ॥ २ ॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स

वध्माणस्स ॥ संसारसागराज, तारेइ नरं व ना

रिं वा ॥ ३ ॥ उक्कित्ते सेल सिद्धरे, दिक्का नाणं

निसीहिअ जस्स ॥ तं धम्मचक्कवडिं, अरिठ

नेमिं नमंसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अठ दस दो, य

वदिया जिणवरा चउवीसं ॥ परमठ निठिअठा,

सिधा सिधिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥ इति ॥ २२ ॥

॥ अथ वेयावच्चगराण ॥

॥ वेयावच्चगराण संतिगराणं ॥ सम्महिष्ठि  
समाहिगराण ॥ इति ॥ करेमि काउस्सग्ग ॥  
अन्नत्तण ॥ इति ॥ २३ ॥

॥ पविं संभासा प्रमार्ज्जन पूर्वक बैठ के तीसरे  
आवस्सग सूत्र वादणा निमित्ते सुहपत्ती पडिले  
हुं ? गुरु कहे पडिलेएह ॥ सुहपत्ती पडिलेहे.  
पविं वादणा दे तिनका विधि कहते है ॥

॥ अवग्रहके बाहिर उजा दूआ आधा नीचा  
नम कर इत्तामि खमासमणो वंदिउं जावणिक्का  
ए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं. इत  
ना पाठकह कर नूमि प्रमार्जन करता दूआ नि  
सीहि कह के कबुक अवग्रहमें प्रवेश कर के सं  
भासा प्रमार्जन कर के उक्कहबेठ के नावे हाथमें  
सुहपत्ति ले के नावे कानसें ले के जिमणा कान  
पर्यंत निह्लाह पूजा, सुहपत्ती आगे रख के ति  
सके मध्य जागमे गुरुचरणकी कल्पना क

र के ॥ अहो काय इत्यादि आवर्त कर के ककुक्  
नीचा नम कर मस्तके अजलि कर के गुरु सन्धु  
ख दृष्टि स्थापन कर के ॥ खमणिको जे किल्ल  
मो ॥ इत्यादि पाठ कहे पठि फेर ॥ जत्ता जे ॥  
इत्यादि आवर्तन कर के खडा हो के पठि पगसें  
भूमि पूंजता दूआ अवग्रहसें बाहिर निकलके  
स्वस्थान पर आवे जहां ॥ आवस्सियाए ॥  
इत्यादि पाठ सर्व कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ सुगुरुवादणा ॥

॥ इत्थामि खमासमणो वदिठं, जावणिक्काए  
निसीहिआए ॥ अणुजाणह मे मिउग्गहं निसी  
हि ॥ अहो कार्य काय संफासं, खमणिको जे  
किल्लामो ॥ अप्पकिलंताण बहु सुजेण जे, दि  
वसो वइकंतो जत्ता जे जवणिक्कं च जे, खामे  
मि खमासमणो ॥ देवसिअं वइक्कम्मं आवसि  
आए, पडिक्कमामि खमासमणार्णं ॥ देवसिआ  
ए, आसायणाए ॥ तित्तीसन्नयराए जं किंचि मि

ङाए, मणङ्कडाए वयङ्कडाए, कायङ्कडाए  
 कौंहाए, माणाए, मायाए, लोनाए, सबकालि  
 आए, सब मिन्नोवयाराए, सबधन्माइकमणा  
 ए ॥ आसायणाए जो मे अइआरो कउ, तस्स  
 खमासमणो पडिक्कमामि ॥ निंदामि गरिहामि  
 अप्पाण वोसिरामि ॥ १ ॥ दूजी वारके वांदणें  
 आवसिआए ए पद न कहेना, अने राइये  
 राइउ वइकंतो, तथा चउमासीयिं चउमासीउ वइ  
 कंतो, पस्कीयिं पस्को वइकंतो, संवहरीयि संवह  
 रीउ वइकतो ॥ एसीतरे पाठ कहेनां ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ अथ देवसियं आलोउ ॥

॥ इहाकारेण संदिस्सह जगवन् देवसिय  
 आलोउ इह ॥ आलोएमि, जो मेण ॥ इति ॥ १५ ॥  
 देवसियके विकाने राइय कहेनां ॥

॥ पविं रात्रि संबंधि अतिचार गुरु समद्ध  
 आलोवे, सो कहेते है ॥

र के ॥ अहो कायं इत्यादि आवर्त कर के ककु  
नीचा नम कर मस्तके अजलि कर के गुरु सन्धु  
ख दृष्टि स्थापन कर के ॥ खमणिज्जो ने किष्ठा  
मो ॥ इत्यादि पाठ कहे पठि फेर ॥ जत्ता ने ॥  
इत्यादि आवर्तन कर के खडा होके पठि पगसें  
चूमि पूजता हूआ अवग्रहसें वाहिर निकलके  
स्वस्थान पर आवे उहा ॥ आवस्सियाए ॥  
इत्यादि पाठ सर्व कहे, सो लिखते है ॥

॥ अथ सुगुरुवादणां ॥

॥ इत्थामि खमासमणो वदिउं, जावणिज्जाए  
निसीहिआए ॥ अणुजाणह मे मिउग्गहं निसी  
हि ॥ अहो कायं काय संफासं, खमणिज्जो ने  
किलामो ॥ अप्पकिलंताण बहु सुत्तेण ने, दि  
वसो वइकंतो जत्ता ने जवणिज्जं च ने, खामे  
मि खमासमणो ॥ देवसिअं वइकम्मं आवसि  
आए, पडिक्कमामि खमासमणार्णं ॥ देवसिआ  
ए, आसायणाए ॥ तित्तीसन्नयराए जं किंघि मि

क्रोध ॥ ६ ॥ मान ॥ ७ ॥ माया ॥ ८ ॥ लोभ  
 ॥ ९ ॥ राग ॥ १० ॥ द्वेष ॥ ११ ॥ कलह ॥ १२ ॥  
 अभ्याख्यान ॥ १३ ॥ पैशुन्य ॥ १४ ॥ रति ॥  
 अरति ॥ १५ ॥ परपरिवाद ॥ १६ ॥ मायामृ  
 पावाद ॥ १७ ॥ मिथ्यात्वशब्द ॥ १८ ॥ ए अ  
 हारे पापस्थानक सेव्या होय, सेवराव्यां होय,  
 सेवता प्रत्ये नला जाण्या होय, ते सबे दु म  
 नें, वचनें, कायार्ये करी तस्स मिढा मि डकडं ॥

॥ ज्ञान, दर्शन, चारित्र, पाटी, पोथी, ठव  
 णी, कवली, नवकरवाली, देव गुरु धर्मकी आ  
 शातना करी होय ॥ पन्नरे कर्मादानोकी आसे  
 वना करी होय ॥ राजकथा, देशकथा, स्त्रीकथा,  
 नक्तकथा करी होय और जो कोइ पाप पर  
 निंदा कीधु होय, कराव्यु होय, करता अनुमो  
 धु होय सो सर्व मन, वचन, कायाये कर के, दि  
 वस अतिचार आलोचणे कर के पदिकमाणामें  
 आलोचं ॥ तस्स मिढा मि डकड ॥ इति आलो



॥ अथ आलोचनं लिख्यते ॥

॥ आञ्जुणा चार प्रहर दिवसमें जे में जीव  
विराध्या होय ॥ सात लाख पृथिवीकाय ॥ सा  
त लाख अप्पकाय ॥ सात लाख तेजकाय ॥  
सात लाख वाजकाय ॥ दश लाख प्रत्येक वन  
स्पतिकाय ॥ चउदे लाख साधारण वनस्पति  
काय ॥ दोय लाख वेइडिय ॥ दोय लाख तेंडि  
य ॥ दोय लाख चौरिंजिय ॥ चार लाख देवता  
॥ चार लाख नारकी ॥ चार लाख तिर्यंच पर्चे  
डिय ॥ चउदे लाख मनुष्य ॥ एव चार गतिके  
चौरां जाण जायापानम, मोहारे जीवि जे  
जीव हस्यो होय, हणाव्यो होय, हणता  
प्रत्ये नलो जाण्यो होय, ते सबे हुं मन वचन  
कायार्ये करी मिठा मि डकडं ॥ इति ॥ १६ ॥

॥ अथ अहारे पापस्थानक आलोचनं ॥

॥ प्राणातिपात ॥ १ ॥ मृपावाद ॥ २ ॥ अ  
दत्तादान ॥ ३ ॥ मैथुन ॥ ४ ॥ परिग्रह ॥

क्रोध ॥ ६ ॥ मान ॥ ७ ॥ माया ॥ ८ ॥ लोभ  
 ॥ ९ ॥ राग ॥ १० ॥ द्वेष ॥ ११ ॥ कलह ॥ १२ ॥  
 अभ्याख्यान ॥ १३ ॥ पैशुन्य ॥ १४ ॥ रति ॥  
 अरति ॥ १५ ॥ परपरिवाद ॥ १६ ॥ मायामृ  
 षावाद ॥ १७ ॥ मिथ्यात्वशब्द ॥ १८ ॥ ए अ  
 ढारे पापस्थानक सेव्यां होय, सेवराख्यां होय,  
 सेवता प्रत्ये जला जाण्यां होय, ते सवे दुं म  
 ने, वचने, कायाये करी तस्स मित्रा मि झुक्कडं ॥

॥ ज्ञान, दर्शन, चारित्र, पाटी, पोथी, ठव  
 णी, कवली, नवकरवाली, देव गुरु धर्मकी आ  
 शातना करी होय ॥ पन्नरे कर्मादानोकी आसे  
 वना करी होय ॥ राजकथा, देशकथा, स्त्रीकथा,  
 जक्तकथा करी होय और जो कोइ पाप पर  
 निंदा कीधुं होय, कराव्युं होय, करतां अनुमो  
 धुं होय सो सर्व मन, वचन, कायाये कर के, दि  
 वस अतिचार आलोचणे कर के पडिकमणामें  
 आलोचं ॥ तस्स मित्रा मि झुक्कड ॥ इति आलो

( १६ )

यण ॥ इहा प्रजातके पडिकमणेमे दिवसके  
ठिकाने रात्रिका पाठ कहेना ॥ इति ॥ १७ ॥  
॥ पीठिं सबस्सवि राश्य ॥ इत्यादि पाठ कहे.  
तिहा इत्ताकाण ॥ न० ॥ एपठ कहनेसे आलो  
या हुआ अतिचारका प्रायश्चित्त मागे ॥ गुरु  
कहे पडिकमह ॥ पीठि इत्तं तस्स मिच्चामि उक्क  
हं कह के समासा प्रमार्कन कर के आसन पर  
बैठ के जिमणा गोडा उंचा रख के मावा गोडा  
नीचे कर के ऐसे कहे कि जगवन्! सुत्र जणुं? तव  
गुरु कहे जणेह ॥ पीठिं इत्त कदि के तीन नवकार  
अरु तीन वार करेमि जेतो ॥ जण के इत्तामि पडिक  
मिउ जो मे राइउ इत्यादि कह कर ॥ तं निदि तं  
व गरिहामि पर्यंत वंदित्त मत्र कहे सो लिखते  
हे ॥ पीठिं खडा हो के छ',  
इत्यादि सपूर्ण कहे,

१ ॥ इच्छामि पडिक्कमिउं, सावगधम्माइञ्चार  
 स ॥ २ ॥ जो मे वयाइञ्चारो, नाणे तद्दं स  
 चरित्ते अ ॥ सुद्धुमो अ वायरो वा, तं निदे तं  
 गरिहामि ॥ ३ ॥ इविहे परिग्गहंमि, साव  
 ज्जे बहुविहे अ आरजे ॥ कारावणे अ करणे,  
 पडिक्कमे देवसिय सवं ॥ ४ ॥ जं वध्मिदिण्हिं,  
 चउहिं कसाण्हिं अप्पसत्तेहिं ॥ रागेण व दोसे  
 ण व, तं निदे तं च गरिहामि ॥ ५ ॥ आगम  
 णे निग्गमणे, ठाणे चकमणे अणान्नोगे ॥ अ  
 न्निउगे अ निउगे, पडिक्कमे ॥ ६ ॥ संका कख  
 विगिन्हा, पसंस तद्दं सथवो कुलिंगीसु ॥ सम्म  
 तस्स इञ्चारे, पडिक्कमे ॥ ७ ॥ उक्काय समारंजे,  
 पयणे अ पयावणे अ जे दोसा ॥ अत्तछाय पर  
 छा, उन्नयछा चेव तं निदे ॥ ८ ॥ पचण्हमणु  
 वयाणं, गुणवयाण च तिष्ठह मइयारे ॥ सिक्का  
 ण च चउण्हं, पडिक्कमे ॥ ९ ॥ पढमे अणुव  
 यमि. थलग पाणाइवाय विरईउ ॥ आयरिअ

यण ॥ इहा प्रजातके पठिक्रमणेमे टिवसके  
ठिकाने रात्रिका पाठ कहेना ॥ इति ॥ १७ ॥

॥ पीठे सबस्सवि राइय ॥ इत्यादि पाठ कहे,  
तिहा इत्ताकाण ॥ न० ॥ एपद कहनेसे आलो  
या हुआ अतिचारका प्रायश्चित्त मागे ॥ गुरु  
कहे पठिक्रमह ॥ पीठे इत्त तस्स मिठामि उक्क  
डं कह के संभासा प्रमार्जन कर के आसन पर  
बैठ के जिमणा गोडा मंचा रख के भावा गोडा  
नीचे कर के ऐसे कहे कि जगवन्! सूत्र जणुं? तब  
गुरु कहे जणेह ॥ पीठे इत्त कहि के तीन नवकार  
अरु तीन वार करेमि जंते ॥ जण के इत्तामि पठिक्र  
मिज जो मे राइज इत्यादि कह कर ॥ त निदे तं  
च गरिहामि पर्यंत वंदित्तु सूत्र कहे सो लिखते  
हे ॥ पीठे खडा हो के अणुठिजमि आराहणाए  
इत्यादि सपूर्ण कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रावक वदितासूत्र ॥

॥ वदित्तु सब सिद्धे, धम्मायरिए अ

॥ १७ ॥ धण धन्न खित्त वडू, रुप्प सुवन्ने  
 कुविच्च परिमाणे ॥ इपए चण्णयंमि, पडि  
 ते० ॥ १८ ॥ गमणस्स य परिमाणे, टिसासु  
 ङ्खे अहेअ तिरिअ च ॥ बुद्धिसइअंतरा, पढ  
 मि गुणवए निंदे ॥ १९ ॥ मंळंमि अ मंसंमि  
 अ, पुप्फे अ फले अ गधमल्ले आ॥जवन्नोग प  
 रिन्नोगे, बीधमि गुणवए निंदे ॥ २० ॥ सच्चित्ते  
 पडिबद्धे, अपोल इण्णोलिअं च आदारे ॥ तु  
 षोसहि न्खणया, पडिक्कमे० ॥ २१ ॥ इंगाली  
 वणसाडी, नाडी फोडी सुवळ्ण कम्मं ॥ वाणि  
 ङ्कं चेव दं, त लक्ख रस केस विसविसयं ॥  
 ॥ २२ ॥ एवं खु जतपिह्वण, कम्मं निह्वंणं च  
 दवदारणं ॥ सरदद तलाव सोस, असई पोसं च  
 वळ्ळिळा ॥ २३ ॥ सव्वग्गि मुसल जंतग, तण  
 कठे मत मूल नेसळे ॥ दिन्ने दवाविएवा, पडि  
 क्कमे० ॥ २४ ॥ न्हाणू वट्टण वन्नग, विलेवणे  
 सहखुव रस गधे ॥ वत्तासण आन्नरणे, पडिक्क

मप्यसत्ते, इत्त पमायप्यसगेण ॥ १९ ॥ वह् बंध ठ  
 विठेए, अइ नारे नत्त पाण बुठेए ॥ पठमं व  
 यस्स इअारे, पडिक्कमे० ॥ २० ॥ वीए अणुवयं  
 मि, परिथूलगअलिअ वयण विरईत्त ॥ आयरि  
 अमप्यसत्ते, इत्त पमायप्यसंगेण ॥ २१ ॥ सह  
 सा रहस्स दारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ ॥  
 वीयं वयस्स इअारे, पडिक्कमे० ॥ २२ ॥ तइए  
 अणुवयमि, थूलग परदवहरण विरईत्त ॥ आ  
 यरिअ मप्यसत्ते, इत्त पमायप्यसंगेणं ॥ २३ ॥  
 तेनाहडप्यत्तगे, तप्यडिक्कवे विरुद्ध गमणे अ ॥  
 कूडतुल कूडमाणे, पडिक्कमे० ॥ २४ ॥ चउठे  
 अणुवयमि, निच्च परदारगमण विरईत्त ॥ आ  
 यरिअ मप्यसत्ते, इत्त पमायप्यसगेणं ॥ २५ ॥  
 अपरिग्गदिआ इत्तर, अणंग वीवाह तिअ अ  
 पुरागे ॥ चउठ वयस्स इअारे, पडिक्कमे० ॥  
 ॥ २६ ॥ इत्तो अणुवए प, चममि आयरिअ म  
 प्यसत्तमि ॥ परिमाण परिठेए, इत्त पमायप्यसं

ते ॥ पंचविहो अइआरो, मा मद्य दुक्क मरणते  
 ॥ ३३ ॥ काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स  
 वायाए ॥ मणसा माणसिअस्स, सबस्स वयाइ  
 आरस्स ॥ ३४ ॥ वंदणवय सिक्कागा, र्वेसु  
 सन्ना कसाय दंसेसु ॥ गुत्तीसु अ समिईसु अ,  
 जो अइआरो अ तं निंदे ॥ ३५ ॥ सम्महिठी  
 जीवो, जइ विट्ठुपाव समायरे किंचि ॥ अप्पोसि  
 होइ बंधो, जेण न निरुंधस कुणइ ॥ ३६ ॥ तं  
 पिट्ठुसपडिक्कमणं, सप्परिआव सउत्तरगुणं च ॥  
 खिण्णं उवसामेइ, वाहिं व सुसिक्किउ विज्जो ॥  
 ॥ ३७ ॥ जहा विसं कुठगय, मत मूल विसार  
 या ॥ विज्जा इणति मंतेहिं, तो तं इवइ निविसं  
 ॥ ३८ ॥ एवं अठविदं कम्मं, राग दोस सम  
 क्खिअ ॥ आलोयंतो अ निदंतो, खिण्ण इणइ  
 सुसावउ ॥ ३९ ॥ कय पावोवि मणुस्सो, आ  
 लोइअ निदिय गुरुसगासे ॥ होइ अइरेग ल  
 दुउ, उहरिअ जरुव नारवहो ॥ ४० ॥ आवस्स



मे० ॥ १५ ॥ कटपे कुफुडए, मोहरि अहिर  
 ए नोग अइरित्ते ॥ १६ ॥ तिमि अणठाए, तइयंमि  
 गुणवए निदे ॥ १६ ॥ तिविदे उप्पणिहाणे, अ  
 णवठाणे तहा सइ विदूणे ॥ सामाइअ वितह  
 कए, पढमे सिस्कावए निदे ॥ १७ ॥ आणवणे  
 पेसवणे, सहे रूवे अ पुग्गलस्केवे ॥ देसावगा  
 सियमि, वीए सिस्कावए निदे ॥ १८ ॥ सथा  
 रुच्चारविही, पमाय तह चेव नोयणानोए ॥ पो  
 सह विहि विवरीए, तइए सिस्कावए निदे ॥  
 ॥ १९ ॥ सच्चित्ते निस्किवणे, पिहिणे ववएस म  
 हुरे चेव ॥ कालाइक्कम दाणे, चउठे सिस्कावए  
 निदे ॥ २० ॥ सुहिए सुअ झहिए सुअ, जामे  
 असजएसु अणुकपा ॥ रागेणव दोसेणव, तं  
 निदे त च गरिहामि ॥ २१ ॥ सादूसु सविजा  
 गो, न कउ तव चरण करण छत्तेसु ॥ संते फासु  
 अ दाणे, त निदे तं च गरिहामि ॥ २२ ॥ इह  
 लोए परलोए, जीविअ मरणे अ आसंस पउ

मे सवन्नूएसु, वेरं मङ्गं न केणइ ॥ ४ए ॥ एव म  
 हं आलोइअ, निदिअ गरहिअ डुगविअ स  
 म्मं ॥ तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउवी  
 स ॥ ५० ॥ इति ॥ ५ए ॥ इहा प्रजातके पडिक्कमण  
 में देवसिके ठीकाने राइय कहना ॥

पठि दो वादणा देकर अवग्रहमादित्यकोज  
 कहे ॥ इठाका ० ॥ स ० ॥ न ० ॥ अणुठिउमि अण्णित  
 र ॥ राइय खामेमि ? गुरु कहे खामेह ॥ संमा  
 सा प्रमार्जन पूर्वक गोमाली बैठ के, बे बाह प  
 डिलेहि ॥ मुहपत्ती वामहाथसू मुखे देई, दक्षि  
 ण हाथ गुरु सामो करी ॥ नीचो नम्यो थको जं  
 किंचि अण्णत्तिय ॥ इत्यादि संपूर्ण कहे ॥

॥ अथ अणुठिउ ॥

॥ इठाकारेण सदिस्सह नगवन् अणुठिउमि  
 अण्णितर देवसिउ खामेउ ॥ इठं खामेमि देवसिय  
 जंकिंचि अण्णत्तिय ॥ परण्णत्तिय नत्ते पाणे विणए  
 वेआवञ्चे आलावे संलावे उच्चासणे ॥ समासणे

एण एण, सावत्त जइवि बहुरत्त होइ ॥ उत्त  
 ण मत्त किरिञ्च, काही अचिरेण कालेण ॥  
 ॥ ४१ ॥ आलोअणा बहुविहा, नयसंजरिअ  
 पडिक्कमणकाले ॥ मूल गुण उत्तरगुणे, त निदि  
 त च गरिहामि ॥ ४२ ॥ तस्स धम्मस्स केवल्लि  
 पन्नत्तस्स ॥ अप्पुट्ठित्ति आरा, हणाए विरत्त  
 मि विराहणाए ॥ तिविहेण पडिक्कतो, वंदामि  
 जिणे चत्तवीसं ॥ ४३ ॥ जावत्ति चेइआइं ॥  
 ॥ ४४ ॥ जावंत केवि साहू ॥ ४५ ॥ चिर सं  
 चिय पाव पणासणीइ, जवसयसहस्स महणीए  
 ॥ चत्तवीस जिण विणिग्गय कहाइं, वोलंतु मे  
 दिअहा ॥ ४६ ॥ मम मंगल मरिहंता, सिअ  
 साहु सुअं च धम्मो अ ॥ सम्मदिछी देवा, दिं  
 तु समार्दि च वोर्दि च ॥ ४७ ॥ पडिसिअणं  
 करणे, किञ्चाण मकरणे पडिक्कमणे ॥ असइह  
 णे अ तहा, विवरीय परूवणाए अ ॥ ४८ ॥  
 खामेमि सव्व जीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे ॥ मित्ती

मे सवन्नूएसु, वेरं मळ्ळं न केणइ ॥ ४ए ॥ एव म  
 हं आलोइअ, निदिअ गरहिअ डुगंविअं स  
 म्म ॥ तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउवी  
 सं ॥ ५० ॥ इति ॥ ५१ ॥ इहा प्रजातके पडिक्कमण  
 में देवसिके ठीकाने राइय कहना ॥

पवि दो वादणा देकर अवग्रहमादिथकोज  
 कहे ॥ इत्थाका ० ॥ स ० ॥ न ० ॥ अप्पुठित्तिमि अप्पित्ति  
 र ॥ राइय खामेमि ? गुरु कहे खामेइ ॥ समा  
 सा प्रमार्जन पूर्वक गोमाली बैठ के, वे बाह प  
 डिलेहि ॥ मुहपत्ती वामहाथसुं मुखे देई, दक्षि  
 ण हाथ गुरु सामो करी ॥ नीचो नम्योथको जं  
 किंचि अप्पत्तिय ॥ इत्यादि संपूर्ण कहे ॥

॥ अथ अप्पुठित्ति ॥

॥ इत्थाकारेण सदिससह नगवन् अप्पुठित्तिमि  
 अप्पित्तिर देवसित्ति खामेत्तं ॥ इत्तं खामेमि देवसिय  
 जंकिंचि अप्पत्तिय ॥ परप्पत्तिय जत्ते पाणे विणए  
 वेअ्यावच्चे आलावे सलावे उच्चासणे ॥ समासणे

अतरनासाए उवरिनासाए ॥ जं किंचि ॥ मरु  
विणय परिहीण सुदुमवा वायर वा। तुप्रे जाणह  
अह न जाणामि ॥ तस्स मिठामि डुकडं ॥ इति ॥

॥ इहा गुरु पण मिठामि डुकडं कहे पठि वे  
वादणा देई नूमि प्रमार्जन करता दुआ पगसे  
अवग्रह बाहिर आय केँ आयरिय उवळाए इ  
त्यादि तीन गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ आयरिय उवळाए ॥

॥ आयरिअ उवळाए, सीसे साहमीए कुल  
गणे अ ॥ जे मे कया कसाया, सवे तिविहेण  
खामेमि ॥ १ ॥ सबस्स समण संघस्स, जगवठं  
अजलिं करिअ सीसे ॥ सधं खमावइत्ता, खमामि  
सबस्स अहयपि ॥ २ ॥ सबस्स जीवरासिस्स,  
जावठं धम्मो निहिअ निअ चित्ते ॥ सधं खमा  
वइत्ता, खमामि सबस्स अहयपि ॥ ३ ॥

पठिं करेमि जं ते इठामि ठामि काजम्मग्गं  
तस्सुत्तरीण ॥ श्रीमहावीर

चिंतवणा निमित्त करेमि काठस्सग्गं अन्नहूण ॥  
 कदि के काठस्सग्ग करे, काठस्सग्गमें श्रीवी  
 रकृत ठम्मासी तप चिंतवन करे ॥ चौवीश नव  
 कार अथवा ठ लोगस्सका काठस्सग्ग करे,  
 काठस्सग्ग पारिकें प्रगट लोगस्स कहे ॥

॥ ठठे आवश्यककी मुहपत्ती पडिलेहुं? गुरु  
 कहे पडिलेह ॥ मुहपत्ती पडिलेहीबे वादणा देई  
 सकल तीर्थनाम लइ नमस्कार करे, सो लिखेई.

॥ अथ सकल तीर्थ नमस्कार ॥

॥ स्वर्गधरा वृत्तम् ॥

॥ सन्नक्त्या देवलोके रविशशिचवने, व्यंत  
 राणा निकाये, नक्षत्राणा निवासे ग्रहगणपटले  
 तारकाणा विमाने ॥ पाताले पन्नगेजे स्फुटमणि  
 किरणे ध्वस्तसाजाधकारे, श्रीमत्तीर्थकराणा प्र  
 तिदिवसमह तत्र चैत्यानि वदे ॥ १ ॥ वैताढ्ये  
 मेरुशृंगे रुचकगिरिवरे कुमुले हस्तिदंते, वरकारे  
 कूटनंदीश्वरकनकगिरौ नैपधे नीलवते ॥ चैत्रे

अंतरनासाए उवरिनासाए ॥ ज किचि ॥ मळ  
विणय परिहीण सुद्धम वा वायर वा ॥ तुझे जाणव  
अह न जाणामि ॥ तस्स मिठामि उक्कडं ॥ इति ॥

॥ इहा गुरु पण मिठामि उक्कडं कहे पंढि बे  
वाढणा देईं नूमि प्रमार्जन करता दुआ पगसे  
अवग्रह वाहिर आय के आयरिय उवळाए ॥ इ  
त्यादि तीन गाथा कहे, सो लिखते हे ॥

॥ अथ आयरिय उवळाए ॥

॥ आयरिअ उवळाए, सीसे साहमीए कुल  
गणे अ ॥ जे मे कया कसाया, सवे तिविडेण  
खामेमि ॥ १ ॥ सवस्स समण संघस्स, जगवठं  
अजळि करिअ सीसे ॥ सवं खमावइत्ता, खमामि  
सवस्स अहयपि ॥ २ ॥ सवस्स जीवरासिस्स,  
जावठं धम्मो निहिअ निअ चित्ते ॥ सवं खमा  
वइत्ता, खमामि सवस्स अहयपि ॥ ३ ॥

पंढि करेमि न ते इठामि ठामि काउस्सग्ग  
तस्सुत्तरीए ॥ श्रीमहावीर स्वामी उमामि तप

चोङ्गयिन्या, कौशाव्यां कोशलाया कनकपुरव  
 रे देवगिर्या च काश्या ॥ रासक्ये राजगेहे ढ  
 शपुरनगरे नद्विले ताम्रलिप्त्यां ॥ श्री० ॥ ७ ॥  
 स्वर्गे मर्त्येऽतरिक्षे गिरिशिखरद्वदे स्वर्णदीनीर  
 तीरे, शैलाग्रे नागलोके जलनिधिपुलिने चूरु  
 हाणा निकुजे ॥ ग्रामेऽरण्ये वने वा स्थलजल  
 विषमे दुर्गमध्ये त्रिसध्य ॥ श्रीम० ॥ ८ ॥ “श्री  
 मन्मेरौ कुलाजौ रुचकनगवरे शाल्मलौ जंबुवृ  
 क्षे, चौङ्गन्ये चैत्यनदे रतिकररुचके कौंरुले मा  
 नुपाके ॥ इक्षूकारे जिनाजौ च दधिमुखगिरौ  
 व्यंतरे स्वर्गलोके, ज्योतिर्लोके भवति त्रिचुवन  
 वलये यानि चैत्यालयानि” ॥ ९ ॥ इत्थं श्रीज्ञै  
 नचैत्यस्तवनमनुदिनं ये पठन्ति प्रवीणा, प्रो  
 थत्कल्याणहेतु कलिमलहरणं नक्तिभाजस्त्रि  
 सध्यम् ॥ तेषा श्रीतीर्थयात्राफलमतुलमलं जा  
 यते मानवाना, कार्याणा सिद्धिरुच्चै प्रसुदित



शैले विचित्रे यमकगिरिवरे चक्रवाले हिमाशौ  
 ॥ श्रीम० ॥ १ ॥ श्रीशैले विंध्यशृंगे विमलमि  
 रिवरे ह्यर्वुटे पावके वा, सम्मेते तारके वा कुष्ठ  
 गिरिशिखरेऽष्टापदे स्वर्णशैले ॥ सह्याशौ वैज  
 यते विमलगिरिवरे गुर्जरे रोहणाशौ ॥ श्रीम०  
 ॥ ३ ॥ आघाटे मेदपाटे क्षितितटमुकुटे चित्रकू  
 टेत्रिकूटे, लाटे नाटे च धाटे विटपिघनतटे हेमकूटे  
 विराटे ॥ कर्णाटे हेमकूटे विकटतरकटे चक्रकूटे  
 च चोटे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ श्रीमाले मालवे वा म  
 लयिनि निषधे मेखले पिञ्जले वा, नेपाले नाह  
 ले वा कुवलय तिलके सिंहले केरले वा ॥ म  
 हाले कोशले वा विगलितसलिले जगले वा  
 ढमाले ॥ श्रीम० ॥ ५ ॥ अंगे वंगे कलिंगे सु  
 गतजनपदे सत्प्रयागे तिलंगे, गौडे चौडे सुरभे  
 वरतरङ्गविडे उडियाणे च पौन्डे ॥ आर्जे माडे  
 पुलिंजे अविडकवलये कान्यकुब्जे सुराप्रे ॥ श्री०  
 ॥ ६ ॥ चदाया चञ्जसुरव्या गजपुरमथरापत्तने

चोङ्कयिन्यां, कौशाव्या कोशलाया कनकपुरव  
 रे देवगिर्या च काश्यां ॥ रासक्ये राजगेहे द  
 शपुरनगरे नद्विले ताम्रलिह्यां ॥ श्री० ॥ ७ ॥  
 स्वर्गं मर्त्येऽतरिक्षे गिरिशिखरद्वे स्वर्णदीनीर  
 तरि, शैलाग्रे नागलोके जलनिधिपुलिने नूरु  
 हाणा निकुजे ॥ ग्रामेऽरण्ये वने वा स्थलजल  
 विषमे दुर्गमध्ये त्रिसध्य ॥ श्रीम० ॥ ८ ॥ “श्री  
 मन्मेरौ कुलाजौ रुचकनगवरे शाल्मलौ जंबुवृ  
 ह्णे, चौङ्कन्ये चैत्यनंदे रतिकररुचके कौमले मा  
 नुषाके ॥ इक्षूकारे जिनाजौ च दधिसुखगिरी  
 व्यंतरे स्वर्गलोके, ज्योतिर्लोके नवति त्रिभुवन  
 वलये यानि चैत्यालयानि” ॥ ९ ॥ इहं श्रीजै  
 नचैत्यस्तवनमनुदिनं ये पठन्ति प्रवीणा, प्रो  
 यत्कल्याणहेतु कलिमलहरणं नक्तिनाजस्त्रि  
 सध्यम् ॥ तेषां श्रीतीर्थयात्राफलमनुलामल जा  
 यते मानवानां, कार्याणां सिद्धिरुच्चैः प्रमुदित

मनसा चित्तमानटकारि ॥ १० ॥ इति वैद्य  
वदन सपूर्णम् ॥ इति ॥ ३७ ॥

पीठे गुरुमुखे पञ्चकाण करिके ॥ इत्थामो नि  
सद्विय कहि के गुरु एक गाथाकी स्तुति कहे

॥ पीठे एमो खमासमणाण एमोऽर्हत्सिःशण ॥  
कह कर परसमय तिमिरतरणिं ए तीन गाथा  
कहीजें सो लिखते हैं ॥

॥ अथ परसमय तिमिरतरणिं ॥

॥ परसमय तिमिरतरणिं, जवसागर वारि  
तरण वरतरणिं ॥ रागपराग समीरं, वदे देवम  
हावीरम् ॥ १ ॥ निरुद्ध संसार विहारकारि, उ  
रन्तजावारिगणा निकाम ॥ निरन्तर केवलिस  
त्तमा वो, जवावहं मोहजर हरंतु ॥ ७ ॥ सदेह  
कारिकुनयागमरूढगूढ, संमोहपकहरणामल  
वारिपूरम् ॥ ससारसागरसमुत्तरणोरुनावं, वी  
रागमं परमसिद्धिकरं नमामि ॥ ३ ॥ परिमल  
जरलोनालीढिलोलालिमाळा, वरकमलत्रिचा

से द्वारनीद्वारदासे ॥ अविखलनविकारागार  
 विवित्तिकारं, कुरु कमलकर मेमङ्गल देविसारम्  
 ॥४॥ इति ॥३३॥ अथवा ससारदावानी तीन  
 गाथा कहेवे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ संसारदावा स्तुति ॥

॥ संसारदावानलदाहनीर, समोद्भूली  
 द्रणे समीरम् ॥ माया रसादारणसारसीरं, न  
 मामि वीर गिरिसारधीरम् ॥१॥ नावावनाम सु  
 रदानवमानवेन, चूलाविलोककमलावलिमा  
 लितानि ॥ संपूरिताचिनतलोकसमीहितानि,  
 कामं नमामि जिनराजपदानि तानि ॥ २ ॥ बो  
 धागाधं सुपद पदवी नीरपूराजिरामं, जीवादि  
 साविखलहरिसंगमागाहदेहम् ॥ चूलावेर्ल  
 गुरु गममणी संकुल दूरपारं, सारं वीरागमज  
 लनिधि सादर साधु सेवे ॥ ३ ॥ आमूला लो  
 लधूली बहुल परिमला लीढलोलालिमाला,  
 जंकारा रावसारा मलदलकमलागारचूर्मीनि

मनसा चित्तमानदकारि ॥ १० ॥ इति चैत्य  
वदन सपूर्णम् ॥ इति ॥ ३७ ॥

पीठे गुरुमुखे पञ्चरकाण करि के ॥ इत्थामो नि  
सद्विय कदि के गुरु एक गाथाकी स्तुति कहे  
॥ पीठे एमो खमासमणाण एमोऽर्हत्सिःशाण ॥  
कह कर परसमय तिमिरतरणिं ए तीन गाथा  
कहीजें सो लिखते हैं ॥

॥ अथ परसमय तिमिरतरणिं ॥

॥ परसमय तिमिरतरणिं, जवसागर वारि  
तरण वरतरणिं ॥ रागपराग समीरं, वदे देवं म  
हावीरम् ॥ १ ॥ निरुद्ध संसार विहारकारि, उ  
रन्तजावारिगणा निकाम ॥ निरन्तर केवलिस  
त्तमा वो, जवावहं मोहजरं दूरंतु ॥ २ ॥ संदेह  
कारिकुनयागमरूढगूढ, संमोहपंकहरणामल  
वारिपूरम् ॥ ससारसागरसमुत्तरणोरुनावं, वी  
रागम परमसिद्धिकरं नमामि ॥ ३ ॥ परिमल  
जरलोनालीढलोखालिमाला, वरकमलनिवा

से द्वारनीद्वारहासे ॥ अविखलनविकारागार  
 चिञ्चित्तिकार, कुरु कमलकरं मे मङ्गलं देविसारम्  
 ॥४॥ इति ॥३३॥ अथवा संसारदावानी तीन  
 गाथा कहेवे, सो लिखते है ॥

॥ अथ संसारदावा स्तुति ॥

॥ संसारदावानलदाहनीर, संमोहधूली  
 हरणे समीरम् ॥ माया रसादारणसारसीरं, न  
 मामि वीरं गिरिसारधीरम् ॥१॥ जावावनाम सु  
 रदानवमानवेन, चूलाविलोककमलावलिमा  
 लितानि ॥ सपूरिताञ्जिनतलोकसमीहितानि,  
 काम नमामि जिनराजपदानि तानि ॥ २ ॥ बो  
 धागाध सुपद पदवी नीरपूरान्जिरामं, जीवाहिं  
 साविरललहरीसंगमागाहदेहम् ॥ चूलावेलं  
 गुरु गममणी संकुल दूरपारं, सारं वीरागमज  
 लनिधि सादर साधु सेवे ॥ ३ ॥ आमूला लो  
 लधूली बहुल परिमला लीढलोलालिमाला,  
 जंकारा रावसारा मलदलकमलागारभ्रूमीनि

वासे ॥ गयासजारसारे वरकमलकरे तारहा  
 राजिरामे, वाणीसदोहृद्वेहे नवविरहवरं देहि  
 मे देवि सारम् ॥ ४ ॥ इति ॥ ३४ ॥

॥ इत्यादितीनगाथा जणी, शक्रस्तव कहे  
 पीठे खडा हो कर अरिहत चेइयाण करेमि का  
 नुस्सग्ग ॥ वदणवत्तिआएण अन्नहूण ॥ इत्या  
 दि पाठ कहि के ॥

॥ काउस्सग्गमाहे एक नवकार चिंतवी ॥  
 एकश्रावक प्रथम काउस्सग्ग पारी नमोऽर्हत्सि  
 षाण कही ॥ एक गाथास्तुतिकहे, सो लिखते हैं

॥ अश्वसेन नरेसर, वामादेवी नंद ॥ नव क  
 र तनु निरुपम, नील वरण सुखकद ॥ अहि ल  
 षण सेवित, पञ्चमावड धरणिंद ॥ प्रह ऊठी प्र  
 णमूं, नित प्रति पास जिणंद ॥ १ ॥ ए गाथा  
 एक जण कहे ॥ दूसरे सब काउस्सग्गमाहे  
 रहा दुआ सुणे ॥ पविं एमो अरिहताण क  
 हि के काउस्सग्ग पारे ॥ इस तरे ॥ पण

एणा ॥ पीठिं लोमस्स कहे ॥ सबलोए अरिहं  
 त चेईआण वदणवत्ति ॥ अन्नबू ॥ इत्यादि  
 कहि के ॥ एक नवकारका काउस्सग्ग करी पा  
 रि के दूजी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ कुल गिरिवेयहइ, कणयाचल अनिराम  
 ॥ मानुषोत्तर नंदी, रुचक कुंमल सुखठाम ॥  
 चुवणेषुर व्यंतर, जोइस विमाणी नाम ॥ वर्ते  
 ते जिणवर, पूरो मुज मन काम ॥ १ ॥

॥ पीठिं पुस्करवरदीवहे कहि के सुयस्स जगव  
 उ ॥ वदण ॥ अन्नबू ॥ कही ॥ एक नवकारका का  
 उस्सग्ग पारि के ॥ त्रीजी स्तुति कहे, सो लिखते,

॥ जिहा अग इग्यारे, बार उपग ठ वेद ॥  
 दस पयन्ना दारव्या, मूल सूत्र चउजेद ॥ जिन  
 आगम षड्भव्य, सप्त पदारथ चत्त ॥ साजलि  
 सर्वहता, त्रूटे करम तुरत्त ॥ ३ ॥

॥ पीठिं सिधाणं बुधाणं ॥ कह के वेयावच्च  
 गराणं ॥ अन्नबू ॥ कही ॥ एक नवकारका का



वासे ॥ गयासचारसारे वरकमलकरे तारहा  
 राजिरामे, वाणीसदोह्देहे नवविरहवरं देहि  
 मे देवि सारम् ॥ ४ ॥ इति ॥ ३४ ॥

॥ इत्यादि तीन गाथा जणी, शक्रस्तव कहे  
 पीठे खडा हो कर अरिहत चेइयाण करेमि का  
 नुस्सग्ग ॥ वदणवत्तिआएण अन्नहूण ॥ इत्या  
 दि पाठ कहि कें ॥

॥ काजुस्सग्गमाहे एक नवकार चितवी ॥  
 एक श्रावक प्रथम काजुस्सग्ग पारी नमोऽर्हत्सि  
 षाण कही ॥ एक गाथा स्तुति कहे, सो लिखते हैं

॥ अश्वसेन नरेसर, वामादेवी नद ॥ नव क  
 र तनु निरुपम, नील वरण सुखकद ॥ अहि लं  
 ठण सेवित, पञ्मावइ धरणिंद ॥ प्रह ऊठी प्र  
 णमू, नित प्रति पास जिणंद ॥ १ ॥ ए गाथा  
 एक जण कहे ॥ दूसरे सब काजुस्सग्गमाहे  
 रह्या दुआ सुणे ॥ पीठे एमो अरिहंताणं क  
 हि कें काजुस्सग्ग पारे ॥ इस तरे आगे पण जा

एणां ॥ पीठि लोगस्स कहे ॥ सबलोए अरिहं  
 त चेईआणं वंदणवत्ति ॥ अन्नहू ॥ इत्यादि  
 कहि कें ॥ एक नवकारका काउस्सग्ग करी पा  
 रि कें दूजी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ कुल गिरिवेयहइ, कणयाचल अन्निराम  
 ॥ मानुषोत्तर नदी, रुचक कुंमल सुखगाम ॥  
 चुवणेषुर व्यंतर, जोइस विमाणी नाम ॥ वर्ते  
 ते जिणवर, पूरो मुऊ मन काम ॥ २ ॥

॥ पीठि पुस्करवरदीवहे कहि कें सुयस्स जगव  
 उ ० वदण ० अन्नहू ० ॥ कही ॥ एक नवकारका का  
 उस्सग्ग पारि के ॥ श्रीजी स्तुति कहे, सो लिखते,

॥ जिहा अंग इग्यारे, बार उपंग ठ बेद ॥  
 दस पयन्ना दाख्या, मूल सूत्र चउजेद ॥ जिन  
 आगम षड्भव्य, सप्त पदारथ जुत्त ॥ साजलि  
 सर्वहता, त्रुटे करम तुरत्त ॥ ३ ॥

॥ पीठि सिधाणं बुधाण ० ॥ कहि कें वेयावच्च  
 गराणं ० ॥ अन्नहू ० कही ॥ एक नवकारका का

जस्सग्ग करी पारि कें एमोऽर्हत्सि-धा० कह कें  
चोथी स्तुति कहे, सो लिखते है ॥

॥ पञ्जमावई देवी, पार्श्व यद्द परतद्द ॥ सहु  
सघना सकट, दूर करेवा दद्द ॥ समरो जि  
नज्जक्ति, सूरि कहे इक चित्त ॥ सुख सुजस स  
मापो, पुत्र कलत्र बहु वित्त ॥४॥ इति ॥ ३५ ॥

॥ पण्ठिं नीचा बैठ कें एमोऽबूणं० कहि कें ॥  
तीन खमासमणे पूर्वोक्त रीते ॥ आचार्य, उपा  
ध्याय, सर्वसाधु वादे ॥

॥ अथवा केई ठिकाने जिमणो हाथ नीचो  
करि, मुखें मुहपत्ती देई अद्दाइकेसु कहे हैं, सो  
लिखते हैं ॥ इति सप्रदाय ॥

॥ अथ अद्दाइकेसु ॥

॥ अद्दाइकेसु ॥ दीव समुद्वेसु ॥ पन्नरससु क  
म्मजूमीसु ॥ जावंत केवि साहू ॥ रयहरण सु  
उपडिग्गदधारा पंचमहव्वयधारा ॥ अठारसह  
स्स सीलंगधारा ॥ रिता स

वे ॥ सिरसा मणसा मञ्जएण वंदामि ॥ इति ॥

॥ इतना विधि किया पीठें स्थिरता दुबे तो खमासमण तीन बखत देई ॥ इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् ॥ चैत्यवदन करुं जी यह पाठ कह कर चैत्यवंदन करे सो लिखते हैं ॥

॥ अथ चैत्यवंदन ॥

॥ जय जय त्रिचुवन आदिनाथ, पंचमगति गामी ॥ जय जय करुणा शात दांत, जवि जनहितकामी ॥ जय जय इद नरिद वृंद, सेवित सिरनामी ॥ जय जय अतिशयानंतवत, अंतर्गतजामी ॥ १ ॥ पूरव विदेह विराजता ए, श्री सीमंधर स्वाम ॥ त्रिकरणशुद्ध त्रिहुं कालमे, नितप्रति करुं प्रणाम ॥ २ ॥ ॥ ज किंचिनाम तिष्ठं ॥ नमोऽब्रूणं जावति चेइआं जावंत केवि सादू ॥ उर एमोऽर्हत्सिश्चाचार्योपाध्याय सर्वसाधुष्य ॥ तक कहि के सीमंधर जीका स्तवन कहे, सो लिखते हैं ॥ ३७ ॥



आठम नोमवारा ॥ प्रभुके चरण परतापसिंह  
में, कृमारतन प्रभु प्यारा रे ॥ध०॥५॥ इति ॥

॥ पीठि जयवीराराय० ॥ वंदणवतियाए० ॥ अ  
न्नहू० ॥ कहि के एक नवकारका कानुस्सग्ग  
करी ॥ पारि के नमोऽर्हत्तिश्चा० ॥ कहि के ॥

॥ शेत्रुजगिरि नमियें, रूपनदेव पुमरीक ॥  
शुभ तपनो महिमा, सुणि गुरु मुख निरवीक  
॥ शुद्ध मन उपवासे, विधिशु चैत्यवदनीक ॥क  
रियें जिन आगल, टाली वचन अलीक ॥१॥  
इति ॥ ४१ ॥ पीठिं फुरसद होवे तो पडिलेहण  
करे, सो लिखते है ॥

॥ अथ पडिलेहण ॥

॥ खमासमण देई इत्ठाकारेण सदिससह  
जगवन् ॥ पडिलेहण सदिससाजं ? गुरु कहे.  
सदिससाएह ॥ बीजे खमासमणें ॥ इत्ठाका०  
स० ॥ज०॥ पडिलेहण करु ? गुरु कहे, करेह ॥  
पीठिं इठं कही ॥ मुहपती पडिलेहे ॥ इमहीज

केवि सादृ० ॥ एमोऽर्हत्सिःशार्योपाध्याय सर्व  
साधुभ्य ॥ तक कहि कें श्री सिःशचलजीक  
स्तवन कहे, सो लिखते है ॥ ३९ ॥

॥ अथ श्रीसिःशचलस्तवनम् ॥

॥ सिःशचल गिरि नेट्या रे ॥ धन्य नाग्य  
हमारा ॥ विमलाचलगिरि० ॥ एह गिरिवरनो म  
हिमा महोटी, कहेता न आवे पारा ॥ रायण  
रुख समोसखा स्वामी, पूर्व नवाणुं वारा रे  
॥ ध० ॥ १ ॥ मूलनायक श्रीआदिजिनेश्वर,  
चोमुख प्रतिमा चार ॥ अष्ट अव्यसें पूजो नावे,  
समकित मूल आधारारे ॥ ध० ॥ २ ॥ दूर देशथी  
हूं इहा आयो, श्रवण सुनी गुण तोरा ॥ पतित  
उधारण विरुद तुमारा, एह तीरथ जग सारा  
रे ॥ ध० ॥ ३ ॥ नाव नक्तिसें प्रचु गुण गावे,  
अपना जन्म सुधारा ॥ जात्रा करि नवि जन  
शुन नावे, नरक तिर्येच गति वारा रे ॥ ध० ॥  
॥ ४ ॥ सवत अठारे ज्यासी मास आषाढे, बदि

प्राथम्ये चोमवारा ॥ प्रचुके चरण परतापसिंह  
 र्ने, क्तमारतन प्रचु प्यारा रे ॥ध०॥५॥ इति ॥

॥ पति जयवीराराय० ॥ वंदणवत्तियाए० ॥ अ  
 न्दू० ॥ कहि के एक नवकारका कालस्सग्ग  
 हरी ॥ पारि के नमोऽर्हत्तिश्श० ॥ कहि के ॥

॥ शेत्रुजगिरि नमिये, रूपनदेव पुरुरीक ॥  
 शुच तपनो महिमा, सुणि गुरु मुख निरवीक  
 ॥ शुद्ध मन उपवासे, विधिशु चैत्यवंदनीक ॥क  
 रिये जिन आगल, टाली वचन अलीक ॥२॥  
 इति ॥ ४२ ॥ पीठे कुरसद होवे तो पडिलेहण  
 करे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ पडिलेहण ॥

॥ स्वमासमण देई इत्ताकारेण सदिस्सह  
 नगवन् ॥ पडिलेहण सदिस्साणं ? गुरु कहे.  
 सदिस्साएह ॥ बीजे स्वमासमणें ॥ इत्ताका०  
 स० ॥न०॥ पडिलेहण करु ? गुरु कहे, करेह ॥  
 पीठें इत्तं कही ॥ मुहपती पडिलेहे ॥ इमहीज



दोइ खमासमणे अग पडिलेहण संदि  
 अगपडिलेहण करु कहीके धोतियुं  
 डिलेहि कें ॥ खमासमणदेई इच्छाकार जगवन्  
 साज करी पडिलेहण पडिलेहावो जी एम कही ॥  
 थापनाचार्य पडिलेह रके, अने जो गुरवादि  
 थापनाचार्य पडिलेहे, तो पण खमासमण देई  
 आग्या मागे, पीठे खमासमण देई ॥ इच्छा ॥ सं ॥  
 न ० ॥ सुहपती पडिलेहुं १ गुरु कहे पडिलेहेह ॥  
 पीठे इच्छं कही ॥ सुहपती पडिलेहि ॥ दोय ख  
 मासमणे ॥ इच्छाका ॥ सं ॥ न ० ॥ उहि पडिलेहण  
 सदिससां ॥ उही पडिलेहण करु ॥ एम कही  
 कंबल वस्त्रादि पडिलेहे ॥ पीठे पोपधशाला  
 प्रमार्जी काजो, विधिशुं परठची खमासमण देई  
 इरियावही पडिकमे ॥ ए मूलविधि जाणवो ॥  
 इतनी स्थिरता न होवे, तोनी दृष्टिपडिलेहण  
 तो अवश्य करणी ॥ अबनी प्राये एही क  
 रते दिखते हैं ॥

॥ अत्र सामायिक पारणोका विधि कहे हे ॥

॥ पीठे सामायिक पारे ॥ एक खमासमण  
 देई ॥ मुहपत्ति पडिलेहे ॥ फिर खमासम  
 ण देई ॥ इच्छा०॥स०॥ज०॥ सामायिक पारुं ॥  
 गुरु कहे पुणोवि कायबो, पीठें यथाशक्ति क  
 ही वली खमासमण देई कहे इच्छाका० ॥स०॥  
 ज०॥ सामायिक पारेमि ॥ गुरु कहे आचारो  
 न मोत्तबो ॥ पीठें तद्वत्ति कही, अर्ध नमि ऊ  
 नो थको, तीन नवकार गुणी नीचो गोमालीयें  
 बेसी मस्तक नमावी ॥ नयवं दससुनहो ॥  
 इत्यादिगाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ नयवं दससुनहो ॥

॥नयवं दससु नहो, सुदंसणो थूलिजह वयरो य  
 ॥सफलीकयगिहचाया, सादू एह विदा दुती ॥१  
 सादूण वंदणेण, नासइ पावं असकिया जावा ॥  
 फासु अदाणे निरुत्तर, अजिग्गहो नाण माईणं  
 ॥ २ ॥ उमहो मूढमणो, कित्तिय मित्तपि संज

रइ जीवो ॥ ज च न संनरामि अहं, मिहामि  
 कड तस्स ॥३॥ जं जं मणेण चितिय, मसुहं  
 याइ नासिय किंचि ॥ असुहं काएण कयं, मि  
 हामि इकड तस्स ॥ ४ ॥ सामाइय पोसइसं,  
 छियस्स जीवस्स जाइ जो कालो ॥ सो स  
 लो बोधवो, सेसो ससार फलहेऊ ॥५॥ सामायि  
 क विधे लीधु विधे कीधुं, विधि करता अविधि  
 आशातना लगी होय, दश मनका, दश वच  
 नका, बारह कायाका, बत्तीस दूषणमाहि जो  
 कोइ दूषण लगा होय, सो सदु मन कर, व  
 चन कर, कायार्थे करी मिहामि इकडं ॥ इति  
 सामायिक पोसइ पारवानी गाथा ॥

॥ अथवा पहिला सामायिक पारी के, पठि  
 पढिलेहण करे इहां यथायोग्य अवसरे गुरुकं  
 सुहराइ पूठै ॥

दूसरा खमासमण देवे, श्रीजिनपति सुरि

जीकी सामाचारीमें एसे कह्यो हे ॥ इति सामा  
यिक पारणविधि ॥

॥ अथ संध्याकाल सामायिकविधि लिख्यते ॥

॥ पिबले पहोरें धर्मशाला प्रमार्जी वस्त्रादिक  
पडिलेहे. जो अवेरो आयो दुवे, तो दृष्टिपडिले  
हण करे ॥ पीठि गुरु आगे अथवा थापनाचार्य  
जी आगे आवी नूमि प्रमार्जी आसण वाम पा  
स मूकी खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ स०  
॥ न० ॥ सामायिक मुहपत्ती पडिलेहु ? गुरु कहे  
पडिलेहेह इच्छ कही ॥ फिर खमासमण देई मुह  
पत्तीपडिलेहे ॥ पीठि खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥  
सं० ॥ न० ॥ सामायिक संदिस्साज ? गुरु कहे  
संदिस्सावेह ॥ फिर खमासमण देई इच्छाका० ॥  
स० ॥ न० ॥ सामायिक ठाज ? गुरु कहे, ठाएह ॥  
इच्छ कही फिर खमासमण देई ॥ अर्धावनत  
थई तीन नवकार गुणी कहे इच्छकार नवगन्  
पसाज करी सामायिक दफक उच्चरावो जी ॥

रइ जीवो ॥ ज च न सन्नरामि अहं, मिञ्चामि इ  
 कड तस्स ॥३॥ जं ज मणेण चिंतिय, मसुहं  
 याइ नासिय किंचि ॥ असुहं काएण कयं, मि  
 ञ्चामि इक्कड तस्स ॥ ४ ॥ सामाइय पोसइसं,  
 ठियस्स जीवस्स जाइ जो कालो ॥ सो सफ  
 लो बोधवो, सेसो संसार फलहेऊ ॥५॥ सामायि  
 क विधे लीधुं विधे कीधु, विधि करता अविधि  
 आशातना लगी होय, दश मनका, दश वच  
 नका, बारह कायाका, बत्तीस दूषणमाहि जो  
 कोइ दूषण लगा होय, सो सहु मन कर, व  
 चन कर, कायार्ये करी मिञ्चामि इक्कडं ॥ इति  
 सामायिक पोसइ पारवानी गाथा ॥

॥ अथवा पहिलां सामायिक पारी के, पठि  
 पडिलेहण करे इहां यथायोग्य अवसरें गुरुकूं  
 सुहराइ पूठै ॥

दूसरा खमासमण देवे, श्रीजिनपति सूरि

उविहार उपवास हुवे, तो पञ्चस्काण करवुं ठे  
 नही ॥ ते माटे सुहृपती नहिं पडिलेहे ॥ ए वि  
 स्तार विधि है ॥ पीठिं एक खमासमण देई  
 इच्छाका० ॥ सं० ॥ न० ॥ सिद्धाय संदिस्साजं ?  
 गुरु कहे, संदिस्सावेह पीठिं इच्छं कही वली  
 खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ न० ॥ सिद्धा  
 य करुं ? गुरु कहे करेह ॥ पीठिं इच्छं कही ॥  
 खमासमण देई ॥ उच्चो थको मधुर स्वरें आ  
 ठ नवकारनी सिद्धाय करे ॥ पीठिं खमासमण  
 देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ न० ॥ बेसणु संदिस्साज ?  
 गुरु० संदिस्सावेह ॥ फिर खमासमण देई इ  
 च्छा० ॥ सं० ॥ न० ॥ बेसणुं ठाजं ? गुरु कहे, ठा  
 एह ॥ पीठिं इच्छं कही जो शीत कालादि हुवे तो  
 खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ न० ॥ पाग  
 रणु संदिस्साजं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह ॥ फि  
 र खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ न० ॥ पागर  
 णुं पडिग्घाज ? गुरु कहे पडिग्घाएह ॥ पीठिं इच्छं क

गुरु कहे उच्चरावेमो ॥ पीठे करेमिजंते  
 य ॥ इत्यादि सामायिक सूत्र गुरु  
 अनुज्ञापण करतो थको तीन वार उ  
 री खमासमण देई ॥ इच्छाकाण ॥ स० ॥ ज० ॥  
 इरियावहिय पडिकमामि ? गुरु कहे पडिकम  
 ह ॥ पीठे इच्छ कही ॥ इच्छामि पडिकमिजं ॥ १  
 रियावहियाए इत्यादि पाठसें इरियावहिय पडि  
 कमी ॥ एक लोगस्सका काजस्सग्ग करी  
 णमो अरिहताण कही, काजस्सग्ग पारी सु  
 खें प्रगट लोगस्स कही, नीचें बैठ के सुहप  
 ती पडिलेहि वादणा देई कहे इच्छाकार जग  
 वन्! पसाउ करी पच्चस्काण करावोजी पीठें गुरु,  
 दिवस चरिम पच्चस्काण करावे ॥ गुरु अज्ञावें  
 थापनाचार्य समद्धें अथवा स्वमुखें, अथवा  
 वनेरा साधमीं मुखे पच्चस्के ॥ अने जो तिवि  
 हार उपवास कीधो हुवे, तो सुहपती पडिलेहि  
 पच्चस्काण करे ॥ वादणा न देवे, अने च

उच्चिहार उपवास हुवे, तो पञ्चस्काण करवुं ठे  
 नही ॥ ते माटे मुद्दपती नदिं पडिलेदे ॥ ए वि  
 स्तार विधि है ॥ पीठिं एक खमासमण देई  
 इच्छाका० ॥ स० ॥ न० ॥ सिधाय संदिस्साठ ?  
 गुरु कहे, संदिस्सावेद पीठिं इच्छं कही वली  
 खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ स० ॥ न० ॥ सिद्धा  
 य करुं ? गुरु कहे करेद ॥ पीठिं इच्छं कही ॥  
 खमासमण देई ॥ उचो थको मधुर स्वरें आ  
 ठ नवकारनी सिद्धाय करे ॥ पीठिं खमासमण  
 देई ॥ इच्छा० ॥ स० ॥ न० ॥ बेसणु संदिस्साठ ?  
 गुरु० संदिस्सावेद ॥ फिर खमासमण देई इ  
 छा० ॥ स० ॥ न० ॥ बेसणुं ठाठं ? गुरु कहे, ठा  
 एद ॥ पीठिं इच्छं कही जो शीत कालादि हुवे तो  
 खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ न० ॥ पाग  
 रणु संदिस्साठ ? गुरु कहे, संदिस्सावेद ॥ फि  
 र खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ स० ॥ न० ॥ पागर  
 णुं पडिग्घाठ ? गुरु कहे पडिग्घाएद ॥ पीठिं इच्छं क



गुरु कहे उच्चरावेमो ॥ पीठे करेमिजंते  
 य ॥ इत्यादि सामायिक सूत्र गुरु वचन  
 अनुनापण करतो थको तीन वार उच्च  
 री खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ स० ॥ ज० ॥  
 इरियावहियं पडिक्कमामि ? गुरु कहे पडिक्कमे  
 ह ॥ पीठे इच्छ कही ॥ इच्छामि पडिक्कमिजं ॥ इ  
 रियावहियाए इत्यादि पाठसे इरियावहिय पडि  
 क्कमी ॥ एक लोगस्सका काजस्सग्ग करी,  
 एमो अरिहताण कही, काजस्सग्ग पारी सु  
 खें प्रगट लोगस्स कही, नीचें बैठ के सुहप  
 त्ती पडिलेहि वादणा देई कहे इच्छाकार जग  
 वन्! पसाज करी पञ्चखाण करावोजी पीठें गुरु,  
 दिवस चरिम पञ्चखाण करावे ॥ गुरु अजावें  
 ध्यापनाचार्य समझे अथवा स्वमुखें, अथवा  
 वनेरा साधमीं मुखे पञ्चखे ॥ अने जो तिवि  
 हार उपवास कीधो दुवे, तो सुहपत्ती पडिलेहि  
 पञ्चखाण करे ॥ वादणा न देवे, अने जो च

उषिहार उपवास हुवे, तो पञ्चस्काण करवुं ठे  
 नही ॥ ते माटे मुहपती नहिं पडिलेहे ॥ ए वि  
 स्तार विधि है ॥ पंढिं एक खमासमण देई  
 इच्छाका० ॥ सं० ॥ न० ॥ सिधाय सदिससाळं ?  
 गुरु कहे, संदिस्सावेद पंढिं इच्छ कही वली  
 खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ न० ॥ सिद्धा  
 य करुं ? गुरु कहे करेह ॥ पंढिं इच्छं कही ॥  
 खमासमण देई ॥ उचो थको मधुर स्वरें आ  
 ठ नवकारनी सिद्धाय करे ॥ पंढिं खमासमण  
 देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ न० ॥ वेसणु सदिससाळं ?  
 गुरु० संदिस्सावेद ॥ फिर खमासमण देई इ  
 च्छा० ॥ सं० ॥ न० ॥ वेसणु ठाउ? गुरु कहे, ठा  
 एह ॥ पंढिं इच्छ कही जो शीत कालादि हुवे तो  
 खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ न० ॥ पाग  
 रणु संदिस्साळं ? गुरु कहे, सदिससावेद ॥ फि  
 र खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ न० ॥ पाग  
 रणु पडिग्घाउ? गुरु कहे पडिग्घाएह ॥ पंढिं इच्छक

ही शुद्ध ध्यान करे ॥ इति सध्यासामायिक विधिः ॥

॥ अथ देवसि पडिक्रमण विधि लिख्यते ॥

॥ प्रथम त्रण खमासमण देई ॥ इडा०॥सं०॥  
 न०॥ चैत्यवंदन करुं गुरु कहे करेइ पठि इडक  
 ही ॥ जय तिदुयण कहे ॥ जिसमे पस्की तथा चठ  
 मासी तथा संबहरीके रोज तीस गाथा कहेनी ॥  
 और दिनोमे तो पाच गाथा पहेलेकी, और दोष  
 गाथा पिठाडीकी, एवं सात गाथा कहेनेकी प्रवृत्ति  
 देखणेमें आवेहे अब जयतिदुअण लिखते हैं ॥

॥ अथ जयतिदुअण लिख्यते ॥

॥ जय तिदुअण वरकप्परुस्क जय जिण धन्न  
 तरि, जय तिदुअण कद्धाणकोस डरिअक्करि के  
 सरि ॥ तिदुअण जण अविजघियाण चुवणत्त  
 य सामिअ, कुणसुसुहाइ जिणेस पास थनणय  
 पुरठिअ ॥ १ ॥ तइं समरत्त लहति जत्तिवर पु  
 त्त कलत्तहिं, धम्म सुवन्न हिरम्म पुम्म जणत्तुंजहि  
 रक्कहि ॥ पिस्सहि सुस्स अस्सखसुस्स तुद्द पासप

साइण, इय तिहुअण वरकप्परुक्क सुक्कदि कुण  
 महजिण ॥ २ ॥ जरजऊर परिञ्चुष् कसणहु  
 ठ सुकुठिण, चक्कुस्कीणखणखुष् निरसद्धिअ  
 सूलिण॥तुह जिण सरणरसायणेण लहु हुंति पु  
 णसव, जय धसतरि पास महवि तुहुं रोगहरो  
 चव ॥ ३ ॥ विक्काजोइस मतततसिद्धिउ अपय  
 तिण, चुवणप्पुअ अठविह सिद्धि सिक्कइ तुह  
 नामिण ॥ तुह नामिण अपवित्तउवि जण होइ  
 पवित्तउ, त तिहुअण कक्खाणकोस तुह पास  
 निरुत्तउ ॥ ४ ॥ खुह पवत्तइ मंत तंत जताइंवि  
 सुत्तइ, चरथिरगरलगहुग्गखग्गरिउवग्गवि  
 गजइ ॥ उब्बियसत्त अणत्त घत्त निठारइ दय  
 करि, उरिअईं हरउ सुपासदेव उरिअक्करिके  
 सरि ॥५॥ तुह आणाथनेइ नीमदप्पुधर सुरव  
 र, रक्कस जक्क फणिंद विद चौरानलजलहर॥  
 जलथालचारिरनुहखुह पसुजोइणि जोइअ, इय  
 तिहुअणअविलधिआण जय पास सुसामिअ

ही शुभ ध्यान करे ॥ इति सध्यासामायिक विधिः ॥

॥ अथ देवसि पडिक्कमण विधि लिख्यते ॥

॥ प्रथम त्रण खमासमण देई ॥ इच्छाणासंण  
न ॥ चैत्यवदन करु ? गुरु कहे करेह पंढि इच्छं  
ही ॥ जय तिहुयण कहे ॥ जिसमें पस्की तथा चठ  
मासी तथा संब्वरीके रोज तीस गाथा कहेनी ॥  
और दिनोमे तो पाच गाथा पहेलेकी, और दोष  
गाथा पिगाडीकी, एवं सात गाथा कहेनेकी प्रवृत्ति  
देखणेमे आवेहे अब जयतिहुअण लिखते हे ॥

॥ अथ जयतिहुअण लिख्यते ॥

॥ जय तिहुअण वरकप्परुक्क जय जिण धम्म  
तरि, जय तिहुअण कल्लाणकोस झरिअकरि के  
सरि ॥ तिहुअण जण अविलंघियाण चुवणत  
य सामिअ, कुणसुसुहाई जिणेस पास थनणय  
पुरठिअ ॥ १ ॥ तई समरत लइति जत्तिवर पु  
त्त कलत्तहिं, धम्म सुवन्न हिरम्म पुम्म जणनुंजहि  
रुद्धि ॥ पिस्सहि सुक्क असंखसुक्क तुह पासप

पवूढरूढ उहदाहसुपुलश्य ॥ मसुहिंमसूसनस  
 पुसुअप्पाणं सुरनर, इय तिहुअण आणदचद ज  
 य पास जिणेसर ॥११॥ तुह कसुणाणमहेसुघट  
 टंकारवपिस्सिअ, वसुवरमसुमहसुनत्तिसुरवर  
 गेसुस्सिअ ॥ हसुप्फलिअ पवत्तयति नवणेहि  
 महूसव, इय तिहुअण आणदचंद जय पाससुहु  
 ञ्चव ॥ १२ ॥ निम्मल केवल किरणनियरविहु  
 रिअ तमपहयर, दंसिअ सयलपयत्तसत्तविठरि  
 अ पदानर ॥ कलिक्खुसिअ जण घूअलोयलो  
 यणहअगोयर, तिमिरइ निरुहर पासनाह नुव  
 णत्तय दिणयर ॥१३॥ तुह समरणजलवरिससि  
 त्त माणव मइ मेइणि, अवरारवरसुहुमत्तवोह कं  
 दलदलरेइणि ॥ जायइ फलनरजरिय हरिय उ  
 हदाह अणोवम, इयमइ मेइणि वारिवाह दिसि  
 पास मइ मम ॥१४॥ कय अविक्कल कसुणाणव  
 स्सिउल्लूरियउहवणुं, दाविअसग्गपवग्गमग्ग उ  
 ग्गइग्ग वारणु ॥ जय जंतुहजणएणतुल्लजंजणि

॥६॥ पञ्चिअ अठ अणठहिठनतिप्रर निप्र,  
 रोमच चिअचारुकाय किस्सरनरसुरवर ॥ जसु  
 सेवहिं कमकमलजुअल परकालिअ कलिमलु,  
 सो नुवणत्तयसामि पास महमदुज रिजबलु ॥७॥  
 जय जोइअमणकमलनसलनय पजरकुंजर,  
 तिदुअणजण आणंदचद नुवणत्तयदिणयर ॥ ज  
 य मइमेइणि वारिवाह जयजलुपिअमह, थंन  
 णयठिअ पासनाह नाहत्तणकुणमह ॥८॥ बहु  
 विहवसुध्वसु सुसु वसिज वपसहि, सुखधम्मसु  
 कामठकाम नर नियनियसठहि ॥ जं ऊयइ  
 बहु दरिसणठ बहु नाम पसिअल, सो जोइअ  
 मण कमलनसलसुह पास पवअज ॥ ९ ॥ जय  
 विअल रणऊणिरदसण थरहरिअ सरीरय, तर  
 लिअ नयणविससुसुगगिगरगिरकरुणय ॥ तइ  
 सहसत्तिसरंति ह्वंति नरनासिअ गुरुदर, महवि  
 ऊविसऊसइ पास जय पजरकुंजर ॥ १० ॥ पइ  
 पासविविअसंतनित्तपत्तंतपविनिय .

सामिह तुहु माय वप्प तुहुं मित्तपियकरु, तुहु गइ  
 तुहुं मइ तुहिज ताण तुहुं गुरु खेमकरु ॥ इउं इह  
 ञ्जरचारिअवराउ राउलनिप्रग्गउ, लीणउ तुह  
 कमकमल सरणजिणपालहि चगउ ॥ १० ॥ प  
 इकिविकयनीरोयलोयकिविपावियसुहसय, कि  
 विमइ मंतमहतकेवि किविसाहियसिवपय ॥ कि  
 वि गंजिअरिउवग्गकेविजसघवलिअ नूअल,  
 मइ अवहीरहिकेणपास सरणागयवञ्जल ॥ ११ ॥  
 पञ्चुवयारनिरीहनाहनिप्पसु पयोअण, तुहुं जिण  
 पासपरोवयार करुणिकपरायण ॥ सत्तुमित्त सम  
 चित्तवित्तिनयनिंदअसममण, मा अवहीरिअञ्च  
 ग्गउविमइ पासनिरजण ॥ १२ ॥ इउं बहुविहइ  
 इतत्तगत्तुहु इहनासणपरु, इउ सुयणइकरुणि  
 क्कठाण तुहुं निरुकरुणाकरु ॥ इउ जिण पासअ  
 सामिसालु तुहुं तिहुअणसामिअ, ज अवहीरहि  
 मइ ऊखतइय पासन सोहिअ ॥ १३ ॥ सुग्गाञ्चुग्ग  
 विजागनाहनहुजोअणतुहसम, नवणुवयारसु



यहियावहु, रम्म धम्म सो जयउ पास जय वे  
 तु पिअमह ॥ १५ ॥ चुवणारस्सनिवास दरिअ  
 परदरिसणदेवय, जोइणिपूअणखित्तवाल सुहा  
 सुर पसुवय ॥ तुह उत्तठ सुनठ सुठ अविंसंतुल  
 चिठहि, इय तिहुअण वणसिंह पास पावाइ प  
 णासहिं ॥ १६ ॥ फणिफणफारफुरतरयण कर रं  
 जिअ नहयल, फलिणी कदलदलतमाल निम्भु  
 पलसामल ॥ कमठासुर उवसग्गवग्ग संसग्ग  
 अगजिअ, जय पच्चस्कजिणेस पास थनणय पुर  
 ठिअ ॥ १७ ॥ महमणतरलपमाणेय वायावि  
 विसतलु, नियतपुरवि अविणयसहाव आल  
 सविहिलघलु ॥ तुहमाहप्पमाणदेव कारुए  
 पवत्तउ, इयमइमाअवहीरपासपालहिविलवं  
 तउ ॥ १८ ॥ किंकिंकिण्णियकलुणुकिंकिंवनज  
 पिउ, किं वनचिठिउकिठदेवदीणयमविलंबिउ  
 ॥ कासुनकियनिप्पल्लल्लुअहोहिंइहत्तइं, तद्वि  
 न पत्तउताण किपि पउ पहु परिचत्तइं ॥ १९ ॥ तुहुं

सामिह तुहु माय वष्य तुहु मित्तपियंकरु, तुहुं गइ  
 तुहुं मइ तुहिज ताण तुहुं गुरु खेमकरु ॥ इउं इह  
 प्त्तरजारिअवराउ राउलनिप्रग्गउ, लीणउ तुह  
 कमकमल सरणजिणपालहि चगउ ॥ १० ॥ प  
 इंकिविकयनीरोयलोयकिविपावियसुहसय, कि  
 विमइ मंतमहंतकेवि किविसाहियसिवपय ॥ कि  
 वि गंजिअरिउवग्गकेविजसघवल्लिअ नूअल,  
 मइ अवहीरहिकेणपास सरणागयवत्तल ॥ ११ ॥  
 पञ्चुवयारनिरीहनाहनिष्णु पयोअण, तुहुं जिण  
 पासपरोवयार करुणिक्कपरायण ॥ सत्तुमित्त सम  
 चित्तवित्तिनयनिंदअसममण, मा अवहीरिअत्तु  
 ग्गउविमइ पासनिरजण ॥ १२ ॥ इउ वहुविहइ  
 इतत्तगत्तुहुं इहनासणपरु, इउ सुयणइकरुणि  
 क्कवाण तुहुं निरुकरुणाकरु ॥ इउजिण पासअ  
 सामिसाणुतुहुं तिहुअणसामिअ, ज अवहीरहि  
 मइ ऊखतइय पासन सोहिअ ॥ १३ ॥ जुग्गात्तुग्ग  
 विजागनाहनहुजोअणतुहसम, नवणुवयारसु

हावजाव करुणारससत्तम ॥ समविसमह किंघ  
 नएइ चुविदाहुसमतउ, इय उहवधव पासनाह  
 मइ पाल धुणतउ ॥ १४ ॥ नयदीणहदीणयसुए  
 वि अस्सुविकिविजुग्गय, ज जोइयउवयारुकरइउ  
 वयारसमुक्कय ॥ दीणह दीणनिहीणजेणतुहनाहि  
 एचत्तउ, तो जुग्गउअहमेव पासपालहिमइं वं  
 गउ ॥ १५ ॥ अहअस्सुविजुग्गयविसेसकिविमसु  
 हि दीणह, जं पासविजवयारुकरइ तुहनाह सम  
 ग्गह ॥ सुच्चिअकिल कद्धाणुजेण जिण तुम्ह प  
 सीयह, किं अस्सुण तचेव देव मामइंअवहीरह  
 ॥ १६ ॥ तुह पत्तण नहु होइ विदल जिणजाण  
 उ किं पुण, हं उरिउ निरुसत्तचत्तइक्कहु उस्सु  
 यमण ॥ त मसुउ निमिसेण एण एउविक्कइ ल  
 प्रइ, सच्च जं अस्सुयवसेण कि उंवरु पच्चइ ॥  
 ॥ १७ ॥ तिहुअणसामिअ पासनाह मइ अण्णप  
 यासिउ, किक्कउ जं नियरुवसरिसुनमुणुंवरु जपि  
 उ ॥ अस्सु ए जिणजगत्तुदसमोविदस्सिदयास

उ, जइ अविगिस्सि तुंदिजअहहकिंहोइसदया  
 सउ ॥१८॥ जइ तुहूरुविणकिणविपेअ पाइणवे  
 लविउ, तउजाणुंजिणपास तुम्ह हउंअगीकरिअ  
 उ ॥ इयमहइत्तिअ ज न होइ सातुहउंहावण,  
 रकंतह नियकित्तिणे य जुऊइअवहीरण ॥१९॥  
 एवमहारिहजत्तदेवइयन्हवणमदूसउ, ज अण  
 लिय गुणगदण तुम्ह सुणिजणअणिसिद्धउ ॥  
 इय मइ पसियसुपासनादथंनणयपुरठिअ, इय  
 सुणिवरसिरि अन्नयदेव विस्सवइ आणिदिअ ॥  
 ॥ ३० ॥ इति श्रीस्तन्ननकतीर्थराजश्रीपार्श्व  
 नाथस्तवनम् ॥

पंडि जय महायस कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ जय महायस प्रारंभ ॥

॥ जय महायस जय महायस जय महायस  
 ग जय चित्तिय सुह फलय ॥ जय समउ परम  
 उजाणय, जय जय गुरु गिरिम गुरु ॥ जय उ  
 हत्त सत्ताण ताणय, अन्नणयठिय पासजिण ॥

हावभाव करुणारससत्तम ॥ समविसमह किंघ  
 नएइ चुविदाहुसमतज, इय उहवधव पासनाह  
 मइ पाल शुणतज ॥ १४ ॥ नयदीणहदीणयसुए  
 वि अस्विकिविजुगय, जं जोइयउवयारुकरइ  
 वयारसमुज्जय ॥ दीणह दीणनिहीणजेणतुहनाहि  
 एचत्तज, तो जुगजअहमेव पासपालहिमइं  
 गज ॥ १५ ॥ अहअस्विकिविजुगयविसेसकिविमस  
 हि दीणह, ज पासविउवयारुकरइ तुहनाह सम  
 गह ॥ सुच्चिअकिल कक्षाणुजेण जिण तुम्ह प  
 सीयह, किं अस्सुण तचेव देव मामइअवहीरह  
 ॥ १६ ॥ तुह पणनहु होइ विठल जिणजाण  
 उ किं पुण, हउ छिकिउ निरुसत्तचत्तउकहु उस्सु  
 यमण ॥ तं मस्सुण निमिसेण एण एउविक्कइ ल  
 प्रइ, सच्च ज चुस्सियवसेण कि उवरु पच्चइ ॥  
 ॥ १७ ॥ तिहुअणसामिअ पासनाह मइं अप्पप  
 यासिउ, किक्कउ जं नियरूवसरिसुनमुणुंवरु जपि  
 उ ॥ अस्सु ए जिणजगतुटसमोविदस्सिअदयास

॥ पीठि लोगस्स कह कर सबलोए अरिहंत  
 चेइयाण वंदणवत्ति० ॥ अन्नचू० ॥ कहि के एक  
 नवकारका काउस्सग्ग करे पारि के उक्त स्तुति  
 की दूसरी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ सुर नर किन्नर, वदित पद अरविद ॥ का  
 मित नर पूरण, अजिनव सुरतरु कंद ॥ नवि  
 यणने तारे, प्रवहण सम निशिदीस ॥ चोवीशे  
 जिनवर, प्रणमुं विशावा वीस ॥ यह दूसरी गा  
 था कहि के काउस्सग्ग पारे पीठि पुकरवरदी०  
 वंदणवत्तिआए० अन्नचू० कहि के एक नवकार  
 का काउस्सग्ग कर के, पारि के उक्त स्तुतिकी  
 तीसरी गाथा कहे, सो लिखते है ॥

॥ अरथे करि आगम, जाख्या श्रीजगवत  
 ॥ गणधरने गूंथ्या, गुणनिधि ज्ञान अनंत ॥ सु  
 रगुरु पण महिमा, कहि न शके एकंत ॥ सम  
 रं सुखसायर, मन शुद्ध सूत्र सिधात ॥३॥ यह  
 गाथा कहि के सिधाणं बुधाण० ॥ वेयावच्च

नवियद् न्रीम नवहु, नव अक्वणंताणतं गुण  
 तुज्जति संज नमोहु ॥ १ ॥ इति ॥

॥ पीठि शक्रस्तव कह के खडा हो कर अरि  
 हत चेश्याण० ॥ करेमि काउस्सग्गं वदणवति  
 आए० ॥ अन्नहू० ॥ इत्यादि पाठ कह के काउ  
 स्सग्गमाहे एक नवकार चितवी एक श्रावक  
 काउस्सग्ग पारी नमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कही एक  
 गाथा स्तुति कहे, सो लिखते हे ॥

॥ अथ महावीरजिनस्तुति प्रारंभः ॥

॥ मूरति मन मोहन, कंचन कोमल काय  
 ॥ सिंघारथ नंदन, त्रिशलादेवी समाय ॥ म  
 गनायक लंठन, सात हाथ तनु मान ॥ दिनदि  
 न सुख दायक, स्वामी श्रीविर्धमान ॥ १ ॥

॥ ए स्तुति एक श्रावक कहे अरु दूसरे  
 श्रावक सब काउस्सग्गमें रहे थके सुने पीठें  
 एमो अरिहताणं कह के काउस्सग्ग पारे इसी  
 तरें आगे पण स्तुतिकी चारों गाथामे जानलेना

॥ पीठि लोगस्स कद्द कर सबलोए अरिहंत  
 चेइयाण वदणवत्ति० ॥ अन्नचू० ॥ कहि के एक  
 नवकारका काउस्सग्ग करे पारि के उक्त स्तुति  
 की दूसरी गाथा कहे, सो लिखते है ॥

॥ सुर नर किन्नर, वंदित पद अरविंद ॥ का  
 मित नर पूरण, अजिनव सुरतरु कंद ॥ जवि  
 यणने तारे, प्रवदण सम निशिदीस ॥ चौवीशे  
 जिनवर, प्रणमुं विशावा वीस ॥ यह दूसरी गा  
 था कहि के काउस्सग्ग पारे पीठि पुस्करवरदी०  
 वदणवत्तिआए० अन्नचू० कहि के एक नवकार  
 का काउस्सग्ग कर के, पारि के उक्त स्तुतिकी  
 तीसरी गाथा कहे, सो लिखते है ॥

॥ अरथे करि आगम, नारख्या श्रीनगवंत  
 ॥ गणधरने गूथ्या, गुणनिधि ज्ञान अनंत ॥ सु  
 रगुरु पण महिमा, कहि न शके एकंत ॥ सम  
 रु सुखसायर, मन शुद्ध सूत्र सिधात ॥३॥ यह  
 गाथा कहि के सिधाणं बुधाण० ॥ वेयावच्च



नवियद् नीम नवतु, नव अणंताणतं गुण  
तुज्जति संज नमोतु ॥ १ ॥ इति ॥

॥ पीठिं शक्रस्तव कद् के खडा हो कर अरि  
हत चेश्याण० ॥ करेमि काउस्सग्ग वंदणवति  
आए० ॥ अन्नतू० ॥ इत्यादि पाठ कद् के काउ  
स्सग्गमाहे एक नवकार चितवी एक श्रावक  
काउस्सग्ग पारी नमोऽर्हत्सिःशा० ॥ कही एक  
गाथा स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ महावीरजिनस्तुति प्रारंभः ॥

॥ मूरति मन मोहन, कंचन कोमल काय  
॥ सिंघारथ नदन, त्रिशलादेवी समाय ॥ म  
गनायक ललन, सात हाथ तनु मान ॥ दिनदि  
न सुख दायक, स्वामी श्रीविर्हमान ॥ १ ॥

॥ ए स्तुति एक श्रावक कहे अरु दूसरे  
श्रावक सब काउस्सग्गमें रहे थके सुने पीठिं  
णमो अरिहंताणं कद् के काउस्सग्ग पारे इसी  
तरें आगे पण स्तुतिकी चारों गाथामे जान लेना

तस्सुत्तरिण॥अन्नञ्चूण॥इत्यादि कहि के, आठ न  
 वकारका काजस्सग्ग करे. काजस्सग्गमाहि  
 आञ्जना चठ प्रहरमे ॥ इत्यादि पाठ मनमें विं  
 तवी, एमो अरिहंताणं कही काजस्सग्ग पारि  
 कें प्रगट लोगस्स कहे ॥

॥ पठि समासा प्रमार्ज्जिन पूर्वक बैठ के तीस  
 रे आवश्यक सूत्र वादणा सुहपत्ती पडिलेहुं ?  
 गुरु कहे, पडिलेदेह पठिं सुहपत्ती पडिलेदि के  
 वादणा देवे पठिं अवग्रहमाहिज उन्नो थको  
 इञ्जाण॥ सं० ॥ न० ॥ देवसियं आलोअं, एसा  
 कहे तब गुरु कहे आलोएह पठिं इञ्च आलो  
 एमि० ॥ यह पाठ कहे के अतिचार आलोवे.  
 पठिं सबस्सवि देवसियं इत्यादिथी मानीने इ  
 ञ्जाकारेण सदस्सह पर्यंत कहे, तब गुरु पडि  
 कमह यह पाठ कहे ॥

॥ पठिं इञ्चं तस्स मिञ्चामि उक्कड कहि कें  
 समासा प्रमार्ज्जि प्रमार्जित नूमिये आसन पर

गराण अन्नद्वय ॥ कही काजस्सग्ग पारी उक्क  
स्तुतिकी चोथी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ सिंहायिकादेवी, वारे विघन विशेष ॥ सद्दु  
संकट चूरे, पूरे आश अशेष ॥ अहोनिश कर  
जोडी, सेवे सुर नर इद ॥ जपे गुण गण इम,  
श्रीजिनलान्न सूरिंद ॥ ४ ॥ इति महावीरजिन  
स्तुति ॥ यह चोथी स्तुति कहिकें बैठ के नमो  
द्वय कहे, पीठि एक खमासमण देई के श्रीआचा  
र्य मिश्र दूसरा खमासमण दीये पीठि श्रीजिपाध्या  
यजी मिश्र तीसरा खमासमण दे कर श्रीवर्तमान  
आचार्यजीका नाम ले कें मिश्र चोथे खमासमण  
में सर्व साधुजीमिश्र इसी तरे कहे कर गोम  
लथि बैठके मस्तक नमावी सव्वस्सवि देवसिय ०  
इत्यादि कहे कर तस्स मिठामि इक्कड कहे, परं  
' इठ्ठाकारेण सदिस्सह इठ्ठ ' ए पद न कहे ॥

॥ पीठि खडे हो कर करेमि जंते सामाइयं ॥  
इठ्ठामि ठामि काजस्सग्गं जो मे देवसियं ॥

तस्सुत्तरिण॥अब्रह्म॥इत्यादि कहि के, आठ न  
 वकारका काजस्सग्ग करे काजस्सग्गमांहे  
 आज्जुना चउ प्रहरमे ॥ इत्यादि पाठ मनमें चिं  
 तवी, एमो अरिहताणं कही काजस्सग्ग पारि  
 कें प्रगट लोगस्स कहे ॥

॥ पँठिं संमासा प्रमार्ज्जन पूर्वक बैठ के तीस  
 रे आवश्यक सूत्र वादणा मुहपत्ती पडिलेहु ?  
 गुरु कहे, पडिलेहेह पँठिं मुहपत्ती पडिलेहि के  
 वादणां देवे पँठिं अवग्रहमाहिज उचो थको  
 इहाण॥ स० ॥ न० ॥ देवसिय आलोउं, एसा  
 कहे तब गुरु कहे आलोएह. पँठिं इह आलो  
 एसि० ॥ यह पाठ कह के अतिचार आलोवे  
 पँठिं सबस्सवि देवसियं इत्यादिथी मामीने इ  
 हाकारेण सदस्सह पर्यंत कहे, तब गुरु पडि  
 क्रमह यह पाठ कहे ॥

॥ पँठिं इहं तस्स मिहामि डक्कड कहि कें  
 संमासा प्रमार्ज्जि प्रमार्जित नूमिये आसन पर

बैठ के जगवन्! सूत्र जणुं एसा कहे तब गुरु कहे  
 जणेह पीठि इत्त कही तीन नवकार गणी, तीस  
 करेमि जं ते जणीने इत्तामि पडिक्कमिउं जो मे देव  
 सिउ इत्यादि कही एक श्रावक वदित्तु कहे दू  
 सरा सब सुने पीठि खडा हो कर अप्पुठिउमि  
 आरादणाए इत्यादि सपूर्ण पाठ कही, दो वाद  
 णा देवे, अरु अवग्रहमाहिज खडा हुवा इत्ता०  
 ॥ सं० ॥ ज० ॥ अप्पुठिउमि अप्पितर देवसियं  
 खामेउं? गुरु कहे, खामेह ॥

॥ पीठि इत्तं खामेमि देवसिय कहि के गोमाळी  
 ये बैठ के वाम हाथे सुहपत्ती मुखे धर के दक्षि  
 ण हाथे गुरु सन्मुख कर के सर्व पाठ कहे पीठि  
 विधिसेंती दो वादणां दे कर आयरिय उववाय  
 इत्यादि त्रण गाथा कहिके करेमि जं ते सामाइ  
 य इत्तामि तामि काउस्सग्ग इत्यादि कही चारि  
 त्र शुद्धि निमित्ते  
 कहि के आठ नव, अन्नवू० ॥  
 दो लोगस्सका

काजस्सग्ग करी पारि के पीठि दर्शनशुद्धि निमित्ते प्रगट लोगस्स कही सबलोए अरिहत चेइयाण०॥ वंदणवत्ति० ॥ अन्नहू० ॥ कहि केँ एक लोगस्सका काजस्सग्ग करी पारि केँ ज्ञान शुद्धि निमित्तें पुस्करवरदीवड्डे कहि केँ सुयस्स नगवत्त० ॥ वंदणवत्ति०॥ अन्नहू० ॥ कहि केँ एक लोगस्सका काजस्सग्ग करे पीठि पारि केँ सिंहाण बुद्धाण० कहि केँ वेयावच्चगराण न कहे पीठि सुयदेवयाए करेमि काजस्सग्ग अन्न हू०॥ कही एक नवकारनो काजस्सग्ग करे पीठि गुरुका योग न होवे तो एक श्रावक काज स्सग्ग पारि के एमो अर्हत्तिंशा० कहि के श्रुत देवताकी स्तुति कहे गुरु हुवे तो, गुरु कहे, और दूजा सर्व स्तुति सुण के काजस्सग्ग पारे अब श्रुतदेवताकी स्तुति कहे, सो लिखते है ॥

॥ अथ श्रुतदेवताकी स्तुति ॥

॥ सुवर्णशालिनी दयाद, द्वादशांगी जिनो

वैठ के भगवन्! सूत्र नणु एसा कहे तब गुरु करे  
 नणेह पीठि इठ कही तीन नवकार गणी, तीम  
 करेमि न ते नणीने इठामि पडिकमिउं जो मे देव  
 सिउ इत्यादि कही एक श्रावक वदित्तु कहे दू  
 सरा सब सुने. पीठि खडा हो कर अणुठिउमि  
 आरादणाए इत्यादि सपूर्ण पाठ कही, दो वाद  
 णा देवे, अरु अवग्रहमाहिज खडा हुवा इच्छा  
 ॥ सं० ॥ न० ॥ अणुठिउमि अण्णितर देवसियं  
 खामेउ? गुरु कहे, खामेह ॥

॥ पीठि इहं खामेमि देवसियं कहि कें गोमाली  
 ये वैठ कें वाम हाथे मुहपत्ती मुखें धर के दक्षि  
 ण हाथ गुरु सन्मुख कर कें सर्व पाठ कहे पीठि  
 विधिसेंती दो वादणा दे कर आयरिय उवचाय  
 इत्यादि त्रण गाथा कहिके करेमि न ते सामाइ  
 य इठामि ठामि काउस्सग्गं इत्यादि कही चारि  
 त्र शुद्धि निमित्ते करेमि काउस्सग्गं अन्नबू० ॥  
 कहि कें आठ नवकार अथवा दो लोगस्सका

काउस्सग करी पारि के पीठि दर्शनशुद्धि नि  
 मित्ते प्रगट लोगस्स कही सबलोए अरिहंत  
 चेइयाणं०॥ वटणवत्ति० ॥ अन्नबू० ॥ कहि के  
 एक लोगस्सका काउस्सग करी पारि के ज्ञान  
 शुद्धि निमित्तें पुक्करवरदीवड्डे कहि के सुयस्स  
 जगवत्तं० ॥ वंदणवत्ति०॥ अन्नबू० ॥ कहि के  
 एक लोगस्सका काउस्सग करे पीठि पारि  
 के सिधाण बुधाण० कहि के वेयावच्चगराणं न  
 कहे पीठि सुयदेवयाए करेमि काउस्सग अन्न  
 बू०॥ कही एक नवकारनो काउस्सग करे.  
 पीठि गुरुका योग न होवे तो एक श्रावक काउ  
 स्सग पारि के एमो अर्हत्सिधा० कहि के श्रुत  
 देवताकी स्तुति कहे गुरु हुवे तो, गुरु कहे. और  
 दूजा सर्व स्तुति सुण के काउस्सग पारे अव  
 श्रुतदेवताकी स्तुति कहे, सो लिखते है ॥

॥ अथ श्रुतदेवताकी स्तुति ॥

॥ सुवर्णशालिनी दयाद, द्वादशांगी जिनो



वैठ के नगवन् ! सूत्र नणुं एसा कहे तब गुरु कहे  
 नणेह पीठे इत्त कही तीन नवकार गणी, तीन  
 करेमि न ते नणीने इत्तामि पडिकमिउ जो मे देव  
 सिउ इत्यादि कही एक श्रावक वंदितु कहे. दू  
 सरा सब सुने पीठे खडा हो कर अप्पुठित्तिमि  
 आराहणाए इत्यादि संपूर्ण पाठ कही, दो वाद  
 णा देवे, अरु अवग्रहमाहिज खडा हुवा इत्ता०  
 ॥ सं० ॥ न० ॥ अप्पुठित्तिमि अप्पितर देवसियं  
 खामेउ ? गुरु कहे, खामेह ॥

॥ पीठे इत्त खामेमि देवसिय कहि के गोमाली  
 ये वैठ के वाम हाथे मुहपत्ती मुखे धर के दहि  
 ण हाथ गुरु सन्मुख कर के सर्व पाठ कहे पीठे  
 विधिसेती दो वादणां टे कर आयरिय उववाय  
 इत्यादि त्रण गाथा कहिके करेमि न ते सामाइ  
 य इत्तामि तामि काउस्सग्ग इत्यादि कही चारि  
 त्र शुद्धि निमित्ते करेमि काउस्सग्गं अन्नवू० ॥  
 कहि के आठ नवकार अथवा दो लोगस्सका

काञ्जस्सग्ग करी पारि के पीठि दर्शनशुद्धि नि  
 मित्ते प्रगट लोगस्स कही सबलोए अरिहंत  
 चेइयाण०॥ वंदणवत्ति० ॥ अन्नबू० ॥ कहि के  
 एक लोगस्सका काञ्जस्सग्ग करी पारि के ज्ञान  
 शुद्धि निमित्तें पुस्करवरदीवड्डे कहि के सुयस्स  
 जगवत्त० ॥ वंदणवत्ति०॥ अन्नबू० ॥ कहि के  
 एक लोगस्सका काञ्जस्सग्ग करे पीठि पारि  
 के सिद्धाण बुद्धाण० कहि के वेयावच्चगराणं न  
 कहे पीठि सुयदेवयाए करेमि काञ्जस्सग्ग अन्न  
 बू०॥ कही एक नवकारनो काञ्जस्सग्ग करे,  
 पीठि गुरुका योग न होवे तो एक श्रावक काञ्ज  
 स्सग्ग पारिके एमो अर्हत्सिद्धा० कहि के श्रुत  
 देवताकी स्तुति कहे गुरु हुवे तो, गुरु कहे, और  
 दूजा सर्व स्तुति सुण के काञ्जस्सग्ग पारे अब  
 श्रुतदेवताकी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रुतदेवताकी स्तुति ॥

॥ सुवर्णशालिनी दयाद, द्वादशांगी जिनो

वैठ कें जगवन् । सूत्र नणुं एसा कहे तब गुरु कहे  
 नणेह पीठे इठ कही तीन नवकार गणी, तीम  
 करेमि न ते नणीने इठामि पडिकमिठं जो मे देव  
 सिठ इत्यादि कही एक श्रावक वदित्तु कहे हू  
 सरा सब सुने पीठे खडा हो कर अष्टुठिठमि  
 आराहणाए इत्यादि संपूर्ण पाठ कही, दो वाद  
 णा देवे, अरु अवग्रहमाहिज खडा हुवा इष्टा  
 ॥ सं० ॥ न० ॥ अष्टुठिठमि अष्टितर देवसिय  
 खामेठ ? गुरु कहे, खामेह ॥

॥ पीठे इठं खामेमि देवसिय कहि के गोम्राली  
 ये वैठ कें वाम हाथे मुहपत्ती मुखे धर के दक्षि  
 ण हाथ गुरु सन्मुख कर कें सर्व पाठ कहे पीठे  
 विधिसेंती दो वादणा दे कर आयरिय उवदाय  
 इत्यादि त्रण गाथा कहिकें करेमि नं ते सामाह  
 य इठामि ठामि काउस्सग्गं इत्यादि कही चारि  
 त्र शुद्धि निमित्ते करेमि काउस्सग्गं अष्टुठु० ॥  
 कहि कें आठ नवकार अथवा दो लोगस्सग्गं

काउस्सग्ग करी पारि कें पीठि दर्शनशुद्धि नि  
 मित्ते प्रगट लोगस्स कही सबलोए अरिहंत  
 वेइयाणं०॥ वंदणवत्ति० ॥ अन्नबू० ॥ कहि के  
 एक लोगस्सका काउस्सग्ग करी पारि कें ज्ञान  
 शुद्धि निमित्तें पुस्करवरदीवड्डे कहि कें सुयस्स  
 जगवत्त० ॥ वंदणवत्ति०॥ अन्नबू० ॥ कहि के  
 एक लोगस्सका काउस्सग्ग करे पीठि पारि  
 कें सिधाण बुधाण० कहि कें वेयावच्चगराण न  
 कहे पीठि सुयदेवयाए करेमि काउस्सग्ग अन्न  
 बू०॥ कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करे  
 पीठि गुरुका योग न होवे तो एक श्रावक काउ  
 स्सग्ग पारिके एमो अर्हत्तिशा० कहि के श्रुत  
 देवताकी स्तुति कहे गुरु हुवे तो, गुरु कहे. और  
 दूजा सर्व स्तुति सुणके काउस्सग्ग पारे अब  
 श्रुतदेवताकी स्तुति कहे, सो लिखते है ॥

॥ अथ श्रुतदेवताकी स्तुति ॥

॥ सुवर्णशालिनी दयाद्, द्वादशांगी जिनो

वैठ के जगवन् ! सूत्र जणुं एसा कहे तब गुरु कहे  
 जणेह पीठि इच्च कही तीन नवकार गणी, तीन  
 करेमि जं ते जणीने इच्चामि पडिक्कमिउं जो मे देव  
 सिउ इत्यादि कही एक श्रावक वंदित्तु कहे दू  
 सरा सब सुने पीठिं खडा हो कर अप्पुठित्तमि  
 आराहणाए इत्यादि संपूर्ण पाठ कही, दो वाद  
 णा देवे, अरु अवग्रहमाहिज खडा हुवा इच्छा ०  
 ॥ सं० ॥ ज० ॥ अप्पुठित्तमि अप्पितर देवसियं  
 खामेज ? गुरु कहे, खामेह ॥

॥ पीठिं इच्चं खामेमि देवसिय कहि के गोमाली  
 ये वैठ के वाम हाथे सुहपत्ती मुखें धर कें दक्षि  
 ण हाथ गुरु सन्मुख कर कें सर्व पाठ कहे पीठिं  
 विधिसेंती दो वादणा टे कर आयरिय उवद्याय  
 इत्यादि त्रण गाथा कहिके करेमि जं ते सामाङ्  
 य इच्चामि तामि काउस्सग्ग इत्यादि कही चारि  
 त्र शुद्धि निमित्ते करेमि काउस्सग्ग अन्नत्तू ० ॥  
 कहि कें आउ नवकार अथवा दो . . .

काउस्सग्ग करी पारि के पीठि दर्शनशुद्धि नि  
 मित्ते प्रगट लोगस्स कही सबलोए अरिहंत  
 वेइयाण०॥ वदणवत्ति० ॥ अन्नबू० ॥ कहि के  
 एक लोगस्सका काउस्सग्ग करी पारि केँ ज्ञान  
 शुद्धि निमित्तें पुस्करवरदीवड्डे कहि केँ सुयस्स  
 जगवत्त० ॥ वदणवत्ति०॥ अन्नबू० ॥ कहि के  
 एक लोगस्सका काउस्सग्ग करे पीठि पारि  
 के सिद्धाण बुद्धाण० कहि केँ वेयावच्चगराणं न  
 कहे पीठि सुयदेवयाए करेमि काउस्सग्ग अन्न  
 बू०॥ कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करे,  
 पीठि गुरुका योग न होवे तो एक श्रावक काउ  
 स्सग्ग पारि के एमो अर्हत्सिद्धा० कहि के श्रुत  
 देवताकी स्तुति कहे गुरु हुवे तो, गुरु कहे और  
 दूजा सर्व स्तुति सुण केँ काउस्सग्ग पारे अब  
 श्रुतदेवताकी स्तुति कहे, सो लिखते है ॥

॥ अथ श्रुतदेवताकी स्तुति ॥

॥ सुवर्णशालिनी दयाद, द्वादशांगी जिनो

वैठ के नगवन्! सूत्र नणुं एसा कहे तब गुरु कहे  
 नणेह पीठि इह कही तीन नवकार गणी, तीन  
 करेमि न ते नणीने इहामि पडिकमिउं जो मे देव  
 सिउ इत्यादि कही एक श्रावक वंदित्तु कहे दू  
 सरा सब सुने पीठि खडा हो कर अप्पुठित्तमि  
 आराहणाए इत्यादि संपूर्ण पाठ कही, दो वाद  
 णा देवे, अरु अवग्रहमाहिज खडा हुवा इहो  
 ॥ सं० ॥ न० ॥ अप्पुठित्तमि अप्पितर देवसियं  
 खामेउ? गुरु कहे, खामेह ॥

॥ पीठि इहं खामेमि देवसिय कहि के गोमाली  
 ये वैठ के वाम हाथे सुहपत्ती मुखे धर के दहि  
 ण हाथ गुरु सन्मुख कर के सर्व पाठ कहे पीठि  
 विधिसेंती दो वादणा टे कर आयरिय उवघाय  
 इत्यादि त्रण गाथा कहिके करेमि न ते सामाह  
 य इहामि ठामि काउस्सग्गं इत्यादि कही चारि  
 त्र शुद्धि निमित्ते करेमि काउस्सग्गं अमन्नु० ॥  
 कहि के आठ नवकार अथवा दो

ए मतर, जोइसवासविमाण वासीय ॥ जे केवि  
 छठदेवा, ते सवे उवसमंतु मे स्वाहा ॥ १ ॥ प  
 च्चस्काण नहिं लिया होय तो करे ॥ सामायिक  
 चोइसठो पडिकमणा, वादणा, काउस्सग्ग, पच्च  
 स्काण, ठ आवइयक सांधता कानो, मात्रा, उठो  
 अधिको अद्दर उचो नीचो कह्यो होय, ते सर्वे  
 मन, वचन, कायाये करी मिळामि उक्कडं ॥ इत्ता  
 मो अणुसठिंण॥ कही बैठे पठिं गुरु एक स्तुति  
 कह्या पीठे श्रावक समस्त, मस्तके अंजलि क  
 रिकें एमो खमासमणाण ॥ एमोऽर्हत्तिश्चाण॥ क  
 ही॥ एमोऽस्तु वर्धमानाय० इत्यादि तीन स्तुति  
 कहे श्राविका एमो खमासमणाणं कही ससार  
 दावाकी स्तुति कहे

॥ अथ नमोऽस्तु वर्धमानाय ॥

॥ नमोऽस्तु वर्धमानाय, स्पर्धमानाय कर्म  
 ॥ तद्गुणावाप्तमोक्षाय, परोक्षाय कुती  
 ॥ १ ॥ येषा विकचारविंदराज्या, ज्याय



ऋवा ॥ श्रुतदेवी सदा मह्य, मशेषश्रुतसंपदम्  
 ॥ २ ॥ पीठिं खित्तदेवयाए, करेमि काजुस्सगंगं०  
 ॥ अन्नचू० ॥ कहि के, एक नवकार चितवीपूर्व  
 ली परें क्षेत्रदेवताकी स्तुति कहे, सो लिखते हैं.

॥ अथ क्षेत्रदेवताकी स्तुति ॥

॥ यासा क्षेत्रगता सति, साधव श्रावका  
 दय ॥ जिनाज्ञा साधयतस्ता, रक्षंतु क्षेत्र  
 देवता ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पीठिं खडा हुवा एक नवकार कही, सं  
 नासा प्रमार्जिं लकहू बैठ कें ठठे आवश्यकी  
 मुहपत्ती पडिलेहु ? गुरु कहे पडिलेहेह

पीठिं मुहपत्ती पडिलेही विधिगु दो वादणा  
 देइ ॐ वरकनक कहे, सो लिखते हे

॥ अथ वरकनक प्रारभ ॥

॥ ॐ वरकणाय सख विष्णुम, मरगय घण र  
 त्तिह विगय मोह ॥ सित्तरि सयं जिणाणं, रु  
 मर पृश्य वदे ॥ स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ नवणव

ए मतर, जोइसवासविमाण वासीय ॥ जे केवि  
 छठदेवा, ते सबे जवसमंतु मे स्वाहा ॥ १ ॥ प  
 च्चस्काण नर्हि लिया होय तो करे ॥ सामाधिक  
 चोइसहो पडिक्कमणां, वांदणां, काजस्सग्ग, पच्च  
 स्काण, ष आवश्यक सांधता कानो, मात्रा, उठो  
 अधिको अद्धर उचो नीचो कह्यो होय, ते सर्वे  
 मन, वचन, कायाये करी मिच्चामि छक्कडं ॥ इच्छा  
 मो अणुसठिंण ॥ कही बैठे पीठि गुरु एक स्तुति  
 कह्या पीठिं श्रावक समस्त, मस्तके अजलि क  
 रिकें एमो खमासमणाणं ॥ एमोऽर्हत्सिंहाण ॥ क  
 ही ॥ एमोऽस्तु वर्धमानाय ॥ इत्यादि तीन स्तुति  
 कहे श्राविका एमो खमासमणाण कही ससार  
 दावाकी स्तुति कहे

॥ अथ नमोऽस्तु वर्धमानाय ॥

॥ नमोऽस्तु वर्धमानाय, स्पर्धमानाय कर्म  
 ॥ तज्जयावाप्तमोक्षाय, परोक्षाय कुती  
 ॥ १ ॥ येपा विकचारविंदराज्या, ज्यायः

क्रमकमलावलि दधत्या ॥ सदृशैरिति संगतं  
 प्रशस्य, कथित सतु शिवाय ते जिनेन्द्रा ॥  
 ॥ ९ ॥ कषायतापार्दितजंतुनिर्वृतिं, करोति  
 यो जैनमुखाबुदोजत ॥ स शुक्रमासोद्भववृष्टि  
 सन्निधौ, ददातु तुष्टिं मयि विस्तरोगिराम् ॥३॥  
 श्वसितसुरनिगंधा लीढनृङ्गीकुरङ्ग, मुखश  
 शिनमजस्रं विभ्रती या विचर्ति ॥ विकच कम  
 लमुच्चै साऽस्त्वर्चित्यप्रभावा, सकलसुखवि  
 धात्री प्राणनाजा श्रुताङ्गी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ यह तीन गाथा कहि के पीठे एमोचूण०  
 कहि के एक श्रावक खमासमण देई कहे.—इच्छा  
 का० ॥ स० ॥ न० ॥ स्तवन नणुं? दूसरा खमा  
 समण देई कहे ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ न० ॥ स्तवन  
 नणु स्तवन साजलु? गुरु कहे, नणेह साजलेह  
 पतिं आसन पर बैठ के नमोऽर्चनमि-दा० ॥ कहि  
 के यडे म्मवन कहे, सो

॥ अथ श्री चिंतामणि पार्श्वजिनस्तवनम् ॥

॥ नविका श्रीजिनविंब चुहारो, आत्म प  
रम आधारो रे ॥ न०॥श्री० ॥ जिनप्रतिमा जि  
न सारखीजाणो, न करो शंका कांई ॥ आगम  
वाणीने अनुसारें, राखो प्रीति सवाई रे ॥ न०  
श्री० ॥ १ ॥ जे जिनविंब स्वरूप न जाणे, ते  
कहियें किम जाणे ॥ नूला तेह अज्ञाने नरि  
या, नहिंतिहा तत्व पिठाणे रे ॥ न० ॥ श्री० ॥  
॥ २ ॥ अंबड श्रावक श्रेणिक राजा, रावणप्र  
मुख अनेक ॥ विविधपरे जिन नगति करता,  
पाम्या धर्म विवेक रे ॥ न० ॥ श्री० ॥३॥ जिन  
प्रतिमा बहु नगतें जोता, होय निश्चय उपगा  
र ॥ परमारथ गुण प्रगटे पूरण, जो जो आई  
कुमार रे ॥ न० ॥ श्री० ॥४॥ जिनप्रतिमा आ  
कारे जलचर, बे बहु जलधि मजार ॥ ते देखी  
बहुला मत्स्यदिक, पाम्या विरतिप्रकार रे ॥ न०  
॥ श्री० ॥५॥ पाचमा अंगे जिन प्रतिमानो, प्र

गटपणे अधिकार ॥ सूरियाज सुर जिनवर पू  
 ज्या, रायपसेणी मऊर रे ॥ न० ॥ श्री० ॥६॥  
 दशमे अर्गे अहिंसा दाखी, जिन पूज्या जिन  
 राज ॥ एहवा आगम अरथ मरोढी, करिये केम  
 अकाज रे ॥ न० ॥ श्री० ॥७॥ समकितधारी स  
 तीथ जौपदी, जिन पूज्या मन रंगें ॥ जो जो ए  
 हनो अरथ विचारी, बछे झाता अर्गे रे ॥ न०  
 श्री० ॥ ८ ॥ विजयसुरें जिम जिनवर पूजा,  
 कीधी चित्त थिर राखी ॥ अव्य नाव बिहुं नेवें  
 कीनी, जीवाजिगम ते साखी रे ॥ न० ॥ श्री० ॥  
 ॥ ९ ॥ इत्यादिक बहु आगम साखें, कोइ शं  
 का मति करजो ॥ जिनप्रतिमा देखी नित  
 नवली, प्रेम घणो चित्त धरजो रे ॥ न० ॥ श्री०  
 ॥ १० ॥ चिंतामणि प्रचु पास पसाये, सरधा  
 होजो सवाई ॥ श्रीजिनलाज सुगुरु उपटेडों,  
 श्रीजिनचज सवाई रे ॥ न० ॥ श्री० ॥११॥  
 इति श्रीचिंतामणि पार्श्वजिन स्तवनम् ॥

॥ पीठिं तीन खमासमणै आचार्य, उपाध्याय, सर्व साधु वांदी, अद्दाइजेसु कदनां, फेर खमास मणै ॥ इडाका० ॥ स० ॥ न० ॥ देवसि पाय चित्त विशुद्धि निमित्तं काउस्सग्ग करुं १ गुरु कहे, करेह पीठिं इडं कदि के देवसि पायचित्त विशुद्धि निमित्तं करेमि काउस्सग्गं अन्नबू० ॥ कदि शोले नवकार अथवा चार लोगस्सका काउस्सग्ग करे, पारी के लोगस्स कहे

॥ पीठि खमासमण दे कर इडाका० ॥ सं० ॥ न० ॥ खुदोवदव उमावणडं करेमि काउस्स ग्ग ॥ अन्नबू० ॥ इत्यादि कही शोल नवकार अथवा चार लोगस्सका काउस्सग्ग करे, पारि के प्रगट लोगस्स कहे पीठि खमासमण देई ॥ सजाय सदिसाडं फेर खमासमण देई सजाय करुं १ तीन नवकार गुणीजे पीठि ख मासमण देई के ॥ इडा० ॥ स० ॥ नगवनू चै त्यवंदन करुं जी ॥ ऐसा कहे कर थनणा पा

श्वनाथजीका चैत्यवंदन करे, सो लिखते हे ॥

॥ अथ श्रीधनणा पार्श्वनाथजीका चैत्यवंदन ॥

॥ श्रसेढीतटिनीतटे पुरवरे श्रीस्तंजने

स्वर्गिरी, श्रीपूज्याजयदेवसूरिविबुधाधीशै

समारोपित ॥ ससिक्त स्तुतिनिर्जले शिव

फल स्फूर्जत्फणापह्लवः, पार्श्व कल्पतरु स

मे प्रथयता नित्यं मनोवाढितम् ॥ १ ॥ आधि

व्याधिहरो देवो, जीरावल्लीशिरोमणि ॥ पार्श्व

नाथो जगन्नाथो, नित्यनाथो नृणां श्रियोऽशिता ॥

॥ पीठे नमोऽर्चुणसें लेके जयवीयराय सुधी

कहे ॥ पीठे खमासमणपूर्वक मस्तक नमावी

‘ सिरि धनणयछिय पास सामिणो ० ’ इत्यादि

दोय गाथा कहे, सो लिखते हे.

॥ अथ श्रीधनणयछियपाससामिणो ॥

॥ श्री धनणयछियपाससामिणो सेम तिठ

सामीण ॥ तिठ समुद्रय कारण, मुगामुराणं

च संवेसि ॥ १ ॥ एम मह सरणठ, फाउस्मग्ग

करेमि सत्तीए ॥ नत्तीए गुण सुष्ठियस्स,सधस्स  
समुन्नय निमित्तं ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ श्रीधनणा पार्श्वनाथजी आराधवा नि  
मित्तं करेमि काउस्सग्गं ॥ पीठें खडे हो के वंदण  
वण ॥ अन्नण ॥ कही चार लोगस्सका काउस्स  
ग्ग करि के पीठि पारी प्रगट लोगस्स कही कें  
॥ श्रीखरतरगह सिणगारहारजंगम युगप्रधा  
न नट्टारक दादाजी श्रीजिनदत्त सूरिजी चारि  
त्र चूडामणीजी आराधवा निमित्त करेमि काउ  
स्सग्गं ॥ अन्नहूण कहि के, एक लोगस्सका का  
उस्सग्ग करे, पीठि प्रगट लोगस्स कह के

॥ श्रीखरतरगह सिणगारहार जंगमयुग  
प्रधान नट्टारक दादाजी श्रीजिन कुशल सू  
रिजी चारित्र चूडामणिजी आराधवा निमित्त  
करेमि काउस्सग्ग ॥ अन्नहूण कहि के एक लो  
गस्सका काउस्सग्ग करे पीठिं प्रगट लोगस्स  
कहि बैठ के मावो गोमो उंचो करि के खमास



श्वनाथजीका चैत्यवंदन करे, सो लिखते हे ॥

॥ अथ श्रीधनरा पार्श्वनाथजीका चैत्यवंदन ॥

॥ श्रसेढीतटिनीतटे पुरवरे श्रीस्तंजने  
स्वर्गिरी, श्रीपूज्याजयदेवसूरिविबुधाधीशौ  
समारोपित ॥ ससिक्त स्तुतिनिर्जले शिव

फल स्फूर्जत्फणापह्लवः, पार्श्व कल्पतरु स  
मे प्रथयता नित्यं मनोवाठितम् ॥ १ ॥ आधि  
व्याधिहरो देवो, जीरावल्लीशिरोमणि ॥ पार्श्व  
नाथो जगन्नाथो, नित्यनाथो नृणा श्रिये ॥ इति ॥

॥ पठि नमोऽनुषंसे लेके जयवीरराय सुधी  
कहे ॥ पठिं खमासमणपूर्वक मस्तक नमावी  
' सिरि धनरायछिय पास सामिणो ० ' इत्यादि  
दोय गाथा कहे, सो लिखते हे

॥ अथ श्रीयंनरायछियपाससामिणो ॥

॥ श्री धनरायछियपाससामिणो सेस तिष्ठ  
सामीण ॥ तिष्ठ समुन्नय कारणं, सुरासुराणं  
च सवेसिं ॥ १ ॥ एत मर्द सरणं, अउस्सग्गं

तो बड़ी शांति सुणे, परंतु और दिनोमे ठोटी  
शांति सुणे, सो लिखते है

॥ अथ लघुशांतिस्तव ॥

॥ शांतिं शांतिनिशांतं, शांतं शांताशिव  
नमस्कृत्य ॥ स्तोतु शांतिनिमित्तं, मंत्रपदै-  
शांतये स्तौमि ॥ १ ॥ उमिति निश्चितवचसे,  
नमो नमो नगवतेऽर्हते पूजाम् ॥ शांतिजिनाय  
जयवते, यशस्विने स्वामिने दमिनाम् ॥ २ ॥  
सकलातिशेषकमहा, संपत्तिसमन्विताय श  
स्याय ॥ त्रैलोक्यपूजिताय च, नमोनमः  
शांतिदेवाय ॥ ३ ॥ सर्वामरसुसमूह, स्वा  
मिकसपूजिताय निजिताय ॥ नुवनजनपा  
लनोद्यत, तमाय सततं नमस्तस्मै ॥ ४ ॥ स  
र्वद्वरितौघनाशन, कराय सर्वाशिवप्रशम  
नाय ॥ इष्ट ग्रह भूतपिशाच, शाकिनीना प्र  
मथनाय ॥ ५ ॥ यस्येति नाममंत्र, प्रधानवाक्यो  
पयोगकृततोपा ॥ विजया कुरुते जनहित,

मण देई के, इच्छा० ॥ स० ॥ न० ॥ चैत्यवंदन  
करुं जी ऐसैं कहि के चैत्यवंदन करे

॥ अथ चणकसाय ॥

॥ चणकसाय पडिमल्लूखूरण, छुळय मय  
ण बाण मुसुमूरण ॥ सरस पियगु वनु गय  
गामिज, जयज पास चुवणत्तय सामिय ॥ १ ॥

जसु तणु कंति कडप्पसिणि-धुज, सोहइ फणम  
णि किरणादि-धुज ॥ ननव जलहर तडिद्ध  
य लंठिय, सो जिणु पासु पयत्तज वंठिय ॥ २ ॥

॥ अर्हन्तो जगवत इंडमहिता सिद्धाश्च  
सिद्धिस्थिता, आचार्या जिनशासनोन्नतिकरा  
पूज्या उपाध्यायका ॥ श्रीसिद्धात्सुपाठका मु  
निवरा रत्नत्रयाराधका, पञ्चैते परमेष्ठिनः प्र  
तिदिन कर्तुं वोमंगलम् ॥ २ ॥

॥ पीठे नमुद्वृणसें ले के जयवीरगाय पर्यंत  
कहि के, पस्की, चणम्मासी अरु

कुरु कुरु पुष्टिं, कुरु कुरु स्वस्ति च कुरु कुरु  
 त्वं मे ॥ १३ ॥ जगवति गुणवति शिवशां, ति  
 तुष्टि पुष्टि स्वस्तीह कुरु कुरु जनानाम् ॥ उमिति  
 नमो नमो ह्रीं, ह्रीं ह्रूं ह्रूं य ह्रूं ह्रीं फट्  
 फट् स्वाहा ॥ १४ ॥ एव यन्नामाक्षर, पुरस्स  
 र संस्तुता जया देवी ॥ कुरुते शांतिं नमतां,  
 नमो नम शांतये तस्मै ॥ १५ ॥ इति पूर्वसूरि  
 दर्शित, मंत्रपदविदर्शित स्तवः शांते ॥ स  
 लिलादिजय विनाशी, शात्यादिकरश्च नक्ति  
 मताम् ॥ १६ ॥ यश्चेनं पठति सदा, शृणोति  
 जावयति वा यथायोग्यम् ॥ स हि शांतिपदं या  
 यात्, सूरि श्रीमानदेवश्च ॥ १७ ॥ उपसर्गाः  
 ह्यं याति, विद्यंते विघ्नवह्नय ॥ मन प्रसन्न  
 तामेति, पूज्यमाने जिनेश्वर ॥ १८ ॥ सर्वमगल  
 मांगल्य, सर्व कल्याण कारणम् ॥ प्रधानं सर्व ध  
 र्माणा, जैनं जयति शासनम् ॥ १९ ॥ इति ॥  
 ॥ पवि चीराकका अथवा वीजलीका चादणा

मिति च नुता नमत तं शांतिम् ॥ ६ ॥ नवतु न  
 मस्ते नगवति, विजये सुजये परापरैरजिते ॥  
 अपराजिते जगत्या, जयतीति जयावहे नव  
 ति ॥ ७ ॥ सर्वस्यापि च संघस्य, नञ् कक्ष्या  
 ण मगलप्रददे ॥ साधूना च सदा शिव, सुतु  
 ष्टिपुष्टिप्रदे जीया ॥ ८ ॥ नव्याना कृतसि  
 षे, निर्दृति निर्वाणजननि । सत्त्वानाम् ॥ अजय  
 प्रदाननिरते, नमोस्तु स्वस्तिप्रदे तुभ्यम् ॥ ९ ॥  
 नक्ताना जन्तूना, शुजावहे नित्यमुद्यते देवि ॥  
 सम्यग्दृष्टीना धृति, रति मति बुद्धि प्रदाना  
 य ॥ १० ॥ जिनशासननिरताना, शातिन  
 ताना च जगति जनतानाम् ॥ श्रीसपत्कीर्ति य  
 शो, वर्द्धिनि । जय देवि विजयस्व ॥ ११ ॥ सखि  
 लानल विपविपधर, इष्ट ग्रह राज रोगर  
 णजयत ॥ राक्षस रिपुगण मारी, चोरेतिश्वा  
 पटादिभ्य ॥ १२ ॥ अथ रक्त रक्त मुशिवं,  
 कुरु कुरु शांति च कुरु कुरु मदेति ॥ तुष्टि

कुरु कुरु पुष्टिं, कुरु कुरु स्वस्ति च कुरु कुरु  
 त्वं मे ॥ १३ ॥ नगवति गुणवति शिवशां, ति  
 तुष्टि पुष्टि स्वस्तीह कुरु कुरु जनानाम् ॥ उमिति  
 नमो नमो ह्रीं, ह्रीं ह्रूं ह्रूं य ह्रूं ह्रीं फट्  
 फट् स्वाहा ॥ १४ ॥ एव यन्नामाद्दर, पुरस्स  
 र संस्तुता जया देवी ॥ कुरुते शातिं नमतां,  
 नमो नम शातये तस्मै ॥ १५ ॥ इति पूर्वसूरि  
 दर्शित, मंत्रपदविदर्शितः स्तवः शाते ॥ स  
 लिलादिभय विनाशी, शात्यादिकरश्च नक्ति  
 मताम् ॥ १६ ॥ यश्चैनं पठति सदा, शृणोति  
 नावयति वा यथायोग्यम् ॥ स हि शातिपदया  
 यात्, सूरि श्रीमानदेवश्च ॥ १७ ॥ उपसर्गाः  
 ह्य याति, विद्यंते विघ्नवह्नय ॥ मन प्रसन्न  
 तामेति, पूज्यमाने जिनेश्वर ॥ १८ ॥ सर्वमंगल  
 मागल्य, सर्व कल्याण कारणम् ॥ प्रधानं सर्व ध  
 र्माणा, जैन जयति शासनम् ॥ १९ ॥ इति ॥  
 ॥ पंथि चीराकका अथवा बीजलीका चादणा

पढा होय तो इरियावहि० तस्सुत्तरी० अन्नदू०  
 कहि केँ, एक लोगस्सका काउस्सग्ग करे, पढि  
 प्रगट लोगस्स कहि पूर्वली परे सामायिक पारे  
 पढि एक स्तवन दादाजीको कहे ॥ इति देवसी  
 पडिक्कमण विधि संपूर्ण ॥

॥ अथ कमलदलस्तुति ॥

॥ कमलदलविपुलनयना, कमलमुखी कम  
 लगर्जसमगौरी ॥ कमले स्थिता जगवती, द  
 दातु श्रुतदेवता सौख्यम् ॥१॥ ज्ञानादिगुणयु  
 ताना, स्वाध्यायध्यानसयमरतानाम् ॥ विदधा  
 तु ज्वनदेवी, शिव सदा सर्वसाधूनाम् ॥ २ ॥  
 यस्या क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभि साध्यते क्रि  
 या ॥ सा क्षेत्रदेवता नित्य, नूयान्न सुखदायि  
 नी ॥ ३ ॥ इति क्षेत्रदेवता स्तुति ॥

॥ कल्याणकमला गेह, नीलदेहं महासह  
 ॥ नवखम्भिधं पार्श्वं, सदा ध्यायामि मानसे॥

॥ अथ बुटक चैत्यवंदनस्तुतिर्लिख्यते ॥

॥ तत्र प्रथम श्रीपार्श्वजिन स्तुतिः ॥

॥ सकलकुशलवल्ली, पुष्करावर्तमेघो, इरि  
ततिमिरजानु कल्पवृक्षोपमानः ॥ नवजल  
निधिपोत सर्वसपत्तिहेतु, स नवतु सततं व,  
श्रेयसे पार्श्वदेव ॥ १ ॥ इति श्रीपार्श्वजिनः ॥

॥ अथ जिनस्तुतिः ॥

॥ दर्शनाद्भुरितध्वसी, वदनादिष्ठितप्रदः ॥ पूजना  
त्पूरक श्रीणा, जिन साक्षात्सुरधुम ॥२॥ इति॥

॥ अथ आदिजिन स्तुतिः ॥

॥ सुवर्णवर्ण गजराजगामिन, प्रलववा  
द्भु सुविशाललोचनम् ॥ नरामरेडै स्तुतपादप  
कज, नमामि नक्त्या रूपं जिनोत्तमम् ॥३॥  
इति आदिजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ शातिजिन स्तुतिः ॥

॥ सोलम जिनवर शातिनाथ, सेवो शिर  
नामी ॥ कचन वरण शरीर काति, अतिशय



अनिरामी ॥ अचिरा अंगज विश्वसेन, नरप  
ति कुलचंद ॥ मृगलबन धर पद कमल, सेवे  
सुरनरचंद ॥ अगमां अमृत जेहवी ए, जास अ  
खंफित आण ॥ एक मने आराधता, लहिये को  
डि कल्याण ॥ ४ ॥ इति श्रीशातिनाथस्तुतिः ॥

॥ अथ नेमिनाथस्तुति ॥

॥ प्रह सम प्रणमुं नेमिनाथ, जिनवर जयवं  
त ॥ यादवकुल अवर्तस हंस, उत्तम गुणवंत  
॥ समुद्रविजय शिवा देवी जास, मति सहित  
उदार ॥ सुंदर श्याम शरीर ज्योति, सोहे सु  
खकार ॥ गढ गिरनारे जिण लह्यु ए, अमृत पद  
अनिराम ॥ तास ह्यमा कल्याण मुनि, निशि  
दिन नमत कल्याण ॥ ५ ॥ इति श्रीनेमिनाथ ०

॥ अथ श्रीपार्श्वनाथ स्तुति ॥

॥ पुरसाटाणी पास नाह, नमिये मन रग ॥  
नील वरण अश्वसेन नद, निरमल नि शंक ॥  
कामित पूरण कल्प साख, वामासुत साख ॥

श्रीगोडी पुर स्वामि नाम, जपिये निरधार ॥ त्रि  
चुवन पति त्रेवीशमो ए, अमृत सम जसु वा  
ए ॥ ध्यान धरता एहनुं, प्रगटे परम कल्याण  
॥ ६ ॥ इति पार्श्वनाथ स्तुति ॥

॥ अथ श्रीमहावीर स्तुति ॥

॥ बंदू जगदाधार सार, शिव सपत्ति कार  
ए ॥ जन्म जरा मरणादि रूप, नव ताप निवा  
रण ॥ श्रीसिंधारथ तात मात, त्रिशला  
तनुजात ॥ सोवन वरण शरीर वीर, त्रिचुवन  
विख्यात ॥ अमृतरूपे राजतो ए, चोवीशमो  
जिनराय ॥ कृमाप्रमुख कल्याण मुणि, आ  
पो करि सुपसाय ॥ ७ ॥ इति श्रीमहावीर ॥  
॥ अथ पादिकादि पडिक्रमणविधिर्लिख्यते ॥

॥ तिहा प्रथम वदित्तु सूत्र पर्यंत दैवसिक  
पडिक्रमी ॥ १ ॥ खमासमण देई देवसी आलोइयं  
पडिक्रता ॥ इठा ० ॥ स ० ॥ न ० ॥ पद्विय मुह  
पत्ती पडिलेहु ? चउमासीएं चउम्मासिय मुहप

अन्निरामी ॥ अचिरा अंगज विश्वसेन, नरप  
 ति कुलचद ॥ मृगलंठन धर पद कमल, सेवे  
 सुरनरवृद ॥ अगमा अमृत जेहवी ए, जास अ  
 खंमिंत आण ॥ एक मने आराधता, लहियें को  
 डि कल्याण ॥४॥ इति श्रीशातिनाथस्तुतिः ॥

॥ अथ नेमिनाथस्तुति ॥

॥ प्रह सम प्रणमु नेमिनाथ, जिनवर जयवं  
 त ॥ यादवकुल अवतंस हस, उत्तम गुणवंत  
 ॥ समुद्रविजय शिवा देवी जास, मति सहित  
 उदार ॥ सुदर श्याम शरीर ज्योति, सोहे सु  
 खकार ॥ गढ गिरनारें जिण लह्यु ए, अमृत पद  
 अन्निराम ॥ तास कृमा कल्याण मुनि, निशि  
 दिन नमत कल्याण ॥ ५ ॥ इति श्रीनेमिनाथ ०

॥ अथ श्रीपार्श्वनाथ स्तुति ॥

॥ पुरसाटाणी पास नाह, नमियें मन रंग ॥  
 नील वरण अश्वसेन नंद, निरमल नि शंक ॥  
 कामित पूरण कल्प साख, वामामुत सार ॥

नरसहस्रं दिवसाण पनरसहस्रं राईण ज किंचि  
 अप्पत्तिय ॥ इत्यादि सर्व पाठ कहे चउमासें  
 चउह मासाण अठह पक्काणं वीसोत्तरसो रा  
 इंदियाण ज किंचि अप्पत्तिय ॥ इत्यादि कहे  
 सवठरीयें ड्वाजसह मासाण चउवीसह प  
 क्काणं तिन्निसयसठिराइंदियाण ॥ जं किंचि  
 अप्पत्तिय इत्यादि कहे ॥ तेवारे गुरु पण मिठ्ठा  
 मि ड्कड कहे ॥ तिदा दोय साधु उचरता दुवे  
 तो पाखिये तीन, चउमासीये पाच, सवठरीयें  
 सात साधुने खमावे ॥ पठि उठी अवग्रहमाहि  
 रह्यो कहे ॥ इत्ता ० ॥ स ० ॥ न ० ॥ पक्किय आ  
 लोवुं ? गुरु कहे आलोएह ॥ पठि इत्त आलोए  
 मि, जो मे पक्किउ ॥ ३ ॥ अइयारोकउ, इत्यादि सू  
 त्र नणी ॥ संक्षेपें अथवा विस्तारें पाखी चउमा  
 सी सवठरी, अतिचार आलोवे, सो लिखते है ॥

॥ अथ बृहदतिचारा लिख्यते ॥

॥ नाणमि दसणमिय, चरणमितवेय तद् य

ती, संवत्तरीये सवत्तरीमुहपत्ती पडिलेहुं ? एम  
 कहे पीठें गुरु कहे, पडिलेहेह ॥ पीठि इच्च कहे,  
 दूजी खमासमण देइ, मुहपत्ती पडिलेही, वा  
 दणा देई, तिहा पस्कीमें पस्को वइकतो ॥ चउ  
 मासी पडि० ॥ चउमासीउ वइकंतो सवत्तरीमें  
 सवत्तरो वइकतो एम यथायोगें कहे ॥ पीठि गुरु  
 कहे पुण्यवतो देवसीने स्थानकें पास्कि ॥  
 चउमासिक सावत्तरिक नणजो ठीक जयणा  
 करजो मधुर स्वरे पडिक्कमजो, खासे सो वि  
 वरा शुद्ध खासजो. मान्दमें सावचेत रहेजो.  
 पीठि सघलाही तदत्ति कहे ॥ पीठि ऊठी ॥ इ  
 चाका० ॥ सं० ॥ न० ॥ संबुद्धा खामणेण ॥ अ  
 पुठितमि अघ्नितर पस्कि ॥ ३ ॥ खामेऊ ?  
 गुरु कहे, खामेह ॥ पीठि मस्तके अजलि करतो  
 थको, इउं खामेमि पस्कि ॥ ३ ॥ कही, गोमा  
 लीये वेसी मस्तक नमावी दक्षिण दाय गुरु  
 सादामो करी, मुहपत्ती मुग्गे देई ॥ पस्कि ०

वीसाख्यो, तपोधन तपो धर्मे काजो अण ऊधरे  
 दामी अणपडिलेही, वसती अणसोधी, अ  
 सिवाई अणोजा कालवेलामांदि दशवैकालि  
 क प्रमुख सिद्धांत नण्यो गुण्यो, योग वह्या पर्ये  
 नण्यो ज्ञानोपगरण पाटी, पोथी, ठवणी, कवली,  
 नवकरवाली, सांपडा सांपडी वहीदस्तरी ठली  
 या कागल प्रमुखप्रते आशातना दुई, पग ला  
 गो थूक लागो उसीसे मूक्यो कर्ने बता आहा  
 र नीहार कीधो, ज्ञानज्व्य नक्षण उपेक्षण की  
 धो, प्रज्ञापराधे विणाइयो विणसतो उवेरव्यो,  
 बती शक्ते सार सजाल न कीधी, ज्ञानवत प्रते  
 मठर वह्यो, अवज्ञा आशातना कीधी, कोई प्र  
 ते नणता गुणता प्रधेष मत्सर अतराय अप  
 घात कीधो मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, म  
 न पर्यवज्ञान, केवलज्ञान ए पाच ज्ञानतणी अ  
 सद्वहणा कीधी, कोई तोतलो चोबडो हस्यो, वि  
 तक्यो आपणा जाणपणा तणो गर्व चिंतव्यो, अ

विरियमि ॥ आयरण आयारो, इअ एसो पचहा  
 नणित ॥ १ ॥ ज्ञानाचार १, दर्शनाचार २, चारि  
 त्राचार ३, तपाचार ४, वीर्याचार ५ एव पाच विधि  
 आचारमाहि जिको अतिचार पक्ष दिवसमाहि  
 सूक्ष्म, बांदर, जाणता अणजाणता दुठ होई, ते  
 सहू मन, वचन, कायाईं करी मिळा मि डकडं ॥

॥ अथ ज्ञानाचारना आठ अतिचार ॥

॥ काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तहय नि  
 न्हवणे ॥ वजण अठ तडनए, अठविहो नाण  
 मायारो ॥ १ ॥ ज्ञान — कालवेळामाहि पढिउ गु  
 णिउ नही, अकाले पढिउ, विनय हीन बहुमा  
 न हीन उपधान हीन श्री उपाध्यायकने नही  
 पढिउ, अथवा अनेराकने पढिउ अनेरो गुरु  
 कह्यो व्यजन अर्थ तडनय कूटो पढ्यो; देव—  
 चाटणे पडिक्कमणे सियाय करता, पढना, गुणतां,  
 कूडो अकर काने मात्रे अतिको उगे आगल  
 पावळ नण्यो, सूत्र अर्थ कूडा गण्यो.

वीसाख्यो, तपोधन तणे धर्मे काजो अण ऊधरे  
 दाफी अणपडिलेही, वसती अणसोधी, अ  
 सिघाई अणोजा कालवेलामांदि दशवैकालि  
 क प्रमुख सिध्दात नण्यो गुण्यो, योग वह्या परखें  
 नण्यो ज्ञानोपगरण पाटी, पोधी, उवणी, कवली,  
 नवकरवाली, सापडा सापडी वहीदस्तरी उली  
 या कागल प्रमुखप्रते आशातना दुई, पग ला  
 गो थूक लागो उसीसे मूक्यो कर्ने बता आहा  
 र नीहार कीधो, ज्ञानज्व्य नक्षण उपेक्षण की  
 धो, प्रज्ञापराधे विणाश्यो विणसतो उवेख्यो,  
 बती शक्ते सार सनाल न कीधी, ज्ञानवत प्रते  
 मत्तर वह्यो, अवज्ञा आशातना कीधी, कोई प्र  
 ते नणता गुणतां प्रक्षेप मत्सर अतराय अप  
 घात कीधो मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, म  
 न पर्यवज्ञान, केवलज्ञान ए पाच ज्ञानतणी अ  
 सहदृणा कीधी, कोई तोतलो बोवडो हस्यो, वि  
 त्कर्यो आपणा जाणपणा तणो गर्व चिंतव्यो, अ



पृविध ज्ञानाचार विपईउ जिको अतिचार पढ  
 ट्विसमाहे सूद्धम, वाढर, जाणता, अजाणता,  
 हुवो होय, ते सदु मन वचन कायाइ करीमि० ॥

॥ दर्शनाचारना आठ अतिचार ॥

॥ निस्सकिय निक्कखिअ, निव्वितिगिठा अ  
 मूढदिठी अ॥ उववूह धिरीकरणे, वढल्ल पजाव  
 णे अठ ॥१॥ देव गुरु धर्म तणे विपे नि शंक  
 पणो न कीधो, तथा एकात्त निश्रय धर्यो नहीं,  
 सघलाइ मत जला ठे, एह्वी श्रद्धा कीधी, ध  
 र्मसवधिया फलतणे विपे नि संदेह बुद्धि धरी  
 नहीं चारित्रिया साधु साधवी तणा मलमली  
 न गात्र देखी डुगंगा उपजावी, मिथ्यात्वीतणी  
 पूजा प्रजावना देखी, मूढदृष्टिपणो कीधो, सं  
 घमाहे गुणवततणी अनुपब्रह्मणा अस्थिरी  
 करण अवात्सल्य अप्रीति अचक्ति चिंतवी  
 सघमाहे धिरीकरण वात्सल्य शक्ति ठे प्रजा  
 वना न कीधी, देवअव्य विनाशित, विणसंतु

नवेखीउं, ठती शक्ते सार संजाल न कीधी, सा  
 धर्मिकशुं कलह कर्म कीधुं, जिन नवन तणी  
 चोराशी आशातना कीधी, गुरुप्रतें तेत्रीश  
 आशातना कीधी, अधौतवस्त्रे देवपूजा कीधी,  
 तिहु ठाम पाखे देवपूजा, वासकूपी कलश तं  
 णो ठबको लागो, मुखतणी बाफ लागी, ठवणा  
 रिय हाथथकी पडीउं, पडिलेहवो वीसाख्यो,  
 नवकरवालीनें पग लागो, दर्शनाचार विषईउं  
 जिको अतिचार० ॥ ३ ॥

॥ चारित्राचारना आठ अतिचार ॥

॥ पणिहाणजोग जुत्तो, पचहिं समिईहिं तिहिं  
 गुत्तीहिं ॥ एस चरित्तायारो, अछविहो होइ नाय  
 वो ॥१॥ इरियासमिती १, नासासमिती २, एष  
 णासमिती ३, आयाणनंमत्तनिस्केवणासमि  
 ती ४, उच्चारपासवणखेलजह्वसंघाणपारिछा  
 वणीयासमिती ५ मनोगुप्ति १, वचनगुप्ति २,  
 कायगुप्ति ३, ए पंच समिती तीन गुप्ति, रूडी परें

पाली नर्हीं ॥ साधु तणे सढेव श्रावक तणे पोसह  
पडिक्कमणे लीवे अष्टविध चारित्राचार विषईणं  
जिको अतिचार ० ॥ ४ ॥

॥ विशेषत श्रावकतणें धर्में श्रीसम्यक्कमूल  
वारह व्रत श्रीसम्यक्कतणा पाच अतिचार—  
सका कख विगिञ्जा, पसस तह सथवोकुलिंगी  
सु ॥ संकाः—श्रीअरिहत तणी बल अतिशय  
ज्ञान लक्ष्मी गान्धीर्यादिक गुण, शाश्वती प्र  
तिमा चारित्रियाना चारित्र जिनवचन तणो  
सदेह कीधो आकाक्षा—ब्रह्मा विष्णु महेश्वर  
क्षेत्रपाल गोगो गोत्रदेवता ग्रह पूज्या विणाइग  
हनुमत इत्येवमादिक ग्राम गोत्र देश नगर जू  
जूआ देव देहराना प्रजाव देखी रोगें आतर्के  
इहलोक परलोकार्थें पूज्या मान्या, बौद्ध सां  
ख्यादिक सन्यासी जरहा जगत लिंगिया यो  
गी दरवेश अनेराई दर्शनियानो कष्ट मत्र  
चमत्कार देखी, परमार्थ जाण्या ण

अनुमोद्या, कुशाख शीख्या, सांजल्या, शराध  
 सवत्सरी होली बलेव माहीपूनिम अजापडि  
 वो प्रेतबीज गोरत्रीज विणायगचोथ नागपा  
 चम जूलणाबठ शीलसातम धो आठम नजली  
 नवम अहवदसम व्रत इग्यारस वत्सवारस ध  
 नतेरस अनतचौदश आदित्यवार उत्तरायण  
 नवोदक, जाग चोग उतारणा कीधा, पिंपल  
 पाणी घाख्या घलाव्या घर बाहिर कूई तलाव  
 नदीसमुद्र कुर्में पुण्य हेतु स्नान कीधा, दान दी  
 धा, ग्रहण शनिश्वर माहमास नवरात्रि नाहिया,  
 अजाणना थाप्या, अनेराई व्रत व्रतोला कीधां,  
 कराव्या विचिकिच्चा -धर्मसबधिया फल तणो  
 सदेह कीधो, जिण अरिहत धर्मना आगर  
 विश्वोपकार सागर मोहमार्ग दातार देवाधि  
 देव बुध्दे शुध्द जावें न पूज्या, न मान्या, महात्मा  
 ना जात पाणी तणी झगवा कीधी, कुचारित्रिया  
 देखी चारित्रिया ऊपरें अजाव दुठ मिथ्यात्वी

तणी प्रजावना देखी प्रशसा कीधी, प्रीति मा  
 मी, दाक्षिणजर्गे तेहनो धर्म मान्यो ॥ श्रीसम  
 कितविपे अनेरो जिको अतिचार पद्द दिवस  
 माहि सूक्ष्म, बादर, जाणता अजाणता दुठ हो  
 य, तेसदूमन, वचन, कायाइं करी मिठामिण ॥ १ ॥

॥ पहिले प्राणातिपात विरमणव्रते पाच  
 अतिचार वह बध ठविचेण, अज्ञारे जत  
 पाण बुचेण ॥ द्विपद चउपद प्रते रीशवर्शे गा  
 ठो घाठ प्रहार घाल्यो, गाढे बधन बाध्या, घ  
 णे जारे पीढ्या, निर्लाभन कर्म कीधा चारा  
 पाणी तणी वेला सार सजार न कीधी, लहिणे  
 देणे किणढीप्रते लंघाव्यु, तेणे नूखे आपण  
 जिम्या, अणगल पाणी वावस्थुं, रूडे गल्युं  
 नही, गलाव्युं नही, अणगल पाणी जील्या  
 लूगडा धोया, इधण अणसोध्यु जाल्यु सा  
 प कानखजूरा सुलहला माकड जूआ गोगिं  
 ढा साहता मूआ, द्रखव्या, रूडे थानक न मू

क्या, कीडी मकोडी उदेही घिवेली कातरा चू  
 डेलीपतगिया मेरुका अलसिया ईली कूति मांस  
 मसा वगतरा माखी प्रसुख जे कोई जीवविणठा  
 चापिया दूहव्या माला दलावतां पंखी काग चि  
 डकलाना इमां फूटां, अनेरा एकेंडियादिक जि  
 के जीव विणठा चाप्पा, दूहव्या, हालता चालतां  
 अनेरु काइ काम काज करता विध्वंसपणुं कीधुं  
 जीव रक्षा रूडे न कीधी, संखारो सूकव्यो, सुट्या  
 धान तावडे दीधा, दलाव्या, जरडाव्यां, खाटला  
 तावडे जाटक्या, मूक्या, मूकाव्या, जीवाकुल  
 नूमि लीपावी, चाशी गार राखी रखावी, दलणे  
 खामणे लीपणे रूडी जयणा न कीधी आत्म  
 चलदशाना नियम चाग्या, धूणी करावी ॥ पहि  
 ला प्राणातिपात व्रत विषइत अनेरो ॥ १ ॥

॥ बीछुं स्थूल मृषावाद विरमणव्रते  
 पाच अतिचार ॥

॥ सहसा रहस्सदारे, मोसुवणसे थ कूड

लेहे य ॥ सहसात्कार -किणहिक प्रते अयुको  
 आल दीधो, किणहिक प्रते एकाते वात करतां  
 देखी तुम्हे तो राजविरुद्ध चिंतवो गो इत्यादि  
 क कह्यु स्वदार मत्र जेद कीधो, अनेराई  
 किणहीनो मत्र आलोच मर्म प्रकाशयो, किण  
 हीने कूडी बुद्धि दीधी, कूडो लेख लिख्यो, कूडी  
 साख जरी, घापण मोसो कीधो, कन्या ठोर  
 गाय जूमि सबधिया लेहणें देयणे व्यवसाय  
 वाद वढावढि करता मोटकु फूठ बोल्युं, हाथ  
 पग जणी गाल दीधी, करडका मोड्या, अध  
 मर्मवचन बोल्या ॥ बीजे मृषावाद व्रत विषइ० ॥

॥ त्रीजे अदत्तादानविरमण व्रतना पाच  
 अतिचार ॥ तेनाहडप्पउंगे, घर बाहिर क्षेत्र  
 खले पराई वस्तु अणमोकलावी लीधी, दीधी,  
 वावरी, चोरीनी वस्तु मोल लीधी, चोर  
 प्रते संवल दीधुं, संकेत कह्युं विरुद्ध राज्या  
 तिक्रम कीधो, नवा प्रराणा सरस विरस सजी

व निर्जीव वस्तु तणा जेल सनेल कीधा, खोटे तोल मान माप व्होखां, दाणचोरी कीधी, साटे लाच लीधी, माता पिता पुत्र कलत्र परि वार वची जूदी गाठ कीधी, किणहीने लेखे प लेखे चुलव्युं, पडी वस्त उलवी लीधी, त्रिजि अ दत्तादान व्रतविषइउ० ॥

॥ चोथे स्वदार संतोप मैथुनव्रते पाच अ तिचार ॥ अपरिगृहिया इत्तर, अणंग वीवाह तिबअणुरागे ॥ अपरिगृहीतागमन, इत्तर परिगृहितागमन विधवा वेइया स्त्री कुलाङ्गना स्वदार शोकतणे विषे दृष्टिविपर्यास कीधो, सराग वचन बोल्या, आठम चउदस अनेराई पर्व तिथि तणा नियम जागा, घरघरणा कीधां, कराव्या, अनुमोदीया, कुविकटप चिंतव्या, अ नङ्गक्रीडा कीधी, पराया विवाह जोळ्या, काम जोगतणेविषे तीव्रानिलाप कीधो, कुस्वप्न लाधां, नट विट पुरुषशु हासु कीधु, चोथे मैथुन व्रत वि०



॥ पाचमे परिग्रहपरिमाणव्रतें पाच अति  
 चार ॥ धण धन्न खित्त वडू ॥ धन धान्य क्षेत्र व  
 स्तु रूप्य सुवर्ण कुण्य द्विपद चतुष्पद नवविष  
 परिग्रह तणा नियम उपरात वृद्धि देखी मूर्च्छा  
 लगे सद्धेप न कीधो, माता पिता पुत्र कलत्रा  
 दि तणे लेखें कीधो, परिग्रह परिमाण लेई  
 पळ्यो नहीं पढी वीसारिउ, नियम वीसारिउ ॥  
 पाचमे परिग्रह परिमाण व्रतविषइउण ॥

॥ बठे दिग्विरमणव्रतें पाच अतिचार ॥  
 गमणस्सय परिमाणे ॥ ऊर्ध्वदिसि अधोदिसि  
 तिर्यग्दिसि जायवा आयवा तणो नियम जे  
 कोई अजाणे जागो, एक गमा सकोढी बीजी  
 गमा वधारी, विस्मृतिलगें अधिक नूमिगया, पा  
 ठवणी आधी मोकली ॥ बठे दिग्व्रत वि० ॥६॥

॥ सातमे जोगोपजोग परिमाण व्रत ॥ जेहना  
 जोजन आश्री पाच अतिचार अपने करमडूती  
 पन्नरे, एव वीश अतिचार ॥ सञ्चिते पञ्चिबद्धे,

अपोल इपोलय च आहारे ० सञ्चित्त तणे निय  
 म लीधे अधिक सञ्चित्त लीधु, तथा सञ्चित्त  
 मली वस्तु अपक्काहार उपक्काहार तुत्रौषधि  
 तणुं नक्तण कीधुं होला उवी पहुंक काकडी  
 नडथां कीधा, सुल्यां धान प्रमुख नक्तण कीधां  
 ॥सञ्चित्त दव विगई, पाणह तवोल वन्न कुसुमेसु ॥  
 वाहण सयण विलेवण, वन दिसि एहाण नते  
 सु ॥ १ ॥ ए चवदे नियम दिन प्रते सजास्था  
 संक्षेप्या नहिं, लेई नियम जाग्या वावीस अ  
 नक्त, वत्तीस अनतकायमाहि आडं मूला गा  
 जर पींमालू सूरण सेलरा काची आवली गो  
 ल्हा खाधा, चौमासा प्रमुखमाहे वासी कठोल  
 नी रोटी खाधी त्रिहुं दिवसनु दही लीधु, म  
 धु महुडां माखण माटी वेंगण पीलू पीचू पं  
 पौटा पीपी विष हीम करहा घोलवडा अण  
 जाण्या फल टीवरुं अथाणुं आमणवोर का  
 चुं मीत्रं, तिल खसखस काचां कोठिवडा खाधां,

रात्रिभोजन कीधु, लगवगतीवेलार्ये व्यालू कीधुं,  
दिवस उग्या विण शिराव्या तथा पन्नरे कर्मादा  
न इगालि कम्मे, वणकम्मे, साडीकम्मे, जाडी  
कम्मे, फोडीकम्मे, दतवाणिज्ये, लस्क वाणिज्ये,  
रस वाणिज्ये, केशवाणिज्ये, विप वाणिज्ये, जंत  
पीलणकम्मे, निह्वणकम्मे, दवग्गिदावणया,  
सर दह तलाव सोसणया, असई पोसणया, ए  
पाच वाणिज्य पाच कम्म, पाच सामान्य, महा  
रंज लीहाला कराव्या इंटवाह नीवाह पचा  
व्या, धाणी चणा पक्कान्न करी वेच्या वासी  
माखण तपाव्या, अगीठा कीधा कराव्या, तिला  
दिक संचीया, फाणुण मास उपरात राख्या, कू  
कडा सूडा प्रमुख पोण्या, अनेरुं जे काई बहु  
सावध कठोर कर्मादिक समाचर्युं ॥ सातमा  
भोगोपभोग व्रत विपइउ० ॥

॥ आठमा अनर्थं दंरु विरमणव्रतना पाच  
अतिचार ॥ कंदपे कुकुइए० ॥ कंदर्पं जगें बित

नी परें हास्य कुतूहल मुखादि अंग कुचेष्टा  
कीधी, मूरखपणा लगे कुणहीने असबद्द वा  
क्य बोल्या खांता कटारी कुसि कुहाडा रथ  
ऊखल मूसल अगन घरटी आदिक सज करी  
मेल्या, माग्या आप्या, कणक वस्तु ढोर लेवरा  
व्या, अनेरो काइ पापोपदेश दीधो, अंधोल  
नाहण, दातण, पगधोअण पाणी तेल अधिक  
आप्या, हींमोले हींच्या, राजकथा देशकथा  
नक्तकथा स्त्रीकथा पराइ वात कीधी, आर्त्त रौ  
इ ध्यान ध्याया, कर्कश वचन बोल्या, करडका  
मोह्या, सनेडा लाया, नेसा साढ कूकडा, मि  
ढा श्वानादि जूजता कलह करता जोया, खाधी  
लगे अदेखाई चिंतवी माटी मीतु कण कपासि  
या काजविण चाप्या, तेह उपर बयता, आले  
वनस्पति खुदी, वास पाणी विरस तेल गुल  
आम्लवेतस बेरजादिक तणा नाजन उघाडां  
मक्या ते माहि कीडी कथुआ माखी उदर गि

रोली प्रमुख जीव विणठा, सूडा प्रमुख जीव  
 क्रीडा हेते वाधी राख्या, घणी निजा कीधी, रा  
 ग द्वेष लगे एकने रुद्धि परिवार वाढी एकने  
 मृत्युहाणि विमासी आठमा अनर्थ दमव्रतवि०

॥ नवमा सामायिकव्रते पांच अतिचार ॥ ति  
 विहे छुष्णिहाणे सामायिक लीधे मन आह  
 ट दोहट चिंतव्युं, वचन सावद्य बोळ्यु, काय  
 अण पडिलेह्यु हलाव्युं, बर्ती वेलाइ सामायिक  
 न लीधुं, सामायिक लई उघाडे मुख बोळ्या,  
 ऊघ आवी कीधी, बीज दीवा तणी उजाही ला  
 गी कण कपासीया माटी मीतुं नील फूल इ  
 रिकायना सघट्ट दुआ, पुरुष तिर्यचना संघट्ट  
 दुआ, तथा स्त्री तिर्यची आचढी, मुहपत्तीयो सं  
 घट्टी, सामायिक अण पूरळं पारिळं, पारळ वीसा  
 रिळं, नवमे सामायिक व्रतविपश्यो ॥

॥ दशमे देशावकाशिक व्रते पाच अतिचा  
 र ॥ आणवणे वेसवणे ॥ आणवणपुतगे वे

सवणपुत्रगे सदाणुवाइ रूवाणुवाइ वहिया पु  
 ग्गल खेवे ॥ नियमित नूमिकामाहिवाहिर थ  
 की काई अणव्यु, आप कन्हाथी वाहिर मोक  
 ल्या, साद करी रूप देखाडी काकरी नाखी  
 आपणपणुबतुंजणव्यु ॥ दशमे देशावकासि  
 ग व्रतविषइयो ॥ १० ॥

॥ इग्यारमे पोषधोपवास व्रते पाच अतिचा  
 र ॥ सथारुच्चार विही, पमाय तह चैव नोअ  
 णा नोए ॥ पोसह लीधे सथारा तणी नूमि  
 बाहिरला थरिला दिवसें शोध्या पडिलेह्यां  
 नही, मातरुं अणपडिलेह्यु वावरिठ, अणपुजी  
 नूमिकाई परठविठ, परठवता चिन्तवणा न की  
 धी, अणुजाणहजस्सुग्गहो न कह्यो परठव्या  
 पूठें वार त्रण वोसिरामि वोसिरामि न कह्यु  
 पोसहशालामाहि पइसता नीसरता निस्स  
 ही आवस्सहीकडेवी वीसारी, पृथ्वीकाय, अप्प  
 काय तेळकाय वाठकाय वनस्पतिकाय त्रस

काय तणा संघट्ट परिताप उपज्व दुःखा, संथा  
 रा पोरसि तणी विधि नणउ वीसारिउ पोरसि  
 माहि उध्या, अविधि सथारु पाथस्यु, काल  
 वेलाये पडिक्कमणु न कीवउ, पारणादिक तणी  
 चिंता निपजावी, कालवेला देव वादवा वीसा  
 रिया, पोसह असूरो लीयो, सवारो पारीयो,  
 पर्व तिथि आवी पोसह लीधो नही ॥ इग्या  
 रमे पोषधोपवास व्रतविषइयो ॥

॥ बारमे अतिथि संविनागव्रतें पाच अति  
 चार ॥ सच्चित्ते निस्कवणे ॥ सच्चित्तवस्तु हेठे  
 ऊपरि थके महातमा प्रते असूऊतु दान दीधुं,  
 अदेवा तणी बुद्धें सूऊतुं फेडी असूऊतुं कीधुं,  
 देवा तणी बुद्धें असूऊतुं फेडी सूऊतु कीधुं, आ  
 पणु फेडी परायु कीधुं, विहरवावेला टलि गया  
 असुर करी महातमा तेढ्या, मच्चरलगें दान  
 दीधुं, गुणवत आवे जगति न साचवी, उती  
 शक्ति साधर्मिक वात्सल्य न ॥३॥

धर्म क्षेत्र सीढाता बती शक्तें उरुखा नही ॥  
 बारमे अतिथि सविजाग व्रतविपश्यो ॥

॥सलेहणा तणा पांच अतिचार इहलोए पर  
 लोएण ॥ इहलोका संसप्यतगे परलोगासंसप्यत  
 गे जीविआससप्यतगे मरणासंसप्यतगे कामजो  
 गाससप्यतगे इहलोक मनुष्यचव मान महत्व  
 लोक तणी सेवा ठकुराई बलदेव वासुदेव चक्र  
 वर्ति पद वाळ्या परलोक इज अहमिंज देवा  
 धिदेव पदवी वाळी, सुख आव्ये जीववा तणी वा  
 ळ कीधी, इ ख आव्ये मरवातणी वाळ कीधी, का  
 मनोग तणी इहा कीधी ॥ सलेहणा व्रतवि ॥

॥ तपाचार बारजेदें ॥ ठ अच्यतर, ठ वा  
 हिर, अणसणमूणोयरिया, अणसण कहीयें  
 उपवास, ते पर्वतिथि बती शक्तें कीधु नही  
 ऊणोदरी ते पाच सात कवल ऊणा रह्या नही,  
 जव्य सक्केप विगय प्रमुख परमाण कीधु नही  
 आसनादिक काय किलेश न कीधो, संलीण



ता अगोपाग सकोच्या नहीं, नवकारसी पोर  
 सी गठसी मूठसी साहपोरसि पुरिमठ एक  
 सणो वेआसणो नीवी आविल प्रमुख पञ्चस्का  
 ण पारवा वीसाख्या वेसता नवकार जण्यो न  
 ही, ऊठता दिवसचरिमं न कीधु, नीवी आवि  
 ल उपवासादिक तप करी काञ्चु पाणी पीधु,  
 वमन थयु ॥ बाह्य तपव्रत विषयो ॥

॥ अन्यतर तप ॥ प्रायश्चित्त विणत ॥ गुरु  
 कने मन सुधे आलोयणा लीधी नही, गुरुदत्त  
 प्रायश्चित्त तप लेखा शुद्ध पुढचाळ्युं नहीं, देव  
 गुरु सध साहम्मी प्रते विनय साचव्यो नही,  
 वाचना पृढना परावर्तना अनुप्रेक्षा धर्मकथा  
 लक्षण पचविध सिक्काय कीधी नहीं, धर्मध्या  
 न शुक्लध्यान ध्यायुं नही, कर्म ह्य निमित्त  
 लोगस्स दस वीसनो काजस्सग्ग न कीधो ॥ अ  
 न्यतर तप विषयो ॥

॥ वीर्याचारना तीन अतिचार ॥ अणगुद्धि

यवलविरीति,परिक्रमइ जो जहुंत ठाणेषु ॥ छंजइ  
 अ जहा धाम, नायवो वीरियायारो ॥ २ ॥ प  
 ढवे गुणवे विनय वेयावच्च देवपूजा सामायिक  
 दान शील तप ज्ञावना प्रमुख धर्म कृत्यतणे  
 विषे मन वचन कायतणु षु बल वीर्य गोप  
 व्यु,रूढा पचाङ्ग खमासमण न दीधा, बेठा पडि  
 क्रमणुं कीधुं ॥ वीर्याचारव्रत विषइयो ॥

॥ नाणाइ अठ अइ वय, समसलेहण पण  
 पनर कम्मेसु ॥ वारस तवविरिअ तिग, चउवीसं  
 सय अइयारा ॥ १ ॥ पडिसिधाण करणे ॥

॥ जिनप्रतिषिद्ध बावीस अजह्य वत्तीस अ  
 नंत काय बहुबीज जहण महाआरज महाप  
 रिग्रहादिक कीधा, नित्यकृत्य देवपूजा सामायि  
 कादिक तथा तीर्थ यात्रादिक न कीधा, जीवाजी  
 वादि विचार सदहिया नहीं, आपणी कुमति ल  
 गे उत्सूत्र प्ररूपणा कीधी, प्राणातिपात १, मृपा  
 वाद २, अदत्तादान ३, मैथुन ४, परिग्रह ५,

क्रोध ६, मान ७, माया ८, लोभ ९, राग १०,  
 द्वेष ११, कलह १२, अन्याख्यान १३, पर  
 परिवाद १४, पैशून्य १५, अरतिरति १६,  
 मायामृपावाद १७, मिथ्यात्वशाल्य १८ ए अ  
 ढारह पापस्थानकमाहि जे काइ कीधो करा  
 व्यो अनुमोद्यो ॥ एव प्रकारे श्रावक धर्म श्री  
 सम्यक्तत्व मूल बारह व्रत चोवीसा सो अतिचा  
 रमाहि जिको कोइ अतिचार पक्क दिवसमाहि  
 सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणता हुवो होय ते  
 सहू मन वचन कायाये करी मिळामि झुक्कड ॥  
 इति श्रीश्रावकोंके बारह व्रतका अतिचार स०

॥ पीठे सवस्सवि पस्सिय ॥ इत्यादि इच्छाकारे  
 ण सदिस्सह पर्यंत कहे तेवारे गुरु कहे चउठ्ठे  
 ण पडिक्कमह चउमासे उठ्ठेण पडिक्कमह संव  
 उरीये अठ्ठमेण पडिक्कमह इत्तं तस्स मिळामि  
 झुक्कड कही द्वादशावर्त वादणा देवे पीठे इ  
 च्छाकारेण सदिस्सह जगवन्, देवसियं

यं पडिक्कता ॥१॥ पत्तेयस्वामणेण, अणुठिउमि  
 अण्णितरपक्खिय ॥३॥ खामेज्जं<sup>१</sup> गुरु कहे खा० ॥  
 पण्णि इहं खामेमि पक्खिय ॥ ३ ॥ इत्यादि पाठ  
 सर्व पूर्वे कह्यो, तिम कही मिठामि डक्कडं देई  
 खमावे, पण्णि वे वादणा देई जगवन्। देवसियं  
 आलोइय पडिक्कता पक्खिय ॥ ३ ॥ पडिक्कमा  
 वद् ? गुरु कहे सम्म पडिक्कमद् पण्णि इहं कही  
 करेमि जते सामाइयं ॥ इठामि ठामि काजस्स  
 गं जो मे पक्खिउ ॥ ३ ॥ इत्यादि कही, तस्सु  
 त्ती० अन्नहू० ॥ कही ॥ काजस्सग्ग करे, गुरु,  
 पाखीसूत्र कहे, ते साजले अने गुरुयकी जू  
 दा पडिक्कमता हुवे, तो एक श्रावक खमासमण  
 देई कहे जगवन्। सूत्र जणु ? गुरु कहे, जणेद्द  
 एसो वचन मनमे धारी ॥ इह कही, उज्जो थ  
 को, हाथ जोडी सुहपत्ती मुखे देई तीन नवका  
 र कही, मधुरस्वरें सूत्रार्थ मनमे चिंतवतो वंदि  
 त्तु सूत्र गुणे बीजा श्रावक करेमि ज ते० इठा

मि ठामि काजस्सग्ग तस्सुत्तरी० अन्नद्व० कही  
 काजस्सग्गमे रह्या सुणे, सूत्रप्राते एमो अरि  
 हताण कही काजस्सग्ग पारी, उजा थका ती  
 न नवकार गुणी वेसे पीठि ॥३॥ नवकार ॥३॥  
 करेमि न ते कही, इत्थामि पडिक्कमिउं जो मे प  
 स्किउ ॥ ३ ॥ इत्यादि कही, वदित्तु सूत्र गुणे,  
 पडिक्कमे देवसिय सव्व ॥ एदने ठिकाणें पडिक्क  
 मे पस्किय, चउम्मासिय, संवडरियं सव्वं कहे  
 पीठि ऊठी, अप्पुठित्तमि आराहणाए इत्यादि  
 पूर्णं नणी, खमासमण देई इत्था० ॥ स० ।  
 न० ॥ मूलगुण उत्तरगुण अतिचार विशुद्धि  
 निमित्त, काजस्सग्ग करुं ? गुरु कहे करेह पीठि  
 इत्थं कही, करेमि नते सामा० इत्थामि ठामि का  
 जस्सग्ग तस्सु० अन्नद्व० इत्यादि कही, पास्वी  
 र्थे वार लोगस्स चउमासिये वीस लोगस्स संव  
 डरीये चालीस लोगस्सनो काजस्सग्ग करे,  
 एक नवकार ऊपर, काजस्सग्ग करी. पारी लो

गस्स कहे बेसी मुहपती पडिलेही, बे वादणा  
 देई इत्ता० ॥ स० ॥ ज० ॥ समाप्ति खामणे  
 ए ॥ अष्टुष्ठिठमि अष्टितर पस्किय ॥ ३ ॥ खा  
 मेऊं ? गुरु कहे खामेहू पीठि इत्त खामेमि प  
 स्कियं ॥ इत्यादि पाठ पूर्वे कह्यो तिम कहे, पीठि  
 इत्ताका० ॥ स० ॥ ज० ॥ पाखी ॥ ३ ॥ खाम  
 णा खामू ? गुरु कहे, पुण्यवंतो चार वेर खमास  
 मण देई. तीन तीन नवकार कही, पाखी ॥ ३ ॥  
 समाप्त खामणां खामेहू पीठि श्रावक एक खमा  
 समण देई मस्तक नीचु नमावी, तीन नवका  
 र गुणे, इम चार वार कहे, पीठि गुरु कहे नि  
 चारग पारगाहोहू पीठि श्रावक कहे इत्त इ  
 त्तामि अणुसठि कही, गुरु कहे, पुण्यवतो पा  
 खीने लेखे, एक उपवास अथवा दोय अत्रि  
 ल अथवा तीन नीवी, अथवा चार एकासणां,  
 अथवा बे हजार सक्काय करी, एक उपवास  
 नी पेठे पूरज्यो, पाखीने स्थानके दैवसिक ज

एजो. एम चतुर्मासे ए सर्वं उगुणो कहणो,  
 सवत्तरीये त्रिगुणो कहणो. पंठि जिणें तप की  
 धो हुवे ते पइठिय कहे, न कीधो हुवे ते त  
 हत्ति कहे ॥ पंठि वे वादणा देई, अप्पुठित्तिमि अ  
 प्पितर देवसिय खामेमि इत्यादि कहे पंठि वे  
 वादणा देई आयरिय उवज्जाए० तीन गाथा  
 कहे, इम आगे सर्व विधि दैवसिक पडिक्रम  
 एणी करे, पण इतरो विशेष है श्रुतदेवतानो  
 काउस्सग्ग करी स्तुति कहे, पंठिं नवण देवया  
 ए करेमि काउस्सग्ग इत्यादि विधे नवनदेवता  
 को काउस्सग्ग करी स्तुति कहे, सो लिखते हैं

॥ अथ नुवनदेवता स्तुति ॥

॥ चतुर्वर्णाय संघाय, देवी नुवनवासिनी ॥  
 निहत्य झरितान्येषा, करोतु सुखमत्तयम् ॥ १ ॥

॥ क्षेत्रदेवतानो काउस्सग्ग करे, तथा तीने  
 पवे वडा स्तवन अजितशाति कहणी, लघु  
 स्तवन उपसर्गद्दर स्तोत्र कहणो, तथा पडिक्र

मणो पूरो हुवा पठि एक श्रावक सुर्वाज्ञायें,  
 नमोऽर्हत्सिऽशा० कही, वडी शातिका स्तोत्र  
 कहे, बीजा सर्व सुणे, जिणनें रात्रि पोसह न  
 हुवे, ते पोसह सामायिक पारी साजले ॥ इति  
 पाकिक्षादि तीन पडिक्कमणविधि ॥

॥ अथ दस पञ्चस्काणविचार लिख्यते ॥

॥ तिहा प्रथम चउदे नियम सजारे,सो इस  
 तरे पञ्चस्काण करे ॥ उग्गए सूरे नमुक्कार सहि  
 यं सुठसहिय पञ्चस्काइ चउविदपि आहारं अ  
 सणं पाण खाइमं साइमं अस्सुत्तणान्नोगेणं स  
 हसागारेणं महत्तरागारेणं सबसमाहिवत्तिया  
 गारेण विगइठ पञ्चस्काइ अस्सुत्तणान्नोगेणं स  
 हसागारेणं लेवालेवेण गिह्ठिससिठेणं उक्कि  
 त्तविवेगेणं पडुच्चमक्किएण पारिठावणियागारे  
 ण महत्तरागारेण सबसमाहिवत्तियागारेणं दे  
 सावगासिय न्नोगपरिन्नोगं पञ्चस्काइ अस्सुत्त  
 णान्नोगेण सहसागारेण महत्तरागारेण सबस



माह्वित्तियागारेण वोसिरइ ॥ इति नवकार  
सी पञ्चस्काण ॥ २ ॥

॥ तथा जो श्रावक नियम सजारे नहिं, सो  
विगइका उर देसावगासिकका आगार न पञ्च  
स्के निकेवल नवकारसी आदिक पञ्चस्काण  
करे सो लिखते है ॥

॥ जग्गए सूरे नमुक्कार सहियं पञ्चस्काइ ॥  
चजविहपि आहार असणं पाण खाइमं साइ  
मं अन्न ० ॥ सह ० वोसिरामि ॥ इति नवकार  
सी पञ्चस्काण ॥ आगार ॥ ३ ॥

॥ पोरसी मुठसी पञ्चस्कामि, जग्गए सूरे  
चजविहपि आहारं असणं पाणं खाइम साइ  
मं अस्सुत्त ० ॥ सहसा ० ॥ पञ्चस्काएण दिसा  
मोहेणं ॥ साहुवयणेणं सब ० विगइत्त पञ्चस्का  
मि इत्यादि पूर्वकी परे कहणा ॥ इति पोरिसी  
पञ्चस्काण ॥ ७ ॥ आगार ॥ ६ ॥

॥ इस माफक साहु पोरसीका पञ्चस्काण जा

एना. इतना विशेष है, पोरसिं पञ्चस्काइके ठि  
काने इहां साह्वपोरसिं पञ्चस्काइ कदहणां ॥ इति  
साह्व पोरसिपञ्चस्काण ॥ आगार ॥६॥

॥ सूरे उग्गए पुरिमहं अचहं वा पञ्चस्काइ,  
चउविहंपि आहारं असणं पाण खाइमं साइ  
मं अस्सु ॥ सह ॥ पञ्च ॥ दिसामो ॥ साहु ॥  
॥ मह ॥ सब ॥ विगइउ पञ्चस्काइ इत्यादि  
पूर्ववत् ॥ इति पुरिमटुपञ्चस्काण ॥३॥ आ ॥ ७ ॥

॥ पोरसिं साह्व पोरसिं वा पञ्चस्काइ, उग्ग  
ए सूरे चउविहंपि आहारं असण पाण खाइमं  
साइमं अस्सु ॥ सह ॥ पञ्च ॥ दिसा ॥ साहु ॥  
सब ॥ एकासण विअसणं वा पञ्चस्काइ. उविहं  
तिविहंपि आहारं असण खाइम साइम अ  
स्सु ॥ सह ॥ सागारिआगारेणं आउट्टणपसा  
रेणं गुरुअप्पुठाणेण पारि ॥ मह ॥ सब ॥ देसा  
वगासियं ॥ इत्यादि पूर्ववत् ॥४॥ इति एकासण  
विअसण पञ्चस्काण ॥ आगार ॥ ७ ॥

॥ पोरसिं साट्टु पोरसिं वा पञ्चस्काइ उग्ग  
 ए सूरे चजविहपि आहारं असणं पाणं खाइमं  
 साइमं अस्सु० सह० पञ्चसुका० दिसा० साहु०  
 सब० एकासण एगठाण पञ्चस्काइ. इविह ति  
 विह चजविहपि आहार असण खाइम साइ  
 मं अस्सु० सह० सागारिआगारेण गुरुअप्पु  
 ठाणेण पारिठाव० मह० सब० देसाव० इत्या  
 दि पूर्ववत् ॥ ५ ॥ इति एकलठाणा पञ्चस्काण ॥  
 आगार ॥ ७ ॥

॥ पोरसिं साट्टु पोरसिं वा पञ्चस्काइ उग्गए  
 सूरे चजविहपि आहार असण पाणं खाइमं  
 सा० अस्सु० सह० पञ्च० दिसामो० साहु० स  
 व्व० आयंबिलं पञ्चस्काइ अस्सुव्व० सह० ले  
 वालेवेण गिहव्वससिठेण उस्सित्तविवेगेण पा  
 रिठा० मह० सब० एकासणं पञ्चस्काइ तिवि  
 हपि आहारं असणं खाइम साइम अस्सु०  
 सह० सागारिआगारेण आउट्टणपसारेण गु

रुच्यपुष्पाणेणं पारिष्ठा० मह० सब० वोसिरइ  
॥६॥ इति आबिल पञ्चस्काण ॥ आगार ॥७॥

॥ पोरसिं साट्टु पोरसिं वा पञ्चस्काइ उग्ग  
ए सूरे चज्विहंपि आहार असणं पाणं खाइमं  
साइम अस्सु० सह० पण० दिसा० साट्टु० स  
व० ॥ निविगइयं पञ्चस्कामि, अस्सु० सह० ले  
वालेवेण गिह्वससिष्ठेणं उक्खित्तविवेगेण प  
डुच्चमस्किएण पारि० मह० सब० एकासणं प  
ञ्चस्काइ तिविहपि आहार असणं खाइमं सा  
इम अस्सु० सह० सागा० आउट्टु० गुरु० पा०  
मह० सब० देसावगासियं नोगपरिन्नो ग पञ्चस्का  
मि, अस्सु० सह० मह० सब० वोसिरामि ॥  
इति नीवो पञ्चस्काण ॥ आगार ॥ ९ ॥

॥ सूरे उग्गए अप्रत्तठं पञ्चस्कामि चज्विहं  
पि आहार असण पाण खाइम साइम अस्सु०  
सह० मह० सब० देसावगासिय नोगपरिन्नो  
ग पञ्चस्कामि अस्सु० सह० म० सब० वोसिरा

मि ॥ इति चञ्चिहार उपवास पञ्चस्काण ॥ ए ॥

॥ सूरु उग्गए अत्तठं पञ्चस्कामि. तिविहं  
पि आहारं असणं खाइमं साइमं अस्सु स  
हण पाणहार पोरसिं साह्व पोरसिं पुरिमह्व अ  
वह्व वा पञ्चस्काइ अस्सु सहुण पञ्चस्सुण दिसाण  
साहुण सव्व देसावगासिय जोगपरिजोगं पञ्च  
स्कामि अण सण मण सव्वण वोसिरामि ॥ इति  
तिविहार उपवास पञ्चस्काण ॥

॥ पोरसिं साहु पोरसिं पुरिमहुं अवहुं वा प  
ञ्चस्कामि उग्गए सूरु चञ्चिहंपि आहारं अस  
णं पाण खाइमं साइमं अस्सु सहुण पञ्चण  
दिसाण साहुण सव्वण एकासणं एगछाणं दत्ति  
यं पञ्चस्कामि तिविहं चञ्चिहंपि आहार अस  
णं पाणं खाइम साइमं अस्सु सहुण सागाण  
गुरुण महण सव्वण विगइज पञ्चस्कामि इत्यादि  
पूर्ववत् देसावगासियं इत्यादि पूर्ववत् ॥ इति  
दत्तिपञ्चस्काण ॥ ए ॥

॥ दिवसचरिम पञ्चकाइ चउविहपि आहा  
 र असण पाण खाइमं साइम असु० सह०  
 मह० ॥ सब० वोसिरइ ॥ इति दिवसचरिम प  
 च्चकाण ॥ १० ॥

॥ दिवसचरिमं पञ्चकामि डविहपि आहारं  
 असण खाइम असु० सह० मह० सब० वो  
 सिरामि. देसावगासियं पूर्ववत् ॥ इति दिवसच  
 रिम डविहार पञ्चकाण ॥ ९ ॥

॥ पाणहार दिवसचरिम पञ्चकामि अन्न०  
 सह० मह० सब० वोसिरामि ॥ इति पाणहार  
 उपवासरो पञ्चकाण ॥ ९ ॥

॥ नवचरिमं पञ्चकाइ तिविहंपि चउविहं  
 पि आहार असण पाण खाइमं साइम अन्न०  
 सह० मह० सब० वोसिरइ ॥ आगार ॥ ४ ॥  
 नवचरिम, दो आगारकानी होय ॥ इति न  
 वचरिम पञ्चकाण ॥

॥ तथा इमहिज गठिसहि मुठिसहि अगुठ

सहि प्रमुख अग्निग्रह पञ्चस्काणकेत्री ए चार  
 आगार अस्म०सह०मह०सव०वोसिरइ ॥ पा  
 चमो चोलपट्टागारेण सो साधुकों होय ॥ एनि  
 अग्निग्रह पञ्चस्काण ॥

॥ अहस्र नंते तुम्हाणं समीवे देसावगासि  
 य पञ्चस्कामि दवतं खित्ततं कालतं जावतं द  
 वतंण देसावगासियं खित्ततंण उत वा अस्स  
 वा कालतंणं सुहुत्तधारणाप्रमाणे जावनियम  
 पञ्चस्कामि जावतंणं जावगहेणं न गहिकामि ठ  
 लेणं न ठलिकामि अस्सेणकेवि रायंकेण वा ए  
 सो परिणामो न पडिवक्कइ ता अग्निग्रह अस्स  
 ञ्णान्नोगेणं सहस्सागारेण महत्तरागारेणं स  
 वसमाहिवत्तियागारेण वोसिरइ ॥ इति देसाव  
 गासी पञ्चस्काण ॥

॥ तथा साधु पञ्चस्काण करे तव देसावगा  
 सी नदी पञ्चस्के अरु तिविहार उपवासमे आ  
 विलसे नीवीसे एकस्मिण

ठ आगार पञ्चके सो दिखावे हे. पाणस्स  
लेवाडेण वा अलेवाडेण वा अठेण वा बहुलेण  
वा ससिठेण वा असिठेण वा वोसिरइ ॥

॥ अथ पञ्चकाण आगार सख्या ॥

॥ दोचेव नमुक्कारो आगार ठञ्च इति पो  
रसिए ॥ सत्तेवत्त पुरिमहे, एगासणमि अठेव  
॥ १ ॥ सत्ते गठाणस्सज, अठेवय आयविलं  
मि आगारा ॥ पंच वयजाठे, ठप्पाणे चरिम  
चत्तारि ॥ २ ॥ पंच चउरो अज्जिगहे, निवीए  
अठनवय आगारा ॥ अप्पावरणे पचज, ह्वं  
ति सेसेसु चत्तारि ॥ ३ ॥ इति आगार सख्या ॥

॥ अथ सप्त स्मरणानि प्रारब्धते ॥

॥ तत्र प्रथमं ॥

॥ श्रीबृहदजितशातिस्मरण लिख्यते ॥

॥ अजिअ जिअसवन्नयं, सतिं च पसतस  
वगयपाव ॥ जय गुरु सति गुणकरे, दोवि जिण  
वरे पणिवयामि ॥ १ ॥ गाहा ॥ वगय मगुल



सहि प्रमुख अजिग्रह पञ्चस्काणकेनी ए चार  
 आगार अस्म० सह० मह० सव० वोसिरइ ॥ पा  
 चमो चोलपद्मगारेण सो साधुको होय ॥ एनि  
 अजिग्रह पञ्चस्काण ॥

॥ अहस्म जंते तुम्हाणं समवि देसावगासि  
 य पञ्चस्कामि दवतं खित्ततं कालतं जावतं द  
 वतंण देसावगासियं खित्ततंण उत वा अस्मत्त  
 वा कालतंणं मुहुत्तधारणाप्रमाणे जावनियम  
 पञ्चस्कामि जावतंणं जावगद्देणं न गहिक्कामि ठ  
 लेण न ठलिक्कामि अस्मेणकेवि रायंकेण वा ए  
 सो परिणामो न पडिवक्कइ ता अजिग्रह अस्म  
 त्तणाजोगेणं सहस्सागारेण महत्तरागारेण स  
 वसमाहिवत्तियागारेण वोसिरइ ॥ इति देसाव  
 गासी पञ्चस्काण ॥

॥ तथा साधु पञ्चस्काण करे तव देसावगा  
 सी नदी पञ्चस्के अरु तिविदार उपवासमे आ  
 चित्तमे नीवीमे एकासण ... पाणम्यक

ठ आगार पञ्चके सो दिखावे हे पाणस्स  
लेवाडेण वा अलेवाडेण वा अठेण वा बहुलेण  
वा ससिन्हेण वा असिन्हेण वा वोसिरइ ॥

॥ अथ पञ्चकाण आगार संख्या ॥

॥ दोचेव नमुक्कारो आगार ठञ्च दुति पो  
रसिए ॥ सत्तेवत्त पुरिमहे, एगासणमि अठेव  
॥ १ ॥ सत्ते गठाणस्सज, अठेवय आयविलं  
मि आगारा ॥ पंच वयजाठे, ठप्पाणे चरिम  
चत्तारि ॥ २ ॥ पंच चठरो अज्जिगहे, निवीए  
अठनवय आगारा ॥ अप्पावरणे पंचज, ह्वं  
ति सेसेसु चत्तारि ॥ ३ ॥ इति आगार संख्या ॥

॥ अथ सप्त स्मरणानि प्रारब्धते ॥

॥ तत्र प्रथमं ॥

॥ श्री बृहदजितशातिस्मरण लिख्यते ॥

॥ अजिअ जिअसव्वज्जयं, सतिं च पसंतस  
वगयपाव ॥ जय गुरु सति गुणकरे, दोवि जिण  
वरे पणिवयामि ॥ १ ॥ गाहा ॥ ववगय मंगुल

सहि प्रमुख अजिग्रह पञ्चकाणकेनी ए चार  
 आगार अस्स०सह०मह०सव०वोसिरइ ॥ पा  
 चमो चोलपद्दागारेणं सो साधुकों होय ॥ एनि  
 अजिग्रह पञ्चकाण ॥

॥ अहसु नते तुम्हाण समीवे देसावगासि  
 यं पञ्चकामि दवतं खित्ततं कालतं जावतं द  
 वतण देसावगासिय खित्ततण उच्च वा अस्सच्च  
 वा कालतणं मुहुत्तधारणाप्रमाणे जावनियम  
 पञ्चकामि जावतणं जावगहेणं न गहिक्कामि ठ  
 लेण न वलिक्कामि अस्सेणकेवि रायकेण वा ए  
 सो परिणामो न पडिवक्कइ ता अजिग्रह अस्स  
 च्चणाजोगेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारेण स  
 वसमाहिवत्तियागारेण वोसिरइ ॥ इति देसाव  
 गासी पञ्चकाण ॥

॥ तथा साधु पञ्चकाण करे तव देसावगा  
 सी नदी पञ्चके अरु तिचिदार उपवासमे आ  
 चिल्लमं नीरीमं एकामण . पाणस्वका

अ महमविद्य सुनय नय निजणमनयकरं, स  
 रणमुवसरिद्य नुवि दिविजमहिद्य सयय मुव  
 णमे ॥ ७ ॥ संगययं ॥ तं च जिणुत्तम मुत्तम नि  
 त्तम सत्तधरं, अक्कव मत्तव खंतिविमुत्ति समा  
 हि निहिं ॥ संतिअरपणमामि दमुत्तम तिठयरं,  
 संति मुणी मम सति समाहिवरं दिसज ॥ ८ ॥  
 सोवाणयं ॥ सावन्निपुवपन्निवं च वरद्वि मत्तय  
 पसत्त विन्निन्न संधिअ थिर सरिठ वठ मयग  
 ल लीलायमाण वर गंध ह्वि पन्नाण पन्थिय  
 सयवारिहं ह्विह्व वद्धु धतकणग रुअग  
 निरुवदय पिंजरं पवर लक्कणो वचिअ सोम्म  
 चारु रूव सुइ सुहमणाजिराम परम रमणिक्क  
 वरदेव उंउहि निनाय महुरयर सुहगिरं ॥ ९ ॥  
 वेह्वत्त ॥ अजिअं जिआरिणण, जिअ सव्वजयं  
 नवो हरिठ ॥ पणमामि अद पयत्त, पाव पस  
 मेत्त मे नयव ॥ १० ॥ रासालुअत्त ॥ कुरु जण  
 वय ह्विण्णत्तर नरीसरो पढम तत्त महाचक्कव

नावे, तेहं विजल तवनिम्मल सहावे ॥ निरुव  
 म महप्पजावे, थोसामि सुदिठ सप्पावे ॥ १ ॥  
 गाहा ॥ सब ड्खक प्संतीणं, सब पावप्पसतिणं ॥  
 सया अजिय सतीण, नमो अजिअ - संतिण  
 ॥ ३ ॥ सिलोगो ॥ अजिय जिण सुहप्पवत्तण,  
 तव पुरिसुत्तम नामकित्तण ॥ तद्द य धिइ मइ ष  
 वत्तण, तवय जिणुत्तम संतिकित्तण ॥ ४ ॥ मा  
 गहिअ ॥ किरिआविहि सचिअ कम्म किले  
 सविमुक्कयर, अजिअ निचिअ च गुणेहि म  
 हासुणि सिद्धिगय ॥ अजिअस्स य संति महा  
 सुणिणोवि अ सतिकर, सयय मम निबुइ कार  
 णयं च नमसणय ॥ ५ ॥ अलिगणय ॥ पुरि  
 सा जइ ड्खवारण, जइअ विमग्गइ सुक्कका  
 रण ॥ अजिअ सतिं च नावत्त, अजयकरे स  
 रण पवज्झहा ॥ ६ ॥ मागहिअ ॥ अरइ रइ  
 तिमिर विरदिअ सुवरय जरमरणं, सुर असु  
 र गरुल अयगवइ पयय पणियइअं ॥ अजि

अ महमविद्य सुनय नय निउणमजयकरं, स  
 रणामुवसरिअ जुवि दिविजमदिअं सयय सुव  
 एमे ॥ ७ ॥ संगययं ॥ तं च जिणुत्तम मुत्तम नि  
 त्तम सत्तधरं, अऊव मत्तव खंतिविमुत्ति समा  
 दि निर्दि ॥ संतिअरं पणमामि ढमुत्तम तिठयर,  
 संति मुणी मम सति समादिवरं दिसउ ॥ ८ ॥  
 सोवाणय ॥ सावठिपुवपठिवं च वरदठि मठय  
 पसत्त विठिन संधिअं थिर सरिठ वठ मयग  
 ल लीलायमाण वर गंध दठि पठाण पठिय  
 संथवारिह दठिहठ वाहुं धतकणग रुअग  
 निरुवदय पिजर पवर लक्खणो वचिअ सोम्म  
 चारु रूव सुइ सुहमणाजिराम परम रमणिऊ  
 वरदेव उंउदि निनाय मदुरयर सुहगिर ॥ ९ ॥  
 वेद्वं ॥ अजिअं जिआरिगण, जिअ सवजयं  
 चवो हरिउ ॥ पणमामि अद पयउ, पाव पस  
 मेउ मे जयवं ॥ १० ॥ रासाखुअउ ॥ कुरु जण  
 वय दठिणाउर नरीसरो पढम तउ महाचक्कव

नावे, तेदं विजल तवनिम्मल सहावे ॥ निरुव  
 म मद्दप्पनावे, थोसामि सुदिठ सप्पावे ॥ २ ॥  
 गाहा ॥ सब इस्कप्पसंतीणं, सब पावप्पसतिणं ॥  
 सया अजिय सतीण, नमो अजिअ - सतिणं  
 ॥ ३ ॥ सिलोगो ॥ अजिय जिण सुहप्पवत्तण,  
 तव पुरिसुत्तम नामकित्ताणं ॥ तद्द य धिइ मइ ष  
 वत्तणं, तवय जिणुत्तम सतिकित्ताण ॥ ४ ॥ मा  
 गहिअ ॥ किरिअविहि सचिअ कम्म किले  
 सविमुस्कयर, अजिअ निचिअ च गुणेहिं म  
 दासुणि सिद्धिगय ॥ अजिअस्स य सति महा  
 सुणिणोवि अ सतिकरं, सयय मम निवुइ कार  
 णयं च नमसणय ॥ ५ ॥ अलिंगणयं ॥ पुरि  
 सा जइ इक्खवारणं, जइअ विमग्गह सुक्कका  
 रण ॥ अजिअ सतिं च नावत्त, अजयकरे स  
 रण पवक्कहा ॥ ६ ॥ मागटिअ ॥ अरइ रइ  
 तिमिर विरहिअ सुवरय जरमराणं, सुर असु  
 र गरुल चुयगवई पयय पणियइअं ॥ अजि

गुत्ति पवर, दित्त तेअवदधेअ सबलोअ चावि  
 अ प्पचावणे अ पइसमे समाहि ॥ १४ ॥ ना  
 रायउ ॥ विमल ससिकलाइरेअसोम्म, विति  
 मिरसूर कलाइरेअ तेअ ॥ तियसवइगणाइरे  
 अ रूवं, धरणिधर पवराइरेअ सार ॥ १५ ॥  
 कुसुमलया ॥ सत्ते अ सया अजिअं, सारीरे  
 अबले अजिअ ॥ तव सजमेअ अजिअं, एस  
 अहं थुणामि जिण अजिअं ॥ १६ ॥ चुअगप  
 रिरिंणिअं ॥ सोम्मगुणेहिं पावइ न तं नवसर  
 य ससी, तेअ गुणेहिं पावइ न त नवसरय रवी  
 ॥ रूवगुणेहिं पावइ न त तिअस गणवइ, सार  
 गुणेहिं पावइ न त धरणिधरवइ ॥ १७ ॥ खिळ्ळि  
 अयं ॥ तिअवर पवत्तय तमरयरहिअ, धीरजण  
 थुअच्चिअं चुअ कलिकलुस ॥ सतिसुहप्पव  
 तय तिगरण पयउ, सतिमहं महा सुणिं सरण  
 सुवणमे ॥ १८ ॥ ललिअयं ॥ विणउणयं सिरि  
 रइ अंजलि, रिसिगण सथुअं थिमिअं ॥ त्रिबु



द्विजोऽपि महत्प्रजावो जो बाहत्तरि पुरवर सहस्स  
 चर नगर णिगम जणवयवई बत्तीसारायवर स  
 हस्साणुआय मग्गो चउदस वर रयण नव म  
 हानिदि चउसठि सहस्स पवर ऊवईण सुंद  
 र वइ चुलसी ह्य गय रह सय सहस्स सामी  
 बसुवइ गाम कोडि सामी आसिज्जो चारहंमि  
 नयव ॥ ११ ॥ वेह्वउ ॥ तं संतिं संतियरं, संति  
 न्न सव्व नया ॥ संतिं थुणामि जिण, संतिं विहे  
 उ मे ॥ १२ ॥ रासाणदिअयं ॥ इकायु विदेह  
 नरीसर, नरवसहा सुणिवसहा ॥ नव सारय  
 ससि सकलाणण, विगय तमा विदुअरया ॥  
 अजिउत्तम तेश्च गुणेहिं महामुणि, अमिय  
 वलाविक्कल कुला ॥ पणमामि ते नवन्नय भूर  
 ण, जग सरणा मम सरणं ॥ १३ ॥ चित्तलेहा  
 ॥ देव दाणविट चट्ट सूरवंद हूठ तुठ जिठ पर  
 म, लठ रुव धत रुप्प पट्ट सेअ मुह निह  
 धवल ॥ दतपंति मंति मत्ति कित्ति सुत्ति ज्युत्ति

मा ॥ १३ ॥ रयणमाला ॥ वंदिकुण थोकणतो  
 जिण, तिगुणमेवय पुणोपयाहिण ॥ पणमिऊ  
 णय जिण सुरासुरा, पमुइआ सन्नवणाइतो ग  
 या ॥ १४ ॥ खित्तय ॥ तं महामुणिमहंपि पंज  
 लि, राग दोस नय मोह वज्जिअ ॥ देवदाणव  
 नरिंद वंदिअं, सति सुत्तम महातवं नमे ॥ १५ ॥  
 खित्तयं ॥ अंबरंतरविआरणिआहिं, ललिअ  
 हंस बहुगामिणिआहिं ॥ पीण सोणिअण सा  
 लणिआहिं, सकल कमल दललोअणिआ  
 हिं ॥ १६ ॥ दीवयं ॥ पीण निरत्तर अणनरवि  
 णमिय गायलयाहिं, मणिकचण पसिदिलमेह  
 ल सोहिअ सोणितडाहिं ॥ वरखिखिणि नेउर  
 सतिलय वलय विन्नूसणियाहिं, रइकर चउर  
 मणोहर सुदर दंसणियाहिं ॥ १७ ॥ चित्तस्क  
 रा ॥ देवसुंदरीहिं पाय वंदिआहिं वंदिआय  
 जस्स ते सुविक्कमाकमा अप्पणो निमालएहिं  
 मण्णोण्णप्पगारएहिं केहिं केहिं वीअवग ति

हाद्वि धणवइ नरवइ, धुअ महिअच्चिअं ब  
 दुसो ॥ अइ रुग्गय सरय दिवायर, समहिअ  
 सप्पज तवसा ॥ गयणंगण वियरण समुइअ,  
 चारण वंदिअ सिरसा ॥ १९ ॥ किसलयमाला ॥  
 असुर गरुल परिवदिअं, किन्नरोरग एमंसि  
 अ ॥ देव कोडिसयसथुय, समणसघ परिवंदि  
 अ ॥ २० ॥ सुमुह ॥ अजय अणह अरयं अ  
 रुय ॥ अजिअ अजिअ पयण पणमे ॥ २१ ॥  
 विङ्गुविलसिअ ॥ आगयावर विमाण, दिव  
 कणगरुह तुरय पदकर सएदिं दुलिअ ॥ ससं  
 नमो अरण स्कुनिअ लुलिअ चल कुमलं  
 गय तिरीरु सोहत मऊलिमाला ॥ २२ ॥ वेढ  
 उं ॥ ज सुरसंघा सासुर सघा वेर विउत्ता न  
 त्ति सुउत्ता, आयर नूसिअ सनमपिदिअ सुहु  
 सुविहिअ सबवलोधा ॥ उत्तम कचण रयण  
 परुविअ नासुर नूसण नासुरिअगा, गाय स  
 मोणय नत्तिवमागय पंजलिपेमियमीस पणा

मेसहं नमामि संतिमुत्तमं जिणं ॥ ३२ ॥ नारा  
 यत्त ॥ वत्त चामर पडागञ्जूञ्च जव मंफिञ्चा, ऊ  
 यवर मगर तुरय सिरिवत्त सुलंठणा ॥ दीव  
 समुद्ध मंदरदिसागयसोहिञ्चा, सत्तिञ्च वसह  
 सीहसिरिवत्तसुलंठणा ॥ ३२ ॥ ललिञ्चयं ॥ स  
 दावलठा समप्पइठा, अदोस छठा गुणेहिं जिठा  
 ॥ पसायसिठा तवेण पुठा, सिरीहीं इठा रिसी  
 हीं जुठा ॥ ३३ ॥ वाणवासिञ्चा ॥ ते तवेण धुञ्च  
 सव्वपावया, सव्वलोअहिञ्च मूल पावया ॥ सं  
 थुञ्चा अजिञ्च सति पायया, हुत्तु मे सिव सुहा  
 णदायया ॥ ३४ ॥ अपरातिया ॥ एव तव बल  
 विजल, थुञ्चं मए अजिञ्च सति जिणञ्चयलं ॥  
 ववगय कम्म रयमल, गइ गय सासया विमलां  
 ॥ ३५ ॥ गाहा ॥ तं बहुगुणप्पसायं, सुक्क सु  
 हेण परमेण अविसाय ॥ नासेज मे विसाय, कु  
 णञ्च परिसाविञ्च पसाय ॥ ३६ ॥ गाहा ॥  
 त मोएत्त अनदिं, पावेत्तञ्च नदिसेणमच्चिनदिं ॥

लय पतलेह नामएहिं चिह्नएहिं संगयं गया  
 हिं नति सन्निविष्ट वदणागयाहिं हुंति ते वदि  
 आ पुणो पुणो ॥ १८ ॥ नारायण ॥ तमहं जि  
 एचंदं, अजिअ जिअमोहं ॥ धुअसवकिलेसं  
 पयन पणमामि ॥ १९ ॥ नंदिअयं ॥ शुअवं  
 दिअस्सारिसिगण देवगणेहिं, तो देव वदूहिं  
 पयन पणमिअस्सा ॥ जस्स जगुत्तमसासणय  
 स्सा, नतिवसागयपिनिअआहिं ॥ देव वर  
 षरसा वदुआहिं, सुरवर रइगुण पंनिअआ  
 हिं ॥ ३० ॥ नासुरय ॥ वंस सह तति ताल मे  
 लिए तिउकरानिराम सह मीसएकए अ,  
 सुइसमाणेअ सुध सऊ गीअ पाय जालघं  
 टिअहिं ॥ वलय मेहला कलावनेउरानिरा  
 म सह मीसए कए अ देवनट्टिआहिं ॥ हाव  
 नाव विप्रमप्पगारएहिं नच्चिऊण अंग हारएहिं  
 वदिआय जस्स ते सुविक्रमाकमा ॥ तयं तिलो  
 अ सब सत सतिकारयं परंत सब पाव दोस

ऐका गईए ॥ सदल नहय लंवा लघए  
 पएदिं, अजिअ महव संतिं सो समहो न  
 ॥ १ ॥ तहविदु बहुमाणु ह्वासनत्तिअरे  
 पुणकणमिवकिती हामि चिंतामणि व ॥ अ  
 हव अचिंता एंतसामठउसिं, फलहइ  
 सब वविअं णिअिअं मे ॥ ३ ॥ सयलज  
 आणं नाममित्तेण जाण, विहडइ लहु  
 निठदोधदुयठं ॥ नमिरसुर किरीडू गिगठ  
 रविदे, समय मजिअ सती ते जिणिदे  
 दे ॥ ४ ॥ पसरइ वरकिती बहए देहदिती,  
 तसइ नुवि मित्ती जायए सुप्पवित्ती ॥ फु  
 परमत्तिती होइ ससारवित्ती, जिणअुअ  
 नत्ती हीअ चिंतोरुसत्ती ॥ ५ ॥ ललियप  
 गरं नूरिदिवंगहारं, फुडगणरसनावो  
 सिंगारसार ॥ अणमिसरमणीज हसणवे  
 तीया, इव पुणमणि बंधा कास नहोवयारं  
 ॥ थुणह अजिअसती ते कया सेस सती,

परिसाइवि सुहनदिं, मम य दिसउ सजमे  
नदिं ॥३७॥ गाहा ॥ पस्किअ चाउम्मासियं, स  
वउरिए अउस्स जणिअवो ॥ सोअवो सवेदिं,  
उवसग्ग निवारणो एसो ॥३७॥ जो पढइ जोअ  
निसुणइ, उन्नउ कालपि अजिअ सतिथयं ॥  
न दु दुति तस्स रोगा, पुवुप्पन्ना विनासति ॥  
॥ ३९ ॥ जइ इउइ परम पय, अहवा किंति  
सुविउडा नुवणे ॥ ता तेलुक्कुअरणे, जिणवयणे  
आयर कुणइ ॥ ४० ॥ गाहा ॥ इति श्रीबृहद  
जितशातिस्तवन प्रथमस्मरणम् ॥१॥

॥ अथ द्वितीय लघुअजितशातिस्मरणम् ॥

॥ उद्धासिक मनस्क निग्गयपहा दफउलेण  
गिण, वदारूण दिसंत इव पयड निवाणम  
ग्गावलं ॥ कुदिंउऊल दतकति मिसउ नी-  
त नाणकुरु, केरे दोविउ इऊ स्  
थोसामि खेमकरे

जणिक्का गईए ॥ सहल नहय लवा लंघए  
 जो पएहिं, अजिअ महव संतिं सो समठो ढ  
 णेउं ॥ २ ॥ तहविहु बहुमाणु ह्वासनतिप्ररे  
 ए, गुणकणमिवकिती हामि चिंतामणि व ॥ अ  
 लमहव अचिंता एंतसामठउंसिं, फलहइ  
 लहु सव वंविअं णिञ्चिअ मे ॥ ३ ॥ सयलज  
 यहिआणं नाममित्तेण जाणं, विहडइ लहु  
 उठा निठदोघट्टयठ ॥ नमिरसुर किरीडू गिगठ  
 पायारविदे, समय मजिअ संती ते जिणिंदे  
 निवदे ॥ ४ ॥ पसरइ वरकिती वहए देहदित्ती,  
 विलसइ नुवि मित्ती जायए सुप्पवित्ती ॥ फु  
 रइ परमतित्ती होइ ससारवित्ती, जिणजुअ  
 पयनत्ती हीअ चिंतोरुसत्ती ॥ ५ ॥ ललियप  
 यपयारं नूरिदिव्वगहारं, फुडगणरसजावो  
 डारसिंजारसार ॥ अणमिसरमणीज हसणठे  
 अज्जीया, इव पुणमणि वधा कास नटोवयारं  
 ॥ ६ ॥ थणढ अजिअसती ते कया सेस संती,



परिसाइवि सुहनदिं, मम य दिसउ सजमे  
 नदिं ॥३७॥ गाहा ॥ पक्किअ चाउम्मासिय, सं  
 वडरिए अवरस्स नणिअवो ॥ सोअवो सवेदिं,  
 उवसग्ग निवारणो एसो ॥३७॥ जो पढइ जोअ  
 निसुणइ, उन्नउ कालंपि अजिअ सतिथयं ॥  
 न हु हुति तस्स रोगा, पुवुप्पन्ना विनासति ॥  
 ॥ ३९ ॥ जइ इच्चइ परम पय, अहवा किंति  
 सुविच्चडा चुवणे ॥ ता तेलुक्कुअरणे, जिणवयणे  
 आयर कुणइ ॥ ४० ॥ गाहा ॥ इति श्रीबृहद्  
 जितशातिस्तवन प्रथमस्मरणम् ॥१॥

॥ अथ द्वितीय लघुअजितशातिस्मरणम् ॥

॥ उद्धासिक मनस्क निग्गयपहा दममलेणं  
 गिणं, वदारूण दिसंत इव पयड निवाणम  
 ग्गावल्लिं ॥ कुट्टिअळ्ळल टतकति मिसउ नीह  
 त नाणकुरु, केरे दोविड इळ्ळ सोलस जिणे  
 थोसामि खेमंकरे ॥ १ ॥ अरम जलहिनीर  
 जोमिणिळ्ळं जल्लिदिं, स्वय समय समीहं जो

ह लङ्घिं गाढसंथंनिश्चव ॥ ११ ॥ अडविनिव  
 डिआणं पञ्चिबुत्तासिआण, जलहि लहरि  
 हीरं ताण गुत्ति ठियाण ॥ जलिअ जलण  
 जाला लिंगिआण च जाण, जणयइ लहु  
 संति संतिनादा जिआण ॥ १२ ॥ हरि करि  
 परिकिसं पक्क पाइक्कपुस, सयलपुहवि रळं  
 गङ्गिअ आण सळं ॥ तण मिव पडिलग्ग जेजि  
 णामुत्तिमग्ग, चरण मणुपवसा हुंतु ते मे पस  
 सा ॥ १३ ॥ गणससिवयणाहिं फुद्धनित्तुप्पला  
 हिं, थणनरनमिरीहिं मुठ्ठिगिळोदरीहिं ॥  
 ललिअ चुअलयाहिं पीण सोणिठणीहिं,  
 सयसुर रमणीहिं वदिआ जेसि पाया ॥ १४ ॥  
 अरिस किडि नकुठ गति कासाइसार, खय  
 जर वण लूआ साससोसोदराणि ॥ नहमुह  
 दसण्ठी कुठ्ठिकम्माइरोगे, मह जिणञ्चुअ  
 पाया सुप्पसाया हरतु ॥ १५ ॥ इय गुरुइहता  
 से पक्किए चाउमासे, जिणवर उगयुत्तं व

कणथरयपसगा बङ्गए जाणिमुत्ती ॥ १ ॥  
 परिरंजा रंननिवाणलढी, घणथणघुसि ।  
 कु प्पकपिंगीकयव्व ॥ ७ ॥ ६ ॥ १५ ॥  
 वढणिच्चं अणिच्चं, सदसदणनिलप्पा ॥ ७ ॥  
 अणोग ॥ इय कुनय विरुद्धं सुप्पसिद्धं तु ॥ १ ॥  
 वयण मवय णिक्क ते जिणे संचरामि ॥ ७ ॥  
 पसरइ तिअ लोए ताव मोहधयारं, ॥ १ ॥  
 य मससु तावमिच्चत्तवण ॥ फुरइ ॥  
 एतण्णं सुपूरो, पयड मजिअसती जाण ॥ १ ॥  
 रो न जाव ॥ ७ ॥ अरि करि हरि तिण्डु ॥ १ ॥  
 चोरा द्विवाही, समर रुमर मारी रुद्ध ॥ १ ॥  
 वसग्गा ॥ पलय मजिअसती कित्तणे ॥ १ ॥  
 ती, निविडतरत मोदा नकरालुखिअव्व ॥ १० ॥  
 निचिअडुरिअदारु दित्तजाणग्गिजाला, पा ॥ १ ॥  
 गय मिव गोर, चित्तिअं जाण रुव्व ॥ १ ॥  
 निद्धमरेदा कंतिचोरं करिअ, ॥ १ ॥

प्रड कल्लोल नीसणारावे ॥ संनंत नय विसतु  
 ल, निवामय मुक्कवावारे ॥ ४ ॥ अविदलिअ  
 जाणवत्ता, खणेण पावति इच्छिअं कूल ॥ पा  
 ण जिण चलण जुअलं, निच्चचिअ जे नमंति  
 नरा ॥ ५ ॥ खर पवणुअ वणदव, जालाव  
 लि मिलिय सयल झम गदणे ॥ मअत सुअमि  
 य वहु, नीसरणरव नीसणमि वणे ॥ ६ ॥ जग  
 गुरुणो कमजुअल, निवाविअ सयल तिहुअ  
 णाओअ ॥ जे संनरति मणुआ, न कुणइ ज  
 लणो नयं तेसिं ॥ ७ ॥ विलसत नोग नीस  
 ण, फुरिआरुण नयण तरल जीहालं ॥ उग्ग  
 जुअग नवजल य, सब्ह नीसणायारं ॥ ८ ॥  
 मन्नत कीड सरिस, दूर परिबुहु विसम विस  
 वेगा ॥ तुह नामकर फुडसि अ, मंत गुरुआ न  
 रा लोए ॥ ९ ॥ अडवीसु निह्व तकर, पुलिंद  
 सहल सहनीमासु ॥ नयविदुर बुन्नकायर, उ  
 अरिअ पहिअ सवासु ॥ १० ॥ अविलुत्तविह

ङरे वा पवित्त ॥ पढइ सुणइ सिधा एइ  
 चित्ते, कुणइ सुणइ विग्घं जेण धाएइ  
 ॥ १६ ॥ इय विजयाजियसत्तुपुत्त  
 अ जिणेसर, तह अइराविससेण तणइ  
 चक्कीसर ॥ तिब्बंकर सोलसम संति  
 सधुअ, कुरु मंगल मम हर सुद्धि  
 पि थुणंतइ ॥ १७ ॥ इति श्रीलघुअ  
 स्तवन द्वितीयं स्मरणम् ॥ २ ॥

॥ अथ नमिऊणनामक तृतीय स्मरणम् ॥

॥ नमिऊण पणय सुरगण, चूडामणि  
 णरजिअ सुणिणो ॥ चलाणञ्चअल ६  
 पणासण संथव बुद्ध ॥ १ ॥ सडिय कर  
 नइ सुइ, निबुद्ध नासा विघ्न लावन्ना ॥  
 महारोगानल, फुलिंग निहद्ध सवगा ॥ २  
 ते तुइ चलाणा रादण, मलिलजलिमेय बु  
 य ङाया ॥ वण दवदद्धा गिरिपा यव थ  
 पुणो लविं ॥ ३ ॥ इत्थाय सृपिय लज्जविधि

प्रड कङ्खोल नीसणारावे ॥ संनत नय विसतु  
 ल, निवामय मुक्कवावारे ॥ ४ ॥ अविदलिअ  
 जाणवत्ता, खणेण पावति इत्थिअं कूल ॥ पा  
 स जिण चलण च्छअलं, निच्चंचिअ जे नमंति  
 नरा ॥ ५ ॥ खर पवणुधुअ वणदव, जालाव  
 लि मिलिय सयल डम गहणे ॥ रुअत मुधमि  
 य वहु, नीसरणरव नीसणमि वणे ॥ ६ ॥ जग  
 गुरुणो कमच्छअल, निवाविअ सयल तिहुअ  
 णाओअ ॥ जे संनरति मणुआ, न कुणइ ज  
 लणो नयं तेसिं ॥ ७ ॥ विलसत नोग नीस  
 ण, फुरिआरुण नयण तरल जीहालं ॥ उग्ग  
 नुअग नवजल य, सब्बहं नीसणायारं ॥ ८ ॥  
 मन्नत कीड सरिसं, दूर परिबुडु विसम विस  
 वेगा ॥ तुह नामस्कर फुडसि ऋ, मत गुरुआ न  
 रा लोए ॥ ९ ॥ अडवीसु निद्ध तकर, पुलिंद  
 सद्धल सद्धनीमासु ॥ नयविदुर बुद्धकायर, उ  
 ल्लरिअ पहिअ सव्वासु ॥ १० ॥ अविजुत्तविह

चरे वा पवित्त ॥ पठइ सुणइ सिधा एह  
 चित्ते, कृणइ सुणइ विग्घ जेण धाएह  
 ॥ १६ ॥ इय विजयाजियसत्तुपुत्त  
 अ जिणेसर, तह अइराविससेण तणइ  
 चक्कीसर ॥ तिठ्ठकर सोलसम सति  
 सयुअ, कुरु मंगल मम हर सुअ  
 पि थुणंतह ॥ १७ ॥ इति श्रीलघुअजित  
 स्तवनं द्वितीयं स्मरणम् ॥ २ ॥

॥ अथ नमिठ्ठणनामक तृतीय स्मरणम् ॥

॥ नमिठ्ठण पणय सुरगण, चूडामणि  
 णरजिअं मुणिणो ॥ चलणअलं  
 पणासण सथव वुअं ॥ १ ॥ सडिय कर  
 नह मुह, निबुद्ध नासा विवन्न लावन्ना ॥ २ ॥  
 महारोगानल, फुलिग निदह सबंगा ॥ ३ ॥  
 ते तुह चलणा राहण, सलिलंजलिसेय  
 य चाया ॥ वण दवदह गिरिपा यव व  
 पुणो लठि ॥ ३ ॥ उवाय खुप्रिय जलनिहि,

प्रड कल्लोल नीसणारावे ॥ संनत नय विसतु  
 ल, निधामय मुक्कवावारे ॥ ४ ॥ अविदलिअ  
 जाणवत्ता, खणेण पावंति इत्थिअं कूल ॥ पा  
 स जिण चलण च्छअलं, निच्चविअ जे नमंति  
 तरा ॥ ५ ॥ खर पवणुधुअ वणदव, जालाव  
 लि मिलिय सयल डम गदणे ॥ रुअत मुधमि  
 य वहु, नीसरणरव नीसणमि वणे ॥ ६ ॥ जग  
 गुरुणो कमचुअल, निवाविअ सयल तिहुअ  
 णाओअ ॥ जे संनरति मणुआ, न कुणइ ज  
 लणो नयं तेसिं ॥ ७ ॥ विलसंत नोग नीस  
 ण, फुरिआरुण नयण तरल जीहाल ॥ उग्ग  
 चुअग नवजल य, सब्द नीसणायारं ॥ ८ ॥  
 मन्नत कीड सरिस, दूर परिच्छुडु विसम विस  
 वेगा ॥ तुह नामस्कर फुडसि ५, मत गुरुआ न  
 रा लोए ॥ ९ ॥ अडवीसु निह्न तकर, पुलिंद  
 सवल सवनीमासु ॥ नयविदुर बुधकायर, उ  
 द्धुरिअ पहिअ सठासु ॥ १० ॥ अविदुत्तविद



वसारा, तुह नाह पणाम मत्तवावारा ॥  
 विग्घा सिग्घ, पत्ता द्विय इत्थिय ठाण ॥ ११  
 पङ्कलिअनलनयण, दूरवियारियमुहं  
 काय ॥ नह कुलिसघायविअलिअ, \*१२५  
 वलान्नाअ ॥ १२ ॥ पणय ससन्नम पत्थिव,  
 ह्मणिमाणिक्क पडिअ पडिमस्स ॥ तुह  
 पहरणधरा, सीह कुधपि न गणति ॥ १३  
 ससिधवल दत्तमुसलं, दीहकरुख्खाल वडि  
 वाह ॥ मट्ठपिंग नयणञ्चअलं, ससलिल  
 जलहराराव ॥ १४ ॥ जीम महागइंद,  
 सन्नपि ते नवि गिणंति ॥ जे तुम्ह चलण  
 ल, मुणिवइ तुग समल्लीणा ॥ १५ ॥ समरम्मि  
 तिक्क खग्गा, जिग्घाय पविध उअुय कवधे  
 कुंतविणिनिन्न करि कल, इ मुक्कसिक्कार  
 मि ॥ १६ ॥ निज्जिय दप्पुधर रिउ, नरिंद  
 हा नडा जस धवल ॥ पार्वति पाव पसमिण  
 पासजिण तुह प्पजावेण ॥ १७ ॥ रोग ज

जलण विसहर, चोरारि मइंद गय रण नयाइं  
 ॥ पास जिणनाम सकि, तणेण पसमति सवा  
 इ ॥ १७ ॥ एवं महा नयहरं, पास जिणिंदस्स  
 सयवमुञ्चार ॥ नविय जणाणदयर, कल्लाण  
 परपरनिहाण ॥ १८ ॥ राय नय जक रकस,  
 कुसुमिण इस्सणण रिक् पीढासु ॥ सजासु दो  
 सु पंथे, उवसग्गे तह्य रयणीसु ॥ १९ ॥ जो  
 पढइ जो अ निसुणइ, ताण कइणो य माणतुं  
 गस्स ॥ पासा पाव पसमिउ, सयल नुवणञ्चि  
 अ चलणो ॥ २० ॥ इति श्रीपार्श्वजिन स्तवनं  
 तृतीयस्मरणं संपूर्णम् ॥ ३ ॥

॥अथ गणधर देवस्तुति चतुर्थ स्मरण प्रारभ ॥

॥ त जयउ जय तिउ, जमिउ तिउादि वेण  
 वरिण ॥ सम्मं पवत्तिअन, व सत्त संताणसुह  
 जणय ॥ १ ॥ नासिअ सयलकिलेसा, निह्य  
 कुलेसा पसउ सुहलेसा ॥ सिस्विइमाण तिउ,  
 स्स मगल दिंतु ते अरिहा ॥ २ ॥ निदहकम्म

वीच्या, वीच्यापरमिष्ठिणो गुणसमिधा ॥ सिद्ध  
 तिजय पसिधा, हणंतु उच्चाणि तिष्ठस्स ॥ ३ ॥  
 आचार मायरता, पचपयार सया पयासता ॥  
 आयरिच्या तद् तिष्ठ, निहय कुतिष्ठं पयासंतु  
 ॥ ४ ॥ सम्मसुच्च वायगावा, यगाय सिञ्चक  
 य वायगा वाए ॥ पवयण पडिणीय कए, वरि  
 तु सबस्स सघस्स ॥ ५ ॥ निवाणसाद्दुणिक्किञ्च,  
 साद्दूण जणिञ्च सब साद्दुक्का ॥ तिञ्चप्यजावगा  
 ते, ह्वतु परमिष्ठिणो जइणो ॥ ६ ॥ जेणाणुग  
 यं नाण, निवाणफल च चरणमविह्वइ ॥ ति  
 ठस्स दसण त, मगलमुवणेज सिद्धियर ॥ ७ ॥  
 निञ्चउमो सुच्चधम्मो, समग्ग नवगि वग्ग क  
 य सम्मो ॥ गुणमुठ्ठिञ्चस्स सघस्स, मगल  
 सम्ममिद्द दिसउ ॥ ८ ॥ रम्मो चरित्त  
 सपाविञ्च नवसत्त सिवसम्मो ॥ नीसेस  
 लेसदरो, ह्वउ सया सयल सघस्स ॥  
 ॥ ९ ॥ गुणगण गुरुणो गुरुणो शवसुट ॥ १० ॥

कुण्ठुतिष्ठस्स ॥ सिरिवध्माणपद्दुपय, डिच्चस्स  
 कुसलं समग्गस्स ॥ १० ॥ जियपडिवस्काजस्का,  
 गोमुद्द मायग गयमुद्द पमुस्का ॥ सिरि वन्न सं  
 ति सहिच्चा, कय मयरस्का सिवं दित्तु ॥ ११ ॥  
 च्चवा पडिद्दयमिंवा, सिध्दा सिध्दाइच्चा पवयण  
 स्स ॥ चक्केसरि वइरुद्धा, सति सुरा दिसज सु  
 स्काणि ॥ १२ ॥ सोलस विक्का देवी, उदित्तु  
 संघस्स मगलं विजल ॥ अब्बुत्ता सहिच्चाउं,  
 वैस्सुच्च सुयदेवयाज सम ॥ १३ ॥ जिण सास  
 ण कय रस्का, जस्का चजवीस सासण सुरावि ॥  
 सुद्दजावा सतावं, तिष्ठस्स सया पणासत्तु ॥  
 ॥ १४ ॥ जिणपवयणंमि निरया, विरहा कुप  
 हाज सब हासवे ॥ वेयावच्च गराविच्च, तिष्ठस्स  
 ह्वत्तु सतिकरा ॥ १५ ॥ जिणसमय सुद्धसम  
 ग्ग, विद्दिच्च च्चवाण जणिच्च साहज्जो ॥  
 गीयरई गीयजसो, सपरिवारो सुद्द दिसज  
 ॥ १६ ॥ गिद्दयुत्त खित्त जलथल, वण पवय

वासि देव देवीत ॥ जिण सासण षिञ्चाण,  
 हाणि सवाणि निहणतु ॥ १७ ॥ ५  
 लासखि, तवालयया नवग्गहा सनस्कता ॥  
 इणि राहुग्गहका, लपास कुलिञ्च ५ पहरेहि  
 ॥ १८ ॥ सहकाल कटएहि, सविठिवठेहि  
 लवेलाहि ॥ सवे सवठ सुह, दिसतु  
 संघस्स ॥ १९ ॥ नवणवइ वाणमतर,  
 वेमाणिञ्चा य जे देवा ॥ धरणिंद सक  
 दलंतु इरिञ्चाइं तिठस्स ॥ २० ॥ चक  
 जलंत, गउइ पुरउपणासिञ्च तमोहं ॥ २१  
 स्स नगवउ, नमो नमो वइमाणस्स ॥ २२  
 सो जयउ जिणो वीरो, जस्स ऊविसासणं  
 ए जयइ ॥ सिद्धिपह सासणं कुप, ह नासणं  
 व नय महण ॥ २३ ॥ सिरि उसजसेण  
 ह्यनय निवहा दिसंतु तिठस्स ॥ सव जि  
 गणिहा, रिणो एह वठिञ्चं सव ॥ २४ ॥  
 वइमाण तिञ्चा, हिवेण तिठं समणिञ्चं जस्स

सम्म सुहम्म सामी, दिसज सुहं सयल सं  
 वस्स ॥ १४ ॥ पयइएजद्विआ जे, नदाण दि  
 संतु सयल सघस्स ॥ इयरसुरा विहु सम्मं, जि  
 णगणहर कहिय कारिस्स ॥ १५ ॥ इय जो  
 पढइ तिसऊ, छस्सव तस्स नत्ति किंपि जए ॥  
 जिणदत्ताणाएठिउ, सुनिठि अठा मुही होई १६  
 इति श्रीगणधरदेवस्तुतिनामक चतुर्थ स्मरण ४  
 ॥ अथ गुरुपारतत्र्यनामक पंचम स्मरणम् ॥

॥ मयरद्विअं गुणगण रयण, सायरं सायरं  
 पणमिऊणं ॥ सुगुरुजण पारतंत, उवद्विअ धुणा  
 मि त चेव ॥ १ ॥ निम्मद्विय मोह जोहा, निह  
 य विरोहा पणठ सदेहा ॥ पणयगि वग्ग दा  
 विअ, सुह सदोहा सुगुण गेहा ॥ २ ॥ पत्तसु  
 जइत्त सोहा, समत्त परतिठ जणिय सखोहा  
 ॥ पडिअग्ग मोह जोहा, दसिअ सुमदत्त सत्तो  
 हा ॥ ३ ॥ परिहरिअ सत्तवाहा, हय छह दा  
 हा सिवव तरुसाहा ॥ सपाविअ सुहजाहा,

वासि देव देवीत ॥ जिण सासण  
 हाणि सवाणि निहणतु ॥ १७ ॥  
 लासखि, त्वालयया नवग्गहा सनस्कता ॥  
 इणि राहुग्गहका, लपास कुलिञ्च ५  
 ॥ १८ ॥ सहकाल कटण्ढि, सविठ्ठिवठ्ठेहि  
 लवेलाहि ॥ सवे सवठ सुह, दिसतु  
 सघस्स ॥ १९ ॥ नवणवइ वाणमतर,  
 वेमाणिञ्चा य जे देवा ॥ धरणिंद सक  
 दलंतु इरिञ्चाइं तिठ्ठस्स ॥ २० ॥ चक्क  
 जलंत, गठइ पुरउपणासिञ्च तमोहं ॥  
 स्स नगवउ, नमो नमो वध्माणस्स ॥ २१  
 सो जयउ जिणो वीरो, जस्स ऋविसासणं  
 ए जयइ ॥ सिद्धिपह सासणं कुप, ह नासणं  
 व नय महणं ॥ २२ ॥ सिरि उसनसेण  
 ह्यनय निवहा दिसतु तिठ्ठस्स ॥ सव  
 गणिहा, रिणो एह वठिञ्चं सवं ॥ २३ ॥ सि  
 वध्माण तिष्ठा, ठिवेण तिष्ठं समपिञ्चं जस्स

सेण ॥ १२ ॥ सुकृत्त पत्त किक्ती, पयडिच्च  
 गुक्ती पसत्त सुद्धमुक्ती ॥ पद्दय परवाइ दिक्ती,  
 जिणचद्द जईसरो मंती ॥ १७ ॥ पयडिच्च नवं  
 ग सुत्तच्च, रयणुक्कोसो पणासिच्च पञ्जसो ॥ न  
 वन्नीच्च मविच्च जणमण, कयसंतो सो विगय  
 दोसो ॥ १३ ॥ जुग पवरागम सार, प्परूवणा  
 करणबंधु रोघणिच्च ॥ सिरि अन्नयदेव सूरी,  
 मुणिपवरो परम पसमधरो ॥ १४ ॥ कय सा  
 वय संतासो, हरि व सारग जग्ग संदेहो ॥ ग  
 य समय दप्प दलणो, आसाइच्च पवर कव्वर  
 सो ॥ १५ ॥ नीमन्नव काणणमिच्च, दसिच्च  
 गुरुवयण रयण संदेहो ॥ नीसेस सत्त गुरुत्तं, सू  
 री जिणवच्चहो जयइ ॥ १६ ॥ उवरठिच्च सच्च  
 रणो, चउरणुत्तंग प्पहाण सच्चरणो ॥ असम  
 मयराय मद्दणो, उद्धमुहो सहइ जस्स करो ॥  
 ॥ १७ ॥ दसिच्च निम्मल निच्चल, दत्तगणो  
 गणिच्च मावत्तं नत्तं ॥ गुरुगिरि गरुत्तं सरहि



खीरोदहिणुव अग्गाहा ॥ ४ ॥ सुगुणजण  
 अ पुजा, सज्जो निरुवज्ज गहिअ पवण ॥ सि  
 वसुद्ध सादण सज्जा, नयगिरि गुरु चुरणे व  
 ॥ ५ ॥ अज्जसुद्धम्म प्सुद्धा, गुणगण निव  
 सुरिंद विहिय महा ॥ ताण तिसर्जं नामं, नाम  
 न पणासइ जिणाण ॥ ६ ॥ पडिवज्जिअ  
 देवो, देवायरिउ डुरत नवहारी ॥ सिरि ने  
 चद सूरी, उज्जोयण सूरिणो सुगुरु ॥ ७ ॥  
 रि वध्माण सूरी, पयडीकय सूरि मत मादण  
 ॥ पडिहय कसाय पसरो, सरय ससकुव  
 जणउ ॥ ८ ॥ सुद्धसील चोर चप्पर, ए  
 निच्चलो जिणमयमि ॥ छुगपवर सिद्धसिद्ध,  
 जाणउ पणय सुगुणजणउ ॥ ९ ॥ पुरउ  
 महिव, ल्हद्धस्स अणहिद्ध वाडए पयडं ॥  
 वि आरिऊण, सीदिएणव दव्वहिगि गया ॥ १०  
 टसमत्तेरय निसिवि, प्फुरंतु सधंइ सूरिमय  
 मिर ॥ सुरेणव सूरि जिणे, सरेण

॥ ३ ॥ सिरि थंनणय छिञ्च पा, ससामि पय  
 पन्नम पणय पाणीण ॥ निहलिञ्च डुरिञ्च विं  
 दो, धरणिंदो हरउ डुरिञ्चाइ ॥ ४ ॥ गोमुह  
 पमुस्क जस्का, पडिहय पडिवस्क पस्क लस्का  
 ते ॥ कयसुगुण संघ रस्का, हवंतु संपत्त सिव  
 सुस्का ॥ ५ ॥ अण्णडिचक्का पमुहा, जिण सास  
 ण देवयाउ जिण पणिञ्चा ॥ सि-हाइञ्चा समे  
 या, हवतु सघस्स विग्घहरा ॥ ६ ॥ सक्काए  
 सासच्चउ र, पुरछिउ वध्माण जिण नत्तो ॥ सि  
 रि वंन सति जस्को, रस्कउ संघं पयत्तेण ॥ ७ ॥  
 खित्तगिह गुत्त संता, ण देस देवाहि देवया ता  
 उ ॥ निवुइ पुर पडियाण, नवाण कुणतु सुस्का  
 णि ॥ ८ ॥ चक्केसरि चक्कधरा, विहिपहरि उठि  
 ण्ण कंधरा धणिञ्च ॥ सिवसरण लग्ग संघस्स,  
 सबहा हरउ विग्घाणि ॥ ९ ॥ तिठवइ वध्मा  
 णो, जिणेसरो सगउ सुसघेण ॥ जिणचदो न  
 अणेवो रस्कउ जिणवद्धदो पट्टमं ॥ १० ॥ सो

ष, सूरि जिणवल्लहो दोढा ॥ १० ॥ जुग प  
 रागम पीऊ, सपाणि पीणय मणाकया ज्ञा ॥  
 जेण जिणवल्लहेणं, गुरुणा तं सवहा वंदे ॥ ११ ॥  
 विष्फुरिञ्च पवर पवयण, सिरोमणी वूढ इर  
 खमोया ॥ जो सेसाण सेसु, ष सहइ सत्ताणत्तं  
 एकरो ॥ १० ॥ सच्चरिञ्चाण महीण, सुगुरु  
 पारतत सुवहइ ॥ जयइ जिणदत्त सूरि, सिरि  
 निलत्त पणय मुणितिलत्त ॥ १२ ॥ इति श्रीगु  
 रुपारतत्र्यनामक पंचमस्मरणम् ॥ ५ ॥

॥ अथ श्रीषष्ठमस्मरणम् ॥

॥ सिग्धमवहरत्त विग्ध, जिणवीर  
 गामि सघस्स ॥ सिरि पासजिणो थन्नण, पुरदि  
 त्त निष्ठिञ्चानिष्ठो ॥ १ ॥ गोयम सुहम्म पमुहा,  
 गणवइणो विहिञ्च नव सत्तसुहा ॥ सिरि  
 माण जिणति, ष सुवयते क्कणत्तु सया ॥ २ ॥  
 सक्काइणो सुराजे, जिण वेयावच्च कारिणो ..  
 अवहरिञ्च विग्ध संघा, हवंत ते संघ

॥ अथ चक्रामरस्तोत्रं प्रारभ्यते ॥

॥ चक्रानरप्रणतमौलिमणिप्रज्ञाणा, सुद्यो  
 कं दलितपापतमोवितानम् ॥ सम्यक् प्रणम्य  
 तेनपादयुगं युगादा, वालवनं चवजले पत  
 ॥ जनानाम् ॥ १ ॥ य संस्तुत सकलवाह्म  
 तत्वबोधा, इमूतबुद्धिपटुनि सुरलोकनाथे ॥  
 तौत्रैर्लङ्गत्रितयचित्तहरैरुदारै, स्तोष्ये किंलाह  
 णपि त प्रथमजिनेन्द्रम् ॥ १ ॥ युग्मं ॥ बुद्ध्या विना  
 पे विबुधार्चितपादपीठ, स्तोतुं समुद्यतमतिर्वि  
 गतत्रपोऽहम् ॥ बालं विहाय जलसस्थितमिन्द्र  
 विव, मन्य क इच्छति जन सहसा ग्रहीतुम् ॥  
 ॥ ३ ॥ वक्तुं गुणान् गुणसमुद्ग शशांककातान्,  
 कस्ते क्षम सुरगुरुप्रतिमोऽपि बुद्ध्या ॥ कल्पां  
 तकालपवनोऽतनक्रचक्रं, को वा तरीतुमलमबु  
 निर्धि जुजाभ्याम् ॥ ४ ॥ सोऽहं तथापि तव च  
 क्तिवशान्मुनीश, कर्तुं स्तव विगतशक्तिरपि प्र  
 ॥ पीत्यात्मवीर्य चार्य मृगोमृगेंद्र, ना

जयञ्ज वक्ष्माणो, जिणोसरो णोस रुव ह्यतिमि  
 रो ॥ जिणचंदा नयदेवा, पट्टुणो जिणवच्चहा  
 जेय ॥ ११ ॥ गुरु जिणवच्चह पाए, नयदेव  
 पट्टुत्त दायगे वदे ॥ जिणचद जिणोसरव, क्षमा  
 ण तिब्बस्स बुद्धिकए ॥ १२ ॥ जिणदत्ताणं स  
 म्म, मन्नति कुणति जेय कारति ॥ मणसा व  
 यसा वडसा, जयंतु साहम्मिआ तेवि ॥ १३ ॥  
 जिणदत्त गुणे नाणाइणो, सया जे धरति धारि  
 ति ॥ दंसिअसिय वायपए, नमामि साहम्मि  
 आ तेवि ॥ १४ ॥ इति षष्ठ स्मरणम् ॥ ६ ॥  
 ॥ अथ उवसग्गहर नामकं सप्तमस्मरणम् ॥  
 ॥ उवसग्गहरं पास, पासं वंदामि कम्मघण  
 सुक्क ॥ विसहरविसनिस्सासं, मंगलकट्ठाण आ  
 वासं ॥ १ ॥ इत्यादि ॥ नवेनवेपासजिणचंद  
 संपूर्ण कहना ॥ ५ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन ...  
 सप्तम स्मरणम् ॥ ७ ॥ इति सप्तस्मरणं

१० ॥ दृष्ट्वा चवतमनिमेषविलोकनीय, ना  
 यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः ॥ पीत्वा पयः  
 शिकरद्युतिं ह्यग्धसिंधोः, द्वारं जलजलनि  
 रशितु क इवेत् ॥ ११ ॥ ये शातरागरुचि  
 ने परमाणुनिस्त्वं, निर्मापितस्त्रिचुवनैकल  
 त्रामचूत ॥ तावंत एव खलु तेप्यणव पृथिव्यां,  
 त्ते समानमपरं नहि रूपमस्ति ॥ १२ ॥ वक्रं  
 ह ते सुरनरोरगनेत्रद्वारि, नि शेषनिर्जितजग  
 त्तयोपमानम् ॥ विवं कलकमलिनं क निशा  
 करस्य, यद्वासरे चवति पाद्मपलाशकल्पम् ॥  
 ॥ १३ ॥ सपूर्णमंरुलशशाककलाकलाप, शु  
 ध्रा गुणास्त्रिचुवन तव लघयति ॥ ये संश्रिता  
 स्त्रिजगदीश्वरनाथमेक, कस्तान्निवारयति सच  
 रतो यथेष्टम् ॥ १४ ॥ चित्र किमत्र यदि ते त्रि  
 ङ्गशागनाग्नि, नीत मनागपि मनो न विकार  
 त्तार्गम् ॥ कल्पातकालमरुता चलिताचलेन,  
 त्के मदराजिशिखर चलित कदाचित् ॥ १५ ॥

ज्येति किं निजशिशो परिपालनार्थम् ॥  
 अल्पश्रुत श्रुतवता परिहासधाम,  
 रेव मुखरीकुरुते बलान्माम् ॥ यत्कोकिल  
 मधौ मधुरं विरौति, तच्चारुचाम्बक  
 कहेतु ॥ ६ ॥ त्वत्संस्तवेन  
 पाप क्षणात्क्षयमुपैति शरीरजाजाम् ॥ १  
 लोकमलिनीलमशोपमाशु, सूर्यांशु  
 शार्वरमधकारम् ॥ ७ ॥ मत्वेति नाथ तव  
 स्तवन मयेद, मारज्यते तनुधियापि तव  
 वात् ॥ चेतो हरिष्यति सता नलिनीदलेषु,  
 फलद्युतिमुपैति ननूदविंड ॥ ८ ॥ आस्ता  
 स्तवनमस्तसमस्तदोष, त्वत्सकथापि  
 झरितानि हति ॥ दूरे-सहस्रकिरणः कुरुते  
 व, पद्माकरेषु जलजानि विकाशजाजि ॥ ९  
 नात्यद्भुत भुवनभूषणभूत नाथ, ॐ ॐ ॐ  
 भवंतमग्निपुवत ॥ तुल्या भवति भवतो ननु  
 न किं वा, भूत्याश्रित य इह नात्मसमं करोति

१० ॥ दृष्ट्वा चवतमनिमेपविलोकनीयं, ना  
 त्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः ॥ पीत्वा पयः  
 शिकरद्युतिं ह्यधसिंधो, द्वारं जलजलनि  
 रशितु कश्चेत् ॥ ११ ॥ ये शतरागरुचि  
 रपरमाणुनिस्त्व, निर्मापितस्त्रिचुवनैकज  
 लमचूत ॥ तावत एव खलु तेप्यणव पृथिव्यां,  
 ते समानमपरं नहि रूपमस्ति ॥ १२ ॥ वक्रं  
 तेषु सुरनरोरगनेत्रहारि, निशेषनिर्जितजग  
 त्तयोपमानम् ॥ विवकलकमलिनक निशा  
 रस्य, यद्वासरे चवति पाद्रुपलाशकल्पम् ॥  
 १३ ॥ सपूर्णममलशशाककलाकलाप, शु  
 ब्राशुणास्त्रिचुवनतव लघयति ॥ ये संश्रिता  
 स्त्रजगदीश्वरनाथमेक, कस्तान्निवारयति सच  
 तो यथेष्टम् ॥ १४ ॥ चित्रं किमत्र यदि ते त्रि  
 शागनान्नि, नीतमनागपि मनो न विकार  
 मार्गम् ॥ कल्पातकालमरुता चलिताचलेन,  
 किं मदराजिशिखरचलितकदाचित् ॥ १५ ॥



निर्धूमवर्तिरपवर्जिततैलपूर , कृत्स्नं जगन्नयमि  
 दं प्रकटीकरोषि ॥ गम्यो न जातु मरुतां चलि  
 ताचलानां, दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्रका  
 श ॥ १६ ॥ नास्त कदाचिदुपयासि न राहुग  
 म्य , स्पष्टीकरोषि सहसा युगपद्गंगति ॥ ना  
 भोधरोदरनिरुद्धमहाप्रभाव , सूर्यातिशायिम  
 हिमासि मुनींऽ लोके ॥ १७ ॥ नित्योदयं दक्षि  
 तमोद्धमहाधकारं, गम्यं न राहुवदनस्य न  
 वारिदानाम् ॥ विभ्राजते तव मुखाब्जमनलपका  
 ति, विद्योतयद्गदपूर्वशशाकबिंबम् ॥ १८ ॥  
 किं शर्वरीपु शशिनाह्नि विवस्वता वा, युष्मन्मु  
 खेऽदलितेषु तमस्सु नाथ ॥ निष्पन्नशालिवन  
 शालिनि जीवलोके, कार्यं कियद्गलधरैर्कालना  
 रन्मै ॥ १९ ॥ ज्ञान यथा त्वयि विनाति क  
 तावकाश, नैव तथा हरिहरादिषु नायकेषु ॥  
 तेज स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं, नैवं तु  
 काचशकले किरणाकलेऽपि ॥ २० ॥

हरिहरादय एव दृष्टा, दृष्टेषु येषु हृदय त्वयितो  
 पमेति ॥ किं वीक्षितेन भवता नृवि धेन नान्य,  
 कश्चिन्मनो हरति नाथ भवातरेपि ॥२१॥ स्त्री  
 णां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्, नान्या  
 सुत त्वङ्गपमं जननी प्रसूता ॥ सर्वा दिशो दध  
 ति ज्ञानि सहस्ररश्मि, प्राच्येव दिग्जनयति  
 स्फुरदंशुजालम् ॥ २२ ॥ त्वामामनन्ति मुनय  
 परम पुमास, मादित्यवर्णममल तमस. परस्ता  
 त् ॥ त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयति मृत्यु, ना  
 न्य शिव शिवपदस्य मुनींश्चपथा ॥२३॥ त्वा  
 मव्यय विष्णुमर्चित्यमसख्यमाथ, ब्रह्माणमीश्व  
 रमनतमनंगकेतुम् ॥ योगीश्वरं विदितयोगमने  
 कमेक, ज्ञानस्वरूपममल प्रवदति सत ॥२४॥  
 बुधस्त्वमेव विबुधार्चितबुधिवोधात्, त्व शकरो  
 ऽसि नृवनत्रयशकरत्वात् ॥ धातासि धीर शिव  
 मार्गविधेर्विधानात्, व्यक्त त्वमेव भगवन् पुरु  
 षोत्तमोऽसि ॥ २५ ॥ तुभ्य नमस्त्रिभुवनार्तिहरा

य नाथ, तुभ्य नम क्वितितलामलनूषणाया  
 तुभ्य नमस्त्रिजगत परमेश्वराय, तुभ्यं नमोऽभि  
 नन्नवोदधिशोपणाय ॥ १६ ॥ को विस्मयोऽप्य  
 यदि नाम गुणैरशोषै, स्व संश्रितो निरवकाश  
 तथा मुनीश ॥ दोषैरुपात्तविविधाश्रयजातगर्वैः,  
 स्वप्नातरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ॥ १७ ॥ उ  
 च्चैरशोकतरुसश्रितमुन्मयूख, माज्जाति रूपमम  
 ल भवतो नितातम् ॥ स्पष्टोऽसत्किरणमस्तत  
 मोवितान, बिंब रवेरिव पयोधरपार्श्ववर्ति ॥ १८ ॥  
 सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे, विभ्राजते  
 तव वपु कनकावदातम् ॥ बिंब वियद्विलसर्व  
 शुलतावितानं, तुगोदयाजिशिरसीव सहस्रर  
 श्मे ॥ १९ ॥ कुदावदातचलचामरचारुशोभं,  
 विभ्राजते तव वपु कलघौतकातम् ॥ उद्य  
 शाकशुचिनिर्जरवारिधार, मुञ्चैस्तट सुरगिरेरि  
 व शातकौन्तम् ॥ ३० ॥ उत्रन्नय तव विजाति  
 शशाककात, मुञ्चै स्थितं स्था

पम् ॥ मुक्ताफलप्रकरजालविवृद्धशोच, प्रख्या  
 पयत्रिजगत परमेश्वरत्वम् ॥ ३१ ॥ उन्निज्दे  
 मनवपकजपुजकाती, पर्युद्धसन्नखमयुखशिखा  
 निरामौ ॥ पादौ पदानि तव यत्र जिनेऽधत्त,  
 पद्मानि तत्र विबुधा परिकल्पयन्ति ॥ ३२ ॥ इत्थं  
 यथा तव विचूतिरचूक्लिनेऽध, धर्मोपदेशनविधौ  
 न तथा परस्य ॥ यादृक् प्रजा दिनकृतः प्रहतां  
 धकारा, तादृक्कुतोग्रहगणस्य विकाशिनोऽपि  
 ॥ ३३ ॥ श्र्योतन्मदाविलविलोलकपोलमूल, म  
 त्तध्रमद्भ्रमरनादविवृद्धकोपम् ॥ ऐरावतात्त  
 मिन्नमुद्धतमापतन्त, दृष्ट्वा जयं जवति नो जवदा  
 श्रितानाम् ॥ ३४ ॥ निन्नेनकुजगलञ्ज्वलशो  
 णिताक्त, मुक्ताफलप्रकरचूपितचूमिजाग ॥ व  
 ष्टक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि, नाक्रामति  
 क्रमयुगाचलसश्रितं ते ॥ ३५ ॥ कल्पांतकाल  
 पवनोद्धतवह्निकल्प, दावानल ज्वलितमुज्ज्वल  
 सुत्स्फुलिंगम् ॥ विश्वं जिघत्सुमिवसंमुखमापतं

त, त्वन्नामकीर्तनजल शमयत्यशेषम् ॥ ३६ ॥  
 रक्तेक्षण समदकोकिलकठनील, क्रोधोद्धतं  
 णिनमुत्फणमापततम् ॥ आक्रामति क्रमयुगेन  
 निरस्तशक, स्त्वन्नामनागदमनी इदि यस्व  
 पुस ॥ ३७ ॥ वल्गचुरगगजगार्कितनीमनाद,  
 मार्जौ बलं बलवतामपि नूपतीनाम् ॥ उपदिन  
 करमयूखशिखापविष्टं, त्वत्कीर्तनात्तम इवाशु  
 निदासुपैति ॥ ३८ ॥ कुताग्रनिम्नगजशोणित  
 वारिवाह, वेगावतारतरणातुरयोधनीमे ॥ पु  
 ष्ठे जयं विजितहृत्कयजेयपक्षा, स्त्वत्पादपंकज  
 वनाश्रयिणो लज्जते ॥ ३९ ॥ अचोनिर्घो ह्युज्जि  
 तनीषणनक्रचक्र, पाठीनिपीठनयदोल्बणवा  
 हवाग्नौ ॥ रंगतरगशिखरस्थितयानपात्रा, सा  
 सं विहाय नवत स्मरणाद्भ्रजन्ति ॥ ४० ॥  
 उन्नतनीपणजलोदरनारचुम्भा, शोच्या दशा  
 मुपगताच्युतजीविताशा ॥ त्वत्पादपकजरजो  
 मृतदिग्धदेहा, मर्त्या न्वन्ति

पा ॥ ४१ ॥ आपादकठसुरुशृखलवेष्टितागा,  
गाढ वृहन्निगडकोटिनिघृष्टजघा ॥ त्वन्नाममत्र  
मनिश मनुजा स्मरंतः, सद्य स्वयं विगतबं  
घनया नवति ॥ ४२ ॥ मत्तद्विपेजमृगराजदवा  
नलाहि, संग्रामवारिधिमहोदरबंधनोठम् ॥ त  
स्याशु नाशमुपयाति नयं न्रियेव, यस्तावकं  
स्तवमिम मतिमानधीते ॥ ४३ ॥ स्तोत्रस्त्रजं त  
व जिनेषु गुणैर्निबन्धा, नक्त्या मया रुचिरवर्ण  
विचित्रपुष्पाम् ॥ धत्तेजनो य इह कठगतामजस्त्रं,  
तं मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मी ॥ ४४ ॥  
॥ इति नक्त्यामरस्तोत्र संपूर्णम् ॥

॥ अथ वृद्धशातिर्लिख्यते ॥

॥ नो नो नव्या शृणुत वचनं प्रस्तुत सर्व  
मेतत्, ये यात्राया त्रिभुवनगुरोर्दार्ढता नक्तिना  
ज ॥ तेषां शातिर्नवतु नवतामर्हदादिप्रजा  
वा, दारोग्यश्रीधृतिमतिकरी क्लेशविध्वसहेतु  
॥ १ ॥ नो नो नव्यलोका इह हि नरतैरावत

विदेहसन्नवाना, समस्ततीर्थकृतां जन्मन्यासन  
 प्रकपानन्तर अघनिना विज्ञाय सौधर्माधिप  
 ति सुघोषाघण्टाचालनानन्तर सकलसुरा  
 सुरैर्दे सह समागत्य सविनयमर्हं प्रदत्तं य  
 हीत्वा, गत्वा कनकाक्षिशृंगे, विहितजन्मानि  
 पेक, शान्तिमुद्घोषयति, ततोऽहकृतानुष्कारमि  
 ति कृत्वा, महाजनो येन गतस्स पंथा ॥ इति  
 नव्यजनै सह समागत्य, स्नात्रपति स्नात्रं विधा  
 य, शान्तिमुद्घोषयामि ॥ तत्पूजायात्रास्नात्रादि  
 महोत्सवानन्तरं ॥ इति कृत्वा कर्णं दत्वा निश  
 म्यता स्वाहा ॥ ॐ पुण्याह १, प्रीयतां १, न  
 गवन्तोऽर्हन्त, सर्वज्ञा सर्वदर्शिन ॥ त्रैलोक्य  
 नाथा, त्रैलोक्यमहिता त्रैलोक्यपूज्या त्रैलो  
 क्येश्वरा, त्रैलोक्योद्योतकरा ॥ ॐ श्रीकिवल्लहा  
 नी १, निर्वाणी १, सागर ३, महायश ४, वि  
 मल ५, सर्वानुचूति ६, श्रीधर ७, दत्त ८, दामो  
 दर ९, सुतेजा १०, स्वामी ११, मनिस्तु भ्रत १२,

सुमति २३, शिवगति २४, अस्ताग २५, नमी  
श्वर २६, अनिल २७, यशोधर २८, कृतार्थ  
२९, जिनेश्वर ३०, शुद्धमति ३१, शिवकर  
३२, स्यन्दन ३३, सप्रति ३४, एते अतीत.

॥ चतुर्विंशतितिर्थकराः ॥

॥ ॐ श्रीऋषभ १, अजित २, संभव ३,  
अग्निनन्दन ४, सुमति ५, पद्मप्रभ ६, सुपार्श्व  
७, चञ्चप्रभ ८, सुविधि ९, शीतल १०, श्रेयां  
स ११, वासुपूज्य १२, विमल १३, अनन्त  
१४, धर्म १५, शान्ति १६, कुंथु १७, अर  
१८, मद्धि १९, सुनिसुव्रत २०, नमि २१, नेमि  
२२, पार्श्व २३, वर्धमान २४, एते वर्तमानजिनाः

- ॥ ॐ श्रीपद्मनाभ १, सुरदेव २, सुपार्श्व  
३, स्वयंप्रभ ४, सर्वानुभूति ५, देवश्रुत ६,  
उदय ७, पेठाल ८, पोष्टिल ९, शतकीर्ति १०,  
सुव्रत ११, अमम १२, निष्कषाय १३, निष्पु  
लाक १४, निर्मम १५, चित्रगुप्ति १६, समाधि



१७, सवर १८, यशोधर १९, विजय २०, मल्लि  
 २१, देव २२, अनन्तवीर्य २३, चक्र २४

॥ एते चावितीर्थकरा जिना ॥ शान्ता-  
 शान्तिकरा चवतु मुनयो मुनिप्रवरा, रिपु  
 विजयछर्निक्तकान्तारेषु दुर्गामार्गेषु रक्षंतु  
 वो नित्य ॥ ॐ श्रीनानि १, जितशत्रु  
 २, जितारि ३, सवर ४, मेघ ५, धर ६, प्र  
 तिष्ठ ७, महसेन नरेश्वर ८, सुग्रीव ९, दृढरथ  
 १०, विष्णु ११, वासुपूज्य १२, कृतवर्म १३,  
 सिंहसेन १४, जानु १५, विश्वसेन १६, सूर  
 १७, सुदर्शन १८, कुंज १९, सुमित्र २०, विज  
 य २१, समुद्रविजय २२, अश्वसेन २३, सिंहा  
 र्थ २४ ॥ इति वर्तमान चतुर्विंशतिजिनजनकाः ॥

॥ ॐ श्रीमरुदेवा १, विजया २, सेना ३,  
 सिंहा ४, सुमगला ५, सुसीमा ६, पृथि  
 वीमाता ७, लक्ष्मणा ८, रामा ९, नंदा १०,  
 विष्णु ११, जया १२, श्यामा

३, सुव्रता १५, अचिरा १६, श्री १७, देवी  
४, प्रजावती १८, पद्मा १९, वप्रा २०, शि  
२१, वामा २२, त्रिशला २३ ॥ इति वर्तमान  
निजनन्य ॥

॥ ॐ गोमुख १, महायक्ष २, त्रिमुख ३,  
हृन्नायक ४, तुवुरु ५, कुसुम ६, मातंग ७,  
जय ८, अजित ९, ब्रह्मा १०, यक्षराज  
११, कुमार १२, षण्मुख १३, पाताल १४, कि  
१५, गरुड १६, गधर्व १७, यक्षराज  
१८, कुबेर १९, वरुण २०, नृकृटि २१, गोमे  
व २२, पार्श्व २३, ब्रह्मशांति २४ ॥ इति वर्त  
मानजिनयक्षा ॥

॥ ॐ चक्रेश्वरी १, अजितबला २, डरिता  
रि ३, काली ४, महाकाली ५, श्यामा ६,  
शांता ७, नृकृटि ८, सुतारका ९, अशोका १०,  
मानवी ११, चमा १२, विदिता १३, अकुशा  
१४, कर्पू १५, निर्वाणी १६, बला १७, धारिणी

२८, धरणप्रिया २९, नरदत्ता ३०, गाधारी  
 ३१, अविनायिका ३२, पद्मावती ३३, सिन्धुयिका ३४.  
 एते वर्तमानचतुर्विंशति तीर्थंकरशासनदेव्यः ॥

॥ ॐ ह्रीं श्री धृति, कीर्ति, काति, बुद्धि, लक्ष्मी, मेधा, विद्या, साधन, प्रवेशनिवेशनेषु, सुगृहीतनामानो जयति ते जिनेन्द्रा ॥ ॐ रौद्रिणी १, प्रज्ञप्ति २, वज्रशृङ्खला ३, वज्राकुशा ४, चक्रेश्वरी ५, पुरुषदत्ता ६, काली ७, महाकाली ८, गौरी ९, गाधारी १०, सर्वाल्लमहाज्वाला ११, मानवी १२, वैरोद्या १३, अद्भुता १४, मानसी १५, महामानसी १६, एता षोडशविद्यादेव्यो रक्षंतु मे स्वाहा ॥ ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृतिचातुर्वर्ण्यस्य श्रीश्रमणसंघस्य शांतिर्भवतु, ॐ तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु ॐ ग्रहाश्रजसूर्यगारकबुधवृहस्पतिशुक्रशनिश्वरराहुकेतुसहिता सलोकपाला सोमयमवरुणकुबेरवासवादित्यस्कन्दविनायक ये

इयस्ते सर्वे प्रीयतां ॥ १ ॥ अक्षीणको  
 षागारा नरपतयश्च नवतु स्वाहा ॥ ॐ  
 त्रिभ्रातृकलत्रसुहृत्स्वजनसंबंधिवंधुवर्गस  
 नित्य चामोदप्रमोदकारिणो नवतु ॥ अ  
 ध नूमंरुले आयतननिवासिना साधुसा  
 प्रावकश्राविकाणां, रोगोपसर्गव्याधिङ्ख  
 नस्योपशमनाय शान्तिर्नवतु ॥ ॐ तुष्टि  
 रुधिवृद्धिमाद्भ्योत्सवा नवतु ॥ सदा  
 न्मृतानि हरितानि पापानि शाम्यंतु श  
 पराङ्मुखा नवंतु स्वाहा ॥ श्रीमते शा  
 नाथाय, नम शान्तिविधायिने ॥ त्रैलोक्य  
 मराधीश, मुकुटाभ्यर्चिताढ्ये ॥ १ ॥ शा  
 शान्तिकर श्रीमान्, शान्तिं दिशतु मे  
 ॥ शान्तिरेव सदा तेषा, येषा शातिर्गृहे  
 ॥ १ ॥ ॐ उन्मृष्टरिष्टङ्घ्र, ग्रहगतिङ्ख स्वप्नङ्घ  
 मेत्तादिः ॥ संपादितद्वितसाप्त, नामग्रहण ज  
 ते शान्ति ॥ ३ ॥ श्रीसगपौरजनपद, राजाधि

पराजसंनिवेशानाम् ॥ गोष्ठीपुरमुख्याना, व्याह  
 रणैर्व्याहरेत्वातिम् ॥४॥ श्रीश्रमणसंघस्य शांति-  
 र्भवतु, श्रीपौरलोकस्य शांतिर्भवतु ॥ श्रीजन  
 पदानां शांतिर्भवतु, श्रीराजाधिपाना शांतिर्भ  
 वतु, श्रीराजसनिवेशाना शांतिर्भवतु, श्रीगो  
 ष्ठीकाना शांतिर्भवतु, ॐ स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ  
 ॐ श्री पार्श्वनाथाय स्वाहा ॥ एषा शांति प्र  
 तिष्ठायात्रास्नात्रावसानेषु, शातिकलशं य-  
 हीत्वा कुकुमचदनकर्पूरागरुधूपवासकुसुमां  
 जलिसमेत, स्नात्रर्षि श्रीसघसमेत, शुचि  
 शुचिवपु पुष्पवस्त्रश्रंदनाभरणालंकृत, चंदन  
 तिलकं विधाय पुष्पमाला कठे कृत्वा, शातिमु  
 दूधोपयित्वा शातिपानीयं मस्तके दातव्यमि  
 ति ॥ नृत्यति नृत्यं मणिपुष्पवर्षे, सृजति गार्भ-  
 ति च मगलानि ॥ स्तोत्राणि गोत्राणि पठे  
 ति मत्रान्, कल्याणनाजोहि जिनाग्निपेके  
 ॥ १ ॥ अहं तिष्ठयमाया शवा तुम्ह

नयरनिवासिनी ॥ अम्ह शिवं तुम्ह शिवं, अ  
 सुहोवसमं शिव जवतु स्वाहा ॥ १ ॥ शिवम  
 स्तु सर्वजगत, परहितनिरता जवंतु नूतग  
 णा ॥ दोषा प्रयातु नाशं, सर्वत्र सुखी जवतु  
 लोक ॥ २ ॥ उपसर्गा क्षय याति, विद्यते वि  
 द्नवह्वय ॥ मन प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिने  
 श्वरे ॥ ३ ॥ इति श्रीवृक्षशाति समाप्ता ॥

॥ अथ जिनपजरस्तोत्र लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अर्हं भयो नमोनम, ॐ ह्रीं  
 श्रीं अर्हं सिद्धेभ्यो नमोनम ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं  
 आचार्येभ्यो नमोनम ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं उ  
 पाध्यायेभ्यो नमोनम ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्रीगौ  
 तमस्वामिप्रमुखसर्वसाधुभ्यो नमोनम ॥ १ ॥  
 एष पञ्च नमस्कार, सर्व पापक्षयंकर ॥ मग  
 लाना च सर्वेषा, प्रथमं जवति मंगलं ॥ २ ॥ ॐ  
 ह्रीं श्रीं जयविजये, अर्हं परमात्मने नम ॥ क  
 मलप्रक्षसरींजो, जापते जिनपजरम् ॥ ३ ॥ ए

पराजसंनिवेशानाम् ॥ गोष्ठीपुरमुख्यानां, ~~व्यह~~  
 रणैर्व्याहरेत्वातिम् ॥ ४ ॥ श्रीश्रमणसंघस्य शांति  
 र्भवतु, श्रीपौरलोकस्य शांतिर्भवतु ॥ श्रीजन  
 पदानां शांतिर्भवतु, श्रीराजाधिपानां शांतिर्भ  
 वतु, श्रीराजसंनिवेशानां शांतिर्भवतु, श्रीगो  
 ष्ठीकानां शांतिर्भवतु, ॐ स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ  
 ह्रीं श्री पार्श्वनाथाय स्वाहा ॥ एषा शांति प्र  
 तिष्ठायात्रास्त्रात्रावसानेषु, शातिकलशं गृ  
 हीत्वा कुकुमचदनकर्पूरागरुधूपवासकुसुमां  
 जलिसमेत, स्नात्रपीठे श्रीसंघसमेत, शुचि  
 शुचिवपु पुष्पवस्त्रश्रंदनाचरणालंकृत, चंदन  
 तिलकं विधाय पुष्पमाला कंठे कृत्वा, शांतिमु  
 द्घोपयित्वा शांतिपानीय मस्तके दातव्यमि  
 ति ॥ नृत्यति नृत्यं मणिपुष्पवर्षे, सृजंति गार्व  
 ति च मगलानि ॥ स्तोत्राणि गोत्राणि पठ  
 ति मंत्रान्, कल्याणजाजोहि जिनाञ्जिवेके  
 ॥ २ ॥ अद् तिष्ठयरमाया शिवा देवी, तुम्ह

व कर्णयुगल, नासिका चाग्निनदन ॥११॥ उ  
 ष्ठीश्रीसुमती रक्षेत्, दतान्पद्मप्रज्ञो विन्तु ॥ जि  
 ष्ठा सुपार्श्वदेवीयं, तालु चञ्जप्रज्ञो विन्तु ॥१३॥  
 कठं श्रीसुविधीरक्षेत्, हृदयं श्रीसुशतिल ॥ श्रे  
 यासो वाहुयुगलं, वासुपूज्य करद्वय ॥ १४ ॥  
 अगुलीर्विमलो रक्षे, दन्ततोऽसौ स्तनावपि ॥ सु  
 धर्मोऽप्युदरास्थीनि, श्रीशातिर्नाग्निमफलं ॥१५॥  
 श्रीकुच्युर्गुह्यकं रक्षे, दरो रोमकटीतटा ॥ मद्धिरूरु  
 ष्ठिवंशं, जघे च मुनिसुव्रत ॥१६॥ पादागुली  
 र्न्मी रक्षेत्, श्रीनेमिश्वरणद्वयं ॥ श्रीपार्श्वनाथ  
 सर्वांग, वर्धमानश्चिदात्मक ॥ १७ ॥ पृथिवी  
 जलतेजस्क, वाय्वाकाशमयं जगत् ॥ रक्षेदश  
 षपापेभ्यो, वीतरागो निरजनः ॥ १८ ॥ राजघा  
 रे इमशाने वा, संग्रामे शत्रुसकटे ॥ व्याघ्रचौरा  
 ग्निसर्पादि, चूतप्रेतजयाश्रिते ॥ १९ ॥ अका  
 लमरणे प्राप्ते, दारिद्र्यापत्समाश्रिते ॥ अपुत्रत्वे  
 महादोषे, मूर्खत्वे रोगपीडिते ॥ २० ॥ माकिनी



कनक्तोपवासेन, त्रिकाल यः पठेदिदं ॥ मनोवि  
 लषित सर्वं, फल स लभते ध्रुवं ॥ ४ ॥ नृष  
 य्या ब्रह्मचर्येण, क्रोधलोभविवर्जित ॥ देवत  
 ये पवित्रात्मा, षण्मासैर्लभते फल ॥ ५ ॥ च  
 हंतं स्थापयेन्मूर्ध्नि, सिद्धं चक्षुर्ललाटके ॥ ६ ॥  
 चार्यं श्रोत्रयोर्मध्ये, उपाध्याय तु घ्राणके ॥ ६ ॥  
 साधुवन्दं मुखस्याग्रे, मन शुद्धं विधाय च ॥ स  
 र्यचञ्चनिरोधेन, सुधी सर्वार्थसिद्धये ॥ ७ ॥ ६  
 क्षिणे मदनक्षेपी, वामपार्श्वे स्थितोजिन ॥ ८ ॥  
 गसधिषु सर्वज्ञ, परमेष्ठी शिवंकर ॥ ८ ॥ पूर्व  
 शा श्रीजिनो रक्षे, दात्रेयीं विजितेन्द्रिय ॥ दक्षि  
 णाशा पर ब्रह्म, नैर्ऋतिं च त्रिकालवित् ॥ ९ ॥  
 पश्चिमाशा जगन्नाथो, वायवीं परमेश्वर ॥ उत्त  
 रा तीर्थकृत् सर्वा, मीशानीं च निरजन ॥ १० ॥  
 पाताल जगवानर्ह, आकाश पुरुपोत्तम ॥  
 णीप्रमुखा देव्यो, रक्षंतु सकल कुर्ज ॥ ११ ॥  
 रूपज्ञो मस्तक रक्षे, दजितोपि विलोचने ॥ सन्न

व कर्णयुगल, नासिका चाग्निदहन ॥११॥ उ  
 ष्ठीश्रीसुमती रक्षेत्, दंतान्पद्मप्रज्ञो विष्णुः ॥ जि  
 ष्ठा सुपार्श्वदेवीयं, तालु चक्षुप्रज्ञो विष्णुः ॥१३॥  
 कंठं श्रीसुविधीरक्षेत्, हृदयं श्रीसुशतिलः ॥ श्रे  
 यासो वाहुयुगलं, वासुपूज्य करद्वय ॥ १४ ॥  
 अगुलीर्विमलो रक्षे, दन्ततोऽसौ स्तनावपि ॥ सु  
 धर्मोऽप्युदरास्थीनि, श्रीशातिर्नाग्निमरुतं ॥१५॥  
 श्रीकुशुर्गुह्यक रक्षे, दरो रोमकटीतटा ॥ मध्विरूरु  
 पृष्ठिवश, जघे च मुनिसुव्रत ॥१६॥ पादागुली  
 र्नमी रक्षेत्, श्रीनेमिश्वरणद्वयं ॥ श्रीपाश्वर्चनाद्य  
 सर्वांगं, वर्धमानश्चिदात्मक ॥ १७ ॥ पृथिवी  
 जलतेजस्क, वाय्वाकाशमय जगत् ॥ रक्षेदश  
 पपापेभ्यो, वीतरागो निरजनः ॥ १८ ॥ राजघा  
 रे इमशाने वा, संग्रामे शत्रुसकटे ॥ व्याघ्रचौरा  
 म्भिसर्पादि, चूतप्रेतजयाश्रिते ॥ १९ ॥ अका  
 लमरणे प्राप्ते, दारिद्र्यापत्समाश्रिते ॥ अपुत्रत्वे  
 महादोषे, मूर्खत्वे रोगपीडिते ॥ २० ॥ माकिनी

शाकिनीग्रस्ते, महाग्रहगणार्हिते ॥ नपुत्तारेऽथ  
 वैपम्ये, व्यसने चापदि स्मरेत् ॥ ११ ॥ प्रातस्ते  
 समुत्थाय, य स्मरेत्किन्नपजर ॥ तस्य किञ्चि  
 य नास्ति, लज्जते सुखसपद ॥ १२ ॥ जिन  
 जरनामेदं, य स्मरंत्यनुवासर ॥ कमलप्रज्ज  
 जेंज, श्रियस लज्जते नर ॥ १३ ॥ प्रातः समुत्थाय  
 पठेत्कृतज्ञो, य स्तोत्रमेतत्किन्नपंजराख्य ॥  
 सादयेत्स कमलप्रज्ञाख्या, लक्ष्मीं मनोवाञ्छि  
 पूरणाय ॥ १४ ॥ श्रीरुद्रपञ्चीयवरेण्यगण्डे, देव  
 प्रज्ञाचार्य्यपदाब्जहस ॥ वार्दीञ्चूकामणिरेश  
 जैनो, जीयाद् गुरु श्रीकमलप्रज्ञाख्य ॥ १५ ॥  
 इति श्रीजिनपजरस्तोत्र संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्री श्रावक करणीनी सहाय ॥

॥ चोपाई ॥ श्रावक तु ऊठे परजात, चार  
 घडी ले पावली रात ॥ मनमा समरे श्री नव  
 कार, जेम पामे जव सायर पार ॥ १ ॥ कवण  
 देव कवण गुरुधर्म, कवण अमारु ठे कुलकर्म,

कवण अमारो ठे व्यवसाय, एवु चिंतवजे मन  
 माय ॥ १ ॥ सामायिक लेजे मन शुद्ध, धर्मनी  
 हेंडे धरजे बुद्ध ॥ पडिकमणु करे रयणी तणुं, पा  
 तक आलोई आपणुं ॥ ३ ॥ कायाशक्ते करे प  
 च्चस्काण, सूधि पाले जिननी आण ॥ नणजे  
 गणजे स्तवन सक्षाय, जिणद्वृती निस्तारो  
 घाय ॥ ४ ॥ चित्तारे नित्य चउदे नीम, पाले  
 दया जीवतां सीम ॥ देहरे जाइ छुहारे देव,  
 ज्व्यनावधी करजे सेव ॥ ५ ॥ पोषाले गुरु  
 वंदन जाय, सुणो वखाण सदा चित्त लाय ॥  
 निर्दूषण सूजंतो आहार, साधुने देजे सुविचार  
 ॥ ६ ॥ साहम्मिबत्सल करजे घणां, सगपण महो  
 टा साहम्मीतणां ॥ ७ ॥ खीया हीणा दीना देखि,  
 करजे तास दया सुविशेष ॥ ८ ॥ घर अनुसा  
 रें देजे दान, महोटाशु म करे अजिमान ॥  
 गुरुने मुखे लेजे आखडी, धर्म न मूकीश एके  
 घडी ॥ ९ ॥ वारु शुद्ध करे व्यापार, उंग अ

धिकानो परिहार ॥ म जरिशकेनी कूडी साख  
 कूडा जनशुं कथन म जाख ॥ ए ॥ अनंत  
 य कहीये वत्रीश, अन्नद्वय बाविशे विश्वावी  
 ॥ ते नद्वण नवि कीजे किमे, काचा कवला  
 ल मत जिमे ॥ १० ॥ रात्रिजो जनना बहु दोष  
 जाणीने करजे संतोष ॥ साजी साबू लोह ने  
 गुली, मधु धावडी मत वेचो वली ॥ ११ ॥  
 ली म करावे रगण पास, दूषण घणा कद्यां  
 तास ॥ पाणी गलजे बे बे वार, अणगल  
 ता दोष अपार ॥ १२ ॥ जीवाणीनां करजे  
 न्न, पातक ठमी करजे पुण्य ॥ गणा इंध  
 चूले जोय, वावरजे जिम पाप न होय ॥ १३ ॥  
 घृतनी परें वावरजे नीर, अणगल नीर म  
 द्दश चीर ॥ ब्रह्मव्रत सुधुं पालजे, अतिचार  
 सघला टालजे ॥ १४ ॥ कल्या पन्नरे कर्मादान,  
 पापतणी परहरजे खाण ॥ किशुं म लेजे अन  
 रथ दंभ, भिष्या मेल म जरजे पिंभ ॥ १५ ॥

समकित शुद्ध हँडे राखजे, बोल विचारीने जां  
 खजे ॥ पाच तिथि म करो आरंज, पालो शी  
 यल तजो मन दंज ॥ १६ ॥ तेल तक्र घृत दू  
 ध ने दहिं, ऊघाडा मत मेलो सही ॥ उत्तम ठा  
 में खरचो वित्त, पर उपगार करो शुभचित्त ॥  
 ॥ १७ ॥ दिवस चरिम करजे चोविहार, चारे  
 आहार तणो परिहार । दिवस तणां आलोष  
 पाप, जिम जांजे सघला संताप ॥ १८ ॥ स  
 ध्याये आवश्यक साचवे, जिनवर चरण शरण  
 नव नवे ॥ चारे शरण करी दृढ होय, सागारी  
 अणसण ले सोय ॥ १९ ॥ करे मनोरथ मन  
 एहवा, तीरथ शत्रुंजे जायवा ॥ समेतशिखर  
 आबू गिरनार, नेटीश हुं धन धन अवतार  
 ॥ २० ॥ श्रावकनी करणी ठे एह, एहथी धाये  
 नवनो ठेह ॥ आठे कर्म पडे पातला, पाप त  
 णा बूटे आमला ॥ २१ ॥ वारु लहिये अमर  
 विमान, अनुक्रमे पामे शिवपुर धाम ॥ कहे

धिकानो परिहार ॥ म नरिशकेनी कूडी सार  
 कूडा जनशु कथन म नांख ॥ ए ॥ अनंत  
 य कहीये वत्रीश, अजद्वय बाविशो विश्वावी  
 ॥ ते नद्वण नवि कीजे किमे, काचा कवला  
 ल मत जिमे ॥ १० ॥ रात्रिजो जनना बहु दोष  
 जाणीने करजे सतोष ॥ साजी साबू लोह ने  
 गुली, मधु धावडी मत वेचो वली ॥ ११ ॥  
 ली म करावे रगण पास, दूषण घणा कर्त्या  
 तास ॥ पाणी गलजे बे बे वार, अणगल पी  
 ता दोष अपार ॥ १२ ॥ जीवाणीना करजे  
 न, पातक वंभी करजे पुण्य ॥ वाणा इंधन  
 चूले जोय, वावरजे जिम पाप न होय ॥ १३ ॥  
 घृतनी परें वावरजे नीर, अणगल नीर म  
 इश चीर ॥ ब्रह्मव्रत सुधुं पालजे, अतिचार  
 सघला टालजे ॥ १४ ॥ कर्त्या पत्रे कर्मादान,  
 पापतणी परहरजे खाण ॥ किशुं म लेजे अन  
 रथ दम्, मिथ्या मेल म नरजे पिंज ॥ १५ ॥

गुरु कहे ठाएह, पीठि इठ कही खमासमण  
 देई उजो धई, आधो शरीर नमावी मुखें  
 मुहपत्ती देई, मधुरस्वरे तीन नवकार गुणी क  
 हे इठकार जगवन् पसाज करी, पोसह दमक  
 उच्चरावो ? गुरु कहे उच्चरावेमो ॥ पठि करेमि  
 नते पोसह ॥ इहासे ले के अप्पाणं वोसिरामि ॥  
 तक कहे अब पोसहका पञ्चस्काण लीये, सो  
 लिखते हैं

॥ अथ पोसहका पञ्चस्काण प्रारंभ ॥

करेमि नं ते पोसहं, आधार पोसहं, देसठ  
 सवठ वा, सरीरसक्कार पोसहं, सवठ वजचेर  
 पोसहं, सवठ अवावार पोसहं, सवठ चउवि  
 हे पोसहे, सावळं जोगं पञ्चस्कामि, जावदिव  
 स अहोरत्तिं वा पङ्गुवासामि, इविहं तिविहे  
 णं मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कार  
 वेमि, तस्स नं ते पडिक्कसामि तिंदामि, गरि  
 हामि अप्पाण वोसिरामि



जिनदर्प घणे ससनेह, करणी ड.सहरणी वे  
 एह ॥ ९९ ॥ इति श्री श्रावकनी करणीनी स० ॥  
 ॥ अथ अष्ठपुहरी पोसह विधि लिख्यते ॥

॥ रात्रिनी पाठली घडिये निजा दूर करी  
 ने, पंचपरमेष्ठि स्मरण करी, गृहचिंता परिह  
 री, पर्व दिवसथकी प्रथम दिवसे पडिलेही रा  
 ख्या, जे पोसहना उपगरण, ते लेई, पोसहशा  
 लाये थापनाचार्य समीपे, अथवा गुरुनो सं  
 योग हुवे तो गुरुनी पासें आवी, नूमि प्रमा  
 र्जी एक खमासमण देई, इरियावहि पडिकमि  
 पठिं खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ न० ॥  
 पोसह सुहपत्ती पडिलेहु ? गुरु कहे, पडिलेहे  
 ह इच्छं कही खमासमण देई, सुहपत्ती पडिले  
 हे. पठि उजो थई, खमासमण देई इच्छ  
 का० ॥ सं० ॥ न० ॥ पोसह संदिस्साठं ? गुरु  
 कहे, सदिस्सावेह, पठि इच्छं कही, खमासम  
 ण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥ न

ठे, तेमार्ते इहां सामायिक दंरुक ऊच्चत्यां पीठें  
 इरियावही नही पडिकमीजें ॥ पीठे चैत्यवद  
 न, जयवीयराय सूधी करी कुसुमिण उस्समि  
 ण काउस्सग्ग करे, पीठें पडिकमणवेलासीम  
 सिञ्जाय ध्यान करे पीठे पूर्वोक्त रीतें पडिकमण  
 करे, पण इतरो विशेष के चारे थुईयें देव वांध्या  
 पीठे खमासमण देई कहे ॥ इच्चाका० ॥ सं० ॥  
 न०॥ बहुवेलं सदिस्साउं ? गुरु कहे, सदिस्सा  
 वेह पीठें इच्च कही, खमासमण देई कहे इ  
 च्चाका० ॥सं०॥न०॥ बहुवेलं करुं ? गुरु कहे,  
 करेह ॥पीठें इच्च कही, तीन खमासमणें श्री  
 आचार्यजी मिश्र १, श्रीजपाध्यायजी मिश्र २,  
 त्रीजे सर्वसाधु वादी, कम्मचूमिहिं कम्मचूमिहिं  
 इत्यादि नमस्कार नणे, जो पडिलेहणवेला नहिं  
 हुवे, तो सीमधरस्वामीनुं चैत्यवदनादि करी,  
 सिञ्जाय करे हवे पडिलेहण वेला पडिलेहण

॥ ए पाठ तीन बार गुरुवचन अबुजापक  
 करतो उच्चरे ॥ पृथि एक खमासमणें ॥ इष्टाक्ष  
 स० ॥ ज० ॥ सामायिक मुहपत्ती. पडिलेहुं ?  
 गुरु कहे, पडिलेहेह. बीजी खमासमण देई  
 मुहपत्ती पडिलेहे. पृथिं दोय खमासमणें सामा  
 यिक संदिस्साळं ? सामायिक ठाठं ? कही,  
 खमासमण देई अर्धावनतगात्र ऊजो थको  
 तीन नवकार, गुनी तीन करेमि जते उच्चरी दोय  
 खमासमणें बेसणो संदिस्साळं ? बेसणो ठाठं ?  
 कही, पृथिं दोय खमासमणें सिध्नाय सदिसस  
 ठं ? सिध्नाय करुं ? कही खमासमण देई ऊजो  
 थको, आठ नवकारनो सिधाय करे शीतादि  
 परिसहे दोय खमासमणें, पागरणुं संदिस्सा  
 ठ ? पागरणु पडिग्घाठं ? कहे ए सर्व सामायि  
 कविधि पूर्वे कह्यो वे तिमहीज करवो, पण इ  
 तनो विशेष वे पहिल

ठे, तेमाटे इहा सामायिक दंरुक ऊच्चत्यां पीठें  
 इरियावही नही पडिकर्मजे ॥ पीठे चैत्यवंद  
 न, जयवीथराय सूधी करी कुसुमिण इस्समि  
 ण काजस्सग्ग करे, पीठें पडिक्रमणवेलासीम  
 सिस्साय ध्यान करे पीठें पूर्वोक्त रीतें पडिक्रमण  
 करे, पण इतरो विशेष के चारे थुईयें देव वांध्या  
 पीठे खमासमण देई कहे ॥ इहाका० ॥ सं० ॥  
 न० ॥ बहुवेलं संदिस्साजं ? गुरु कहे, संदिस्सा  
 वेह पीठें इह कही, खमासमण देई कहे इ  
 हाका० ॥ सं० ॥ न० ॥ बहुवेलं करुं ? गुरु कहे,  
 करेह ॥ पीठें इहं कही, तीन खमासमणें श्री  
 आचार्यजी मिश्र १, श्रीजपाध्यायजी मिश्र २,  
 श्रीजे सर्वसाधु वादी, कम्मजूमिहिं कम्मजूमिहिं  
 इत्यादि नमस्कार जणे, जो पडिलेहणवेला नहिं  
 हुवे, तो सीमधरस्वामीनुं चैत्यवंदनादि करी,  
 सिस्साय करे हवे पडिलेहण वेला पडिलेहण

॥ ए पाठ तीन बार गुरुवचन अनुनासिक  
 करतो उच्चरे ॥ पृथि एक खमासमणे ॥ इति  
 स० ॥ न० ॥ सामायिक मुहपत्ती पडिलेहुं !  
 गुरु कहे, पडिलेहेह वीजी खमासमण देई  
 मुहपत्ती पडिलेहे पृथि दोय खमासमणे सामा  
 यिक सदिससाठं ? सामायिक ठाठं ? कही,  
 खमासमण देई अर्धावनतगात्र ऊजो थको  
 तीन नवकार, गुनी तीन करेमि नते उच्चरी दोय  
 खमासमणें बेसणो संदिससाठं ? बेसणो ठाठं !  
 कही, पृथिं दोय खमासमणें सिध्दाय सदिससा  
 ठं ? सिध्दाय करूं ? कही खमासमण देई ऊजो  
 थको, आठ नवकारनो सिध्दाय करे शितादि  
 परिसहें दोय खमासमणें, पागरणुं संदिससा  
 ठं ? पागरणु पडिग्घाठं ? कहे ए सर्व सामायि  
 कविधि पूर्वे कह्यो ते तिमहीज करवो, पण इ  
 तनो वित्रोप ते पडिग्घां

ठे, तेमाटे इहां सामायिक दंरुक ऊच्चस्थां पीठें  
 इरियावही नही पडिकमीजे ॥ पीठें चैत्यवद  
 न, जयवीयराय सूधी करी कुसुमिण इस्समि  
 ण कालस्सग्ग करे, पीठें पडिकमणवेलासीम  
 सिस्साय ध्यान करे पीठि पूर्वोक्त रीतें पडिकमण  
 करे, पण इतरो विशेष के चारे शुईयें देव वांघ्या  
 पीठि खमासमण देई कहे ॥ इच्चाका० ॥ सं० ॥  
 न०॥ बहुवेलं सदिससाज ? गुरु कहे, संदिससा  
 वेह पीठें इच्च कही, खमासमण देई कहे इ  
 च्चाका० ॥सं०॥न०॥ बहुवेलं करुं ? गुरु कहे,  
 करेह ॥ पीठें इच्च कही, तीन खमासमणें श्री  
 ध्याचार्यजी मिश्र १, श्रीजपाध्यायजी मिश्र २,  
 त्रीजे सर्वसाधु वादी, कम्मजूमिहिं कम्मजूमिहिं  
 इत्यादि नमस्कार नणे, जो पडिलेहणवेला नहिं  
 हुवे, तो सीमधरस्वामीनुं चैत्यवदनादि करी,  
 सिस्साय करे हवे पडिलेहण वेला पडिलेहण

॥ ए पाठ तीन वार गुरुवचन अनुजाप  
 करतो उचरे ॥ पृथि एक खमासमणे ॥ इति  
 स० ॥ ज० ॥ सामायिक मुहपत्ती, पडिलेहुं ?  
 गुरु कहे, पडिलेहेद् बीजी खमासमण वेई  
 मुहपत्ती पडिलेहे पृथि दोय खमासमणें सामा  
 यिक संदिस्साउ ? सामायिक ठाठ ? कही,  
 खमासमण देई अर्धावनतगात्र ऊजो थको  
 तीन नवकार, युनी तीन करेमि जते उच्चरी दोय  
 खमासमणें बेसणो संदिस्साउं ? बेसणो ठाठ ?  
 कही, पृथि दोय खमासमणें सिध्दाय संदिस्सा  
 उं ? सिध्दाय करुं ? कही खमासमण देई ऊजो  
 थको, आठ नवकारनो सिध्दाय करे शीतादि  
 परिसहे दोय खमासमणें, पांगरणुं संदिस्सा  
 उं ? पांगरणु पडिग्घाउ ? कहे ए सर्व सामायिक  
 कविधि पूर्वे कह्यो ते तिमहीज करवो, पाठ  
 तनो विओप ते पडिलां

ठे, तेमाटे इहां सामायिक दंरुक रुद्ध्यां पीठे  
 इरियावही नही पडिकमीजे ॥ पीठे चैत्यवंद  
 न, जयवीयराय सूधी करी कुसुमिण इस्समि  
 ण काउस्सग्ग करे, पीठे पडिकमणवेलासीम  
 सिध्दाय ध्यान करे पीठे पूर्वोक्त रीते पडिकमण  
 करे, पण इतरो विशेष के चारे थुईये देव वांच्या  
 पीठे खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥  
 न० ॥ बहुवेले सदिससाउ ? गुरु कहे, संदिससा  
 वेद पीठे इच्छ कही, खमासमण देई कहे इ  
 च्छाका० ॥ सं० ॥ न० ॥ बहुवेले करुं ? गुरु कहे,  
 करेह ॥ पीठे इच्छं कही, तीन खमासमणे श्री  
 ध्याचार्यजी मिश्र १, श्रीउपाध्यायजी मिश्र ९,  
 त्रीजे सर्वसाधु वादी, कम्मचूमिदिं कम्मचूमिदिं  
 इत्यादि नमस्कार नणे, जो पडिलेदणवेला नहिं  
 हुवे, तो सीमधरस्वामीनुं चैत्यवदनादि करी,  
 सिध्दाय करे हवे पडिलेदण वेला पडिलेदण



॥ ए पाठ तीन वार गुरुवचन अतुजाप  
 करतो उच्चरे ॥ पवि एक खमासमणे ॥ इति  
 स० ॥ न० ॥ सामायिक मुद्दपत्ती पडिलेहुं !  
 गुरु कहे, पडिलेहेह वीजी खमासमण देई  
 मुद्दपत्ती पडिलेहे पवि दोय खमासमणें सामा  
 यिक संदिस्साळ ? सामायिक ठाठं ? कही,  
 खमासमण देई अर्धावनतगात्र ऊजो थको  
 तीन नवकार, गुनी तीन करेमि नते उच्चरी दोय  
 खमासमणें बेसणो संदिस्साळ ? बेसणो ठाठं ?  
 कही, पविं दोय खमासमणें सिध्दाय संदिस्सा  
 लं ? सिध्दाय करुं ? कही खमासमण देई ऊजो  
 थको, आठ नवकारनो सिध्दाय करे शितावि  
 परिसहें दोय खमासमणें, पागरणुं संदिस्सा  
 लं ? पागरणु पडिग्घाळ ? कहे ए सर्व सामायिक  
 कविधि पूर्वे कह्यो ठे तिमहीज करवो, पण

ठे, तेमाटे इहा सामायिक दंभक ऊच्चस्यां पीठि  
 इरियावही नही पडिकर्मजे ॥ पीठि चैत्यवद  
 न, जयवीयराय सूधी करी कुसुमिण इस्समि  
 ण काजस्सग्ग करे, पीठि पडिकमणवेलासीम  
 सिस्साय ध्यान करे पीठि पूर्वोक्त रीते पडिकमण  
 करे, पण इतरो विशेष के चारे शुईये देव वांध्या  
 पीठि खमासमण देई कहे ॥ इत्थाका० ॥ सं० ॥  
 न०॥ बहुवेलं सदिससाज ? गुरु कहे, संदिससा  
 वेह पीठि इत्थं कही, खमासमण देई कहे इ  
 त्थाका० ॥ सं० ॥ न०॥ बहुवेलं करुं ? गुरु कहे,  
 करेह ॥ पीठि इत्थं कही, तीन खमासमणें श्री  
 आचार्यजी मिश्र १, श्रीजपाध्यायजी मिश्र २,  
 त्रीजे सर्वसाधु वादी, कम्मजूमिहिं कम्मजूमिहिं  
 इत्यादि नमस्कार नणे, जो पडिलेहणवेला नहिं  
 हुवे, तो सीमधरस्वामीसुं चैत्यवदनादि करी,  
 सिस्साय करे हवे पडिलेहण वेला पडिलेहण

॥ ए पाठ तीन बार गुरुवचन अनुनासिक  
 करतो उच्चरे ॥ पठि एक स्वमासमणे ॥ इत्युक्तं  
 स० ॥ न० ॥ सामायिक मुहपत्ती पडिलेहे ?  
 गुरु कहे, पडिलेहेहे. बीजी स्वमासमण वे  
 मुहपत्ती पडिलेहे. पठिं दोय स्वमासमणे सामा  
 यिक संदिस्साळं ? सामायिक ठाठं ? कही,  
 स्वमासमण देई अर्धावनतगात्र ऊजो थको  
 तीन नवकार, गुनी तीन करेमि जंते उच्चरी दोय  
 स्वमासमणें बेसणो संदिस्साळं ? बेसणो ठाठं ?  
 कही, पठिं दोय स्वमासमणें सिध्दाय संदिस्सा  
 ळं ? सिध्दाय करुं ? कही स्वमासमण देई ऊजो  
 थको, आठ नवकारनो सिध्दाय करे शितावि  
 परिसहे दोय स्वमासमणें, पागरणुं संदिस्सा  
 ळं ? पागरणु पडिग्घाळं ? कहे ए सर्व  
 कविधि पूर्वे कह्यो ठे तिमहीज करवो, पण  
 तनो विशेष ठे पडिलां

॥ अथ १४ यन्मिलापडिलेहणपाठ लिख्यते ॥

॥ आगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अण  
 हियासे ॥ १ ॥ आगाढे मधे उच्चारे पासवणे  
 अणहियासे ॥ २ ॥ आगाढे दूरे उच्चारे पासवणे  
 अणहियासे ॥ ३ ॥ आगाढे आसन्ने पासवणे  
 अणहियासे ॥ ४ ॥ आगाढे मधे पासवणे अ  
 णहियासे ॥ ५ ॥ आगाढे दूरे पासवणे अणहि  
 यासे ॥ ६ ॥ आगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे  
 अहियासे ॥ ७ ॥ आगाढे मधे उच्चारे पासवणे  
 अहियासे ॥ ८ ॥ आगाढे दूरे उच्चारे पासवणे  
 अहियासे ॥ ९ ॥ आगाढे आसन्ने पासवणे अ  
 हियासे ॥ १० ॥ आगाढे मधे पासवणे अहिया  
 से ॥ ११ ॥ आगाढे दूरे पासवणे अहियासे ॥  
 ॥ १२ ॥ अणागाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अण  
 हियासे ॥ १३ ॥ अणागाढे मधे उच्चारे पासव  
 णे अणहियासे ॥ १४ ॥ अणागाढे दूरे उच्चारे  
 पासवणे अणहियासे ॥ १५ ॥ अणागाढे आस

करे, ते विधिपूर्वक आयचना ४७ पृष्ठमा लिख्योते  
तो पण सहैपे फेर लखीये वैये. दोय खमासमणे,  
इडाका०॥स०॥न०॥ पडिलेहण करु? कही मुहप  
ती पडिलेहे पीठे दोय खमासमणे अंग पडिले  
हण सदिससाज? अंग पडिलेहण करु? कहे.  
पीठे गुरुवचने इड कही धोतियो कणदोरो पडि  
लेही वस्त्र पहेरी, खमासमण देई इडकार  
जगवन्! पसाज करी, पडिलेहण करावो जी ॥  
एम कही, स्थापनाचार्य पडिलेही स्थापे, अ  
ने जो गुर्वादिक स्थापनाचार्य पडिलेहे, तो प  
ण खमासमण देई उक्त रीते आग्या मागे पी  
ठे खमासमण देई ॥ इडाका० ॥ स० ॥ न० ॥  
उपधि मुहपती पडिलेहुं? गुरु कहे, पडिलेहेह  
पीठे इड कही, मुहपती पडिलेही दोय खमा  
समणे ॥ इडाका० ॥ सं० ॥ न० ॥ उंही  
हण सदिससाज? गुरु कहे, सदिससावेह  
पडिलेहण करु? गुरु कहे,

होवे, ते दोनुं तरफ पडिलेहे ॥ इति २४ धम्नि  
ला पडिलेहणविधि सपूर्ण ॥

पीठें इठें कही, कवल वस्त्रादि पडिलेही पोसह  
शाला प्रमार्जी काजो विधिगुं परठवी, एक ख  
मासमण देई इरियावही पडिक्रमे. इहा आचा  
रदिनकरमें कह्योणे दोय खमासमणें इठाका० ॥  
सं० ॥ न० ॥ वसती सदिससाज ? वसती पडिले  
हुं ? कही वसती मात्रो प्रमुख प्रमार्जे इत्यादि  
पण विधिप्रपा प्रमुखमें न कह्यो ॥

॥ हवे एक खमासमणें ॥ इठाका० ॥ सं० न०

॥ सिधाय संदिससाज ? गुरु कहे, सदिससावेह.

बीजे खमासमणें ॥ इठाका० ॥ सं० ॥ न० ॥

सिधाय करु ? गुरु कहे करेह पीठें इठें कही

नवकार एक कथन पूर्वक उपदेशमाला प्रमुख

सिधाय करी, नवकार एक कही धर्मध्यान क

रे, नणे, गुणे, वखाण सुणे इम करता पूर्ण

पट्टर दिन चढ्या. उगघाडा पोरिसी अथ

ने पासवणे अणहियासे ॥ २६ ॥ अणागाढे म  
 धे पासवणे अणहियामे ॥ २७ ॥ अणागाढे दू  
 रे पासवणे अणहियासे ॥ २८ ॥ अणागाढे आ  
 सने उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ २९ ॥ अण  
 गाढे मधे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ ३० ॥ अ  
 णागाढे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ ३१ ॥  
 अणागाढे आसने पासवणे अहियासे ॥ ३२ ॥  
 आणागाढे मधे पासवणे अहियासे ॥ ३३ ॥ अ  
 णागाढे दूरे पासवणे अहियासे ॥ ३४ ॥ ए  
 म्बिलपडिलेहण पाठ कहे ॥

॥ यह चौबीस अंमिला कहा कहा करनां ?  
 सो लिखते हैं

॥ ६ अंमिला शय्याके दोनुं तरफ दहिणे  
 पासे ३, वामपासे ३, पडिलेहे ॥ ६  
 दरवळेके नीतर पासे दहिणे ३, वामे ३  
 लेहे ॥ ६ अंमिला दरवळेके बाहर दोनु पासे  
 लेहे ॥ ६ अंमिला जिहां

होवे, ते दोनु तरफ पडिलेहे ॥ इति २४ थमि  
ला पडिलेहणविधि. संपूर्ण ॥

पीठें इठं कही, कबल वस्त्रादि पडिलेही पोसह  
शाला प्रमार्जी काजो विधिषु परठवी, एक ख  
मासमण देई इरियावही पडिकमे इहा आचा  
रदिनकरमें कह्योबे दोयखमासमणे इजाका० ॥  
सं० ॥ न० ॥ वसती संदिस्साळ ? वसती पडिले  
हुं ? कही वसती मात्रो प्रमुख प्रमार्जे इत्यादि  
पण विधिप्रपा प्रमुखमें न कह्यो ॥

॥ हवे एक खमासमणें ॥ इजाका० ॥ सं० न०

॥ सिधाय संदिस्साळ ? गुरु कहे, संदिस्सावेद.  
बीजे खमासमणे ॥ इजाका० ॥ सं० ॥ न० ॥  
सिधाय करु ? गुरु कहे करेह पीठें इठं कही  
नवकार एक कथन पूर्वक उपदेशमाला प्रमुख  
सिधाय करी, नवकार एक कही धर्मध्यान क  
रे, नणे, गुणे, वखाण सुणे इम करता पूर्ण  
महुर दिन चढ्या जग्घाडा पोरिस्ती अथ



वा, बहुपडिपुत्रा पोरिसी कही, स्वमासमण  
 देई इरियावही पडिक्की दौय स्वमासमणें ॥  
 इच्छाका० ॥ स० ॥ न० ॥ पडिलेहण करु ? गु  
 रु वचने इठ कही, मुहपत्ती पडिलेही पान  
 नोजन पात्र पडिलेही राखे पति सिषाय  
 ध्यान करे ॥

॥ हवे कालवेलाये आवस्सही पूर्वक देहरे  
 जई पाचे शक्रस्तर्वे देववांदण विधि दो प्रका  
 रसें लिखते हैं ॥

॥ तीन प्रदक्षिणा देई तीन वार नमस्कार  
 करी, नूमि प्रमार्जी, पुरुष हुवे तो प्रनुजकि  
 दक्षिण पासें बेसे, स्त्री हुवे ते वाम पासें बेसे.  
 पति ॥ इच्छाका० ॥ स० ॥ न० ॥ चैत्यवदन करु ? इ  
 कही, चैत्यवदन कहे पतिं नमोच्छुण कहे  
 सण देई इरियावही पडिक्कीमे एक लोगस्सनो  
 वस्सगग करे मुखें लोगस्स कहे  
 जीं बेसे तीन तथा चार पांच

कार कहे “ज किंचि नाम तिष्ठं” इत्यादि  
 पीठे नमोऽब्रुणं कहे. उन्नो थई अरिहत  
 णं करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्ती० अन्न  
 कही, एक नवकारनो काउस्सग्ग करे पारी  
 थुईकी गाथा कहे ॥ पीठें लोगस्स० स  
 गोए अरि० वदणव० अन्नहू कही एक न  
 पारी दूसरी थुईकी गाथा कहे. पीठें पुस्कर  
 एदी० सुअस्स जग० वदण० अन्नहू कही  
 एक नवकार० पारी तीसरी थुईकी गा० पीठें सि  
 क्षाण बुद्धाण० वेयावच्च गराण० अन्नहू० इत्यादि  
 कथन पूर्वक चौथी थुईकी गाथा कहे कर बैठकें  
 नमोऽब्रुण कहे फेर अरिहंतवेई० कहे इसीतरे  
 चार थुइयें देव वादी बेसे ॥ नमोऽब्रुण कहे न  
 मोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय इत्यादि कही पीठें  
 स्तवन कहे पीठे जयवीरराय कही नमोऽब्रु  
 ण सवे तिविहेण वंदामि पर्यंत कहे ॥ एम पा  
 चे शक्रस्तवें देववदन विधि जाणवो ॥

॥ ए विधि प्रवचनसारोद्धार  
 ह्यो वे तथा चैत्यवटन बृहन्नाप्यमे एम  
 नमस्कार कथन पूर्वक शक्रस्तव कही,  
 वही प्रतिक्रमणादि करे; वली नमस्कार  
 नपूर्वक शक्रस्तव कही दोय वार चार  
 से देव वादे फेर शक्रस्तव कही "जावति  
 याइं" गाथा नणी खमासमण पूर्वक ज  
 के० बीजी गाथा कही, स्तवन कहे वली  
 मोन्नूणं कही, जयवीयराय कहे ॥ इति  
 न विधि ॥

॥ पठिं निस्सही पूर्वक पोसहशाळा  
 आवी, इरियावही पडिक्कमे पठिं सिधाय  
 न करे, जो तिविहार उपवास कियो हुवे,  
 पञ्चस्काण वेला पूर्ण हुवा जल पीणेकू  
 ण पारे ॥

॥ हवे पञ्चस्काण पारणेका विधि लिखते हैं ॥  
 ॥ खमासमण देई इरियावही फिर

क खमासमण ॥ इत्था ० ॥ स ० ॥ न ० ॥ पञ्च  
 काण पारवा सुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे, प  
 ढलेहेह ॥ पठि इत्थ कही खमासमण देई, सुह  
 ती पडिलेहे फेर एक खमासमण देई, इ  
 का ० ॥ स ० ॥ न ० ॥ पाणहार अमुक पञ्च  
 काण पारुं ? गुरु कहे, पुणोवि कायवो पठिय  
 राशक्ति कही, खमासमण देई ॥ इत्थाका ० ॥  
 १० ॥ न ० ॥ पाणहार पारु ? गुरु कहे, आया  
 ने न मोत्तवो पठि तहति कही, अमुक पञ्च  
 काण चउविहार कस्यो, एम कही एक नव  
 गर गुणी पञ्चस्काण फासिय, पालिय, सोहि  
 १, तीरिय, किडिय, आराहियं, जं च न आ  
 १हिय, तस्स मिठा मि इक्कड, कही ॥ चैत्यवद  
 १ करे क्खणमात्र सिधाय करी यथासंजवे  
 प्रतिधिसविजाग करी पाणी पवि ॥

॥ तथा उपधानवाही दुवे, तो पोरिसी प्र  
 मुख पञ्चस्काण पारी आहार करे पठि आ

सण वैठो थकोहीज दिवस चरिम पबले,  
 ठें इरियावही पडिकमी चैत्यवंदन करे.  
 त्यवदन आहार संवरण निमित्ते ठे ॥  
 पञ्चकाण पारणेका विधि ॥

॥ पीठे जो वहिर्जूमि जावणो हुवे, तो  
 स्सही कही उपयोगी थको, निर्जीव  
 जई, अणुजाणह जस्सुग्गहो कही पूर्व,  
 त्तर, सूर्य, ग्रामादिकने पूठि अण देई, मलमूत्र  
 परिठवे, प्राशुकजले शुद्ध थई तीन वार नो  
 सिरामि, एह्वुं कहिवे करी मल मूत्र नो  
 सिरावी, पोसहशालायें निस्सही पूर्वक पेसी  
 इरियावही पडिकमे खमासमण देई कहे ॥  
 इच्छाका० ॥ स० ॥ ज० ॥ गमणागमण आलो  
 यहं ? गुरु कहे, आलोएह पीठें इठ कही.  
 णागमण आलोवे ॥ ते इम आवस्सही करी,  
 प्राशुक देशें जई, सभासा पुंजी, थमिलो प  
 डिलेही, उच्चार प्रश्रवण

करी, पोसहशालायें आव्यो ॥ आवंति जतेहिं  
जं खमियं, ज विराहियं, तस्स मिठा मि ड्कडं,  
एम कही वेसे पीठिं पडिलेहण वेला सीम सि  
धाय ध्यान करे ॥

॥ हवे पाठले पढुरे इरियावही पडिकमी  
खमासमण देई कहे इत्ताका० ॥ सं० ॥ न० ॥  
पडिलेहण करुं ? गुरु कहे करेह इत्तं कही  
दूजे खमासमणे इत्ताका० ॥ सं० ॥ न० ॥  
॥ पोसहशाला प्रमार्जे ? गुरु कहे, प्रमार्जह.  
पीठि इत्तं कही, मुहपत्ती पडिलेही दोय खमा  
समणें अंग पडिलेहण सदिससां ? अंग पडि  
लेहण करु ? कहे. पीठिं गुरु वचनें इत्तं कही  
मुहपत्ती पडिलेही दंमासणो पूजणी प्रमुखसें  
प्रमार्जी पोसहशाला प्रमार्जे. पीठिं काजो  
शुद्ध करी, उद्धरी, एकाते विखरतो परठवी  
इरियावही पडिकमी, खमासमण पूर्वक कहे ॥  
इत्तकार जगवन् पसाठ करी पडिलेहणां पडि

लेहावोजी ॥ पीठे स्थापनाचार्य  
 स्थापे गुरुसमीपे अथवा स्थापनाचार्य  
 एक खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज०  
 मुहपत्ती पडिलेहु ? गुरु कहे, पडिलेहेह  
 इच्छ कही खमासमण देई, मुहपत्ती प  
 पीठें दोय खमासमणे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज०  
 सिधाय संदिस्साज ? सिधाय करुं ? उक्त  
 क्खणमात्र सिधाय करी ति विहार उपवास  
 धो हुवे तो गुरु साखे पाणिहार पञ्चस्के ॥  
 पधानवाही प्रमुख आहार कीधो हुवे, तो  
 दणां दोय देई, पञ्चस्काण करे पीठें एक खमा  
 समण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उपधि  
 थंजिला पडिलेहुण संदिस्साजं ? बीजे खमास  
 मणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उपधि थंजि  
 ला पडिलेहुं ? गुरु वचनें इच्छ कही, दोय खमास  
 मणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ बेसणो संदि  
 स्साज बेसणो ठाजं ? कही . वस्त्र

पडिलेहे पुजणी हुवे, तो ते पण मुहपत्तीशु  
 पडिलेहे उपवासी तो ते तेमाटे सर्व पाणे क  
 डिपट्टो धोतीयो कणदोरो पडिलेहे, उपधानवा  
 ही प्रमुख नोजन कीघो हुवे तो कडिपट्टादि  
 पडिलेह्या. पीठे वस्त्र कबलादि पडिलेहे ए वि  
 शेष ठे ॥ पीठें कालवेला सीम सिवाय ध्यान  
 करे पीठें उच्चार प्रश्रवण २४ यमिला पडि  
 लेहे, जो चणदश हुवे, तो पाखी चणमासी प  
 डिक्रमणो करे, सवळरीये सवळरी पडिक्रमणो  
 करे तिहा देवसी पडिक्रमणो पूर्वे लिख्यो ठे,  
 तिमहज करे, पण इतरो विशेष ठे ॥ इच्छा० ॥  
 देवसिय आलोएमि इत्यादि देवसी आलोयां  
 पीठें "गणे कमणे चकमणे" इत्यादि पाठ कहे  
 खुद्दोवद्दव कालस्सग्ग क्रिया पीठे दोय खमा  
 समणें ॥ इच्छाका० ॥ स० ॥ न० ॥ सिवाय सं  
 दिस्साउ ? सिवाय करु ? कहीवैठो थको तीन  
 नवकार प्रमुख सिवाय करै ॥ इति ॥



॥ पादिकादि तीन पडिकमणविधि

एही पुस्तकमे लिख गये है. वहासें

॥ ह्वे पडिकमणो हुवा पीठे

वच्च करी पोरसी सीम सिधाय ध्यान करे.

लघुनीति प्रमुख करवी हुवे, तो आस

तो थको, जूमि प्रमार्जे थमिल स्थानके

देहशका निवारे, प्रश्रवण बोसिरावी,

के आवे जगवन् ! बहु पडिपुत्रा पोरसी

कही खमासमण देई इरियावही पडिकमे

ठे राईसथारा विधि करे ॥

॥ ह्वे राई सथारा विधि कहे ठे ॥

॥ खमासमण देई ॥ इत्ताका० ॥ स० ॥ ज० ॥

राइ संथारा मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे, पडि

लेहेह पीठे इत्त कही, खमासमण देई मुहपत्ती

पडिलेहे एक खमासमणें ॥ इत्ताका० ॥ स० ॥

ज० ॥ राइ संथारो सद्विस्साजं ? बीजे खमास

मणें ॥ इत्ताका० ॥ स० ॥ ज० ॥ राई सथारो

वाचुं ? पठिं गुरु वचने इहं कही, चउकसाय प  
 डिमल्लुल्लूरण इत्यादि नमस्कार कथन पूर्वक  
 जयवीरराय सूधी चैत्यवंदन करे. नूमि प्रमा  
 र्जी, संधारो उत्तर पट्टो पाथरे पठिं शरीर प्र  
 मार्जी निस्सही निस्सही एम कही संधारे बे  
 सी,तीन नवकार तीन करेमि नं ते ऊच्चरी॥ एमो  
 खमासमणाणं, गोयमाईणं महामुणीणं, 'अणु  
 जाणह जिठिळा अणुजाणह परम गुरु' इत्या  
 दि राइ संधारा गाथा नणी, वाम हाथ सिरा  
 णें देई सोवे निजा नावे जा सीम मुनिवर चरि  
 त्त चिंतवे, पसवाढो फेरे तो शरीर संधारो प्र  
 मार्जी फेरे, जो देह शकायें ऊठे, तो पूर्वोक्त  
 विधे देहशंका निवारी, इरियावही पडिक्कमे ॥  
 पठिं जघन्ये पण तीन गाथानी सिधाय करी  
 सोवे ॥ इति राइ संधारा विधि कह्यो ॥

॥ हवे रात्रिने पाठिले पहोर ऊठी, नवका  
 रादि गुणी, इरियावही पडिक्कमे खमासमण दे

॥ पादिकादि तीन पडिकमणविधि  
एही पुस्तकमे लिख गये हे वहासें

॥ हवे पडिकमणो हुवा पीठें साधुको  
वच्च करी पोरसी सीम सिवाय ध्यान करे.  
लघुनीति प्रमुख करवी हुवे, तो  
तो थको, नूमि प्रमार्जे थमिल स्थानके  
देहशका निवारे, प्रश्रवण वोसिरावी,  
के आवे जगवन् । बहु पडिपुत्रा पोरसी  
कही खमासमण देई इरियावही पडिकमे.  
ठें राईसथारा विधि करे ॥

॥ हवे राई संधारा विधि कहे ठे ॥

॥ खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥

राइ संधारा मुहपत्ती पडिलेहु ? गुरु कहे, पडि  
लेहेह पीठें इठ कही, खमासमण देई मुहपत्ती  
पडिलेहे एक खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥  
ज० ॥ राइ संधारो संदिस्सार्ड ? बीजे खमास  
मणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ गर्ड संधारो

का० ॥ सं० ॥ न० ॥ पोसह पाखुं ? गुरु कहे,  
 आयारो न मोत्तवो पीठि तहत्ति कहे, खमासम  
 ण देई अर्धावनत गात्रे उन्नो थको तीन नव  
 कार गुणी, खमासमण देई, मुहपत्ती पडिलेहे,  
 पीठि खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥  
 न० ॥ सामायिक पारुं ? गुरु कहे पुणोवि काय  
 वो पीठि यथाशक्ति कही, खमासमण देई ॥ इ  
 च्छाका० ॥ सं० ॥ न० ॥ सामायिक पाखुं ? गुरु  
 कहे आयारो न मोत्तवो पीठि तहत्ति कही ख  
 मासमण देई अर्धावनत गात्रे उन्नो थको हा  
 थ जोळ्या- मुहपत्ती मुखे दिया थकां तीन न  
 वकार गुणी संभासा पडिलेहे गोमालीये वेसी  
 मस्तक नमावी, “ नयवं दसन्नन्नदो ” इत्यादि  
 जावनारूप गाथा कहे पीठि पोसहना उपगरण  
 संवरी, देहरे जई देव छहारे घरे आवी आ  
 हार निष्पन्न हुवो देखी साधु समीपे आवे, अ  
 तिथि सविजागव्रत साचवण निमित्ते साधु न

ई कुसुमिण उस्सुमिण काजस्सग्ग करी,  
 क्त विधे सामायिक लेवे, इहा २  
 डिकमे पीठि दोय खमासमणें ।  
 ची अथाव नवकार गुणी, पडिकमण वेला  
 सिधाय करे पडिकमण वेला हुवा  
 णो पूर्वली परे करे, पण इतरो विशेष ठे, के  
 आलोया पीठि संधारा नवठणकी इत्यादि  
 व कहे एम संपूर्ण पडिकमणो करी  
 ण वेलायें पूर्वोक्त विधे पडिलेइण करी,  
 शाला पूजी काजो ऊधरी इरियावही पडिकमे  
 दोय खमासमणें सिधाय सदिसावी, उपर  
 शमाला प्रमुख सिधाय करे पीठि पोसह

॥ अथ पोसहपारणेका विधि लिखते हैं ॥

॥ खमासमण देईं मुहपत्ती पडिलेहे फेरल  
 मासमण देईं कहे ॥ इच्छाका ० ॥ सं ० ॥ ज ० ॥  
 पोसह पारु ? गुरु कहे, पुणोवि कायषो पीठि व  
 थाशक्ति कही, खमासमण देईं कहे ॥ इच्छा

का० ॥ स० ॥ ज० ॥ पोसह पाखुं ? गुरु कहे,  
 आयारो न मोत्तवो पीठें तहत्ति कहे खमासम  
 ण देई अर्धावनत गात्रे उजो थको तीन नव  
 कार गुणी, खमासमण देई, मुहपत्ती पडिलेहे,  
 पीठे खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥  
 ज० ॥ सामायिक पारु ? गुरु कहे पुणोवि काय  
 वो पीठें यथाशक्ति कही, खमासमण देई ॥ इ  
 छाका० ॥ स० ॥ ज० ॥ सामायिक पाखुं ? गुरु  
 कहे आयारो न मोत्तवो पीठें तहत्ति कही ख  
 मासमण देई अर्धावनत गात्रे उजो थको हा  
 थ जोड्या- मुहपत्ती मुखें दिया थका तीन न  
 वकार गुणी समासा पडिलेहे गोमालीयें वेसी  
 मस्तक नमावी, “ जयवं दसन्नजद्वो ” इत्यादि  
 जावनारूप गाथा कहे पीठें पोसहना उपगरण  
 संवरी, देहरे जई देव छुदारे घरे आवी आ  
 हार निष्पन्न दुवो देखी साधु समीपें आवे, अ  
 तिथि सविजागत्रत साचवण निमित्ते साधु ज

मासमणें बहुवेळ सदिस्सावे ॥ ए तीन प्रश्न  
 रका विकल्प जाणनां हवे पडिलेहण तो फू  
 र्वे करी ठे, तो पण आदेश मागवो ते एम स  
 मासमण देई ॥ इत्ताका० ॥ स० ॥ न० ॥ पडि  
 लेहणसंदिस्साजं? वीजे खमासमणें पडिलेह  
 ण करु? कही सुहपत्ती पडिलेहे पविं इमहीज  
 दोय खमासमणें अग पडिलेहण संदिस्साकी  
 सुहपत्ती पडिलेहे पविं वली खमासमण देई  
 इत्तकार नगवन् । पसाज करी पडिलेहण पडि  
 लेहावो जी. एम कहे, पविं एक खमासमण दे  
 ई ॥ इत्ताका० ॥ सं० ॥ न० ॥ उपधि सुहपति  
 पडिलेहुं? कही कोई वस्त्र अणपडिलेह्यो स  
 ख्यो हुवे, तो पडिलेहे नहीं तो वली आस  
 पडिलेहे दोय खमासमणें मिताग मंत्रिम्साकी

ठली रातें वली सामायिक न लेवे जिणें दि  
 स संबधी चउ पुहरी पोसह लीधो दुवे, ते  
 गढले पुहर पञ्चस्काण किया, पीठि दोय खमा  
 समणे उंही पडिलेहण संदिस्साउ? उंही पडि  
 लेहण करुं ? कहे, पण थमिला पद न कहे. अ  
 ने थमिला नहीं पडिलेहे यह नि केवल दिन  
 संबधी पोसह ग्रहण करणेमे विशेष विधि ही,  
 सो बताई ॥ इति दिनसबधी पोसह ग्रहणविधि

॥ अथ रात्रि संबंधि चउपुहरी पोसहनो  
 विधि कहे हैं ॥

॥ तिहां जिणे प्रथम चउ पुहरी दिवस पो  
 सो ऊच्चर्यो है पीठि संध्यानी पडिलेहण कर  
 ता रात्रि पोसहनो जाव थयो, तो पञ्चस्काण  
 किया पीठि दोय खमासमणें पोसह मुहपत्ती प  
 डिलेही तीन नवकार गुणी तीन वार पोसह  
 दंरुक उच्चरे तिहां जाव रति पञ्जुवासामि एम  
 पाठ उच्चरे, पीठि सामायिक विधि पूर्वे लिख्यो



मासमणे बहुवेळ सदिस्सावे ॥ ए तीन प्रकारका विकल्प जाणनां हवे पडिलेहण तो पूर्वे करी ठे, तो पण आदेश मागवो ते एम स्वमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ न० ॥ पडिलेहणसंदिस्साजं? वीजे स्वमासमणें पडिलेहण करूं? कही मुहपत्ती पडिलेहे पति इमहीज दोय स्वमासमणें अंग पडिलेहण संदिस्साबी मुहपत्ती पडिलेहे पतिं वली स्वमासमण देई. इच्छकार नगवन्! पसाज करी पडिलेहण पडिलेहावो जी. एम कहे, पतिं एक स्वमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ न० ॥ उपधि मुहपति पडिलेहुं? कही कोई वस्त्र अणपडिलेहो राख्यो हुवे, तो पडिलेहे नहीं तो वली आसठ पडिलेहे दोय स्वमासमणें सिधाय संदिस्साबी उपदेशमाळा प्रमुख सिधाय करे आगें सर्व क्रिया पूर्वे अठ पुढरी पोसहमें लिखी हे, तिज हीज जाणवी, पण इहां

रि तिहां दिवसेसरतिं पङ्गुवासामि कहे. सं  
 या दुवे, तो रतिं पङ्गुवासामि कहे. पंठिं बि  
 हुं खमासमणें सामायिक मुहपत्ती पडिलेहे.  
 दोय खमासमण देई, सामायिक संदिस्सावे  
 फेर खमासमण देई, तीन नवकार गुणी, तीन  
 करेमि जं ते ऊच्चरे दोय खमासमण देई सिधा  
 प संदिस्सावी, आठ नवकार कहे. फेर दो  
 खमासमण देई, बेसणो सदिसावी सीता  
 दिके बे खमासमण देई, पांगरणुं सदिसावे.  
 पंठिं बे खमासमण देई, अंग पडिलेहण संदि  
 स्सावी, मुहपत्ती पडिलेहे. फेर बे खमासमण  
 देई, उही थमिलां पडिलेहण संदिस्सावी जो  
 अणपडिलेह्यो उपगरण दुवे तो पडिलेहे. जो  
 सर्व उपगरण पडिलेह्यां दुवे, तो पण थानक  
 शून्यता टालवा जणी वली आसण पडिले  
 ही, पडिकमण वेला सीम सिधाय ध्यान करे

हैं, तिम करे पण सामायिक उचखां  
 खमासमणे सिद्याय सदिसावी आठ  
 कही वेसणो सदिसावी, पागरणो  
 पीठे दोय खमासमणे ॥ इच्छाका० ॥ सं०  
 उही थमिला पडिलेहण संदिसागं उही  
 मिला पडिलेहण करु? गुरु कहे, करेह इ  
 ही उपधि पडिलेहे आगे सर्व क्रिया पूर्वे  
 खी तिम जाणवी तथा जे श्रावक उपवासी  
 व्यग्रपणे दिवसे पोसह न करी शक्यो, ते  
 त्रि पोसहनो जाव थये, पाळले पदुर  
 नके आवे जो वसती प्रमार्जीं हुवे, तो सस्यो,  
 नही तो वसती प्रमार्जीं, काजो परिठवी सर्व  
 उपगरण पडिलेही इरियावही पडिकमे पडि  
 चउविहार पञ्चस्काण करी दोय खमासमणे  
 पोसह मुहपत्ती पडिलेही दोय खमासमणे वे  
 ई पोसह सदिसावे फेर खमासमणे वेई,  
 तीन नवकार गुणी, तीन धार पोसह वंजक उ

॥ अथ देववांदणमें अथवा प्रातःकाल सं  
ध्याकालके प्रतिक्रमणमें कहनेकी स्तुति ॥

॥ तत्र प्रथम बीजकी स्तुति ॥

॥ महीमरुणं पुत्रसोवन्नदेह, जणाणदणं  
केवलन्नाणगेहं ॥ महानद लञ्छी बहु बुद्धिराय,  
सुसेवामि सीमंधरं तिष्ठराय ॥ १ ॥ पुरा ता  
रगा जेह जीवाण जाया, नवस्सति ते सब न  
वाण ताया ॥ तदा सपयं जे जिणा वट्टमाणा,  
सुह दित्तु ते मे तिलोयप्पहाणा ॥ २ ॥ उरुत्ता  
र ससार कुवार पोय, कलका वली पंकपस्काल  
तोयं ॥ मणोववियहे सुमदारकप्पं, जिणदा  
गम वंदिमो सुमहप्प ॥ ३ ॥ विकोसे जिणदा  
णण्णोजलीणा, कलारूव लावस्स सोहग्ग पी  
णा ॥ वह तस्स चित्तमि णिच्च पि जाण, सिरी  
नारई देहि मे सुध्दनाण ॥ ४ ॥ इति श्रीसीम  
वरजीनी स्तुति ॥ १ ॥

पीठि उच्चार प्रश्रवणना १४ धंमिन्नां  
 ही पडिक्कमणो करे तथा पाठली रातें  
 सामायिक न लेवे इतनां निकेवल  
 पोसह लेवाना विकल्प जाणवा ॥ इति  
 पोसहविधि संपूर्ण ॥

॥ अथ ठाणेक्कमणे चंकमणे लिख्यते ॥

॥ ठाणेक्कमणे चंकमणे आउते अणाउते

हरिअकायसघट्टे वीयकायसंघट्टे थावरकाय

संघट्टे षण्णियासघट्टे सवस्सवि देवसिअ, ३

च्चिंतिय उप्पासिय उच्चिठिअ ॥ इच्छाकारेण

संदिस्सह, इत्त तस्स मिच्छा मि उक्कडं ॥ १ ॥

सधाराउवट्टणकी, आउट्टणकी, परिअट्टणकी,

पसारणकी, षण्णियासंघट्टणकी, अच्चकुविस

यकायकी, सवस्सविराअ, उच्चिंतिय, उप्पा

सिअ, उच्चिठिय, इच्छाकारेण संदिस्सह, इत्त

तस्स मिच्छा मि उक्कडं ॥ १ ॥ इति ॥

लिका, पंचम्यादितपोवतां नवतु सा सिंहायि  
का त्रायिका ॥ ४ ॥ इति श्रीज्ञानपंचमीस्तुति ॥

॥ अथ अष्टमीस्तुतिः ॥

चतुर्विंशति जिनवर, प्रणमुं नितमेव ॥ आ  
ठम दिन करियें, चन्द्रप्रचुनी सेव ॥ मूरति मन  
मोहे, जाणे पूनिम चंद्र ॥ दीठां छ ख जाये, पामे  
परमानंद ॥ १ ॥ मिलि चोसठ इंद्र, पूजे प्रचु  
जीना पाय ॥ इंद्राणी अपहर, कर जोडी गुण  
गाय ॥ नंदीश्वर दीपें मिलि सुरवरनी कोड ॥  
अठाइ महोत्सव, करता होडा होड ॥ २ ॥ शे  
त्रुजा शिखरे, जाणी लाज अपार ॥ चतुर्मासें  
रहिया, गणधर मुनि परिवार ॥ नवियणने ता  
रे, देई धरम उपदेश ॥ दूध साकरयी पण, वाणी  
अधिक विशेष ॥ ३ ॥ पोसो पडिक्कमणुं, करि  
यें व्रत पञ्चकाण ॥ आठम तप करतां, आठ क  
रमनी हाण ॥ आठ मंगल थाये, दिन दिन

॥ अथ पंचमीस्तुति ॥

॥ पंचानंतकसुप्रपंचपरमानंदप्रदानक्षमं,

चानुत्तरसीमदिव्यपदवीवश्याय मन्त्रोत्तमम् ॥ १ ॥

न प्रोज्ज्वलपंचमीवरतपो व्याहारि तत्कारिणां,

श्रीपंचाननलाबन स तनुता श्रीवर्द्धमान मि

यम् ॥ २ ॥ ये पचाश्रवरोधसाधनपरा पंचप्र

मादीहरा , पंचाणुव्रतपचसुव्रतविधिप्रज्ञाप

नासादराः ॥ कृत्वा पंचऋषीकनिर्जयमर्थो

प्राप्ता गतिं पचमीं, तेऽमी सतु सुपंचमीव्रतनृता

तीर्थंकरा शकरा ॥ ३ ॥ पंचाचारधुरीणपंच

मगणाधेशेन संसूत्रितं, पंचज्ञानविद्यारसा

रकलितं पचेषुपंचत्वदम् ॥ दीपार्जं गुरुपंचमा

रतिमिरेष्वेकादशी रोहिणी, पंचम्यादिकल

प्रकाशनपटुं ध्यायामि जैनागमम् ॥ ३ ॥ पंचा

नां परमेष्ठिना स्थिरतया श्रीपंचमेरुश्रियां,

जक्ताना जविनां गृहेषु बहुशो या पंचदिव्यं व्य

धातु ॥ प्रहो पंचजने मनोमतस्तौ स्वारजपदा

॥ अथ पार्श्वजिनस्तुति ॥ हरिगीत षड ॥

॥ डेडेकि धपमप, धुधुमि धोंधों, धसकिधर,  
 धपधोरवं॥दोंदोंकि दों दों,दाग्डिदि दाग्डिदिदि,  
 डमकि डण रण,डेणवं॥ऊजिञ्जेकि झेञ्जे,ऊणणर  
 णरण,निजकि निजजन,रजनं॥सुरशौल शिखरे,  
 नवतु सुखदं, पार्श्वजिनपतिमङ्गनं ॥ १ ॥ क  
 टरेंगिनि थोंगिनि,किटति गिगूडदा,धुधुकि धुट  
 नट,पाटवं॥गुणगुणण गुणगण,रणकि णेणे,गुण  
 णगुणगण,गौरवं॥ऊजि ऊँकि ऊँऊँ,ऊणण रणर  
 रण, निजकि निजजन, सङ्गना॥कलयन्ति कम  
 ला,कलितकलमल, मुकलमीश,महेजिना ॥२॥  
 ठकि ठेंकि ठेंठें,ठर्छिक ठर्छिक,ठर्छिपट्टा,ताड्यते॥  
 तललौंकि लौलो,त्रेंपि त्रेषिनि,नेपिनेपिनि,वाद्य  
 ते॥ॐ ॐ कि ॐ ॐ,शुगि शुगिनि,धोंगिधोंगिनि,  
 कलरवे॥जिनमतमनतं,महिम तनुता, नमति सु  
 रनर,मुठ्ठवे ॥ ३ ॥ पुदाकि पुंदा,पुपुड्दि पुदां  
 पुपुड्दि ढोंढो,अवरे॥चाचपट चचपट,रणकि णे



कोडि कल्याण ॥ जिन सुखसूरि कहे, इम  
त जनम प्रमाण ॥ इति अष्टमी स्तुति ॥

॥ अथ मौनैकादशीस्तुति ॥

॥ अरस्य प्रव्रज्या नमिजिनपतेर्ज्ञानमनुष्यं  
तथा मल्लेर्जन्म व्रतमपमल केवलमलं ॥ बल  
कादश्या सहसि लसद्द्वाममहसि, क्षिती  
ल्याणानां क्षपति विपद पचकमद ॥ १ ॥ सु  
र्वेऽश्रेण्यागमनगमनैर्नूनिवलय, सदा स्व  
त्येवाहमहमिकया यत्र सलयं ॥ जिनानामप्य  
पु क्षणमतिमुखं नारकसद, क्षिती ॥ २ ॥  
जिना एव यानि प्रणिजगद्धरात्मयिसमये,  
फलं यत्कर्तृणामिति च विदित शुद्धसमये ॥  
निष्ठारिष्ठाना क्षितिरनुनवेयुर्बहुमुद, क्षि  
॥३॥ सुरा सेजा सर्वे सकलजिनध्वंजप्रमुदिता,  
स्तथा च ज्योतिष्काखिलजनवननाथा समुदिताः  
॥ तपो यत्कर्तृणा विदधति मुखं विस्मितम्,  
क्षिती ॥ ४ ॥ इति

घी करिये, नव आविल नव दिवसें जी ॥ तेर  
 सहस वलि गुणिये गुणणुं, नवपद केरो सारो  
 जी ॥ इण परि निर्मल तप आदरिये, आग  
 म साख उदारो जी ॥ ३ ॥ विमल कमलदल  
 लोयण सुदर, श्रीचक्रेसरि देवी जी ॥ नवपद से  
 वक नविजन केरां, विघ्न हरो सुर सेवी जी ॥  
 श्रीखरतर गह्व नायक सदगुरु, श्रीजिनभक्ति  
 सुणिदा जी ॥ तासु पसाये इणपरि पनणे, श्री  
 जिन लान सूरिदा जी ॥ ४ ॥ इति श्रीनवपद०

॥ अथ पञ्चसणकी स्तुति ॥

॥ वलि वलि हुं ध्यावुं गाठं जिनवर वीर,  
 जिनपर्व पञ्चसण, दाख्या धरमनी शीर ॥ आ  
 पाठ चौमासें हुंती दिन पचास, पडिक्कमण  
 सवत्तरी करिये त्रण उपवास ॥ १ ॥ चउवीशे  
 जिनवर पूजा सत्तर प्रकार, करिये नलें नावें  
 नरिये पुण्य नमार ॥ वलि चैत्य प्रवाहें फिरता  
 लान अनंत, इम परव पञ्चसण सहुमे महि

ए, कृष्ण केमै, क्वरे ॥ तिहा सरगमपधुति, निष  
 पमगरस, सस ससस सुर, सेवता ॥ जिननावर  
 गे, कुशलसुनि शं, दिशतु शासन, देवता ॥ ४॥  
 इति श्रजिनकुशलसूरिजीकृत पार्श्वजिन० ।

॥ अथ आबिलकी स्तुति ॥

॥ निरुपम सुखदायक जगनायक लायक  
 शिवगति गामी जी, करुणासागर निजगुण  
 आगर शुभ समता रस धामी जी ॥ श्रीसिद्ध  
 चक्र शिरोमणि जिनवर ध्यावे जे मन रगे जी,  
 ते मानव श्रीपालतणी परे पामे सुख सुर संगे  
 जी ॥ १ ॥ अरिद्वत सिद्ध आचारिज पाठक, सा  
 धु महा गुणवता जी ॥ दरिसण नाण चरण तप  
 उत्तम, नवपद जग जयवता जी ॥ एहनु ध्यान  
 धरंता लदिये, अविचल पद अविनाशी जी,  
 ते सधजा जिननायक नमिये, जिणे ए नीति प्र  
 काशी जी ॥ ७ ॥ आसूमास मनोहर तिम ब  
 लि, चैत्रक मास जगीशे जी ॥ उजवाली सातव

मुनिवरू, चउवीस जिणवर तेह वदू सयल स  
 र्घे सुखकरू ॥ ९ ॥ इग्यार अंग उपाग वारे  
 दश पयन्ना जाणिये, उ छेद ग्रंथ प्रसन्न अत्ता  
 चार मूल वखाणिये ॥ अनुयोग घर उदार न  
 दीसूत्र जिनमत गाइये, एह वृत्ति चूर्णी जा  
 ष्य पेंतालीश आगम ध्याइये ॥ ३ ॥ उहु दि  
 सें बालकदोय जेहने सदा नवियण सुखकरू,  
 उख हरेँ अवा लुंव सुदर उरिय दोहग अपह  
 रू ॥ गिरनार मरुण नेमि जिनवर चरणपकज  
 सेविये, श्रीसघ सद्गुनेँ सदा मगल करो अवा  
 देवियेँ ॥४॥ इति गिरनारमरुण श्रीनेमि० ॥

॥ अथ दीपमालिकास्तुति ॥

॥ पापायां पुरि चारुषष्ठतपसा पर्येकपर्या  
 सन , ह्मापालप्रचुहस्तपालविपुलश्रीशुक्ल  
 शालामनु ॥ गोसे कार्तिकदर्शनागकरणे तू  
 र्यारकाते शुभे, स्वातौ य शिवमाप पापरहि  
 त सस्तौमि वीरप्रचुम् ॥१॥ यज्जर्जागमनोभव

मावत ॥ ५ ॥ पुस्तक पूजावी नव वाचनाये  
 चाय, श्रीकल्पसूत्र जिहां सुणता पाप पुष्प  
 ॥ प्रतिदिन परजावना धूप अगर नस्केव, न  
 नवियण प्राणी परव पञ्चसण सेव ॥ ३ ॥ वधि  
 साहम्मीवत्तल करिये वारं वार, केइ जावत्त  
 जावे केइ तपसी शिलधार ॥ अडदीह पूज  
 सण एम सेवत आणद, सुयदेवी सानिध करे  
 जिनलाज सूरिंद ॥ ४ ॥ इति श्रीपर्युषणप ॥

॥ अथ नेमनाथजीकी स्तुति ॥

॥ सुर असुर वदिय पाय पंकज मयणमल्ल  
 अक्षोक्षित, घनसघनश्याम शरीर सुंदर शं  
 ख लंछन शोक्षितं ॥ शिवादेवि नदन त्रिजग  
 वदन नविक कमल दिनेश्वरं, गिरनार गिरि  
 वर शिखर वदू नेमिनाथ जिनेश्वरम् ॥१॥ अ  
 टापटें श्रीआटिजिनवर वीर जिन पाषा पुरें,  
 वासुपूज्य चंपापुरिय सीधा नेम रेवय गिरिबरे  
 समेतशिखरे वीम जिनवर पदुत्त

॥ पूरव विदेहें विजय जली पुष्कलावई नाम,  
 जिहां विचरे जिनवरजी धन ते नयरी गाम ॥  
 ॥१॥ धन ते लोक सुणे जे जोजनगामिनी वा  
 ण, धन ते महियल चरण धरे जिहा जिनवर  
 जाण ॥ धन ते नविजन जे रहे प्रभु ताहरे प  
 रसंग, वदनकमल निरखी नित्य माणे उत्सव अं  
 गा ॥२॥ सुगुरु मुखें प्रभु सुजस तुम्हीणो साजल  
 कान, मिलवाने उलसे मन माहरुं धरुं एक  
 ध्यान ॥ जगति छुगति करवानी ठे मुज सघ  
 ली जोड, पण प्रभु लग पढूंवीजें तेह नहिं  
 पग दोड ॥ ३ ॥ आमा मंगर अति घणा विच  
 वहे नदियां पूर, किम मुजथी अवराये प्रभुजी  
 एटली दूर ॥ आखडली उलजो करे जोयवा  
 मुख जिनराज, पाखडली पाई नहि ते विन  
 किम सरे काज ॥ ४ ॥ वाटडली वहतो कोई न  
 मिले सेंगू साथ, कागलियो लिख आपूं हुं  
 जिम तेहने हाथ ॥ जाणू शशहर साथें कहुं

व्रतवरज्ञानाद्वरासिद्धये, संनूयाशु सुपर्वसंत  
 तिरहो चक्रे महस्तत् कृणात् ॥ श्रीमिन्नाजिन  
 वादिवीरचरमास्ते श्रीजिनाधीश्वरा, संघात्  
 नघचेतसे विदधता श्रेयास्यनेनासि च ॥१॥  
 अर्थात्पर्वमिदं जगाद् जिनप श्रीवर्द्धमानादि  
 ध, स्तत्पश्चात्तणनायका विरचयांचक्रुस्तरां स  
 व्रत ॥ श्रीमतीर्थसमर्थनैकसमये सम्यग्द  
 शा नूस्पृशा, नूयान्नात्रुककारकप्रवचनं चेत  
 श्वमत्कारि यत् ॥३॥ श्रीतीर्थाधिप तीर्थज  
 नपरा सिद्ध्यिका देवता, चंचच्चक्रधरा सुरा  
 सुरनता पायादपायादसौ ॥ अर्द्धन् श्रीजिन  
 चङ्गीस्सुमतिनो नव्यात्मन प्राणिनो, या  
 चक्रेऽवमकटहस्तिनिधने शार्दूलविक्रीडितम् ॥  
 ॥ ४ ॥ इति दीपमालिकास्तुतिः ॥

॥ अथ पञ्चतिर्थीका स्तवन ॥

॥ सुगुण सनेही साजण श्रीसीमधरस्वाम,  
 अरज सणो एक जगगरु म्

जाणे - हजूर ॥ ए ॥ शिव सुखदायक नायक  
 लायक स्वामि सुरग, ध्यायक ध्येय स्वरूप  
 लहे निज आत्म उमंग ॥ सहिजे एक पलक  
 जो थाये प्रचु तुज संग, लाज उदयजिन चड  
 लहे नित प्रेम अचंग ॥ १० ॥ इति श्रीसीम  
 धर स्वामी स्तवनं ॥

॥ अथ बीजो स्तवन ॥

॥ सफल संसार अवतार ए हु गणुं, सामि  
 सीमधरा तुम्ह जगते जणुं ॥ नेटवा पायकम  
 ल जाव हियडे घणो, करिय सुपसाय जे वीन  
 वु ते सुणो ॥१॥ तुम्हशुं कूड अरिहंत शु रा  
 खियें, जिस्यो अठे तिस्यो कर जोडि करि जाखि  
 ये ॥ अति सबल मुज हिये मोह माया घणी,  
 एक मन जगति किम करू त्रिचुवन घणी ॥२॥  
 जीव आरति करे नव नवी परिगडे, रीश चट  
 को चढे लोचन वयरी नडे ॥ नयण रस वयण  
 रस काम रस रसीयो, तेम अरिहंत तूं हीयडे



सदेशा जेह, पण अलगो थई ऊपरि वाडेनि  
 कले तेह ॥ ५ ॥ जो कोई रति प्रनुजी तुम्ही  
 एथ अवाय, तो इण भरतना वासी नविजव  
 पावन थाय ॥ साहिवनी तो सुनजर सपळे  
 सरिखी होय, पण पोतानी प्राप्ति सारू फल  
 प्रति जोय ॥ ६ ॥ अलगो तु पण माहरे तुम  
 शु साची प्रीत, गुण गुणवतना आवे हियडे  
 खिण खिण चित्त ॥ हुं तुं सेवक तुं ठे माहरो  
 आपातमराम, नहिंय विसारूं जीवुं ज्या लमि  
 हरु नाम ॥ ७ ॥ साचे दिलथी मुकशुं पर  
 धरम सनेह, करुणाकर प्रनु करजो मोष  
 हिर अठेह ॥ दूसम काल तणो ड स ठ  
 ॥ ४ ॥ तुं कृपाल ॥ ७ ॥ आशविखुंश अलम  
 ए करे अरदास, पण महोटानी मरि  
 ॥ सुवे थाय निराश ॥ केई नसे प्रनु पासे  
 अरज सुं ठे दूर, राजमहिरनी रनिं सपळणे

मरुगिरि वेगलु ॥ ७ ॥ जोलिडा जगति तूं चित्त  
 हारे किस्ये, पुण्य संयोग प्रचु दृष्टिगोचर दु  
 स्ये ॥ जेहने नामें मन वयण तन उद्धसे, दूर  
 थी दूकडा जेम हियडे वसे ॥ ९ ॥ जल जलो  
 एणि संसार सदु ए अठे, सामि सीमंधरा ते  
 सहू तुम पठें ॥ ध्यान करता सुपनमाहि आ  
 वी मिले, देखियें नयण तो चित्त आरति टले  
 ॥ १० ॥ साम सौहामणा नाम मन गहगहे,  
 तेदशु नेह जे वात तुम्ह जी कहे ॥ तुम्ह पय  
 जेटवा अति घणो टलवलुं, पख जो होय तो  
 सहिय आवी मिलुं ॥ ११ ॥ मेरुगिरि लेखणी  
 आज कागल करु, क्हीरसागर तणा दूध खडि  
 या जरुं ॥ तुम्ह मिलवा तणा सामि संदेशडा,  
 इंड पण लखिय न शके अठे एवडा ॥ १२ ॥  
 आपणे रंग जरि वात मुख जेटली, जपने  
 सामि न कहाय मुख तेटली ॥ सुणो सीमंधरा  
 राजराजेसरा, लाम ने कोड प्रचु पूर सवि

नवि वसीयो ॥३॥ दिवस ने राति दिपडे छने  
 रो धरू, मूढ मन रीज्वा वलिय माया करूं ॥  
 तूंहि अरिहंत जाणे जिस्यो आचरूं, तेम क  
 र जेम ससार सागर तरूं ॥ ४ ॥ कम्मवसि  
 सुख ने छ ख जे हु सहूं, मन तणी वात अरिहं  
 त किणने कदू ॥ करि दया करि मया देव क  
 रुणा परा, छ ख हरि सुस्क करि सामि सीमप  
 रा ॥ ५ ॥ जाण संयोग आगम वयण पण सु  
 णु, धर्म न कराय प्रचु पाप पोतें घणुं ॥ एक  
 अरिहंत तू देव बीजो नहिं, एह आधार जम  
 जाणजो अम्ह सही ॥ ६ ॥ धण कणय माय  
 पिय पुत्त परियण सहू, हस्यो वोळ्यो रम्यो  
 रग रातो बहू ॥ जयो जयो जगगुरु जीव जीव  
 न धरा, तुम्ह समो बढ नहिं अवर वाड्हेसरा  
 ॥ ७ ॥ अमिय सम वाणि जाणु सदा साजळुं,  
 बारवर परपदामाहि आवी मिलु ॥ चित्त जा  
 णुं सदा सामि पाय उलयुं, किम करु ठाम पुं

मरुगिरि वेगलु ॥ ७ ॥ जोलिडा जगति तूं चित्त  
 हारे किर्ये, पुण्य सयोग प्रचु दृष्टिगोचर हु  
 स्ये ॥ जेहने नामें मन वयण तन उल्लसे, दूर  
 थी हूकडा जेम हियडे वसे ॥ ९ ॥ चल जलो  
 एणि ससार सदु ए अठे, सामि सीमंधरा ते  
 सह तुम पठें ॥ ध्यान करता सुपनमाहि आ  
 वी मिले, देखियें नयण तो चित्त आरति टले  
 ॥ १० ॥ साम सोहामणा नाम मन गहगहे,  
 तेहशु नेह जे वात तुम्ह जी कहे ॥ तुम्ह पय  
 जेटवा अति घणो टलवलुं, पख जो होय तो  
 सहिय आवी मिलु ॥ ११ ॥ मेरुगिरि लेखणी  
 आज कागल करुं, क्षीरसागर तणा दूध खडि  
 या जरु ॥ तुम्ह मिलवा तणा सामि सदेशडा,  
 इंज पण लखिय न शके अठे एवडा ॥ १२ ॥  
 आपणे रग जरि वात मुख जेटली, ऊपजे  
 सामि न कहाय मुख तेटली ॥ सुणो सीमंधरा  
 राजराजेसरा, लाम ने कोड प्रचु पूर सवि

मादरा ॥ १३ ॥ पुष नवि मोह । इय कने  
 जेदने, समरियें एणि ससार नि । या कने ।  
 दने मोर जिम कमल नमरो रमे, तेम क  
 त तू चित्त मोरे गमे ॥ १४ ॥ खरु कम्मवसि  
 ध्यान हियडे वस्यु, वापडु पाप हिवत अरिहं  
 रशे किस्सु ॥ ठाम जिम गरुडवर प देव क  
 वही, ततखिण सर्पनी जाति न शक सीमंध  
 ॥ १५ ॥ पाप मे कळ सावळ सहु परिहररी, स  
 मि सीमधरा तुम्ह पय अणुसरी ॥ शुध पा  
 रित्र कहियें प्रचु पालशु, इ ख नमार संसार  
 नय टालशु ॥ १६ ॥ तुम्ह हु दास हुं तुम्ह से  
 वक सही, एह मे वात अरिहंत आगल कही  
 ॥ एवही माहरी नगति जाणी करी, आपजो  
 वापजी सार केवल सही ॥ १७ ॥ कलश ॥ एम  
 ऋषि वृषि, समृषि कारण, इरित वारण, मुख  
 करो ॥ उवजाय वर श्री, नक्ति लाजे, धुण्यो श्री,  
 सीमंधरो ॥ जय जयो जगगुरु, जीव जीवन क

मरगिरि वेगलुं । प्रणी ॥ कर जोडि वलि वलि,  
हारे किस्ये, पुर आशा, मन तणी ॥ १७ ॥ इति  
स्ये ॥ जेहने नी स्तुति सपूर्णा ॥

थी हूकडा जेचमी वृद्ध स्तवन प्रारभ ॥

एणि ससारु श्रीगुरु पाय, निर्मल न्यान उपा  
सहू तुम । मे तप नणु ए, जन्म सफल गिणुं ए  
व्री मिलेभजवीसमो जिनचद, केवल न्यान दि  
एद ॥ त्रिगडे गह गह्यो ए, नवियणने कह्यो  
ए ॥ २ ॥ न्यान वडू ससार, न्यान सुगति दा  
तार ॥ न्यान दीवो कह्यो ए, साचो सर्दह्यो  
ए ॥ ३ ॥ नयन लोचन सुविलास, लोकालो  
क प्रकाश ॥ न्यान विना पशु ए, नर जाणे कि  
श्यु ए ॥ ४ ॥ अधिक आराधक जाण, नगवती  
सूत्र प्रमाण ॥ न्यानी सर्वतु ए, किरिया देश  
तु ए ॥ ५ ॥ न्यानी श्वासोच्चास, करम करे जे  
नास ॥ नारकीने सही ए, कोड वरस कही ए ॥  
॥ ६ ॥ न्यान तणो अधिकार, बोल्या सूत्र मजा

२ ॥ किरिया ठे सही ए, पण पाठे कही ए ॥  
 ॥ ७ ॥ किरिया सदित जो न्यान, हुवे तो ज  
 ति परधान ॥ सोनो ने सूरु ए, शंख दूर्ध्वे नख  
 ए ॥ ८ ॥ महानिशीथ मजार, पांचमि अ  
 क्षर सार ॥ नगवत चाखीयो ए, गणपर  
 साखियो ए ॥ ९ ॥

॥ ढाल दूर्जी ॥ कालदरानी देशी ॥

॥ पाचमि तप विधि सांजलो, जिम पामो  
 नवपारो रे ॥ श्रीअरिहंत इम उपदिशे, नवि  
 यणने हितकारो रे ॥ पा० ॥ १ ॥ मिगसर मा  
 ह फागुण नला, जेठ आषाढ वैशाखो रे ॥  
 इण षटमासें लीजिये, शुनदिन सदगुरुसासो  
 रे ॥ पा० ॥ २ ॥ देव छहारी देहरें, गीतारथ  
 गुरु वंदी रे ॥ पोथी पूजो ग्याननी, सगति हु  
 वे तो नदी रे ॥ पा० ॥ ३ ॥ बे कर जोडी जा  
 वरुं, गुरु मुख करो उपवासो रे ॥ पांचमि पढि  
 कमणो करो. पढो पंक्ति गरु

॥ ४ ॥ जिण दिन पांचमि तप करो, तिण दिन  
 आरंज टालो रे ॥ पाचमि स्तवन थुई कहो,  
 ब्रह्मचरिज पिण पालो रे ॥ पां० ॥ ५ ॥ पाच मास  
 लघुपंचमी, जावजीव उत्कृष्टी रे ॥ पाच वरस  
 पाच मासनी, पाचमि करो शुभदृष्टि रे ॥ पा० ॥ ६ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ उच्चालानी देशी ॥

॥ दिव नवियण रे पाचमी उजमणो सुणो,  
 घर सारू रे वारू धन खरचो घणो ॥ ए अव  
 सर रे आवंता वलि दोहिलो, पुण्यजोगे रे  
 धन पामंता सोहिलो ॥ उच्चालो ॥ सोहिलो व  
 लिय धन पामता पण धर्मकाज किहा वली,  
 पाचमीदिन गुरु पास आवी कीजिये काउस्सग  
 रली ॥ त्रण ज्ञान दरिसण चरण टीकी देइ पु  
 स्तक पूजिये, थापना पहिली पूज केसर सुगुरु  
 सेवा कीजिये ॥ १ ॥ ढाल ॥ सिद्धातनी रे पाच प्र  
 ति वीटागणा, पाच पूठा रे मखमल सूत्र प्रमुख  
 तणा ॥ पाच मोरा रे लेखण पाच मजीसणा,



वाग्मरूपा रे कांवी वारू वतरणा ॥ उज्जालो ॥  
 वतरणा वारू वली ह कमली पाच जिलमिष  
 अति नली, स्थापनाचारिज पाच ठवणी ह  
 हपती पडपाटली ॥ पटसूत्र पाटी पंच कोथल  
 पच नवकरवालिया, इण परे श्रावक करे पं  
 चम ऊजमणुं उजवालिया ॥१॥ ढाल ॥ वलि देह  
 रे रे सनात्र महोत्सव कीजिये, घर सारू रे दान  
 वली तिहा दीजिये ॥ प्रतिमानी रे आगल दो  
 वणु ढोइये, पूजाना रे जे जे उपगरण जोइये  
 ॥ उज्जालो ॥ जोइये उपगरण देवपूजा काजक  
 लश नृगार ए, आरति मङ्गलथाल दीवो धूप  
 धाणु सार ए ॥ घनसार केशर अगार सुख  
 अगलूहणुं दीस ए, पच पंच सघली वस्तु  
 ढोवो सगतिशुं पचवीश ए ॥३॥ ढाल ॥ पांचनि  
 ना रे सहाम्मी सर्व जिमाडिये, रात्रिजोगे रे गति  
 रसाल गवाडिये ॥ इण करणी रे करतां ज्ञान  
 आराधिये, ज्ञान दरिसण रे

धिये ॥ उल्लासो ॥ साधियें मारग एह करणी  
 ज्ञान लहियें निरमलो, सुर लोक नें नरलोक  
 मांहे ज्ञानवत ते आगलो ॥ अनुक्रमे केवल  
 ज्ञान पामी सासता सुख जे लहे, जे करे पां  
 चमी तप अखन्ति वीर जिणवर इम कहे ॥  
 ॥ ४ ॥ कलश ॥ एम पंचमी तप, फल प्ररूप  
 क, वर्धमान, जिणेसरो ॥ में थूण्यो श्री, अरिहंत  
 जगवंत, अतुल बल, अलवेसरो ॥ जयवंत श्री  
 जिन, चंद सूरिज, सकल चद, नमसियो ॥ वाचना  
 चारिज, समयसुंदर, जगति जाव, प्रशसियो ॥  
 ॥ ५ ॥ इति श्रीपचमीवृद्धस्तवन संपूर्णम् ॥  
 ॥ अथ पार्श्वजिन अथवा लघुपंचमी स्तवन ॥  
 ॥ पाचमि तप तुमे करो रे प्राणी, निर्मल  
 पामो ज्ञान रे ॥ पहिलुं ज्ञान ने पठें किरिया,  
 नहिं कोइ ज्ञान समान रे ॥ पा० ॥ १ ॥ नंदि  
 सूत्रमें ज्ञान वखाण्यु, ज्ञानना पच प्रकार रे ॥  
 मति श्रुत अवधि अने मन पर्यव, केवल ज्ञा

न श्रीऋर रे ॥ पा० ॥ ७ ॥ मति अछाबीश मु  
 त चवटे वीग, अवधि उ असस्य प्रकार रे ॥  
 दोय जेट मन पर्यव दास्यु, केवल एक प्रकार  
 रे ॥ पा० ॥ ३ ॥ चड सूरज ग्रह नह्यत्र तारा,  
 तेशु तेज आकाश रे ॥ केवल ज्ञान सधु न  
 हिं कोई, लोकालोक प्रकाश रे ॥ पा० ॥ ४ ॥  
 पार्श्वनाथ प्रसाद करीने, महारी पुरो उमेद  
 ॥ समयसुदर कहे दु पण पासुं, ज्ञाननो पं  
 मो जेट रे ॥ पा० ॥ ५ ॥ इति श्रीपार्श्वजि० ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तवनम् ॥

॥ अमल कमल जिम धवल बिराजे, गाजे गोडी  
 पास ॥ सेवा सारे जेहनी, सुर नर मन धरिष  
 उह्वास ॥ २ ॥ सोजागी साहिव मेरा बे, अरिहा  
 सुग्यानी पास जिणदा बे ॥ ५ आकणी ॥ सुंदर  
 सूरति मूरति सोहे, मोमन अधिक सुहाय ॥ पछ  
 क पलकर्म पेखता मानुं, नव नवि उबिय देखा  
 य ॥ ७ ॥ सोजा० ॥ अ० ॥ जब छ ख जंजनज

नमनरंजन, खंजन नयनशुं रंग ॥ श्रवण सु  
 णी गुण ताहरा, माहरां विकस्यां अगो अंग  
 ॥३॥ सो० ॥ अ० ॥ दूरयकी हुं आयो वहिने,  
 देव लह्यो दीदार ॥ प्रारथिया पहिडे नहिं, सा  
 हिवा एह उत्तम आचार ॥४॥ सो० ॥ अ० ॥  
 प्रचु मुखचद विलोकित हरषित, नाचत नयन  
 चकोर ॥ कमल हसे रवि देखिने, जिम जलधर  
 आगम मोर ॥ ५ ॥ सो० ॥ अ० ॥ किसके हरि  
 हर किसके ब्रह्मा, किसके दिलमे राम ॥ मेरे  
 मनमे तुं वसे, साहिब शिवसुखनोदी ठाम ॥ सो०  
 ॥ अ० ॥ ६ ॥ माता वामा धन्य पिता जसु, श्रीअ  
 श्वसेन नरेश ॥ जनमपुरी वणारसी, धन धन  
 काशीनो देश ॥ सो० ॥ अ० ॥ ७ ॥ सवत सतरेशें  
 बावीशें, वदि वैशाख वखाण ॥ आठम दिन जले  
 जावशु, मारी जात्र चढी परिमाण ॥ सो० ॥  
 अ० ॥ ८ ॥ सान्निध्यकारी विघ्ननिवारी, परजप  
 गारी पास ॥ श्रीजिनचद बूहारता, मोरी सफ

ल फली सहु आश ॥ सो० ॥ अ० ॥ ए० इति

॥ अथ विमलजिनस्तवनम् ॥

॥ घर अगण सुरतरु फल्यो जी, कवच क  
नक फल खाय ॥ गयवर वाध्यो बारणै जी, ल  
र किम आवे दाय ॥ १ ॥ विमलजिन महारी तु  
म्हशु प्रीति, सुर सकलकितशुं मिल्यां जी,  
दियहु हीसे केम ॥ वि० ॥ २ ॥ मन गमता मे  
वा लही जी, कृण खल खावा जाय ॥ आदर  
साद्विनो लही जी, कृण ल्ये राक मनाप ॥  
वि० ॥ ३ ॥ रत्न ठते कृण काचने जी, अलवे  
पसारे दाय ॥ कृण सुरतरुयी ऊठिनें जी, बाब  
ल घाले बाय ॥ वि० ॥ ४ ॥ देव अवर जो हुं करुं  
जी, तो अचु तुमची आण ॥ श्रीजिनराज नवो  
नवें जी, तुहिज देव प्रमाण ॥ वि० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ एकादशी वृद्ध स्तवनं ॥

॥ समवसरण वेठा नगवत, धरम प्रकाशो  
री अरिदत्त ॥ वारे परपटा वैठी जन्नी

र शुद्धि इग्यारश वडी ॥१॥ मल्लिनाथना तीन  
कल्याण, जनम दीक्षा ने केवल ज्ञान ॥ अर  
दीक्षा लीधी रूवडी ॥ मा० ॥ १ ॥ नमिने ऊपनु के  
वल ज्ञान, पाच कल्याणक अति परधान ॥  
ए तिथिनी महिमा एवडी ॥ मा० ॥ ३ ॥ पाच  
अरत ऐरवत इमहीज, पाच कल्याणिक दुवे  
तिमहीज ॥ पचासनी सख्या परगडी ॥ मा० ॥  
॥ ४ ॥ अतीत अनागत गणता एम, दोढर्श  
कल्याणक थाये तेम ॥ कुण तिथि ठे ए तिथिजे  
वडी ॥ मा० ॥ ५ ॥ अनंत चोवीशी इण परें  
गिणो, जान अत उपवासा तणो ॥ ए तिथि  
सदु तिथि शिर राखडी ॥ मा० ॥ ६ ॥ मौनप  
णें रह्या श्रीमल्लिनाथ, एक दिवस संयम व्रत  
साथ ॥ मौन तणी परि व्रत इम पडी ॥ मा० ॥  
॥ ७ ॥ अठ पुहरी पोसो लीजियें, चोविहारवि  
धिनु कीजियें ॥ पण परमाद न कीजें घडी ॥  
॥ मा० ॥ ८ ॥ वरस इग्यार कीजें उपवास, जाव

ल फली सद्गु आत्रा ॥ सो० ॥ अ० ॥ ए० इति ॥

॥ अथ विमलजिनस्तवनम् ॥

॥ घर अगण सुरतरु फल्यो जी, कवण क

नक फल खाय ॥ गयवर बाध्यो बारणें जी, ल

र किम आवे दाय ॥ १ ॥ विमलजिन महारी तु

म्हशु प्रीति, सुर सकलकितशु मिस्या जी,

हियड्डु हीसे केम ॥ वि० ॥ २ ॥ मन गमता मे

वा लही जी, कुण खल खावा जाय ॥ आदर

साहिवनो लही जी, कुण ल्ये राक मनाय ॥

वि० ॥ ३ ॥ रत्न ठते कुण काचने जी, अलखे

पसारे दाय ॥ कुण सुरतरुयी कठिनें जी, बाब

ल घाले बाय ॥ वि० ॥ ४ ॥ देव अवर जो हुं करुं

जी, तो प्रचु तुमची आण ॥ श्रीजिनराज नवो

नवे जी, तुंदिज देव प्रमाण ॥ वि० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ एकादशी वृद्ध स्तवर्न ॥

॥ समवसरण वेठा जगवत, घरम प्रकाशे  
श्रीअरिहंत ॥ वारे परपढा बेठी सुडी.

र शुद्धि इग्यारश वडी ॥१॥ महिनाथना तीन  
 कल्याण, जनम दीक्षा ने केवल ज्ञान ॥ अर  
 दीक्षा लीधी रूवडी ॥ मा० ॥ १ ॥ नमिने ऊपनु के  
 वल ज्ञान, पाच कल्याणक अति परधान ॥  
 ए तिथिनी महिमा एवडी ॥ मा० ॥ ३ ॥ पांच  
 नरत ऐरवत इमहीज, पाच कल्याणिक दुवे  
 तिमहीज ॥ पचासनी सख्या परगडी ॥ मा० ॥  
 ॥ ४ ॥ अतीत अनागत गणता एम, दोढरों  
 कल्याणक थाये तेम ॥ कुण तिथ ठे ए तिथिजे  
 वडी ॥ मा० ॥ ५ ॥ अनत चौवीशी इण परें  
 गिणो, लाज अनंत उपवासा तणो ॥ ए तिथि  
 सद्दु तिथि शिर राखडी ॥ मा० ॥ ६ ॥ मौनप  
 णें रह्या श्रीमह्विनाथ, एक दिवस संयम व्रत  
 साथ ॥ मौन तणी परि व्रत इम पडी ॥ मा० ॥  
 ॥ ७ ॥ अठ पुहरी पोसो लीजियें, चोविहारवि  
 धिशु कीजियें ॥ पण परमाद न कीजें घडी ॥  
 ॥ मा० ॥ ८ ॥ वरस इग्यार कीजें उपवास, जाव



ल फली सहृ आश ॥ सो० ॥ अ० ॥ इति ॥

॥ अथ विमलजिनस्तवनम् ॥

॥ घर अगण सुरतरु फल्यो जी, कवण क

नक फल खाय ॥ गयवर वांध्यो वारणें जी, स

र किम आवे दाय ॥१॥ विमलजिन महारी तु

म्हशु प्रीति, सुर सकलंकितशुं मिळ्यां जी,

द्वियहु हींसे केम ॥ वि० ॥ १ ॥ मन गमता मे

वा लही जी, कुण खल खावा जाय ॥ आदर

साहिवनो लही जी, कुण ल्ये राक मनाय ॥

वि० ॥ ३ ॥ रत्न ठते कुण काचने जी, अलवे

पसारे दाथ ॥ कुण सुरतरुथी ऊठिनें जी, बाव

ल घाले बाथ ॥ वि० ॥ ४ ॥ देव अवर जो हुं कर्क

जी, तो प्रचु तुमची आण ॥ श्रीजिनराज नबो

नवे जी, तुहिज देव प्रमाण ॥ वि० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ एकादशी वृद्ध स्तवर्न ॥

॥ समवसरण वेठा नगवत, घरम प्रकाशे

श्रीअरिर्दंत ॥ वारे परपदा बैठी सुडी,



जीव पण अधिक उल्हास ॥ ए तिथि मोक्ष त  
 णी पावडी ॥ मा० ॥ ९ ॥ ऊजमणुं कीजें श्री  
 कार, ज्ञानना उपगरण इग्यार इग्यार ॥ करो  
 काजसग्ग गुरु पाये पडी ॥ मा० ॥ १० ॥ देहरे  
 स्नात्र करीजे वली, पोथी पूजिजे मन रली ॥  
 मुगतिपुरी कीजें हूकडी ॥ मा० ॥ ११ ॥ मौन  
 इग्यारस महोदु पर्व, आराध्या सुख लहियें  
 सर्व ॥ व्रत पञ्चस्काण करो आखडी ॥ मा० ॥  
 ॥ १२ ॥ जेसल शोल इक्याशी समे, कीधुंस्त  
 वन सहू मन गमे ॥ समयसुंदर कहे करो या  
 हडी ॥ मा० ॥ १३ ॥ इति श्रीएकादशीवृ-६०॥

॥ अथ श्रीपार्श्वजिनस्तवन ॥

॥ तुं मेरे मनमे तु मेरे दिलमें, ध्यान घरुं  
 पल पलमें ॥ पास जिणोसर अन्तरजामी,  
 सेव करुं विन विनमें ॥ तु० ॥ १ ॥ काहूको मन  
 तरुणीगुं राच्यो, काहूको चित्त धनमें ॥ मेरो  
 मन प्रचु तुमहीगु राच्यो, उं चित्त ध

वन तिलो रे ॥ विमल वसइ वस्तुपाल ॥ ती०  
 ॥ १ ॥ समेतशिखर सोहामणो, रलियामणो  
 रे ॥ सिद्धा तीर्थकर वीश ॥ ती० ॥ नयरी चपा  
 निरखीये, ह्ये हरखीये रे ॥ सिद्धा श्रीवासुपू  
 ज्य ॥ ती० ॥ ३ ॥ पूर्वदिशें पावापुरी, रुधें न  
 री रे ॥ मुक्ति गया महावीर ॥ ती० ॥ जेसल  
 मे छुहारीये, ड ख वारीये रे ॥ अरिहंत बिंब  
 अनेक ॥ ती० ॥ ४ ॥ विकानेरज वंदीये, चिर  
 नंदीये रे ॥ अरिहंत देहरां आठ ॥ ती० ॥ सो  
 रिसरो सखेसरो, पंचासरो रे ॥ फलोधी यज्ञ  
 ण पास ॥ ती० ॥ ५ ॥ अंतरिक अजावरो, अ  
 मीजरो रे ॥ जीरावलो जगनाथ ॥ ती० ॥ त्रै  
 लोक्य दीपक देहरो, जात्रा करो रे ॥ राणपुरे  
 रिसहेस ॥ ती० ॥ ६ ॥ श्रीनाहुलाई जादवो,  
 गोडी स्तवो रे ॥ श्रीवरकाणो पास ॥ ती० ॥  
 नदीश्वरना देहरा, बावन जला रे ॥ रुचक कुं  
 रुल चाक चार ॥ ती० ॥ ७ ॥ शाश्वती अशा

सठ्वाद् ॥ ते परमेसर विण मिख्या रे, किम  
 वाधे उत्साहो रे ॥ वीर० ॥ ६ ॥ वीर थकां पण  
 श्रुत तणो रे, हुतो परम आधार ॥ हमणां  
 श्रुत आधार वे रे, ए जिन आगम सारो रे  
 ॥ वीर० ॥ ७ ॥ इण कालें सवि जीवने रे, आ  
 गमथी आनद ॥ ध्यावो सेवो नविजना रे, जि  
 नपडिमा सुखकदो रे ॥ वीर० ॥ ८ ॥ गणधर  
 आचारिज मुनि रे, सहुनें इण परसिद्ध ॥ न  
 व नव आगम सगथी रे, देवचड पद लीधो रे  
 ॥ वीर० ॥ ९ ॥ इति निर्वाणकल्याणक स्तव० ॥

॥ अथ श्रीतीर्थमालास्तवनम् ॥

॥ शत्रुजय कृपज समोसखा, जला गुण  
 नखा रे ॥ सिंहा साधु अनत, तीर्थ ते नष्ट  
 रे ॥ तीन कल्याणक तिहा थया, मुगते गया  
 रे ॥ नेमीसर गिरनार ॥ ती० ॥ १ ॥ अथपव  
 एक देहरो, गिरिसेहरो रे ॥ नरतें नराव्यां  
 विव ॥ ती० ॥ आवु चौमुख अति जलो

नीरजनशुं नेह धरीने, आगे उलग करस्यां ॥  
 अद्भुत आदि जिनेसर निरखी, प्रेम सुधारस  
 पीस्या रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ पुहप सुगंधा लेइ प  
 चरंगा, हार सुगंधा गूथी ॥ पहिरावी प्रभु कर्वे  
 लहिस्यां, शिव मारगनी सूथी रे ॥ आ० ॥ ६ ॥  
 गहिर स्वरे जिनवर गुण गातां, जात्र नवाणूं  
 करिये ॥ मन गमती जमती विच जमता, जव  
 सायर निसतारिये रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ पूरव न  
 वाणूं वार प्रथम जिन, रायण रूखे आया ॥  
 ए तीरथ शुज जावे फरसी, करिये निरमल का  
 या रे ॥ आ० ॥ ८ ॥ लाज उदे ए गिरिवर ल  
 हिये, कहे इम केवल नाणी ॥ श्रीजिनचद स  
 दा हित वत्सल, प्रेम घणे चित्त आणी रे ॥  
 आ० ॥ ९ ॥ इति सिद्धचल स्तवनम् ॥

॥ अथ उपदेशमाला पोसद् सिधायलि० ॥

॥ जग चूडामणिनूत, उसनो वीरो तिलो  
 य सिरि तिलत ॥ एगो लोगाइच्चो, एगो चक्कू

श्वती, प्रतिमा वती रे ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल  
 ॥ ती० ॥ तीरथ जात्रा फल तिहा, होजो मुक्त  
 इहा रे ॥ समयसुटर कहे एम ॥ ती० ॥ ७ ॥

॥ अथ सिंहाचल स्तवनम् ॥

॥ आज आपे चालो सहीयो, सिंहाचल गि  
 रिजायें ॥ सिंहाचलगिरि जईए बहेनी, विमलाच  
 लगिरि जईए रे ॥ आ० ॥ सुण बहेनी ए गिरिनी  
 महिमा, आदिजिनद इमनाखी ॥ नरतादिक नरप  
 तिने आगल, इंजादिक सह्यु साखी रे ॥ आज० ॥  
 ॥ १ ॥ इण गिरिवरिये काल अनंते, साधु अ  
 नन्ता सीधा ॥ जन्म मरणना दुःख बोडीने, अ  
 मल अखय गुण लीधा रे ॥ आ० ॥ २ ॥ इण  
 गिरि सन्मुख पगलां नरतां, आतम शुद्ध सुजा  
 वें ॥ कोडि नवारा पातक कीधा, एक पलकमें  
 जावे रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ सासतो तीरथ ए शेशुं  
 जो, जोतां लागे भीतो ॥ तीन नुवनमे इण गि  
 रि तोले, बीजो कोइ न दीतो रे ॥ आ०

प्पहाणागमो महुरवक्को ॥ गंजीरो धिम्मंतो, उ  
 वएसपरो य आयरिउ ॥१॥ अपरिस्सावी सो  
 मो, सगहसीलो अनिग्गहमई य ॥ अविकउ  
 णो अचवलो, पसंतहियउ गुरू होई ॥ १० ॥  
 कइयावि जिणवरिंदा, पत्ता अयरामर पइ दा  
 उं ॥ आयरिएहिं पवयणं, धारिऊइ सपय सय  
 लं ॥ ११ ॥ अणुगम्मए जगवई, रायसुयळा  
 सहस्स वदिहिं ॥ तइवि न करे इ माणं, परिय  
 उइ त तहा नूण ॥ १२ ॥ दिण दिक्खियस्स दम  
 ग, स्स अनिमुहा अऊचदणा अळा ॥ नेउइ  
 आसणगहणं, सो विणउ सव अळाण ॥ १३ ॥  
 वरससय दिक्खियाए, अळाए अऊदिक्खिउ सा  
 हू ॥ अनिगमण उदण नम, सणेण विणएण  
 सो पुळो ॥ १४ ॥ धम्मो पुगिसण्नवो, पुरिसव  
 रदेसिउ पुरिसजिओ ॥ लोएवि पइ पुरिसो, किपु  
 ण लोउत्तमे धम्मे ॥ १५ ॥ सवाहणस्सत्तरणो,  
 तइया वाणारसीइ नयरीए ॥ कन्ना सहस्समहि



तिदुअणस्स ॥ १ ॥ सवठरमुसज जिणो, ४  
 म्मासे वध्माण जिणचदो ॥ २ ॥ इइ विहरिया नि  
 रसणा, जए कए उवमाणेण ॥ ३ ॥ जइता ति  
 लोयनाहो, विसइइ वहुयाइ असरिसजणस्स  
 ॥ इय जीयतकराई, एस खमा सबसाहूणं ॥ ३ ॥  
 न चइकइ चालेज, महइ महावध्माण जिण  
 चदो ॥ उवसग्ग सहस्सेहिं वि, मेरु जहा वायणं  
 जाहिं ॥ ४ ॥ नहो विणीय विणउं, पढम गण  
 हरो समत्त सुयनाणी ॥ जाणंतो वि तमहं, विन्दि  
 य द्वियउं सुणइ सब ॥ ५ ॥ ज आणवेइ राया,  
 पयइउं त सिरेण इहति ॥ इय गुरुजण मुइ न  
 णिय, कयजलिउडेहिं सोयवं ॥ ६ ॥ जइ सुरग  
 णाण इदो, गहगणतारागणाण जइ चंदो ॥ ज  
 ह्य पयाण नरिंदो, गणस्स वि गुरु तहाणंदो  
 ॥ ७ ॥ बालुत्ति महीपालो, न पया परिहवइ ए  
 स गुरु उवमा ॥ जवा पुरउं काउं, विहरंति सु  
 णी तहा सोवि ॥ ८ ॥ पडिक्खो

वि सीञ्जन्द् वायविच्चडित् ॥ संवञ्जरमणसीञ्ज,  
 वाहुवली तद् किलिस्संतो ॥ २४ ॥ नियगमइ  
 विगप्पिय चिं, तिएण सञ्चंदवुद्धिचरिएण ॥ कत्तो  
 पारत्तहिय, कीरइ गुरु अणुवएसेण ॥ २५ ॥  
 थद्धो निरोवयारी, अविणीत्त गव्वित्त निरवणामो  
 ॥ साहुजणस्स गरहित्त, जणेवि वयणिक्कयं ल  
 हइ ॥ २६ ॥ थोवेण वि सप्पुरिसा, सणंक्कुमारु व  
 केइ बुद्धति ॥ देहे खणपरिहाणी, जकिर देवेहिं  
 से कहियं ॥ २७ ॥ जइता लवसत्तम सुर, विमा  
 ण वासीवि परिवडति सुरा ॥ चित्तिक्कतं सेसं, सं  
 सारे सासथ कयरं ॥ २८ ॥ कहत्तं नन्नइ सुक्क,  
 सुचिरेण वि जस्स इक्कमल्लिहियए ॥ जं च मरणा  
 वसाणे, नव ससाराणुबंधिं च ॥ २९ ॥ ठवएस  
 सहस्सेहिं, वोहिक्कतो न बुद्धई कोई ॥ जद्द  
 वन्नदत्तराया, उदाइनिव मारत्त वेव ॥ ३० ॥ ग  
 यकन्न चंचलाए, अपरिञ्चत्ताइ रायल्लहीए ॥  
 जीवासक्कम्म कलिमल, नरिय नरातो पडति

य, आसी किररूववृतीणं ॥ १६ ॥ तद् वि य सा  
 रायसिरी, उद्धटंती न ताइया ताहिं ॥ उयरठि  
 एण इके, ए ताइया अगवीरेण ॥ १७ ॥ महि  
 लाणसु बहुयाण वि, मज्जाउ इह समत्त घरसा  
 रो ॥ रायपुरिसेहिं निज्जइ, जणेवि पुरिसो जहिं  
 नठि ॥ १८ ॥ किं परजण बहुजाणा, वणाहिं व  
 रमप्य सखियं सुकयं ॥ इह नरहचक्कवट्टी, प्स  
 न्चंदो य दिठता ॥ १९ ॥ वेसो वि अप्पमाणो,  
 असजम पएसु वट्टमाणस्स ॥ किं परियत्तियवे  
 स, विसं न मारेइ खज्जतं ॥ २० ॥ धम्मं रक्कइ  
 वेसो, सकइ वेसेण दिक्खित्तिमिअहं ॥ उम्मग्गेण  
 पढंत, रक्कइ राया जणवत्त य ॥ २१ ॥ अप्पा  
 जाणइ अप्पा, जहठित्ति अप्पसक्खित्ति धम्मो ॥  
 अप्पा करेइ तं तद्, जह अप्पसुहावहं होई ॥  
 ॥ २२ ॥ ज ज समयं जीवो, आविस्सइ जेण  
 जेण जावेण ॥ सो तमि तमि समए, सुहासुहं  
 चधए कम्मं ॥ २३ ॥ धम्मो इंतो

वोशिरियं ॥ ४ ॥ आसव कसाय वंधण, कल  
 हा नकाण परपरीवाठ ॥ अरइ रई पेसुन्न, मा  
 या मोस च मिच्चत्तं ॥५॥ वोसिरिसु इमाइंमु, र्क  
 मग्ग ससग्ग विग्घ नूआइं ॥ इग्गइनिबंध  
 णाइं, अठारस पावछाणाइं ॥ ६ ॥ एगो ह नडि  
 मे कोइ, नाहमन्नस्स कस्सवि ॥ एव अदीणम  
 णसो, अण्णाण मणुसासए ॥७॥ एगो मे सास  
 उ अण्णा, नाण दंसणसच्छुज्ज॥सेसा मे बाहिरा चा  
 वा, सवे सजोगलस्करणा ॥ ८ ॥ सजोग मूला  
 जविण, पत्ता इक्कपरपरा ॥ तम्हा संजोग सं  
 बंधं, सव तिविहेण वोसिरे ॥ ९ ॥ अरिहतो म  
 ह देवो, जावळ्ळीवं सुसादुणो गुरुणो ॥ जिणपन्न  
 तं तत्त, इयसम्मत्तं मए गहियं ॥१०॥ चत्तारि म  
 गलं, अरिहंता मगलं, सिद्धा मगलं, सादू मग  
 लं, केवल्लिपन्नत्तो धम्मो मगलं, चत्तारि लोयुत्त  
 मा, अरिहत्ता लोयुत्तमा, सिद्धा लोयुत्तमा,  
 सादू लोयुत्तमा, केवल्लि पन्नत्तो धम्मो लोयुत्त

अहे ॥ ३१ ॥ वीक्षुणवि जीवाण, सङ्करा इति  
 पावचरियाऽ ॥ नयवजा सा सासा, पञ्चासो  
 हु इणमो ते ॥३२॥ पडिवक्किण दोसे, नियए  
 सम्म च पायवडियाए ॥ तो किर मिगावईए, उ  
 प्पन्नं केवल नाण ॥ ३३ ॥ इति पोसह सिद्धा ० ॥

॥ अथ राईसथारा पोसह सिद्धाय ॥

॥ निस्सिही निस्सिही नमो खमासमणणं,  
 गोयमाईण ॥ महामुणीणं ॥ नवकार ३, करेमि  
 नंते ३, कहिये अणुजाणह जिठिक्का, अणुजा  
 णह परमगुरु. गुणगणरयणेहिं मंनिअसररीरा ॥  
 बहुपडिपुन्ना पोरिसि, राईसथारए गामि ॥ १ ॥  
 अणुजाणह संथार, बाहुवहाणेण वामपासेण  
 ॥ कुक्कुड पाय पसारण, अंतरं तु पमक्कए नूमि  
 ॥ २ ॥ संकोइय संभास, उवट्टंतेय काय पडिसे  
 हा ॥ दवाई उवउंग, ऊसासनिरुंजणाखोर्यं ॥  
 ॥ ३ ॥ जइ मे हुक्क पमाउं, इमस्स देहस्सिमाइ  
 रयणीए ॥ आहार सुवदि ति

सु ॥ तिरिएसु इति चञ्जरो, चञ्जदस लस्का य  
 मणुएसु ॥ १ ॥ खामेमि सबजिवि. सबे जीवा  
 खमंतु मे ॥ मित्ती मे सबजूएसु, वेरं मयं न केण  
 वि ॥ ३ ॥ एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहि  
 अ डगठिअं सम्मं ॥ तिविद्वेण पडिकंतो, वदा  
 मि जिणे चञ्जवीस ॥४॥ खमिअ खमाविअ मइ  
 खमिअ, सबह जीव निकाया ॥ सिअहसारख आलो  
 यणह, मवह वेर न जाया ॥५॥ सबे जीवा कम्मवसु,  
 चञ्जदह राज जमंतु ॥ ते मइ सब खमाविया, मव  
 वि तेह खमतु ॥६॥ इति राई सथारा गाथा सण ॥

॥ अथ निंदावारक सथाय ॥

॥ निंदा म करजो कोइनी पारकी रे, निंदा  
 ना बोल्या महापाप रे ॥ वयर विरोध वाधे घ  
 णो रे, निंदा करता न गणे माय चाप रे ॥ नि०  
 ॥ १ ॥ दूर बलती का देखो तुस्हे रे, पगमा ब  
 लती देखो सद्धु कोय रे ॥ परना मेलमा धोया  
 लूगडां रे, कहो केम ऊजला होय रे ॥ नि०

मो ॥ चत्वारि सरण पवञ्जामि, अरिहते सरणं प  
 वञ्जामि, सिद्धे सरणं पवञ्जामि, सादूसरणं पव  
 ञ्जामि, केवलं पन्नत्त धम्म सरणं पवञ्जामि ॥  
 अरिहता मगलं मञ्ज, अरिहता मञ्ज देवया ॥ अ  
 रिहता कित्तिअत्ताण, वोसिरामित्ति पावगं  
 ॥ १ ॥ सिद्धाय मगलं मञ्ज, सिद्धाय मञ्ज देव  
 या ॥ सिद्धाय कित्तिअत्ताण, वोसिरामित्ति पा  
 वग ॥ २ ॥ आयरिया मगलं मञ्ज, आयरिया  
 मञ्ज देवया ॥ आयरिया कित्तिअत्ताण, वोसि  
 रामित्ति पावगं ॥ ३ ॥ उवघाया मगलं मञ्ज, उ  
 वघाया मञ्ज देवया ॥ उवघाया कित्तिअत्ताण,  
 वोसिरामित्ति पावगं ॥ ४ ॥ सादूणो मगलं मञ्ज,  
 सादूणो मञ्ज देवया ॥ सादूणो कित्तिअत्ताण,  
 वोसिरामित्ति पावग ॥ ५ ॥ पुढवि दग्ग अगणि  
 मारुय, इक्किक्के सत्त जोणि लस्काउ ॥ वणपत्तेय  
 अणत्ते, दस चउदस जोणि लस्काउ ॥ १ ॥  
 विगळिदिएसु दो दो, चउरो य नारय,

सु ॥ तिरिएसु हुंति चठरो, चठस लखा य  
 मणुएसु ॥ १ ॥ खामेमि सबजिवि, सबे जीवा  
 खमतु मे ॥ मित्ती मे सबनूएसु, वेरं मद्यं न केण  
 वि ॥ ३ ॥ एवमह आलोइअ, निंदिअ गरहि  
 अ इगंठिअ सम्म ॥ ति विदेण पडिक्कंतो, वंदा  
 मि जिणे चठवीसं ॥४॥ खमिअ खमाविअ मइ  
 खमिअ, सबह जीविकाय ॥ सिद्धसाख आलो  
 यणह, मद्यह वेर न जाय ॥५॥ सबे जीवा कम्मवसु,  
 चठदह राज जमंतु ॥ ते मइ सब खमाविया, मद्य  
 वि तेह खमतु ॥६॥ इति राई सथारा गाथा सण ॥  
 ॥ अथ निंदावारक सथाय ॥

॥ निंदा म करजो कोइनी पारकी रे, निंदा  
 नां बोख्या महापाप रे ॥ वयर विरोध वाधे घ  
 णो रे, निंदा करता न गणे माय धाप रे ॥ निं०  
 ॥ १ ॥ दूर बलंती का देखो तुस्हे रे, पगमां व  
 लती देखो सद्दु कोय रे ॥ परना मेलमां धोयां  
 लगडा रे, कदो केम ऊजला होय रे ॥ निं०



॥ ७ ॥ आप सनालो सद्गुको आपणो रे, निं  
 दानी मूको परी टेव रे ॥ थोडे घणे अबगुणे  
 सद्गु नख्यां रे, केदना नलीया चुए केदना नेव  
 रे ॥ निं० ॥ ३ ॥ निंदा करे ते थाये नारकी  
 रे, तप जप कीधु सद्गु जाय रे ॥ निंदा करो तो  
 करजो आपणी रे, जेम बुटकवारो थाय रे ॥  
 निं० ॥ ४ ॥ गुण ग्रहजो सद्गुको तणो रे, जेह  
 मा देखो एक विचार रे ॥ कृष्णपरें सुख पाम  
 शो रे, समयसुंदर सुखकार रे ॥ निं० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ सीता सिन्धाय लिख्यते ॥

॥ जल जलती मिलती घणी रे, जाली ज  
 ल अपार रे ॥ सुजाण सीता ॥ जाणे केसू फ  
 लिया रे लाल, राता खैर अद्धार रे ॥ सु० ॥ १ ॥  
 धीज करे सीतासती रे लाल ॥ शक्ति तणे परि  
 माण रे ॥ सु० ॥ लक्ष्मण राम खुशी थया रे  
 लाल, निरखे राणो राण रे ॥ सु० ॥ २ ॥ स्ना  
 न करी निरमल जलें रे पावक

( २३५ )

आय रे ॥ सु० ॥ ऊनी जाणे सुराङ्गना रे  
लाल, अनुपम रूप दिखाय रे ॥ सु० ॥ ३ ॥  
नर नारी मिलिया घणा रे लाल, ऊजा करे

हाय हाय रे ॥ सु० ॥ नस्म दुशी इण आगमें  
रे लाल, राम करे अन्याय रे ॥ सु० ॥ ४ ॥  
राघव विन वाङ्मो हुवे रे लाल, सुपनेही न

हि कोय रे ॥ सु० ॥ तो सुज अगन प्रजा  
लजो रे लाल, नहि तो पाणी होय रे ॥ सु० ॥  
॥ ५ ॥ इम कहि पेठी आगमें रे लाल, तुरत

अगन थयो नीर रे ॥ सु० ॥ जाणें ब्रह्म जलशु  
नस्थो रे लाल, जीखे धरम सुधीर रे ॥ सु० ॥  
॥ ६ ॥ देव कुसुम वरषा करे रे लाल, एह

सती शिरदार रे ॥ सु० ॥ सीता धीर्जि कतरी  
रे, लाल साख नरे संसार रे ॥ सु० ॥  
॥ ७ ॥ रलियायत सद्गुको थया रे लाल, स

घले थया ठवरंग रे ॥ सु० ॥ लक्ष्मण राम खु  
शी थया रे लाल, सीता शील सुरंग रे ॥

ग ॥ हि० ॥ ७ ॥ निशिदिन याकुं ध्यावतां हो  
 ॥ ज० ॥ जीव तणो उधर ॥ कमी नहिं कोइ व  
 स्तुनी हो ॥ ज० ॥ याहि जगमे सार ॥ हि० ॥ ७ ॥  
 मनचिंता मनोरथ फले हो ॥ ज० ॥ वरते कोड  
 कल्याण ॥ शुद्ध मने करी समरता हो ॥ ज० ॥  
 निश्चै पद निर्वाण ॥ हि० ॥ ए ॥ ए सरणाने  
 ध्यावतां हो ॥ ज० ॥ नाम तणो आधार ॥ ए  
 सरणाकी कीरति कही हो ॥ ज० ॥ ध्यावो मन  
 ह मजार ॥ हि० ॥ २० ॥ संवत् अढारे बावने  
 हो ॥ ज० ॥ पालि सहेर सुखकार ॥ चोथमस्र  
 इम वीनवे हो ॥ ज० ॥ सुनजो बाल गोपाल  
 ॥ हि० ॥ २१ ॥ इति श्रीमागलिक सरणा ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवन ॥

॥ राग केरवो ॥ चालो देखो री मधुवनको  
 राव ॥ चा० ॥ वामानंदन पास जिनेसर, शिर  
 पर रे वाके चमर ढोलाय ॥ चा० ॥ १ ॥ तारणत  
 रण जिनेसर लख के जे जे चिंत

॥ चा०॥१॥ गगादरस उमाहो लागो, कव  
तुं वाके मन वच काय ॥ चा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ राग घाटी ॥ मेरो मन वश कर लीनो, जि  
र प्रचु पास ॥ मे० ॥ अखियां कमल पाख  
या, सुख सुंदर जास ॥ मे० ॥ १ ॥ काने कुरु

दोय ऊलके, शशि सूरज सम जासा ॥ मे० ॥

नील वरण तन सोहे, त्रिचुवन परकाश ॥ मे०

॥ २ ॥ प्रचु तुम शरण रहीने, समरुं सासोसा

स ॥ मे० ॥ लालचंद अरज सुनीजे, पुरो वाबि

त आस ॥ मे० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ नेमजिन पद ॥

॥ तुमरी ॥ राग जगलो ॥ सुणो सुजाण नेमजी,

हारे में खडी पुकारु नेम तुही तुहीं तुहीं ॥ सु०

॥ अरज करत हुं मे पईया परत हु, ईतनी अ

रज मेरी मानो ॥ सुजा० ॥ १ ॥ विन अवगुण

क्यु तजो मेरे सादेव, नेह नजर मोपें मारो ॥

ग ॥ हि० ॥ ७ ॥ निशिदिन याकुं ध्यावतां हो  
 ॥ ज० ॥ जीव तणो उधार ॥ कमी नहिं कोइ व  
 स्तुनी हो ॥ ज० ॥ याहि जगमें सार ॥ हि० ॥ ग ॥  
 मनचिंता मनोरथ फले हो ॥ ज० ॥ वरते कोड  
 कल्याण ॥ शुद्ध मने करी समरता हो ॥ ज० ॥  
 निश्चै पद निर्वाण ॥ हि० ॥ ए ॥ ए सरणाने  
 ध्यावता हो ॥ ज० ॥ नाम तणो आधार ॥ ए  
 सरणाकी कीरति कही हो ॥ ज० ॥ ध्यावो मन  
 ह मजार ॥ हि० ॥ १० ॥ संवत् अठारे बावने  
 हो ॥ ज० ॥ पालि सहेर सुखकार ॥ चोथमस्र  
 इम वीनवे हो ॥ ज० ॥ सुनजो बाल गोपाल  
 ॥ हि० ॥ ११ ॥ इति श्रीमागलिक सरणां ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ राग केरवो ॥ चालो देखो री मधुवनको  
 राव ॥ चा० ॥ वामानंदन पास जिनेसर, शिर  
 पर रे वाके चमर ढोलाय ॥ चा० ॥ १ ॥ तारणत  
 रण जिनेसर लख के, जेटे      जवि चित्त

। चा०॥१॥ गगादरस उमाहो लागो, कव  
वाके मन वच काय ॥ चा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ राग घाटी ॥ मेरो मन वश कर लीनो, जि  
र प्रचु पास ॥ मे० ॥ अखियां कमल पाख  
या, सुख सुंदर जास ॥ मे० ॥ १ ॥ काने कुरु  
दोय ऊलके, शशि सूरज सम नासा ॥ मे० ॥  
ील वरण तन सोहे, त्रिचुवन परकाश ॥ मे०  
१ ॥ प्रचु तुम शरण रहीं, समरुं सासोसा  
॥ मे० ॥ लालचंद्र अरज सुनीजें, पूरो वाठि  
आस ॥ मे० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ नेमजिन पदं ॥

॥ तुमरी ॥ राग जगलो ॥ सुणो सुजाण नेमजी,  
रि मैं खढी पुकारु नेम तुही तुंहीं तुंहीं ॥ सु०  
। अरज करत हुं मे पईया परत हुं, ईतनी अ  
ज मेरी मानो ॥ सुजा० ॥ १ ॥ विन अवगुण  
त्यु तजो मेरे साहेव, नेह नजर मोपें मारो ॥

सुजा० ॥ ५ ॥ हरख चद नेमी राजेसर,  
भवकी चेरी ॥ सुजा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ नेमजिनपदं ॥

॥ राग जैरवी ॥ नेमि ॥

मोरी रेन दिवस नित लग रहीरे ॥ ने०

॥ १ ॥ पहेली आय उन दोस्ती कीनी,

हैं ठिटकाय दर्ई रे ॥ पसुअन पर प्रचु दया

रीने, सिवरमणी ते वर लेई रे ॥ ने० ॥ मो०

केई नविक रसना कर दोस्ती, रत्नविमल

पाय लई रे ॥ ने० ॥ मो० ॥ ३ ॥

॥ अथ पद ॥ राग जैरवी ॥

॥ आज प्रचु तोरे चरण लागि, ॥ ५ ॥

में खोई रे ॥ आ० ॥ १ ॥ दरसन कर

नयो मेरे, आनद चित्त अथ जोई रे ॥ आ०

॥ ७ ॥ तुम विन उर न कोई मेरे, देख्यो

वन जोई रे ॥ आ०

विनति, तुम प्रचु

॥ अथ पदं ॥

॥ राग जैरवी ॥ रात गई अब प्रात होन  
यो, क्या सोये जिया जाग रे ॥ रा० ॥ दोय घड़ी  
ढको अब रहियो, ऊठ धरममें लाग रे ॥ रा०  
१ ॥ जिनवाणी उरबीच धार ले, उर नरम  
ब त्याग रे ॥ रा० ॥ २ ॥ आनद सुगुरु वच  
हित मानो, ए सूयो शिवमाग रे ॥ रा० ॥ ३ ॥

॥ अथ पदं ॥

॥ राग जैरवी ॥ तुम बिन दीनानाथ दया  
बंधि, कोन खबर ले मेरी रे ॥ तु० ॥ १ ॥ अ  
त फिख्यो ससार जगतमें, मेटो नवदी फेरी  
॥ तु० ॥ २ ॥ नव नवके प्रभु तुम जगनाय  
क, राखो शरणें तेरी रे ॥ तु० ॥ ३ ॥ उदय आ  
रोपकह्यो तेरो, सरण ग्रही में तेरी रे ॥ तु० ॥ ४ ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचल स्तवनम् ॥

॥ कडखानी देशी ॥ नाव धरि घन्य दिन  
प्राज सफलो गणुं, आज में सजन आनद पा



सुजा० ॥ १ ॥ हरख चंद नेमी राजेसर,  
 नवकी चेरी ॥ सुजा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ नेमजिनपदं ॥

॥ राग नैरवी ॥ नेमजि . . .

मोरी रेन दिवस नित लग रहीरे ॥ ने०  
 ॥ १ ॥ पहेली आय उन दोस्ती कीनी, ले  
 ठे छिटकाय दई रे ॥ पसुअन पर प्रचु दया  
 रीने, सिवरमणी ते वर लेइ रे ॥ ने० ॥ मो०  
 केई नविक रसना कर दोस्ती, रत्नविमल  
 पाय लई रे ॥ ने० ॥ मो० ॥ ३ ॥

॥ अथ पद ॥ राग नैरवी ॥

॥ आज प्रचु तोरे चरण लागि, नि . . .  
 में खोई रे ॥ आ० ॥ १ ॥ दरसन कर  
 नयो मेरे, ध्यानद वित्त अब जोई रे ॥ आ०  
 ॥ १ ॥ तुम बिन ऊर न कोई मेरे, देस्यो .  
 वन जोई रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ दास तुमारो  
 बिनति. तम प्रचु जब जब होई रे ॥

एक कोड लाल रे ॥ श्री० ॥३॥ चरणकमल पि  
जर वस्यो, मुऊ मनहस नित्यमेव लाल रे ॥  
चरण सरण मोहि आसरो, नवनव देवाधिदे  
व लाल रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ अधम उधारण ठो  
तुमे, दूर हरो नवडु ख लाल रे ॥ कहे जिनह  
र्ष मया करो, देजो अविचल सुख लाल रे ॥  
श्री० ॥ ५ ॥ इति सीमंधरजिनस्तवनम् ॥

॥ अथ अष्टापदगिरिस्तवनम् ॥

॥ मनडो अष्टापद मोह्यो माहरो जी, नाम  
जपूं निशि दीस जी ॥ चत्तारी अठ दस दोय वदी  
या जी, चिदु दिशि जिन चोवीश जी ॥ म० ॥ १ ॥  
जोजन जोजन अंतरे जी, पावड शाला आठ  
जी ॥ आठ जोजन बंचु देहरूं जी, डु ख दोह  
ग जाये नाठ जी ॥ म० ॥ २ ॥ चरते चराया न  
ला देहरा जी, सो नोंयरां थून जी ॥ आपे  
मूरत सेवा करे जी, जाण जोईने ऊन जी ॥ म० ॥  
॥ ३ ॥ गौतमस्वामी तिहा चढ्या जी, वली जा

यो ॥ हर्षधरि नजर नरि विमलगिरि  
रि, रजतमणि कनक सुरतरु कहायो ॥

॥ २ ॥ पग पग उमगधर पथ नित  
न्य दोय चरण तिहां चलत आयो ॥

न दीह जागी सुकृतकी दिशा, आज धन ५  
गिरि सुजस गायो ॥ जा० ॥ ९ ॥ दूर ७  
टरी जात्र विधिशुं करी, पुण्यनगर पोते  
यो ॥ वंदत जिनराज मणिरंग सुरगिरि । २ ।  
कषनजिनचद सुरतरु कहायो ॥ जा० ॥ ३

॥ अथ सीमधर जिन स्तवनं ॥

॥ श्रीसीमधर साहिबा, वीनतडी  
लाल रे ॥ परमात्म परमेसरू, आत्म  
आधार लाल रे ॥ श्री० ॥ १ ॥ केवलज्ञान ।  
वाकरू, जागे सादि अनंत लाल रे ॥ नासक  
लोकालोकको, द्वायिक ज्ञेय अनंत लाल रे ॥  
श्री० ॥ १ ॥ इंड चंड चक्रीसरू, सुर नर रहे कर  
जोड लाल रे ॥ पदपंकज सेवे सदा, अणुते

गरी, श्रीध्रमसी सुखकारीराज ॥ सु० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ शखेश्वर स्तवनम् ॥

॥ अतरजामी सुण अलवेसर, महिमा त्रि  
जग तुमारो ॥ साजलीने आव्यो तुम तीरि, ज  
नम मरण जय वारो ॥ १ ॥ सेवक अरज करे  
बेराज, अमने शिवसुख आलो ॥ ए आकणी ॥  
सढुकोना मनवाबित पूरो, चिंता सढुनी चूरो  
॥ एह विरुद बे राज तुमारुं, किम राखो गो दू  
रो ॥ सेवक० ॥ २ ॥ सेवकने वलवलतो देखी,  
मनमा महेर न धरशो ॥ करुणासागर केम क  
हेवाशो, जो उपगार न करशो ॥ सेवक० ॥ ३ ॥  
लटपटनु हवे काम नही बे, परतद्ध दरिसण  
दीजे ॥ धूवाडे धीञ्चु नहीं साहिव, पेट पढ्या प  
तीजे ॥ सेवक० ॥ ४ ॥ श्रीसखेसर मंरुण सा  
हिव, वीनतढी अवधारो ॥ कहे जिनहर्ष मया  
करी मुऊने, जवसाथरथी तारो ॥ सेवक० ॥ ५ ॥

गीरथ गंग जी ॥ गोत्र तीर्थकर बांधीया  
जाणे जोई जे कुन जी ॥ म० ॥ ४ ॥ देव  
धी मुऊने पाखडी जी, आवु केम हबूर जी  
समयसुदर कहे वदना जी, प्रह उगमते  
जी ॥ म० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तवनम् ॥

॥ सुण अरदासा सुगुण निवासा,  
पूरो प्रनु आशा राज ॥ सु० ॥ देखि  
अपणा दासा, दीजे कबुक दिजासा राज  
॥ १ ॥ चाडी चटकी नवमाहि नटकी, नाच्यो  
विध नटकी राज ॥ सु० ॥ २ ॥ हवे मन  
आपशु अटकी, लागु प्रनुपय लटकी राज ॥  
सु० ॥ ३ ॥ तें हम टाली मुगत संजाली, प्रीति  
अमेंहिज पाली राज ॥ सु० ॥ ४ ॥ एक हया  
ली वाजे ताली, वात अचना वाली राज ॥ सु०  
॥ ५ ॥ परउपगारी पास तुमारी, सेवामें विध  
सारी राज ॥ सु० ॥ ६ ॥ तख विचारी मन शुद्ध

। अथ पद ॥ राजा हुं मे कोमका ॥ ए देशी ॥

॥ प्रह उठी मे सदानसुं, हाथ जोडके साम  
। चोवीशे जिनराजकु हु, नित्य करुं परणाम ॥

॥ १ ॥ रिषज अजित सन्नव अग्निददन, और  
सुमति जिनराज ॥ पद्म सुपार्श्व चंजा प्रनुसे,

लगन लगी हे आज ॥ २ ॥ सुबुद्धि शतिल  
श्रेयास सवाई, दीजे सुक्ति नाथ ॥ वासुपूज्य

जिन बारमा, विमल अनंत नाथ ॥ ३ ॥ धर्म  
शांति अरुकुंधु जिनेश्वर, अरमह्वी महाराज ॥

सुनि सुव्रत नमि नेमजी, पार्श्व वीर जिनराज  
॥४॥ कहे पाठक कल्यानकी, निधान पूरो आशा ॥

कर जोडी गुण गावता, चदगोपाल दास ॥५॥  
॥ पद ॥ अरे लालदेव इस तरफ

जलदी या ॥ ए रागमा ॥

॥ गइथी गइथी में मंदिर आज, वा वेठे थे  
श्रीजिनराज ॥ १ ॥ कहा कहु आगीकी अजब  
बाहार, मन प्रसन्न जया प्रनुकूं निहार ॥ २ ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनम् ॥

॥ प्राण पीयारा जी हो पास जी

किरतारा॥जिनेसर ॥ साहेव वसीया जीहो

पुरी, हु इण नरत मजार ॥ जि० ॥ प्राण०

आमो अंतर जीहो अति घणो, सेयु न

साथ ॥ जि० ॥ लिख सदेशा जीहो

कागल धु किण हाथ ॥ जि० ॥ प्राण० ॥ १

रमता र्ये मे जीहो एकठा, दिनमें दश दश

र ॥ जि० ॥ केइक दिन लग जीहो एकठा,

लता घणी मनुहार ॥ जि० ॥ प्राण० ॥ ३

आवतो मिलणो जीहो अक्सरे, मिलशे सुकल

संयोग ॥ जि० ॥ पण कण कण जीहो सांनरे,

वाला लणो रे विजोग ॥ जि० ॥ प्राण० ॥ ४ ॥

मिलस्या जिण दिन जीहो मन रखी, फलशे ते

दिन आश ॥ जि० ॥ चंदसुनिद कहे जीहो बि

त्तमे, वसजो प्रचु सुखवास ॥ जि० ॥ प्रा०॥५॥

गान प्रचु अरज करे हैं तुजकु, चदगोपाल क  
इ दरस देखावो मुजकुं ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद ॥ तुमरी ॥ बह्ना हमारा  
याद रखना ॥ ए देशी ॥

॥ प्रचु नामकूं याद करनां, याद करनां न  
हीं विसरना ॥ प्र० ॥ ए टेक ॥ जिनवरजीसे ध्या  
न लगाय के, आतम मैलकों निरमल करनां  
॥ प्र० ॥ १ ॥ तीन तत्वका ध्यान धरि के, चार  
चोकडीकूं परिहरना ॥ प्र० ॥ २ ॥ तन धन यौ  
वनसब है जूठ, इनको दिलमे खूब समजनां  
॥ प्र० ॥ ३ ॥ शिव पदवीकी चाहा होवे तो, स  
मकित बीज हृदयमें रखना ॥ प्र० ॥ ४ ॥ चंद  
गोपालकी आश पूरीजे, अब में आयो आप  
के सरना ॥ प्र० ॥ ५ ॥

॥ पद ॥ तुमरी ॥ लगना पानी पूरव मति  
जइयो रे ॥ ए रागमा ॥

॥ प्रचुका ध्यान धरो तुमें प्यारा रे ॥ प्र० ॥



मस्तकमे शोहे मुकुट अति सार, कानोमें  
 लका दे ऊलकार ॥ ३ ॥ गले बिच माछा  
 दे मोतकी, वाजु कडा कठी सोहे नीकी ॥ ४ ॥  
 सोनेके सिंहासन पर बैठे है राज, फुलूँक  
 गध नया अति आज ॥ ५ ॥ ऐसे साहेब  
 व जिनराज, करुं में प्रणाम पूरो मन काज  
 ॥ ६ ॥ कल्याण निधानकी पूरो आश,  
 पाल तुमारो है दास ॥ ७ ॥ इति ॥  
 सिर पे छाखो पे गलेपें बिठाज तुजकु ॥ ए

॥ चिंतामणि पार्श्व प्रभु अरज करुं मे ॥  
 अब मेरी अरज सुनी पार उतारो मुजकुं ॥ १ ॥  
 शत्रु मेरे अष्ट कर्मोने फंदमें फसाया मुजकुं,  
 म बिन और नही फद गोडावे मुजकु ॥ २ ॥ इति  
 न ध्यान तप जप नहीं, उदर्ये आवे मुजकुं ॥ ३ ॥  
 क तेरा नामका आधार प्रभु है मुजकुं ॥ ३ ॥ न  
 र नारि सुरवर नित्य नमे है तुजकुं, मेरा मनमें  
 तो प्रभु ध्यान धरुं मे ॥ ४ ॥ कल्याण नि

ज्ञान प्रचु अरज करे हैं तुऊकुं, चदगोपाल क  
हे दरस देखावो मुऊकुं ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद ॥ तुमरी ॥ बह्ना हमारा  
याद रखना ॥ ए देशी ॥

॥ प्रचु नामकुं याद करनां, याद करना न  
हीं बिसरना ॥ प्र० ॥ ए टेक ॥ जिनवरजीसे ध्या  
न लगाय के, आतम मैलको निरमल करनां  
॥ प्र० ॥ १ ॥ तीन तत्वका ध्यान धरिके, चार  
चोकडीकुं परिहरना ॥ प्र० ॥ २ ॥ तन धन यौ  
वनसब है जूठा, इनको दिलमे खूब समजना  
॥ प्र० ॥ ३ ॥ शिव पदवीकी चाह होवे तो, स  
मकित बीज हृदयमें रखना ॥ प्र० ॥ ४ ॥ चद  
गोपालकी आश पूरीजे, अब मे आयो आप  
के सरना ॥ प्र० ॥ ५ ॥

॥ पद ॥ तुमरी ॥ लगना पानी पूरव मति  
जइयो रे ॥ ए रागमा ॥

॥ प्रचुका ध्यान धरो तुमें प्यारा रे ॥ प्र० ॥

मस्तकमे शोहे मुकुट अति सार, कानोमें  
 लका हे जलकार ॥ ३ ॥ गले बिष  
 हे मोतिकी, वाजु कडा कठी सोहे नीकी ॥ ४ ॥  
 सोनेके सिंहासन पर बैठे है राज, फुलूका  
 गध जया अति आज ॥ ५ ॥ ऐसे साहेब  
 व जिनराज, करुं में प्रणाम पूरो मन काज  
 ॥ ६ ॥ कल्याण निधानकी पूरो आश,  
 पाल तुमारो है दास ॥ ७ ॥ इति ॥  
 सिर पे छाखो पे गलेपें बिठाउ तुजकुं ॥ ८ ॥

॥ चिंतामणि पार्श्व प्रजु अरज करुं मे  
 अब मेरी अरज सुनी पार उतारो मुजकुं ॥ १ ॥  
 शत्रु मेरे अष्ट कर्मोने फंदमे फसाया मुजकुं,  
 म बिन और नही फद गोडावे मुजकु ॥ २ ॥  
 न ध्यान तप जप नहीं, उदर्ये छावे मुजकु ॥ ३ ॥  
 क तेरा नामका आधार प्रजु है मुजकुं ॥ ४ ॥ न  
 र नारि सुरवर नित्य नमे है तुजकु, मेरा मनमें  
 तो प्रजु ध्यान धरुं मे तुजकु ॥ ५ ॥ कल्याण नि

धान प्रचु अरज करे हैं तुऊकुं, चदगोपाल क  
इ दरस देखावो मुऊकुं ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद ॥ तुमरी ॥ बह्ना हमारा  
याद रखना ॥ ए देशी ॥

॥ प्रचु नामकुं याद करनां, याद करनां न  
हीं बिसरना ॥ प्र० ॥ ए टेक ॥ जिनवरजीसे ध्या  
न लगाय के, आतम मैलको निरमल करनां  
॥ प्र० ॥ १ ॥ तीन तत्वका ध्यान धरिकें, चार  
चोकडीकुं परिहरना ॥ प्र० ॥ २ ॥ तन धन यौ  
वनसब है जूठा, इनको दिलमे खूब समजना  
॥ प्र० ॥ ३ ॥ शिव पदवीकी चाहा होवे तो, स  
मकित बीज हृदयमें रखना ॥ प्र० ॥ ४ ॥ चद  
गोपालकी आश पूरीजे, अब मे आयो आप  
के सरना ॥ प्र० ॥ ५ ॥

॥ पद ॥ तुमरी ॥ लगना पानी पूरव मति  
जइयो रे ॥ ए रागमा ॥

॥ प्रचुका ध्यान धरो तुमें प्यारा रे ॥ प्र० ॥

मस्तकमे शोढ़े मुकुट अति सार, कर्णोमें  
 लका दे जलकार ॥ ३ ॥ गले बिच भाँसा  
 दे मोतिली, बाजु कडा कठी सोढ़े नीकी ॥ ४ ॥  
 सोनेके सिंहासन पर बैठे है राज, फुलूँका  
 गध जया अति आज ॥ ५ ॥ ऐसैं साहेब  
 व जिनराज, करुं में प्रणाम पूरो मन काज  
 ॥ ६ ॥ कल्याण निधानकी पूरो आश,  
 पाल तुमारो है दास ॥ ७ ॥ इति ॥

सिर पे छाखो पें गलेपे बिठाउ तुजकुं ॥ ए ॥

॥ चिंतामणि पार्श्व प्रचु अरज करुं में

अब मेरी अरज सुनी पार उतारो मुजकुं ॥ १ ॥

शत्रु मेरे अष्ट कर्मोने फंदमें फसाया मुजकुं, ॥ २ ॥

म विन और नहीं फद गोडावे मुजकु ॥ ३ ॥

न ध्यान तप जप नहीं, उदर्ये आवे मुजकुं ॥ ४ ॥

क तेरा नामका आधार प्रचु है मुजकुं ॥ ५ ॥

र नारि सुरवर नित्य नमे है तुजकुं, मेरा मनमें

तो प्रचु ध्यान धरुं में तुजकु ॥ ६ ॥ कल्याण नि

१ ॥ प्र० ॥ ३ ॥ कृपा करो मुझकों, पूरो मेरी  
 आस ॥ इसमनोकों दूर करो, करु नित प्रणा  
 म ॥ प्र० ॥ ४ ॥ श्रीसघकी आशा पूरो, गुन  
 पद्म दास ॥ जैनप्रकाश मरुलीको, मानो बहु  
 प्रणाम ॥ प्र० ॥ ५ ॥

॥पद॥कहु बुं नसीबें इ·खीयो कीधो ठे॥ए राग ॥

॥ किसपर मान गुमान करीजे, एक प्रभुजी  
 को ध्यान धरीजे ॥ किस० ॥ ए टेक ॥ जोवन  
 जोर मायाके नसेमे, चूल गये तुम गुरु एक प  
 लमे ॥ किस० ॥ १ ॥ क्रोध कूपमे पढके गमा  
 रा, एक उपाय न शोधुं तुमारा ॥ कि० ॥ २ ॥  
 लोच लुगाइसें मोह पायके, बहोत इ खी दुः  
 नरक जायके ॥ कि० ॥ ३ ॥ पाच मित्रके फदमें  
 पढके, वार वार तु लक्ष जमीके ॥ कि० ॥ ४ ॥  
 इनकु ठोह तुम ध्यान लगावो, अजर अमर  
 सुख सहजमें पावो ॥ कि० ॥ ५ ॥ चदगोपाल  
 की आस पूरीजे, जैनप्रकाशक गुनगाईजे ॥ ६ ॥

ए टेक ॥ प्रजुजीके नामसे पाप कटत है,  
 न करम दूर जावे रे ॥ प्र० ॥१॥ या  
 में और कोई नहीं है, एके प्रजुजी कहावे  
 प्र० ॥ २ ॥ माता पिता सब सुखके साथी,  
 खमे कोई न आवे रे ॥ प्र० ॥३॥ या  
 की जूठी है माया, जूठा जाल फेलावे रे ॥  
 ध्याननिधानकी आस पूरीजे, चदगोपाल  
 न गावे रे ॥ प्र० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद ॥ मरुं बु वेरी हाथथी ॥ ए रागमां

॥ प्रणाम होजो प्रजुनें, महाराजकु

॥ महाराजकु प्रणाम हे जिनराजकुं प्रणाम  
 प्र० ॥ ए टेक ॥ प्रथम आदिनाथकुं में,  
 करुं सार ॥ छ खकी मे बात कहुं, करनि प्रण  
 म ॥ प्र० ॥१॥ मुजकों छ ख देवे बहु, कर्म  
 तुराय ॥ इनकों दूर कीजिये, करुं में  
 ॥ प्र० ॥७॥ आपको में ध्यान धरुं, और  
 दिंध्यान ॥ पूजा करुं नृत्य करुं करुं प्रण

म ॥ प्र० ॥ ३ ॥ कृपा करो सुजकों, पूरो मेरी  
 आस ॥ इसमनोको दूर करो, करुं नित प्रणा  
 म ॥ प्र० ॥ ४ ॥ श्रीसघकी आशा पूरो, गुन  
 पद्म दास ॥ जैनप्रकाश मरुलीको, मानो बहु  
 प्रणाम ॥ प्र० ॥ ५ ॥

॥पद॥कहुं बुं नसीबे इ खीयो कीधो ठे॥ए राग ॥

॥ किसपर मान गुमान करीजे, एक प्रजुजी  
 को ध्यान धरीजे ॥ किस० ॥ ए टेक ॥ जोवन  
 जोर मायाके नसेमे, चूल गये तुम गुरु एक प  
 लमें ॥ किस० ॥ १ ॥ क्रोध कूपमे पढके गमा  
 रा, एक उपाय न गोधु तुमारा ॥ कि० ॥ २ ॥  
 लोच लुगाइसे मोह पायके, बहोत इ खी हुत  
 नरक जायके ॥ कि० ॥ ३ ॥ पाच मित्रके फदमे  
 पढके, वार वार तु लक्ष् नमीके ॥ कि० ॥ ४ ॥  
 इनकु ठोड तुम ध्यान लगावो, अजर अमर  
 सुख सहजमें पावो ॥ कि० ॥ ५ ॥ चदगोपाल  
 की आस पूरीजे, जैनप्रकाशक गुनगाईजे ॥ ६ ॥



ए टेक ॥ प्रभुजीके नामसे पाप कटत है,  
 न करम दूर जावे रे ॥ प्र० ॥१॥ या  
 मे और कोई नहीं है, एके प्रभुजी कहावे  
 प्र० ॥ २ ॥ माता पिता सब सुखके साथी,  
 खमे कोई न आवे रे ॥ प्र० ॥३॥ या  
 की जूठी है माया, जूठा जाल फेलावे रे ॥  
 ध्याननिधानकी आस पूरीजे, चदगोपाल  
 न गावे रे ॥ प्र० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद ॥ मरु बुं वेरी हाथधी ॥ ए रागमा

॥ प्रणाम होजो प्रभुने, महाराजकु

॥ महाराजकु प्रणाम हे जिनराजकुं प्रणाम  
 प्र० ॥ ए टेक ॥ प्रथम आदिनाथकुं में, अरब  
 करुं सार ॥ इ खकी में वात कहूं, करीनि प्र  
 म ॥ प्र० ॥१॥ मुझको इ ख देवे बहु, कर्म  
 बुराय ॥ इनको दूर कीजिये, करु मे प्रणाम  
 ॥ प्र० ॥७॥ आपको मे ध्यान धरुं, और न  
 हिं प्यान ॥ पूजा करुं नृत्य करुं, करुं ॥ प्रणा

म ॥ प्र० ॥ ३ ॥ कृपा करो सुजकों, पूरो मेरी  
 आस ॥ इसमनोकों दूर करो, करु नित प्रणा  
 म ॥ प्र० ॥ ४ ॥ श्रीसंघकी आशा पूरो, गुन  
 पद्म दास ॥ जैनप्रकाश मरुलीको, मानो बहु  
 प्रणाम ॥ प्र० ॥ ५ ॥

॥पद॥ कहुं तुं नसीबि छुखीयो कीधो ठे ॥ ए राग ॥

॥ किसपर मान गुमान करीजे, एक प्रचुजी  
 को ध्यान धरीजें ॥ किस० ॥ ए टेक ॥ जोवन  
 जोर मायाके नसेमें, चूल गये तुम गुरु एक प  
 लमें ॥ किस० ॥ १ ॥ क्रोध कूपमे पढके गमा  
 रा, एक उपाय न गोधुं तुमारा ॥ कि० ॥ २ ॥  
 लोभ लुगाइसें मोह पायके, बहोत छुखी हुन  
 नरक जायके ॥ कि० ॥ ३ ॥ पाच मित्रके फदमे  
 पढके, वार वार तु लक्ष्मीके ॥ कि० ॥ ४ ॥  
 इनकु गेड तुम ध्यान लगावो, अजर अमर  
 सुख सहजमें पावो ॥ कि० ॥ ५ ॥ चंदगोपाल  
 की आस पूरीजें, जैनप्रकाशक गुनगाईजें ॥ ६ ॥

७ टेक ॥ प्रभुजकि नामसे पाप कटत है,  
 न करम दूर जावे रे ॥ प्र० ॥१॥ या  
 में और कोई नहीं है, एके प्रभुजी कहेवे  
 प्र० ॥ ७ ॥ माता पिता सब सुखके  
 खमे कोई न आवे रे ॥ प्र० ॥३॥ या  
 की जूठी है माया, जूठा जाल फेलावे रे ॥  
 ध्याननिधानकी आस पूरीजे, चदगोपाल  
 न गावे रे ॥ प्र० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद ॥ मरुं बु वेरी हाथधी ॥ ए रागमां

॥ प्रणाम होजो प्रभुनें, महाराजकू

॥ महाराजकु प्रणाम हे जिनराजकू प्रणाम  
 प्र० ॥ ए टेक ॥ प्रथम आदिनाथकूं में,  
 करुं सार ॥ छ खकी में बात कहुं, करनि प्रण  
 म ॥ प्र० ॥१॥ मुजकों छ ख देवे बहु, कर्म क  
 तुराय ॥ इनकों दूर कीजियें, करुं में ५  
 ॥ प्र० ॥१॥ आपको में ध्यान धरुं, और  
 हिं ध्यान ॥ पूजा करुं नृत्य करुं करुं प्रणा

म ॥ प्र० ॥ ३ ॥ कृपा करो मुझको, पूरो मेरी  
आस ॥ इसमनोको दूर करो, करु नित प्रणा  
म ॥ प्र० ॥ ४ ॥ श्रीसघकी आशा पूरो, गुन  
पद्म दास ॥ जैनप्रकाश मरुलीको, मानो बहु  
प्रणाम ॥ प्र० ॥ ५ ॥

॥पद॥कहुं बुं नसीबे इ खीयो कीधो ठे॥ए राग ॥

॥ किसपर मान गुमान करीजे, एक प्रचुजी  
को ध्यान धरीजे ॥ किस० ॥ ए टेक ॥ जोबन  
जोर मायाके नसेमे, नूल गये तुम गुरु एक प  
लमें ॥ किस० ॥ १ ॥ क्रोध कूपमे पढके गमा  
रा, एक उपाय न शोधुं तुमारा ॥ कि० ॥ २ ॥  
लोच लुगाइसें मोह पायके, बहोत इ खी हुं  
नरक जायके ॥ कि० ॥ ३ ॥ पाच मित्रके फदमे  
पढके, वार वार तु लह नमीके ॥ कि० ॥ ४ ॥  
इनकुं ठोड तुम ध्यान लगावो, अजर अमर  
सुख सहजमें पावो ॥ कि० ॥ ५ ॥ चंदगोपाल  
की आस पूरीजे, जैनप्रकाशक गुनगाईजे ॥ ६ ॥

॥ अथ सुमतिजिन स्तवनम् ॥

॥ महाराज वधाई वाजे ठे ॥ ।

ई वाजे ठे ॥ नगर अयोध्यामाहे, मेघ

आज वधाई वाजे ठे ॥ ए टेक ॥ मात

जनमिया रे, सुमति नाथ सुखकार ॥

ई सहू देशमे रे, प्रगट जयो जयकार ॥

॥ १ ॥ इजादिक सहू सुर मळ्यारे, मेरु

र पर आय ॥ मळ्जन पूजन बहुविधे रे,

करि मन वच काय ॥ व० ॥ १ ॥ घर घर रंग,

धामणा रे, घर घर मंगल चार ॥ बालचं

नु जनमिया रे, सकल संघ सुखकार ॥ व०

॥ अथ वीरजिन स्तवनं ॥

॥ आज महोच्चव रंग रली री ॥ ए टेक

जायो सुत त्रिशलादे रानी, कामित पूरन

कली री ॥ आ० ॥ १ ॥ सजि शाणगार

सुरवनिता, अपने अपने मेल चली री ॥

वत सिंघारथजीके पूर ॥

चोक पूरी री ॥ आ० ॥ १ ॥ इंजाणी मिलमंग  
 ल गावत, नाटक नाचत सुरकुमरी री ॥ बाजत  
 ताल मृदंग सुरपधनी, बेना बीन मोचंग वली  
 री ॥ आ० ॥ ३ ॥ इंज दुकुम कर धरणींज पठा  
 यो, सब वसुधा धन धान्य नरी री ॥ कनक र  
 जत मनि पच वरनके, कुसुम विखेरत गलिय  
 गली री ॥ आ० ॥ ४ ॥ जयजयकार नयो जि  
 नशासन, व्याधि व्यथा सवि विपत हरी री ॥  
 हरख चद जनम्यो प्रचु मेरो, मनकी आशास  
 फलफली री ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ श्रीदादाजीको स्तवन प्रारभ ॥

॥ विलसे ऋषि सम्युषि मिली, शुनयोगें पु  
 ष्यदशा सफली ॥ जिन कुशलसूरिगुरु अतुल  
 बली, मनवाचित आपे दादो रग रली ॥१॥ म  
 गल लील समे विपुला, नव नवय महोच्चव रा  
 ज्यकला ॥ सुपसायेगुरु चढतीकला, सुकुलिणी  
 पुत्रवती महिला ॥ १ ॥ सवही दिन थाये सव

॥ अथ सुमतिजिन स्तवनम् ॥

॥ महाराज वधाई वाजे ठे ॥ ।

ई वाजे ठे ॥ नगर अयोध्यामाहे, मेघ

आज वधाई वाजे ठे ॥ ए टेक ॥ मात

जनमिया रे, सुमति नाथ सुखकार ॥

ई सद्गु देशमें रे, प्रगट ज्यो जयकार ॥

॥ १ ॥ इजादिक सद्गु सुर मळ्यारे, मेरु ।

र पर आय ॥ मज्जन पूजन बहुविधें रे,

करि मन वच काय ॥ व० ॥ १ ॥ घर घर रंग

धामणा रे, घर घर मगल चार ॥ बालचंद्र

नु जनमिया रे, सकल सघ सुखकार ॥ व०

॥ अथ वीरजिन स्तवनं ॥

॥ आज महोत्सव रंग रली री ॥ ए टेक

जायो सुत त्रिशलादे रानी, कामित पूरन काम

कली री ॥ आ० ॥ १ ॥ सजि शाणगार

सुरवनिता, अपने अपने मेल खली री ॥

वत सिंघारथजीके

पूरत

चोक पूरी री ॥ आ० ॥ १ ॥ इजाणी मिल मंग  
 ल गावत, नाटक नाचत सुरकुमरी री ॥ बाजत  
 ताल मृदंग सुरपधनी, बेना बीन मोचग वली  
 री ॥ आ० ॥ ३ ॥ इंज हुकुम कर धरणींज पठा  
 यो, सब वसुधा धन धान्य जरी री ॥ कनक र  
 जत मनि पच वरनके, कुसुम विखेरत गलिय  
 गली री ॥ आ० ॥ ४ ॥ जयजयकार जयो जि  
 नशासन, व्याधि व्यथा सवि विपत हरी री ॥  
 हरख चंद जनम्यो प्रजु मेरो, मनकी आशास  
 फलफली री ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ श्रीदादाजीको स्तवन प्रारंभ ॥

॥ विलसे रुद्धि समृद्धि मिली, शुभयोगें पु  
 ष्यदशा सफली ॥ जिन कुशलसूरिगुरु अतुल  
 वली, मनवाग्धित आपे दादो रग रली ॥१॥ म  
 गल लील समे विपुला, नव नवय महोच्चव रा  
 ज्यकला ॥ सुपसायेगुरु चढतीकला, सुकुलिणी  
 पुत्रवती महिला ॥ १ ॥ सवही दिन थाये सव



॥ अथ सुमतिजिन स्तवनम् ॥

॥ महाराज वधाई वाजे ठे ॥

ई वाजे ठे ॥ नगर अयोध्यामाहे, मेघ

आज वधाई वाजे ठे ॥ ए टेक ॥ मात

जनमिया रे, सुमति नाथ सुखकार ॥

ई सद्दु देशमे रे, प्रगट जयो जयकार ॥

॥ १ ॥ इंजादिक सद्दु सुर मळ्यारे, मेरु

र पर आय ॥ मळ्जन पूजन बहुविधे रे,

करि मन वच काय ॥ व० ॥ १ ॥ घर घर रंग

धामणा रे, घर घर मगल चार ॥ बालचंद्र

चु जनमिया रे, सकल सघ सुखकार ॥ व०

॥ अथ वीरजिन स्तवनं ॥

॥ आज महोत्सव रंग रली री ॥ ए टेक

जायो सुत त्रिशलादे रानी, कामित पूरन

कली री ॥ आ० ॥ १ ॥ सजि शाणगार

सुरवनिता, अपने अपने मेल चली री ॥

वत सिंघारथजकि

आपद निश्चेसुं उवरो ॥ ए ॥ खड खड खडग प्रहार  
 वहे, सौदामिनी जिम सम सेल सहे ॥ कुशल  
 कुशल गुरु नाम कहे, ते खेम कुशल रिणमव  
 लहे ॥ १० ॥ धुन सकल परचा पूरे, श्रीनागपु  
 रें सकट चूरे ॥ मंगलोर अधिके नूरें, देरावर न  
 य टाले दूरे ॥ ११ ॥ वीरमपुर वाने सुधरे, खं  
 नाईतपुर विक्रम नयरें ॥ जिणचद सूरि पाटे  
 पवरे, जसु कीरति महिमंमल पसरे ॥ १२ ॥ पूर  
 व पश्चिम दक्षिण आगे, उत्तर गुरु दीपे सोजा  
 गे ॥ दह दिशि जन सेवा मागे, श्रीखरतर ग  
 व महिमा जागे ॥ १३ ॥ पुर पट्टण जनपद  
 ठामे, गाईजे कुशल नयर गामे ॥ पूजे जे नर  
 हितकामे, ते चक्रवर्ति पदवी पामे ॥ १४ ॥ श्री  
 जिनकुशलसूरि साखे, सेवकजनने सुखिया रा  
 खे ॥ समख्या गुरु दरिसण दाखे, श्रीसाधु कीर  
 ति पाठक नाखे ॥ १५ ॥ इति ॥

ला, सटवास कपूर तणा कुरला ॥ इव  
 थ पायक बहुला, कछ्खोल करे मदिर  
 ॥ ३ ॥ वींजे चमर निसाण घुरे, नर बे  
 खडा पूहरे ॥ जय जय कर जोडी उधरे,  
 ध्य गुरु सब काज सरे ॥ ४ ॥ सरसा  
 पान सदा, ड ख रोग झकाल न होय  
 अविचल जलट अग मुदा, गुरु परमदृष्टि  
 सन्न सदा ॥ ५ ॥ घम घम मादल नाद  
 बत्तीसे नाटक रङ्ग रमे ॥ प्रगट्यो पुष्प  
 मे, सबला अरियण ते आय नमे ॥ ६ ॥ तन  
 ख मन सुख चीर तने, पहिरे वेलाजल होय र  
 ने ॥ ध्यावो कुशल गुरु एक मनें, जूंचक सुरम  
 दिर जरे धने ॥ ७ ॥ ततखिण घण खंच्यो आ  
 वे, करि श्यामघटा मेह वरसावे ॥ तिसीयां तो  
 य तुरत पावे, जलदाता त्रिजग सुजस गावे ॥  
 ॥ ८ ॥ लहिया जल कछ्खोल करे, प्रवट्टण न  
 वसायर मथि मरे ॥ बूडता ८९॥ जे ते

आपद् निश्चेषु उवरो ॥ एण खड खड खडग प्रहार  
 वहे, सौदामिनी जिम सम सेल सहे ॥ कुशल  
 कुशल गुरु नाम कहे, ते खेम कुशल रिणमघ  
 लहे ॥ १० ॥ धुज सकल परचा पूरे, श्रीनागपु  
 रें सकट चूरे ॥ मंगलोर अधिके नूरें, देरावर न  
 य टाले दूरे ॥ ११ ॥ वीरमपुर वाने सुधरे, ख  
 नाईतपुर विक्रम नयरे ॥ जिणचंद सूरि पाटे  
 वरे, जसु कीरति महिमंल पसरे ॥ १२ ॥ पूर  
 पश्चिम दक्षिण आगे, उत्तर गुरु दीपे सोजा  
 ने ॥ दह दिशि जन सेवा मागे, श्रीखरतर ग  
 व महिमा जागे ॥ १३ ॥ पुर पडण जनपद  
 वामें, गाईजे कुशल नयर गामे ॥ पूजे जे नर  
 हितकामे, ते चक्रवर्त्ति पदवी पामे ॥ १४ ॥ श्री  
 जिनकुशलसूरि साखें, सेवकजननें सुखिया रा  
 खे ॥ समख्या गुरु दरिसण दाखे, श्रीसाधु कीर  
 ति पाठक नाखे ॥ १५ ॥ इति ॥

ला, सद्व्यास कपूर तणा कुरला ॥ ३ ॥  
 थ पायक बद्धला, कङ्खोल करे मंदिर  
 ॥ ३ ॥ वींजे चमर निसाण घुरे, नर वे  
 खडा पूहरे ॥ जय जय कर जोडी उधरे,  
 ध्य गुरु सब काज सरे ॥ ४ ॥ सरसा  
 पान सदा, ड ख रोग झकाल न होय  
 अविचल झलट अग मुदा, गुरु  
 सन्न सदा ॥ ५ ॥ घम घम मादल नाद  
 वत्तीसे नाटक रङ्ग रमे ॥ प्रगढ्यो पुष्प  
 में, सबला अरियण ते आय नमे ॥ ६ ॥ तन  
 ख मन सुख चीर तने, पहिरे वेलाजल होय र  
 नै ॥ ध्यावो कुशल गुरु एक मनै, जंजक सुरम  
 दिर जरे धने ॥ ७ ॥ ततखिण घण खच्यो छा  
 वे, करि श्यामघटा मेह वरसावे ॥ तिसीयां तो  
 य तुरत पावे, जलदाता त्रिजग सुजस गावे ॥  
 ॥ ८ ॥ लहिया जल कङ्खोल करे, प्रबहण न  
 वसायर मधि मरे ॥ चूडता जे

परिवाद अनेरी, सरण ग्रही इन चरणकी ॥वा०  
 ॥च०॥४॥ श्रीजिनदर्ष तुम चरणको दासा, आ  
 शा पुरो सुख करणकी ॥वा०॥च० ॥५॥ इति ॥

॥ ताज तुमरी ॥

॥ सदा सहाई कुशलसूरिंद, गुरु द्यो दोलत  
 गुरु राय जी ॥सदा०॥ खाई न खूटे खरची न  
 तूटे, दिन दिन वधे सवाय जी ॥ स० ॥ २ ॥ स  
 कजा सुत उर सुदर नारी, शुभ परिकर सुख  
 दाय जी ॥ स० ॥ मित्र समागम सुजस वधार  
 ण, नित प्रति हरष उत्साह जी ॥स० ॥ ३॥ रा  
 जा परजा पाय नमे सहू, गुरु समरण सुपसा  
 य जी ॥ स० ॥ दोषी इशामन नृपजय पडियां,  
 सङ्गुरु करय सहाय जी ॥ स० ॥ ३ ॥ विषमी  
 विरिया सकट पडिया, समख्यां आवे धाय जी  
 ॥ स० ॥ चूरव्या नोजन तिसिया पाणी, निरघ  
 निया धन दाय जी ॥स०॥४॥ सघ सकलनें द्यो  
 सुख शाता, जिम कीरत जग धाय जी ॥ स०

॥ अत्र गुरुदेवजीका स्तवन ॥ राम

॥ श्रीजिनदत्त सूरिदा, परम गुरु  
परम दयाल दया कर ढीजे, दरिसन  
नदा ॥ ५० ॥ श्री० ॥ जगम सुरतरु  
ढायक, सेवक जन सुखकदा ॥ सद्गुरु  
नाम नित समरण, दूर हरण ड ख ददा  
श्री० ॥ १ ॥ निजपद सेवक सांनिधकारी,  
खीयें गुरु रोजिंदा ॥ कर जोडी विनय  
वे, श्रीजिन हरख सूरिंदा ॥ ५० ॥ श्री०

॥ राग सारंग ॥

॥ चरणकी वारी जाउं गुरुराय चरणकी ॥ १  
छाकणी ॥ श्रीजिनदत्त सूरिसर सद्गुरु, सफल  
घडी सेवा चरणकी ॥ वा० ॥ १ ॥ प्रथम मंगल गुरु  
रायकी सेवा, अशुन करम सब हरणकी ॥ वा०  
॥ च० ॥ २ ॥ दारिद्र नजन अरि सब गंजन, पग  
पग सानिध्य करणकी ॥ वा० ॥ च० ॥ ३

परिवाह अनेरी, सरण ग्रही इन चरणकी ॥वा०  
॥च०॥४॥ श्रीजिनदर्ष तुम चरणको दासा, आ  
शा पूरो सुख करणकी ॥वा०॥च० ॥५॥ इति ॥

॥ ताल तुमरी ॥

॥ सदा सहाई कुशलसूरिंद, गुरु द्यो दोलत  
गुरु राय जी ॥सदा०॥ खाई न खूटे खरची न  
तूटे, दिन दिन वधे सवाय जी ॥ स० ॥ १ ॥ स  
कजा सुत उर सुदर नारी, शुभ परिकर सुख  
दाय जी ॥ स० ॥ मित्र समागम सुजस वधार  
ण, नित प्रति हरष उत्साह जी ॥स० ॥ २॥ रा  
जा परजा पाय नमे सद्गुरु, गुरु समरण सुपसा  
य जी ॥ स० ॥ दोषी इशमन नृपन्नय पडिया,  
सङ्गुरु करय सहाय जी ॥ स० ॥ ३ ॥ विषमी  
विरिया सकट पडिया, समस्या आवे धाय जी  
॥ स० ॥ चूरव्या नोजन तिसिया पाणी, निरघ  
नियां धन दाय जी ॥स०॥४॥ संघ सकलनेंद्यो  
सुख शाता, जिम कीरत जग थाय जी ॥ स०



॥ ध्यानक धिरता परिगल नोजन, फा  
 शल सहाय जी ॥ स० ॥ ५ ॥ अन्नय  
 खदाई सदगुरु, नवनिधि ववित थाय जी ॥ स० ॥  
 ॥ सुमति सवाई नित घर सपद, दान ।  
 लहाय जी ॥ स० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ पुन ॥

॥ कुशल गुरु अब मोहि दरिसण दीजें ॥  
 ॥ अ० ॥ ऐसी जाति करो मेरे सजुरु, ज्यु म  
 न मूढ पतीजें ॥ कु० ॥ १ ॥ जलदातार बिरु  
 अमृतरस, श्रवण अजलि नर पीजें ॥ सुरतरु  
 सम दरिसण विन देख्या, कहो नयण किम री  
 जे ॥ कु० ॥ २ ॥ परम दयाल कृपाल कृपानिधि,  
 इतनी अरज सुणीजें ॥ परम जगत जिनराज  
 तुम्हारो, अपनो कर जाणीजें ॥ कु० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पुन ॥

॥ कुशल गुरु कुशल करो नरपूर, सेवक  
 जन मन ववित पुरण, समस्या होय ॥ ॥

कु० ॥ १ ॥ परम दयाल प्रेम रस पूरण, अशु  
 च हरण जये दूर ॥ सघ उदय कर सदगुरु मे  
 रा, विनवे श्रीजिनचंद सूर ॥ कु० ॥१॥ इति ॥

॥ परममंगल श्रीदादाजीकाव्यानि ॥

॥ दासानुदासा इव सर्वदेवा, यदीयपादा  
 जतले लुवति ॥ मरुस्थलीकल्पतरु स जीया,  
 धुगप्रधानो जिनदत्तसूरि ॥ १ ॥

॥ चिंतामणि कल्पतरुर्वराकौ, कुर्वन्ति च  
 व्या किमु कामगव्या ॥ प्रसीदत श्रीजिनदत्त  
 सूरैः, सर्वं पद हस्तिपदे प्रविष्ट ॥ २ ॥

॥ नो योगी न च योगिनी न च नराधीशस्थ  
 नो शाकिनी, नो वेतालपिशाचराक्षसगणा  
 नो रोगशोको जय ॥ नो मारी नच विग्रहप्रभृ  
 तय प्रीत्या प्रणत्युच्चकै, यस्ते श्रीजिनदत्तसू  
 रिगुरवो नामाक्षर ध्यायति ॥ ३ ॥

॥ अथ सर्वईया लिख्यते ॥

॥ वावन वीर किये अपणें वस, चौसठ जो

गण पाय लगाई ॥ माइण साइण व्यंतर लेक  
 नूत रु प्रेत पिशाच पुलाई ॥ बीज तडक कडक  
 नटक, छटक रहे जु खटक नकाई, कहे प्रमसिंह  
 लघे कुण लीह, दिये जिनदत्त कि एक झर्साई ॥ १ ॥

॥ राजे धुन ठोर ठोर ऐसो देव नही और  
 दादो दादो नामते जगत्र जस्स गायो है, आ  
 पणेही जाय आय पूजे लखलोक पाय, प्यास  
 नकु रान माऊ पानी आन पायो है ॥ बाट घा  
 ट शत्रु घाट हाट पुरपाटणमें, देह गेह नेहसुं  
 कुशल वरतायो है, धर्मसिंह ध्यान धरे सेवका  
 कुशल करे साचो श्रीजिनकुशल गुरु नाम सुं  
 कहायो है ॥ २ ॥

बप्पा ॥ कुशल अग उठरग, कुशल विणजे व्यापा  
 रें ॥ कुशल देव देहरे, कुशल धन राजकुवारे ॥  
 पुण्य पसायें कुशल, कुशल श्रीसघ नणीजे ॥  
 वाहण आवे कुशल, कुशल घर घर गाईजे ॥  
 श्रीजिनचञ्जूरि पुहपधर, मंत्र

टले ॥ श्रीजिनकुशल सूरि पाय पूजता, नव  
निधान लक्ष्मी मिले ॥ १ ॥

॥ कुशल बडो संसार, कुशल सज्जन घर  
चाहे ॥ कुशलें मयगल वार, लच्छि घर कुशलें  
आवे ॥ कुशलें धन वरसंत, कुशल धन धन्न  
रु वन्नो ॥ कुशलें घोडा थड्ड, कुशल पदरीय सु  
वन्नो ॥ ए रसो नाम सदगुरु तणो, कुशलें ज  
ग रलीयामणो ॥ नट्टारक श्रीजिनकुशलसूरि  
नाम ग्रहणें करी, घर घर होत वधामणो ॥१॥

॥ अथ गौतम स्वामीनो रास खिख्यते ॥

॥ धीर जिणेसर चरण कमळ कमळाकय वासो,  
पणमवि पजणिसु सामी साल गोयम गुरुरासो ॥ म  
णतणु वयणे एकत करवि निसुणहु जो नविया, जि  
म निवसे तुम देह गेह गुण गण गह गहिया ॥ १ ॥  
जंबूदीव सिरिजरहखित्त खोणी तख मरुण, मगहदे  
स सेणियनरेस रिउवळ वखखरुण ॥ धणवर गुधर  
गाम नाम जिहा गुणगणसज्जा, विप्प वसे वसुच्छ  
तष्ठ तसु पुहधी नज्जा ॥ २ ॥ ताणपुत्त सिरिइद चू

य नृगणपतितां, नयदद विज्ञा विवद्वरुष करी  
 रस सुतो ॥ यिनय विवेक विचार सार शुभ नय  
 मनोदर, सात द्वात्र सुप्रमाणदेह स्वहि रंभावर ॥  
 ॥ ३ ॥ नयणवयण कर चरण जणवि पंकश्रुषपादि  
 य, तेजहिं तारा चद सूरि थाकास जमाडिव ॥ इ  
 वहि भयण अन्नग करवि मेढ्यो निरधाडिय, धीरममे  
 रु गजीर सिंधु चगम चयचाडिय ॥४॥ येखवि निह  
 वम रूव जास जण जपे किंचिय, एकाकी किसि ची  
 त्त इष्ट गुण मेढ्या संचिय ॥ अहवा निशयपुष अम्म  
 जिणवर इण अचिय, रंजा पठमा गवरि गंगरतिहा  
 विधि वचिय ॥५॥ नय बुध नय गुर कविण कोव  
 जसु आगख रहियो, पचसयां गुण पात्र ठात्र हीने व  
 रवरियो ॥ करय निरंतर यज्ञ करम मिथ्यामति मो  
 हिय, अणचख होसे चरमनाण दसणह विसोडि  
 ॥ ६ ॥ वस्तु ॥ जंबूदीष जंबूदीष जरह वासंति,  
 खोणीतख मंरुण, मगह देस सेणिय नरेसर, वरु  
 धरगाम तिहां, बिप्प वसे वसजूह, सुंवर तसु पुहवि  
 नज्जा, सयखगुणगणरूवनिहाण, ताखपुत्त विज्ञानि  
 खो, गोयम अतिहि सुजाण ॥ ७ ॥ जास ॥ चर  
 म जिणोसर वेयलनाणी,

॥ पावा पुर सामी संपत्तो, चउविह देव निकायहिं  
 लुत्तो ॥ ७ ॥ देवहि समवसरण तिहा कीजें, जिण  
 दीठे मिथ्यामत ठीजे ॥ त्रिभुवनगुरु सिंहासन वेठा,  
 ततखिण मोह दिगत पइठा ॥ ८ ॥ क्रोध मान माया  
 मदपूरा, जाये नाठा जिम दिनचोरा ॥ देव डुडुजि  
 आगासैं वाजी, धरम नरेसर आव्यो गाजी ॥ १० ॥  
 कुसुमवृष्टि अरचे तिहां देवा, चउसठ इडज मागे  
 सेवा ॥ चामर ठत्र सिरोवरि सोहे, रूवहि जिनवर  
 जग सहु मोहे ॥ ११ ॥ उपसम रसजर वरवरसंता,  
 जोजनवाणि वखाण करता ॥ जाणवि वर्द्धमान जि  
 ण पाया, सुर नर किन्नर आवइ राया ॥ १२ ॥ कत स  
 मोहिय जलहसकता, गयणविमाणहि रणरणकता ॥ पे  
 खवि इदचूइ मन चिते, सुर आवे अम यइ हुवते ॥  
 ॥ १३ ॥ तीरतरंरुक जिम ते वहिता, समवसरण  
 पुइता गहगहिता ॥ तो अजिमानें गोयम जपे, इण  
 अवसर कोपें तणु कपे ॥ १४ ॥ मूढा कोक अजाण्यु  
 बोखे, सुर जाणंता इम कांइ मोखे ॥ सो आगल को  
 इ जाण जणीजें, मेरु अवर किम उंपम दीजें ॥  
 ॥ १५ ॥ वस्तु ॥ वीर जिणवर वीर जिणवर ना  
 ण सपन्न पावापुरसुरमहिय, पत्तनाइ ससारतारण ॥

तिर्हि देवइ निम्मरिय, समयसरण बहु सुक्क कार  
 ण ॥ जिणवर जग उज्जोय करे, तेजहि कर बिनकार  
 सिंहासण सामी ठव्यो, दुर्ज तो जयजयकार ॥१६॥  
 भास ॥ तो चढियो घणमाण गजे, इदचूय चूयवे  
 व तो ॥ हुकारो कर मचरिय, कवणसु जिणवर देव तो  
 ॥ जोजन भूमि समोसरण, पेखवि प्रथमारज तो ॥  
 वहदिस देखे विबुधवधू, आवंती सुररंज तो ॥१७॥  
 मणिमय तोरणकर ध्वज, कोसीसे नवघाट तो ॥  
 घयरविवर्जितजतुगण, प्रातीहारिज आव तो ॥ सुर  
 नर किन्नर असुरवर, इंड इडाणी राय तो ॥ चित्त  
 चमकिय चित्तव प, सेवंतां प्रभु पाय तो ॥ १८ ॥ स  
 हस किरण सामी वीरजिण, पेखिअ रूप विसाख तो  
 ॥ एह असंजव संजव प, साधो प इंड जाख तो ॥  
 तो घोळावइ त्रिजग गुरु, इडचूइ नामेण तो ॥ श्रीमु  
 ख संसा सामि सवे, फेडे वेवपण तो ॥ १९ ॥ मा  
 न मेल मव ठेल करे, जगसहिं नाम्यो सीस तो ॥ पंच  
 सयांसुं बल खियो प, गोयम पहिखो सीस तो ॥ बंध  
 व संजम सुखवि करे आवेय तो ॥ नाम  
 खेई आजास को तो ॥ २० ॥  
 एव अनुजम ॥ तो ॥

तो उपदेसे जुवन गुरु, समयमशु व्रत धार तो ॥ बिहु  
 वपवासैं पारणो ए, श्रापणपें विरहंत तो ॥ गोयम  
 तंयम जग सयल, जय जयकार करंत तो ॥ ११ ॥  
 वस्तु ॥ इद्रजूइ इद्रजूइ चढियो बहुमान, हुकारोक  
 रि कपतो, समवसरण पढुतो तुरतो ॥ जे ससा  
 तामि सवे, चरमनाह फेढे फुरंततो ॥ बोधवीज स  
 ज्ञायमनें, गोयम नवहि विरत्ता ॥ दिस्क छेई सिस्का स  
 ही, गणहरपयसंपत्त ॥ १२ ॥ जास ॥ आज हुळ सुवि  
 हाण, आज पचेखिमां पुण्य जरो ॥ दीग गोयम सा  
 मि, जो नियनयणें श्रमिय ऊरो ॥ समवसरण मजा  
 र, जे जे ससा ऊपजे ए ॥ ते ते पर उपगार, कारण  
 पूढे मुनि पवरो ॥ १३ ॥ जीहा दीजे दीख, तीहा के  
 वल उपजे ए ॥ श्राप कनें श्रणहुत, गोयम दीजे दान  
 इम ॥ गुरु उपर गुरु जक्ति, सामी गोयम ऊपनिय ॥  
 श्रणवल केवल नाण, रागज राखे रग जरे ॥ १४ ॥  
 जो श्रष्टापद सेल, वंदे चढ चउवीस जिण ॥ श्रातम  
 लब्धि वसेण, चरम सरीरी सोज मुनि ॥ इय देसणा  
 निसुणेह, गोयम गणहर संचरिय ॥ तापस पररसप  
 ण, जो मुनि दीगो श्रावतो ए ॥ १५ ॥ तपसांशि  
 यनिय श्रग, श्रम्हा सगति न ऊपजे ए ॥ किम चउं



१० तिर्यंगना रुधिर पडवाची हाव १००ते  
हे अहोरात्र असधाय

१९ मनुष्यना रुधिर पडवाची हाव १००तेकरि  
अहोरात्र असधाय

३० मनुष्यनां अस्थि, दांत, वाड पडे हाव १००  
सो माहे सूत्र पढबु सूजे नहि

३१ स्त्रीने श्लु थावे थके दिन ३ प्रथ असधाय

३२ आर्द्रा नक्षत्र आव्या पीठें खाति नक्षत्र पर्वत  
जो गाजे, बीजे, मेह वरसे, तो असधाय न होव,

३३ पुत्रने प्रसवे दिन ७ सात असधाय अने  
दीकरीने प्रसवे दिन ८ आठ असधाय

३४ कासग्रहण विणकी जणवो गुणवो नहिं प्र  
हर १२ वार असधाय,

३५ वैशाखवदि १, श्रावणवदि १, कार्तिकवदि १,  
मागशिरवदि १ ए चार दिवसें सदैव असधाय अने  
सूत्रनी असधाय तो प्रहर १२ वार सूधी जावची

॥ अथ ॥

साधु ठर श्रावककों कोनसी वस्तु कितने प्रहर  
ठर दिन पीठें न खावणी सोखिते हे

॥ चावल प्रहरण, राव प्रहर १२, घीस.

ठाठी प्रहर २४, दहि प्रहर १६, दूध प्रहर ४, कांजी  
 वडां प्रहर २४, घोरुवडां प्रहर ४, तळ्यां वडां प्रहर  
 ४, पूढी प्रहर ७, रोटी प्रहर ४, तथा ६ धाजरा ऊ  
 ण्य प्रहर १२, जवार ऊण्य प्रहर १२, धाजरीकी  
 खीचडी प्रहर ७, जवारकी खीचडी प्रहर ७, चा  
 वलकी खीचडी प्रहर ४, सीयाखे आटो दिन १०,  
 उन्हाखे आटो दिन ७, वरसाखे आटो दिन ५,  
 पकाअ सियाखे दिन ३०, उन्हाखे पकाअ दिन  
 १५, वरसाखे पकाअ दिन ७, उन्हाखे खूण फासू  
 दिन ७, वरसाखे खूण फासू दिन ३, सीयाखे फासू  
 खूण दिन ५, सीयाखे फासू घी दिन ७, उन्हाखे  
 फासू घी दिन ५, वरसाखे फासू घी दिन ३, तथा  
 हमेसका सियाखे फासू पाणी प्रहर ५, वरसाखे  
 फासू पाणी प्रहर ३, सर्व अनाजकी घूघरी पाणी  
 नीजोइ प्रहर ७, पाणीकी उसेइ घूघरी प्रहर १७,  
 घीतेलकी तली घूघरी प्रहर २०, तथा २४ घडी प्र  
 हर ७, कळी प्रहर ४, सर्व दाख प्रहर ४, तथा ६  
 रायता प्रहर ७, घीकी तली प्रहर १६ एव सर्व व  
 स्तु ए कीये परिमाण उपरात चखितरस होवे, सो  
 साधु तथा श्रावककों खावे योग्य रहे नहि ॥



